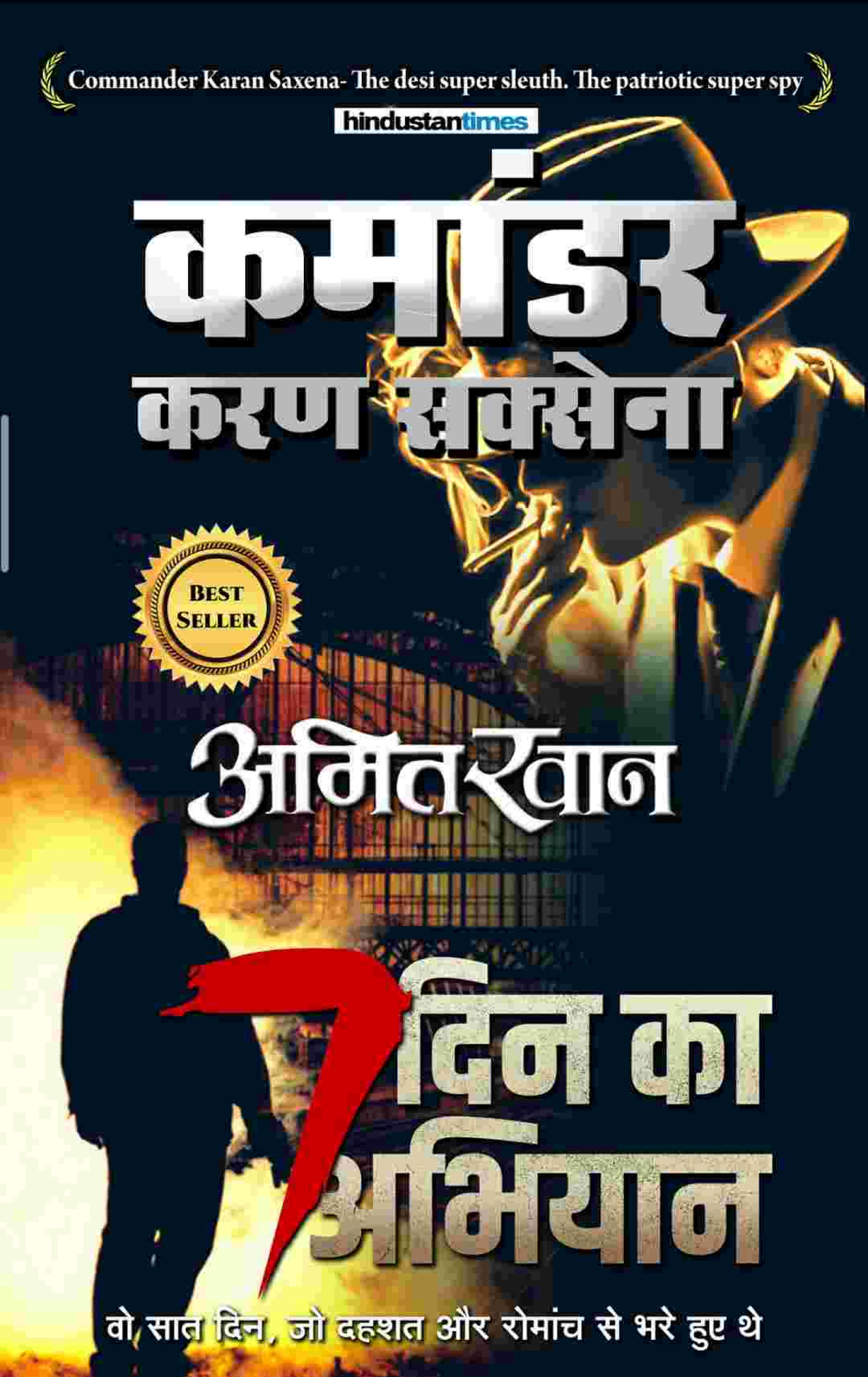

Commander Karan Saxena- The desi super sleuth. The patriotic super spy
hindustantimes
कमांडर
करण सक्सेना
BEST SELLER
अमित खान
7 दिन का अभियान
वो सात दिन, जो दहशत और रोमांच से भरे हुए थे



7 दिन का अभियान

अमित खान

लेखकीय

प्रिय पाठकों,

बुक कैफ़े पब्लिकेशन के नये सेट में पेश है- **7 दिन का अभियान** !

मुझे आज तक याद है, **7 दिन का अभियान** का पहला संस्करण जब आज से 20 या 22 वर्ष पहले प्रकाशित हुआ था, एकदम सही तारीख़ और वर्ष तो मुझे याद नहीं, लेकिन इतने साल गुजर ही चुके हैं, तब प्रकाशित होते ही यह उपन्यास एकदम पाठकों की ज़बरदस्त वाह-वाही का मरकज बन गया था । सबको यह उपन्यास खूब-खूब पसंद आया ।

हालाँकि इस उपन्यास को लिखने की भी एक कहानी है । वो कहानी जो मैंने तब पाठकों के साथ शेयर नहीं की, आज कर रहा हूँ । दरअसल कमांडर करण सक्सेना सीरीज तब तक सुपर हिट हो चुकी थी । न सिर्फ पाठकों के बीच बल्कि प्रकाशकों के बीच भी इस सीरीज़ की भारी डिमाण्ड थी । मैं चाहूँ या न चाहूँ, मुझे प्रकाशक और पाठकों की डिमाण्ड पर 1 वर्ष में कमांडर सीरीज के कम-से-कम 4 से 5 उपन्यास लिखने-ही-लिखने पढ़ते थे ।

तभी मेरे दिमाग में आया कि क्यों न इस बार कमांडर का उपन्यास कुछ अलग हटकर, कुछ नये अंदाज़ में लिखा जाये । चेईज़ का एक उपन्यास मुझे बड़ा पसंद था, मैंने उसी से इंस्पायर होकर कमांडर के इस उपन्यास की नवीन अंदाज़ में रचना कर डाली । मुझे लगता है कि कमांडर का यह नये अंदाज़ का कथानक आपको आज भी खूब-खूब

पसंद आयेगा। वैसे भी यह उपन्यास बहुत सालों बाद आप तक पहुँच रहा है।

इस उपन्यास के साथ ही **गॉडफ़ादर सीरीज़** का **बवंडर** भी प्रकाशित हो चुका है। पाठकों को गॉडफ़ादर सीरीज़ की भी कई वर्षों से बेसब्री से प्रतीक्षा थी। फिलहाल बवंडर का ईबुक संस्करण किंडल पर मौजूद है।

इसी के साथ **10 टन सोना** का भी ईबुक संस्करण जल्द प्रकाशित होने वाला है। यह भी कमांडर करण सक्सेना सीरीज़ का एक बेहतरीन उपन्यास है और जरूर पढ़ें। इसका कवर अभी फाइनल कवर नहीं है, सिर्फ ईबुक के लिये एक रफ़ कवर बना लिया गया है, जो बाद में चेंज होगा।

फिलहाल **7 दिन का अभियान** आपको कैसा लगा, इस सम्बन्ध में अपनी मूल्यवान राय से मुझे जरुर अवगत करायें। ई-मेल नीचे दी गयी है। धन्यवाद सहित।

आपका अपना

अमित खान

मुंबई – 400104

सम्पर्क सूत्र : foramitkhan@gmail.com



7 दिन का अभियान

वह विश्व प्रसिद्ध आदमी था ।

इस समय वो हवाई जहाज के अन्दर बड़ी अजीब स्थिति में सफर कर रहा था ।

जैसे उसने नकली दाढ़ी-मूंछें लगाई हुई थीं ।

सिर पर नकली बालों का विग पहन रखा था ।

आँखों में कांटेक्ट लैंस थे ।

उसके पास इस समय जो पासपोर्ट था, वह भी नकली था ।

पासपोर्ट पर जो नाम लिखा था, वह भी नकली था ।

यानि वह पूरी तरह अपने आपको 'छिपाकर' सफर कर रहा था ।

वह अमरीका से उस हवाई जहाज में बैठा था और उसने हिन्दुस्तान पहुँचना था ।

वह अपने उस बहरूप के कारण घबराया हुआ भी बहुत था ।

उसे हर पल यह दहशत सता रही थी कि कहीं कोई उसे पहचान न ले । कहीं उसका राज फाश न हो जाये ।

वो जानता था, अगर उसका राज फाश हो गया, तो फिर न सिर्फ उसका पूरा कैरियर चौपट हो जायेगा बल्कि

जाली पासपोर्ट पर सफ़र करने के अपराध में उसे जेल की सलाखों के पीछे भी जाना पड़ेगा ।

इसमें कोई शक नहीं, वह इस तरह सफर करके सचमुच बहुत बड़ा रिस्क ले रहा था ।

लेकिन वह क्या करता ?

इसके अलावा उसके सामने कोई और रास्ता भी न था ।

वह इस समय एक बहुत जबरदस्त मुश्किल में फंसा हुआ था ।

□□□

उसने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे बेचैनीपूर्वक पहलू बदला और अपनी रिस्टवॉच देखी ।

रात के साढ़े नौ बज रहे थे ।

हवाई जहाज किसी भी क्षण मुंबई पहुँचने वाला था ।

उस रहस्यमयी व्यक्ति के बराबर वाली कुर्सी पर एक बहुत खूबसूरत लड़की बैठी थी । उसने गुलाबी रंग के कपड़े पहने हुए थे और वह उनमें सचमुच कोई परी नजर आ रही थी । लड़की अब तक उससे कई बार बात करने की कोशिश कर चुकी थी, वही हर मर्तबा कोई-न-कोई बहाना बनाकर ख़ामोशी धारण कर लेता ।

फिर भी लड़की बार-बार उसकी तरफ देखती थी और उससे बात करने का बहाना ढूंढती थी ।

“एक बात बोलूं मिस्टर !” लड़की फिर उस रहस्यमयी व्यक्ति से सम्बोधित हुई ।

“बोलो ।”

“तुम्हारे जैसा नौजवान मैंने अपनी पूरी जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखा ।”

"क्यों ?"

"सफर के दौरान अक्सर तुम्हारे जैसे नौजवान किसी खूबसूरत लड़की से चिपकने की पूरी-पूरी कोशिश करते हैं, जबकि यहाँ मामला उल्टा है । मैं तुमसे चिपकने की कोशिश कर रही हूँ और तुम मुझसे दूर-दूर भाग रहे हो । है न अजीब बात ?"

उस रहस्यमयी व्यक्ति ने जबरदस्ती मुस्कराने की कोशिश की, लेकिन फिर भी मुस्कुराहट उसके होंठों पर न आ सकी ।

ऐसा लगता था, जैसे हँसी किसी ने उसके चेहरे से पूरी तरह निचोड़ ली है ।

"इसमें अजीब बात कुछ भी नहीं ।" रहस्यमयी व्यक्ति बोला, "दरअसल यह सब इंसान-इंसान की आदत के ऊपर निर्भर है, मुझे इस तरह की बातों में कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही, जिनका कोई सिर-पैर नहीं होता । और वैसे भी इस वक्त मैं काफी परेशान हूँ, इसके लिये मैं माफ़ी चाहूँगा ।"

"क्या मैं परेशानी की वजह पूछ सकती हूँ ।"

"सॉरी !" रहस्यमयी व्यक्ति ने रूमाल से अपने चेहरे के पसीने साफ़ किये,"परेशानी बहुत ज्यादा प्राइवेट है, जिसका मैं हर किसी के सामने जिक्र नहीं कर सकता ।" वह शब्द कहने के बाद उसने फिर कुर्सी पर बेचैनीपूर्वक पहलू बदला था ।

"ओह !"

लड़की जो शक्ल-सूरत और आँखों से ही काफी खुशमिजाज नजर आ रही थी, वह भी अब गम्भीर हो उठी ।

इतना ही नहीं वह अब पहले से भी ज्यादा गौर से उस रहस्यमयी व्यक्ति का चेहरा देखने लगी थी, उसकी नजरें मानो उसके चेहरे पर जाकर गड़ ही गयी थी ।

"इ...इस तरह क्या देख रही हो ?" सकपका उठा वह रहस्यमयी व्यक्ति ।

"द...दरअसल !" लड़की खोये-खोये से लहज़े से बोली, "तुम्हारा चेहरा देखकर न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे मैं तुम्हें पहले भी कहीं देख चुकी हूँ । टी.वी. पर, अख़बारों में, या किसी और महत्वपूर्ण जगह पर । ऐसा लगता है, जैसे तुम कोई बहुत बड़े आदमी होओ ।"

धमाका-सा हो गया उस व्यक्ति के दिमाग में ।

जिस बात का उसे खतरा था, वही बात उसके सामने आ गयी थी ।

"ए...ऐसी कोई बात नहीं ।" वह खिसियाने ढंग से हँसता हुआ बोला और उसने रुमाल से फिर जल्दी-जल्दी अपने चेहरे के पसीने साफ़ किये, "म...मेरी ऐसी किस्मत कहाँ, जो मुझे टी.वी. पर दिखाया जा सके, अख़बारों में मेरे फोटो छप सकें या फिर बड़ा आदमी बनने का सौभाग्य मुझे हासिल हो । जरूर तुम्हें वहम हो रहा होगा, वरना मैं तो बहुत मामूली-सा आदमी हूँ ।"

"हो सकता है कि मुझे वहम हो रहा हो ।" लड़की की आवाज में सस्पेंस का पुट था ।

तभी हवाई जहाज के अन्दर घोषणा होने लगी ।

"योर अटेंशन प्लीज !" एयर होस्टेज की मधुर आवाज लाउडस्पीकर द्वारा पूरे विमान में गूँजी, "यात्रियों से निवेदन है कि वह अलर्ट हो जायें और अपनी-अपनी बेल्टें कस लें, क्योंकि बहुत जल्द इंडियन एयरलाइन्स का यह

□□□

गंगाधर महन्त एक किताब पढ़ने के बाद थोड़ी देर पहले ही बिस्तर के हवाले हुए थे ।

इस समय उनकी आँखें बंद थी और वह सोने की कोशिश कर रहे थे ।

रॉ (रिसर्च एंड एनालिसिस विंग) जैसी बड़ी संस्था के चीफ होने के नाते उन्हें काफी-काफी देर तक काम करना पड़ता था, इसलिये रात होने तक वो बेहद थक जाते थे । आज भी काफी थक गये थे ।

तभी जोर से टेलीफोन की घंटी बजी ।

गंगाधर महन्त की आँख खुल गयी और उन्होंने लेटे-लेटे टेलीफोन का रिसीवर उठाया ।

"हैलो !"

"कौन, गंगाधर महन्त जी ?" फौरन एक अजनबी आवाज गंगाधर महन्त के कानों में पड़ी ।

"यस !"

"मैं गोल्डी बोल रहा हूँ अंकल !"

"ग...गोल्डी !"

धमाका-सा हुआ गंगाधर महन्त के दिमाग में ।

वह एकदम उछलकर बैठे ।

उस छोटे से नाम को सुनते ही गंगाधर महन्त की न सिर्फ आँखें हैरत से फट पड़ी थी बल्कि सारी नींद भी भक्क् से उड़ गयी ।

"तुम...तुम वही गोल्डी... ।"

"हाँ, मैं वही गोल्डी हूँ ।" रहस्यमयी व्यक्ति उनकी बात बीच में ही काटकर तेजी से बोला, " आप टेलीफोन पर मेरे बारे में कोई भी शब्द न कहें ।"

यात्रियों की नजरों से अपने आपको बचाने की भरसक कोशिश करता हुआ दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

जो व्यक्ति हवाई जहाज से सबसे पहले नीचे उतरा, वो वही था।

जल्द ही कस्टम वालों ने उसे घेर लिया।

जिस पल वह उसका जाली पासपोर्ट चेक कर रहे थे, उसके दिल की धड़कन कई गुना बढ़ चुकी थी।

उसने महसूस किया, उसकी टाँगें काँप रही हैं।

उसके हाथों में कम्पन्न है।

जीवन में पहले कभी उसने इस प्रकार का गैर-क़ानूनी काम नहीं किया था।

अपने पकड़े जाने से भी ज्यादा उसे अपनी 'इज्जत' की फ़िक्र थी।

लेकिन कस्टम ऑफिसर ने उसका जाली पासपोर्ट चेक करके उसे वापस लौटा दिया।

उसने गहरी संतोष की साँस ली।

फिर उसकी तलाशी ली गयी।

उसके ब्रीफकेस की तलाशी ली गयी, सामान के नाम पर उसके पास सिर्फ वही एक ब्रीफकेस था।

ब्रीफकेस की तलाशी के दौरान उसका दिल फिर जोरों से धड़का था।

मगर कोई घटना न घटी।

कस्टम से वो कुशलतापूर्वक निपट गया था।

कस्टम से निपटते ही वो काफी तेजी के साथ चलता हुआ एयरपोर्ट से बाहर निकल गया।

उसे ऐसा लगा, मानो किसी बड़ी आफत से उसका पीछा छूट गया हो।

"अ...ओह !"

"मैं अमरीका से खासतौर पर आपसे ही मिलने यहाँ इण्डिया आया हूँ ।"

"तुम इस वक्त कहाँ से बोल रहे हो ?"

"मुंबई एयरपोर्ट के बाहर एक टेलीफोन बूथ है, मैं वहीं से बात कर रहा हूँ ।"

"तुम सीधे यहीं क्यों नहीं चले आये ?"

"दरअसल मैं पहले मालूम करना चाहता था ।" रहस्यमयी व्यक्ति बोला, "कि आपके पास कोई और व्यक्ति तो नहीं है, मुझे एक बहुत प्राइवेट सब्जेक्ट पर आपसे बात करनी है ।"

"कैसा प्राइवेट सब्जेक्ट ?"

"उसकी डिटेल मैं मिलने के बाद ही बताऊंगा ।"

"ठीक है, चले आओ, यहाँ कोई नहीं है ।"

"ओ.के. ! मैं अभी आधे घंटे के अन्दर आपके पास पहुँचता हूँ ।"

गंगाधर महन्त ने रिसीवर रख दिया ।

लेकिन उनके दिमाग में धमाके पर धमाके अभी भी हो रहे थे ।

उनके पूरे शरीर में एकाएक हजारों-लाखों के हिसाब से चींटियाँ गर्दिश करने लगी थीं ।

□□□

गोल्डी !

वह सचमुच मामूली आदमी नहीं था ।

उसका नाम आज पूरे संसार में गूँज रहा था ।

वह विश्व हेवीवेट बॉक्सिंग की दुनिया का बेताज बादशाह था ।

सिर्फ छः महीने पहले की बात है, उसने विश्व चैंपियन जॉनी बैंजो को एक मुकाबले में जबरदस्त ढंग से पराजित करके उससे 'चैंपियनशिप' का ख़िताब छीन लिया था और खुद वर्ल्ड चैंपियन बन बैठा था ।

तब दुनिया भर में उसके नाम की जबरदस्त चर्चा हुई थी ।

दुनिया का ऐसा कोई अख़बार नहीं था, जिसमें गोल्डी का चित्र न छपा हो, उससे सम्बन्धित समाचार न छपा हो या उसे आधार बनाकर लेख न लिखे गये हों । टी.वी. पर भी वह बुरी तरह छा गया था और रातों-रात दुनिया भर के नौजवानों का वो चहेता बन बैठा था ।

गोल्डी, जिसका बाप एक हिन्दुस्तानी था और गंगाधर महन्त का क्लास-फैलो रहा था ।

गोल्डी के बाप का नाम था, गजानन्द सावरडे ।

गजानन्द सावरडे एक महाराष्ट्रियन आदमी था और उसके पास बाप-दादा की छोड़ी काफी दौलत थी ।

लेकिन जवानी के दिनों में ही उसे बॉक्सिंग का शौक चढ़ गया था । इतना ही नहीं, उसने राष्ट्रीय स्तर के कई बड़े-बड़े मुकाबले जीतकर साबित भी कर दिया था कि वो वाकई एक अच्छा बॉक्सर है ।

परन्तु गजानन्द सावरडे सिर्फ अपनी उन्हीं उपलब्धियों से खुश नहीं था ।

वो पूरी दुनिया में अपना नाम करना चाहता था ।

वो चाहता था कि उसकी गणना सोनी लिस्टन, मोहम्मद अली या जॉर्ज फोरमेन जैसे विश्व-प्रसिद्ध मुक्केबाजों में हो ।

अपने उन्हीं सपनों को साकार करने के लिये गजानन्द सावरडे बहुत साल पहले अपने पुरखों की सारी सम्पति बेचकर अमरीका चला गया था ।

लेकिन वहाँ उसकी बड़ी जबरदस्त दुर्गति हुई ।

वह विश्व-प्रसिद्ध बॉक्सर तो न बन सका, परन्तु वो अपने साथ अपने पुरखों की जो दौलत लेकर गया था, वह सब जरूर बर्बाद हो गयी ।

मगर तब भी न तो गजानन्द सावरडे हिन्दुस्तान वापस लौटा था और न ही उसने बॉक्सिंग की दुनिया छोड़ी थी ।

वह रिंग ब्वॉय बन गया था ।

यानि वह आदमी, जो मुकाबले के दौरान एक कोने में खड़ा रहता है और जब मुक्केबाज़ राउंड खत्म होने के बाद थक-हारकर कोने में आकर बैठता है, तो वह तौलिये या स्पंज से उसके पसीने साफ़ करता है ।

ऐसी जिन्दगी हो गयी गजानन्द सावरडे की ।

परन्तु वो फिर भी निराश नहीं हुआ, वो इसी बात से खुश रहता था कि कम से कम इसी बहाने उसे फ्लायड पेटरसन, सोनी लिस्टन, मोहम्मद अली या जॉर्ज फोरमेन जैसे मुक्केबाजों का साथ हासिल हो जाता है ।

उसने अमरीका में ही एक काली हब्शी औरत से शादी भी कर ली ।

बाद में उसी हब्शी औरत से गोल्डी का जन्म हुआ । गोल्डी एकदम अपनी माँ के ऊपर था, बिल्कुल काला-लम्बा और फौलाद जैसी मजबूत कद-काठी वाला लड़का ।

गजानन्द सावरडे उसे देखते ही खुश हो गया ।

डॉक्टरों ने उसे बचाने की हर मुमकिन कोशिश की, इंजेक्शन दिये गये, ऑक्सीजन चढ़ाई गयी, परन्तु हर चीज बेकार। गजानन्द सावरडे का अंतिम समय आ चुका था।

गजानन्द ने गोल्डी को कसकर अपने सीने से लगा लिया, उसकी आँखें भर आयीं।

"मुझे अपनी मौत का कोई दुःख नहीं है बेटे !" गजानन्द सावरडे ने गोल्डी की पीठ सहलाते हुए कहा था, "क्योंकि एक बॉक्सर के रूप में मैं तुम्हें एक बेहतरीन शुरूआत दे चुका हूँ, अब यहाँ से आगे का सफर तुम्हें अकेले ही तय करना होगा मेरे बच्चे ! आज से यही लोग तुम्हारे आदर्श हैं।" गजानन्द सावरडे ने उस कमरे में बॉक्सरों की बेशुमार तस्वीरों की तरफ इशारा करते हुए कहा, "आज से एक बात तुम्हें याद रहे, तुम्हें फ्लायड पेटरसन बनना है, मोहम्मद अली बनना है, सोनी लिस्टन बनना है।"

और बस वह अमृतवाणी बोलने के बाद गजानन्द सावरडे की आँखें बंद हो गयी।

मर गया गजानन्द।

लेकिन उसकी जबान से निकले वह अंतिम शब्द फिर हमेशा गोल्डी के कानों में गूंजते रहे, वह उन शब्दों को कभी नहीं भूल सका।

और शायद वो उन शब्दों की ही ताकत थी, जो बाईस साल की आयु में वो जॉनी बैंजो को हराकर बॉक्सिंग की दुनिया का बेताज बादशाह बन गया।

गोल्डी के घूंसे जॉनी बैंजो के शरीर पर हथौड़ों की तरह पड़ रहे थे।

धड़ाधड़ ! धड़ाधड़ !!

ऐसा लगा, जैसे गोल्डी पागल हो गया हो, वह आक्रोश की आँधी बन चुका था ।

पूरे स्टेडियम में तूफान-सा आ गया, दर्शक चीखते हुए अपनी-अपनी सीटों से खड़े हो गये थे, जबकि गोल्डी के घूंसे धड़ाधड़ जॉनी बैंजो पर पड़ रहे थे ।

जॉनी बैंजो का होंठ फट गया ।

आँखें सूज गयीं और उनमें से खून निकलने लगा ।

जॉनी बैंजो को एकाएक सब कुछ दिखाई देना बंद हो गया था ।

जॉनी बैंजो दूसरा राउंड पूरा होने से पहले ही रिंग में धराशायी हो गया ।

उसकी उस 'महान विजय' पर जिस व्यक्ति ने उसे सबसे पहले टेलीफोन द्वारा मुबारकबाद भेजी, वह गंगाधर महन्त थे ।

गंगाधर महन्त, जिनसे गोल्डी एक बार अपने पिता के साथ बचपन में हिन्दुस्तान आकर मिल चुका था ।

आज गोल्डी की जिन्दगी काफी कुछ बदल चुकी है ।

वह करोड़ों डॉलर का मालिक है ।

उसके पास रहने के लिये महल जैसा घर है ।

बीवी का नाम है, नील !

नील एक बेहद खूबसूरत पौने छः फुट लम्बी लड़की, जिसकी रंगत गोरी है और जो गोल्डी के साथ शादी करने से पहले प्रसिद्ध फैशन मॉडल थी ।

कुल मिलाकर आज गोल्डी के पास सब कुछ है ।

सब कुछ !

लेकिन कभी-कभी तूफ़ान उन लोगों की जिन्दगी में भी आते हैं, जिनके पास दुनिया की हर ख़ुशी होती है ।

□□□

सवा दस बज रहे थे ।

तभी कॉलबेल बजी ।

गंगाधर महन्त ने फौरन दरवाजा खोल दिया, सामने एक लम्बी-चौड़ी कद-काठी वाला नौजवान खड़ा था, जिसने अपने शरीर पर क्रीम कलर का काफी महँगा सूट पहन रखा था ।

गंगाधर महन्त चौंक पड़े ।

"कौन हो तुम ?" उनके मुँह से तुरंत यही शब्द निकले ।

"मैं गोल्डी हूँ ।"

"ग...गोल्डी !" गंगाधर महन्त का हैरान स्वर, " तुम गोल्डी कैसे हो सकते हो ?"

"मैं गोल्डी ही हूँ ।" वह रहस्यमयी व्यक्ति बेधड़क अन्दर आ गया ।

इतना ही नहीं, अन्दर आते ही उसने अपना नकली बालों का विग भी उतार दिया था ।

अब गंगाधर महन्त उसे अचम्भे से देखते रह गये ।

"दरअसल मैंने बहरूप धारण किया हुआ है ।" रहस्यमयी व्यक्ति ने अपना विग उतारने के बाद अपनी नकली दाढ़ी-मूंछें भी उतारकर एक कुर्सी पर डाल दी थीं ।

गंगाधर महन्त की आँखें अब सचमुच अचरज से फैल चुकी थीं ।

वह वाकई गोल्डी था, विश्व चैंपियन गोल्डी, जिसका नाम आज पूरा संसार जानता था ।

"क...क्या तुम अमरीका से यही बहरूप धारण करके आ रहे हो ?" गंगाधर महन्त के मुँह से सिसकारी छूटी ।

"हाँ ।"

"और तुम्हारा पासपोर्ट ?"

"पासपोर्ट जाली है । उस पर जो वीजा लगा है, वह भी जाली है ।"

"हे भगवान तुम्हारे जैसे आदमी ने इतना बड़ा रिस्क लिया, ऐसी क्या आफत आ गयी थी ?"

"आफत ही आ गयी थी ।" गोल्डी ने फ्रीज के अन्दर से पानी की एक बोतल निकाल ली और फिर वो गटागट उस बोतल का सारा पानी एक ही साँस में पी गया ।

ब्रीफकेस उसने एक टेबिल पर रख दिया था ।

पानी पीने के बाद उसे काफी राहत महसूस हुई, वह फिर गंगाधर महन्त के सामने आकर खड़ा हो गया ।

"आखिर बात क्या है ?" गंगाधर महन्त ने कहा, "तुम काफी परेशान नजर आ रहे हो ।"

"मैं एक भयंकर मुश्किल में फंस चुका हूँ ।" गोल्डी बोला, "मुश्किल ऐसी है, जिससे अब सिर्फ आप ही मुझे निकाल सकते हो । यूँ समझिये, आपके अलावा पूरी दुनिया में मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नजर नहीं आ रहा, जो इस परेशानी से निकाल सकता हो ।"

"लेकिन मुश्किल क्या है ?"

□□□

गोल्डी अब उस टेबिल के सामने जाकर बैठ गया था, जिस पर ब्रीफकेस रखा था ।

गंगाधर महन्त भी उसके बराबर वाली कुर्सी पर बैठ गये ।

यह जानने के लिये उनकी बैचैनी हर पल बढ़ती जा रही थी कि आखिर बात क्या है ।

"मैं इस फिल्म को एक बार देख चुका हूँ ।" गोल्डी पुनः बोला, " दोबारा इस फिल्म को देखने की मेरे अन्दर हिम्मत नहीं है, इसलिये मेरी आप से गुजारिश है कि आप इसे अकेले ही देखें ।"

गंगाधर महन्त के नेत्र सिकुड़ गये, उनका सस्पैंस हर पल बढ़ता ही जा रहा था।

"ऐसा क्या फिल्म है इस पेन ड्राइव के अन्दर ?"

"फिल्म देखने के बाद आपको सब कुछ मालूम हो जायेगा, आप प्लीज़ पहले फिल्म देखें, उससे पहले कोई भी सवाल बेकार है ।"

□□□

वहीं एक बड़ा टी०वी० रखा था, गंगाधर महन्त ने फौरन ही वो पेन ड्राइव उसके अंदर लगा दी ।

जबकि गोल्डी अब टेलीविजन की तरफ से मुँह फेरकर एक कुर्सी पर बैठ गया ।

पेन ड्राइव लगाते ही टेलीविजन सैट पर झिलमिलाहट-सी आने लगी ।

कुछ देर तक वो झिलमिलाहट-सी आती रही ।

फिर टेलीविजन पर जो फिल्म शुरू हुई, उसकी कल्पना भी गंगाधर महन्त ने नहीं की थी ।

वह एक ब्लू फिल्म थी ।

और ऐसी वाहियात दर्जे की ब्लू फिल्म थी, जिसे देखकर किसी भी व्यक्ति का मन घृणा से भर जाये ।

स्त्री और पुरुष, उस फिल्म के अन्दर वह दोनों ही आदमजात नंगे थे ।

स्त्री जहाँ गोरी-चिट्टी और आकर्षक देह की स्वामिनी थी, वहीं पुरुष भी उससे कम नहीं था ।

वह भी उसी की तरह गोरा-चिट्टा था ।

और सुन्दर भी खूब था ।

पुरुष काफी देर तक स्त्री के यौवन कलशों को सहलाता रहा ।

"तुम सचमुच लाजवाब हो डियर !" स्त्री उससे और ज्यादा कसकर चिपट गयी, "बेहद लाजवाब ! जैसा कामसुख मुझे तुमसे हासिल होता है, ऐसा सुख मैंने जिंदगी में पहले कभी नहीं भोगा ।"

पुरुष हंसा ।

हंसते हुए उसने स्त्री के गोरे-चिट्टे कूल्हे पर हाथ की थपकी मारी ।

"क्या अपने पति से भी तुम्हें ऐसा सुख हासिल नहीं होता ?"

"पति !" स्त्री ने अपनी नाक-भौंह सिकोड़ीं, "वह तो नपुंसक है साला, बिल्कुल नपुंसक । अगर वह मुझे संतुष्ट करने के काबिल होता, तो मैं बाहर ही क्यों मुँह मारती ।"

□□□

उससे आगे का दृश्य जब गंगाधर महन्त से न देखा गया, तो उन्होंने रिमोट का बटन दबाकर टी०वी० बंद कर दिया ।

उनका चेहरा भभक रहा था ।

और आंखों में गहन आश्चर्य के भाव थे ।

वह गोल्डी की तरफ घूमे । गोल्डी, जो टी०वी० बंद होने की आवाज सुनते ही उनकी तरफ घूम गया था ।

"यह नील है ।" गंगाधर महन्त कोई सवाल करते, उससे पहले ही गोल्डी बोल पड़ा ।

"न...नील !" बम-सा फट पड़ा गंगाधर महन्त के दिमाग में ।

"हाँ, मेरी बीवी नील ।"

"अ...और उसके साथ जो पुरुष है !" गंगाधर महन्त भौंचक्की मुद्रा में बोले, "व...वह कौन है ?"

"उसका नाम मैं नहीं जानता, उस आदमी को मैंने जीवन में पहले कभी देखा भी नहीं । अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मेरे अन्दर इस फिल्म को दोबारा देखने की हिम्मत क्यों नहीं है । भला कौन ऐसा पति होगा, जो अपनी पत्नी को इस तरह दूसरे पुरुष की बांहों में बार-बार देखने की हिम्मत जुटा पाये ।"

"और नील इस फिल्म में तुम्हारे ऊपर यह जो इल्जाम लगा रही है ।" गंगाधर महन्त ने धीमें स्वर में पूछा, "कि तुम नपुंसक हो, क्या यह सच है ?"

"हाँ ।" गोल्डी ने भी बिल्कुल बे-हिचक खरा जवाब दिया, "यह सच है ।"

गंगाधर महन्त सकते जैसी हालत में गोल्डी को देखते रह गये ।

"दरअसल मैं शुरू में ऐसा नहीं था ।" गोल्डी बोला, "जब मेरी शादी हुई, तब भी मैं ठीक था । मेरे साथ एक घटना घटी, मैं और नील उन दिनों हनीमून मनाने के लिये केलीफोर्निया गये हुए थे, वहीं जब एक शाम नील एक बाग में विचरण कर रही थी और मैं उससे थोड़े ही फासले पर बैठा था, तभी एक गुण्डा यह समझकर नील के ऊपर झपट पड़ा कि वो वहाँ अकेली है । स्वाभाविक रूप से मैंने

के बाद इस सारे सिलसिले की शुरुआत हुई ।" गोल्डी ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला और फिर कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया तथा फिर इधर से उधर टहलने लगा, "एक महीने तक सब कुछ ठीक रहा था, बिल्कुल ठीक ।"

"उसके बाद क्या हुआ ?" गंगाधर महन्त ने भी अपना पसंदीदा 'हवाना सिगार' सुलगा लिया ।

उनकी दिलचस्पी उस केस में हर पल बढ़ती ही जा रही थी ।

"उसके बाद जो हुआ, वह अच्छा नहीं था ।" गोल्डी के चेहरे पर दुःख के भाव गहरे होते जा रहे थे, "अब नील छोटी-छोटी बात पर मुझसे झगड़ने लगी, हर पल वह मुझे 'नपुंसक' का ताना देती या फिर तलाक देने के लिये कहने लगती । उन्हीं दिनों उसने मेरे ड्राइवर के साथ शारीरिक सम्बन्ध भी बना लिये, मैं उस कड़वे घूंट को भी किसी तरह पी गया । परन्तु इन्तहाँ तो तब हुई, जब नील का बर्ताव किसी वेश्या जैसा हो गया और वह एक के बाद एक अनेक पुरुषों के साथ सम्बन्ध बनाती चली गयी । नील ने सिर्फ यहीं पर बस नहीं की बल्कि आज से बीस दिन पहले वो मेरा घर हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर किसी दूसरे के आदमी के साथ भाग गयी ।"

"ओह, यानि उसने किस्सा ही खत्म कर दिया ।"

"नहीं ।" गोल्डी की गर्दन इंकार में हिली, "उसने किस्सा खत्म नहीं किया, अगर वो किस्सा खत्म कर देती, तब भी मुझे राहत मिलती ।"

गंगाधर महन्त के चेहरे पर सस्पैंस के भाव और बढ़ गये ।

□□□

गोल्डी इस समय दीवार की तरफ मुँह किये खड़ा था और उसकी आंखे वाल क्लॉक की सैकिण्ड वाली सूई पर फिक्स थीं ।

सैकिण्ड वाली सुई, जो टिक्-टिक् की आवाज करती धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी ।

सारा माहौल काफी रहस्यमयी हो गया था ।

"अब मैं नील के अलावा आपको एक दूसरी घटना भी बताता हूँ ।" गोल्डी अपलक उस सैकिण्ड वाली सुई को ही देखता हुआ बोला, "वह दूसरी घटना, जो आगे जाकर नील वाली घटना से ही जुड़ जाती है । यह तो आपको मालूम ही है कि आज से सिर्फ छः महीने पहले ही मैंने जॉनी बैंजो को हराकर मुक्केबाजी में वर्ल्ड चेम्पियनशिप का खिताब जीता है ।"

"बिल्कुल मालूम है, भला वह भी कोई ऐसी घटना है, जिसे भुलाया जा सके ।" गंगाधर महन्त ने 'हवाना सिगार' का एक लम्बा कश लगाया ।

"दरअसल आज की तारीख में मेरे लिये जितनी मुश्किल नील बनी हुई है, उतनी मुश्किल का कारण जॉनी बैंजो भी है ।"

"जॉनी बैंजो, वह क्यों ?"

"जॉनी बैंजो ने मुझे दोबारा चैलेंज दे दिया है ।" गोल्डी कड़वा-सा मुँह बनाकर बोला, "और अब मुझे अपनी वर्ल्ड चैम्पिनशिप का खिताब बरकरार रखने के लिये उसे एक बार फिर रिंग में धाराशायी करना होगा । इतना ही नहीं, हम दोनों के बीच जो मुकाबला होना है, उसकी '31 अगस्त' तारीख भी फाइनल कर दी गयी है । मुकाबला अमरीका के लास वेगास शहर में ही होगा, मुकाबले की

करते हुए दर्शाया गया है और उन फिल्मों में नील ने उसकी नपुंसकता को लेकर काफी गंदी-गंदी बातें कहीं हैं । इसीलिये उन लोगों का कहना हैं कि मैं मुक्केबाज़ी के उस मुकाबले से चुपचाप अपना नाम वापस ले लूं, वरना वह फ़िल्में प्रेस तथा आम जनता तक पहुंचा दी जायेंगी और अभी तक उसकी नपुंसकता का जो रहस्य सिर्फ चंद लोग जानते हैं, आने वाले कल में सारी दुनिया को मालूम हो जायेगा । आने वाले कल में यह बात सारी दुनिया जानेगी कि विश्व चैम्पियन गोल्डी न सिर्फ एक नपुंसक व्यक्ति है बल्कि उसकी नपुंसकता की वजह से ही उसकी बीवी भी उसे छोड़कर भाग गयी है ।"

"सचमुच वह लोग तो काफी गन्दा खेल, खेल रहे हैं ।" गंगाधर महन्त के शरीर में सिहरन दौड़ी, "यह तो जबरदस्ती विश्व चैम्पियन बनने वाली बात हुई ।"

"जॉनी बैंजो अब यही चाहता है ।" गोल्डी ने दांत किटकिटाये, "कि अब मैं मुकाबले से अपना नाम वापस ले लूं और वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन उसे विश्व चैम्पियन घोषित कर दे ।"

□□□

गंगाधर महन्त के माथे पर परेशानी की लकीरें खिंच गयी थीं, उन्होंने हवाना सिगार का एक लम्बा-सा कश लगाया ।

"मुकाबले से नाम वापस लेने की आखिरी तारीख क्या है ?" गंगाधर महन्त ने पूछा ।

"27 अगस्त ।"

"यानि अगर तुमने 27 अगस्त तक मुकाबले से नाम वापस न लिया, तो उन तीनों ब्ल्यू फिल्मों के प्रिण्ट पब्लिक के बीच पहुंच जायेंगे ।"

"बिल्कुल, उन लोगों का यही कहना है ।"

"क्या नील जिस व्यक्ति के साथ भागी है, तुम उसका नाम वगैरा कुछ जानते हो ?"

"नहीं, मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता । मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि नील 'गैलार्ड' नाम के एक क्लब में अक्सर जाया करती थी, गैलार्ड क्लब नशेड़ियों का अड्डा है, क्योंकि वहाँ तमाम किस्म के नशे का सामान मिल जाता है । नील को भी एल०एस०डी० का इंजेक्शन लेने की आदत पड़ गई थी, उसी गैलार्ड क्लब में ही नील की उस व्यक्ति के साथ मुलाकत हुई, जिसके साथ वो भागी । आखिरी बार भी वो उसी क्लब के अंदर देखी गयी थी, फिर वो गायब हो गयी थी ।"

"आज नील को घर से भागे हुए बीस दिन हो चुके हैं, तुमने अपने दोस्तों को नील के बारे में क्या कह रखा है ?"

"यही कह रखा है कि वो हिल स्टेशन घूमने गयी हुई है ।" गोल्डी ने बताया, "मगर यह झूठ भी अब कितने दिन और चलेगा, आखिर किसी न किसी दिन तो रहस्य खुलना ही है ।"

"नील के फैमिली मैम्बर भी तो होंगे ?"

"कोई नहीं है, सिर्फ एक माँ है ।" गोल्डी गहरी सांस लेकर बोला, "वो भी अपाहिज ! टांगो से लाचार ! व्हील चेयर पर चलती है, फिर ऊपर से इतनी शरीफ कि खुद नील को उसकी हरकतों के लिये मेरे ही सामने डांटती रहती थी

। नील उसकी इकलौती बेटी है, लेकिन फिर भी नील की उससे कभी बनीं नहीं ।"

"अपाहिज माँ कहाँ रहती है ?"

"मेरे पास रहती है ।" गोल्डी बोला, "नील से शादी होने के बाद ऐसा कोई जिम्मेदार व्यक्ति उसके पास नहीं था, जो उस अपाहिज बूढ़ी औरत की देखभाल कर सके, इसलिये मैं उसे भी अपने ही साथ ले आया । लेकिन मैं पहले ही बता चुका हूँ, नील को उस बूढ़ी औरत की बिल्कुल फिक्र नहीं है, उसे सिर्फ अपनी खुशियां ही प्यारी हैं, वह सिर्फ अपने लिये जिन्दा रहना जानती है ।"

□□□

मामला वाकई संगीन था ।

हद से ज्यादा संगीन ।

"कुल मिलाकर अब स्थिति ये है ।" गोल्डी सनसनाये लहजे में बोला, "कि आज 19 अगस्त का दिन गुजर चुका है और थोड़ी ही देर बाद रात के बारह बजते ही 20 अगस्त शुरु हो जायेगी, यानि मुकाबले से नाम वापस लेने की तारीख अब ज्यादा दूर नहीं है । अगर मैं चाहता, तो अमरीकी पुलिस की मदद भी हासिल कर सकता था । परन्तु अमरीकी पुलिस की मदद भी इसलिये हसिल नहीं की, क्योंकि अमरीकी पुलिस की मदद हासिल करते ही यह बात गुप्त नहीं रह पायेगी कि मैं नपुंसक हूँ, मुझे लगता है कि कोई न कोई यह रहस्य जरूर लीक कर देगा । और यही मैं नहीं चाहता, क्योंकि यह बात लीक होते ही मेरे प्रशंसकों के ऊपर गाज-सी गिरेगी और फिर उनकी नजरों में मेरा

वो सम्मान नहीं रह जायेगा, जो आज है । इसलिये काफी सोच-समझकर मैं आपके पास आया हूँ ।"

"लेकिन मेरे पास आने के लिये यह बहरुप धारण करने की क्या जरूरत थी ?" गंगाधर महन्त ने हवाना सिगार का कश लगाया, "जाली पासपोर्ट बनवाने की क्या जरूरत थी ?"

"यह तो आपको मालूम ही है कि अगर आज की तारीख में मुझे एक छींक भी आती है ।" गोल्डी इधर-से-उधर टहलता हुआ बोला, "तो उसकी खबर भी अखबारों में छप जाती है । ऐसी परिस्थिति में, मैं अमरीका से हिंदुस्तान आता, तो आप आसानी से अंदाजा लगा सकते हैं कि यहाँ कितना बड़ा हंगामा मच जाता । फिर हिंदुस्तान आने के बाद मैं रॉ संस्था के चीफ से मिलता, तो उस सम्बन्ध में तरह-तरह की अटकलें लगायी जातीं, वापस अमरीका जाने पर मुझसे ढेरों सवाल पूछे जाते और तब यह भी मुमकिन था कि शक की बिना पर अमरीका की सी०आई०ए० जैसी संस्था मेरे पीछे लग जाती । मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?"

"नहीं ।" गंगाधर महन्त ने बेहिचक स्वीकार किया, "तुम्हारी बात काफी हद तक ठीक है ।"

"इसलिये मुझे यही बेहतर लगा कि मैं बहुरुप धारण करके जाली पासपोर्ट के द्वारा हिन्दुस्तान जाऊं । अब से थोड़ी देर बाद, यानि साढ़े बारह बजे मेरी वापसी की फ्लाइट भी है, जिसका टिकट पहले से ही बुक है और मेरे पास है ।"

"य...यानि तुम अभी वापस चले जाओगे ?" गंगाधर महन्त के नेत्र आश्चर्य से फैले ।

गोल्डी की आंखे भी अब जुगनुओं की तरह चमकने लगी थीं ।

उनमें विश्वास पैदा हो गया था ।

□□□

सबका चहेता, तमाम हिन्दुस्तानियों की आंख का तारा और पूरी दुनिया में अपने खूंखार कारनामों की बदौलत तहलका मचा देने वाला कमांडर करण सक्सेना आजकल छुट्टियां मना रहा था ।

यही बड़ी अजीब बात थी कि जो कमांडर हमेशा गोलियों की धूप-छांव में मौत का खेल खेलता है, उसके पास लगभग पिछले पंद्रह दिन से कोई मिशन नहीं था ।

शायद इसलिये वह इन दिनों निशानेबाजी और जूड़ो-कराटे के अभ्यास का आनन्द ले रहा था । आज भी उसका सारा दिन क्लब में निशानेबाजी की प्रेक्टिस करते हुए गुजरा था, उसके निशाने हैरत में डाल देने वाले थे और जो भी उसकी निशानेबाजी देखता, वही उसका प्रशंसक बन जाता । ऐसी ही एक प्रशंसिका उससे आज टकरायी, जो उसी क्लब की मैम्बर थी और कमांडर की निशानेबाजी देखकर थोड़ी ही देर में उसकी फैन हो गयी थी ।

लडकी का नाम निशा था, यूं तो उसकी उम्र मुश्किल से अट्ठारह-उन्नीस साल थी, लेकिन वो खेली-खाई खूब थी ।

शायद इसीलिये वह जितनी जल्दी कमांडर की फैन बनी थी, उससे भी कहीं ज्यादा जल्दी वो उसके क्लब में ही बने प्राइवेट रूम के अन्दर पहुंच गयी ।

“वाकई तुम्हारा निशाना कभी नहीं चूकता मिस्टर करण ।”

निशा ने अपनी गोरी चिट्टी कलाइयां कमांडर के गले में डाल दीं और फिर प्यार से उसकी तरफ देखने लगीं, "तुमने यह सब कहाँ से सीखा ?"

"यह दुनिया अपने आपमें बहुत बड़ी पाठशाला है डार्लिंग !" कमांडर ने उसका गाल आहिस्ता से थपथपाया, "इंसान का बच्चा यहाँ वक्त और हालात की गिरफ्त में फंसकर बहुत-सी बातें अपने आप सीख जाता है, कुछ ऐसा ही हाल मेरा समझो । मौत इतनी बार मेरे करीब से गुजरी है और मैं इतनी बार मरते-मरते बचा हूँ कि परफैक्ट निशाना लगाने जैसी चीज मेरे लिये बहुत मामूली खेल बनकर रह गया है । हाँ, कुछ लोग मेरे इस चमत्कारी खेल को देखकर चौंकते जरूर हैं, परन्तु मेरे लिये यह कोई नयी बात नहीं । वैसे एक बात कहूँ ।" कमांडर उसके होठों पर उंगली फेरने लगा ।

"क्या ?"

"तुम्हारा निशाना भी कुछ कम नहीं है डार्लिंग ।"

"क्यों ?" वह इठलाई ।

उसने अपने खुले बालों को पीछे की ओर झटक दिया ।

"अब देखा नहीं ।" कमांडर मुस्कराया, "तुम्हारी गोली भी कितने सही निशाने पर लगी है, बिल्कुल मेरे दिल के आर-पार निकल गयी ।"

निशा नाम की वो लड़की बड़े चंचल अंदाज में खिलखिलाकर हंस पड़ी ।

"तुम वाकई बहुत शैतान हो ।" उसने कमांडर की नाक पकड़कर झिंझोड़ी और फिर उसके गाल का एक कसकर चुम्बन ले डाला ।

उसी पल कमांडर ने उसे अपनी बाहों में कसकर जकड़ लिया था, लड़की ने कोई एतराज जाहिर न किया, उल्टे वह मुस्करायी ।

"अगर हम दोनों ही पक्के निशानेबाज हैं ।" लड़की थोड़ा खम ठोककर मुस्कराती हुई बोली, "तो हम दोनों के बीच एक-एक मुकाबला हो जाये, देखें किसकी जीत होती है ।"

"ठीक है, अगर यह बात है ।" कमांडर ने भी अपनी कसरती जांघें थपथपाई, "तो मुझे कोई एतराज नहीं, हो जाये हम दोनों निशानेबाजों की बीच एक-एक मुकाबला ।"

"तो फिर बिस्तर पर चलो ।" निशा की आवाज में बेसब्री थी ।

"चलो ।"

कमांडर ने फौरन ही निशा को अपनी बाहों में उठा लिया और फिर उसे लेकर बिस्तर की तरफ बढ़ गया ।

अगले ही पल उसने निशा को बिस्तर पर पटक दिया था और फिर उसके ऊपर खुद भी ढेर हो गया ।

निशा आनन-फानन उसका शर्ट के बटन खोलने लगी ।

जबकि कमांडर का हाथ रेंगता हुआ उसकी स्कर्ट पर पहुंच गया था और उसने स्कर्ट की चेन खोल डाली ।

□□□

अगले कुछ सैकिण्ड तूफानी थे ।

जबरदस्त तूफानी ।

क्लब के उस प्राइवेट रूम में तूफान-सा आ गया ।

जल्दी ही कमांडर गोल-पर-गोल करने लगा ।

"तुम्हारी छुट्टियां अब खत्म हुई।" गंगाधर महन्त बोले, "तुम फौरन मेरे बंगले पर पहुंचो, मैं बेसब्री से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।"

"क्या कोई खास घटना घट गयी चीफ ?"

"कुछ ऐसा ही समझो। बहुत अर्जेंट मामला है, जितनी जल्द-से-जल्द संभव हो, मेरे पास पहुंचो। मैं बेसब्री से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ। मैंने फौरन तुम्हें एक मिशन सौंपना है।"

"ओ०के० चीफ, मैं अभी दस मिनट में ही आपके पास पहुंचता हूँ।"

"वैरी गुड।"

"लेकिन आपके बंगले पर ही क्यों ?"

"क्योंकि एक प्राइवेट मामला है।"

"प...प्राइवेट !"

करण सक्सेना के दिमाग में धमाका-सा हुआ।

जबकि गंगाधर महन्त ने फौरन सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया।

प्राइवेट !

ऐसे बहुत कम वाकिये हुए थे, जब गंगाधर महन्त ने वह शब्द इस्तेमाल किया था या फिर उसे कोई मिशन सौंपने के लिये अपने बंगले पर बुलाया था।

कमांडर फौरन समझ गया, जरूर कोई खास बात है।

जरूर कोई खास घटना घटी है, जो गंगाधर महन्त ने इतनी रात को उसे अपने पास बुलाया है।

□□□

कमांडर आनन-फानन टॉयलेट से बाहर निकला।

निशा नाम की वो लड़की अभी भी बेसुध-सी बिस्तर पर पड़ी थी और पहले की तरह ही उसकी आंखें बंद थीं ।

कमांडर ने ट्रांसमीटर सैट अपने ओवरकोट की गुप्त जेब में रखा और फिर उसे झिंझोड़कर उठाया ।

“क...क्या हुआ ?” निशा ने हड़बड़ाते हुए आंखें खोलीं, “क्या हुआ ?”

“जल्दी से अपने कपड़े पहनो ।” कमांडर ने एक के बाद एक उसके कपड़े उठाकर बिस्तर की तरफ उछाले, “जल्दी !”

“ले...लेकिन हुआ क्या ?”

“बहुत भारी गड़बड़ हो चुकी है ।”

“क...कैसी गड़बड ?”

“पुलिस ने क्लब के ऊपर रेड डाल दी है । पुलिस को शक है कि यहाँ क्लब की आड़ में वेश्यावृत्ति का धंधा होता है, ऐसी परिस्थिति में अगर पुलिस ने हम दोनों को एक साथ पकड़ लिया, तो हम दोनों के ढोल-ताशे बज जायेंगे ।”

“माई गॉड, पुलिस ने भी आज ही रेड डालनी थी ।”

“जल्दी करो, जल्दी !”

निशा के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं ।

उसने बेहद आनन-फानन कपड़े पहने ।

फिर जितनी आनन-फानन उसने कपड़े पहने थे, उससे भी कहीं ज्यादा तेज तूफ़ान मेल बनी वो प्राइवेट रूम से बाहर निकल गयी ।

कमांडर भी उतनी ही तेजी के साथ रूम से बाहर निकला ।

अगले ही पल उसकी लाल कैरोना कार गंगाधर महन्त की कोठी की तरफ दौड़ी जा रही थी ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना इस समय उसी कमरे में बैठा था, जिसमें थोड़ी देर पहले गंगाधर महन्त के साथ गोल्डी मौजूद था ।

रात के बारह बजे का वक्त, गोल्डी अब वहाँ नहीं था ।

वह वापस अमरीका जाने के लिये एअरपोर्ट पहुंच चुका था ।

गंगाधर महन्त ने सबसे पहले कमांडर को वह ब्ल्यू फिल्म दिखाई, जो गोल्डी अपने साथ लाया था ।

ब्ल्यू फिल्म देखते ही कमांडर की तबियत फड़क उठी ।

वाकई वह कोई 'चीज' थी ।

फिर गंगाधर महंत ने उस ब्ल्यू फिल्म के साथ जुडी पूरी कहानी सुनायी ।

वह कहानी उस ब्ल्यू फिल्म से भी ज्यादा हंगामाखेज थी ।

"अब किस्सा ये है ।" गंगाधर महन्त बोले, "कि अभी ऐसी तीन ब्ल्यू फिल्में जॉनी बैंजो के आदमियों के पास और हैं तथा वो इन्हीं ब्ल्यू फिल्मों के दम पर गोल्डी को ब्लैकमेल कर रहे हैं और उस पर इस बात का प्रेशर डाल रहे हैं कि वो 27 अगस्त तक बॉक्सिंग के मुकाबले से अपना नाम वापस ले ले, वरना उसके नपुंसक होने का रहस्य और उसकी बीवी की तमाम हरकतें पब्लिक के सामने शो कर दी जायेंगी ।"

"इसका मतलब जॉनी बैंजो जबरदस्ती विश्व चैम्पियन बनना चाहता है।" कमांडर के नेत्र आश्चर्य से फैले।

"बिल्कुल।"

"अगर यह बात है।" कमांडर बोला, "तो गोल्डी वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन या वर्ल्ड बॉक्सिंग काउंसिल में जॉनी बैंजो के खिलाफ अपनी शिकायत दर्ज क्यों नहीं करा देता, वह लोग अपने आप सारा मामला सुलझा देंगे।"

"इसमें कोई शक नहीं।" गंगाधर महन्त बोले, "कि वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन या काउंसिल सारा मामला सुलझा देगी, लेकिन आफत तो ये है कि गोल्डी इस तरह किसी की भी मदद हासिल नहीं करना चाहता और उसका इस प्रकार मदद हासिल न करना जायाज भी है, क्योंकि अगर वह मदद हासिल करता है, तो सबसे पहले उसका उन लोगों के सामने यही रहस्य खुलेगा कि वो नपुंसक है और यही गोल्डी नहीं चाहता कि उसका वो रहस्य लोगों के सामने खुले।"

"ओह !"

"इसीलिये तो उसने अमरीकन पुलिस की मदद भी हासिल नहीं की। वरना आज की तारीख में वो अमरीका के किसी पुलिस स्टेशन में जाकर एक कम्प्लेंट भी दर्ज करा देता, तो वहाँ की पुलिस अपने आप ब्लैकमेलरों की ऐसी-तैसी कर देती।"

कमांडर करण सक्सेना सन्न-सी अवस्था में बैठा रहा।

"अब मुझे क्या करना है ?"

"तुमने अब सबसे पहले अमरीका जाना है और वहाँ जाकर ब्लैकमेलरों के शिकंजे से वह तीनों फ़िल्में हासिल

"यानि मेरे अमरीका रवाना होने में सिर्फ चंद घण्टे बाकी हैं।"

"बिल्कुल। उससे पहले अगर तुम कोई काम करना चाहते हो, तो कर सकते हो।"

"मैं एक काम करना चाहता हूँ।" कमांडर झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ।

"क्या?"

"मैं फिल्मों में नील के तथा उसके साथ जो नौजवान है, उनके कुछ फोटोग्राफ्स बनवाना चाहता हूँ।"

"ठीक है, तुम फोटोग्राफ्स बनवा सकते हो, मुझे कोई एतराज नहीं।" गंगाधर महन्त ने फौरन पेन ड्राइव निकालकर कमांडर की तरफ बढ़ा दी, "यह लो, अब यह पेन ड्राइव तुम अपने पास रखो, मिशन के दौरान यह पेन ड्राइव तुम्हारे काफी काम आयेगी।"

"थैंक्यू।" कमांडर ने पेन ड्राइव पकड़ ली।

यही वो पल था, जब वह रॉ एजेन्ट भी आ गया, जिसने पासपोर्ट, वीजा और टिकट का इंतजाम करना था।

उसने अपना काम कर दिखाया था, सुबह की पांच बजे की फ्लाइट का उसके पास कन्फर्म टिकट था।

कमांडर करण सक्सेना का पासपोर्ट 'विजय कुमार' के नाम से बनवाया गया था।

इतना ही नहीं, मिशन पर रवाना होने से पहले गंगाधर महन्त ने उसे खास चेतावनी दी कि वो उस मिशन में सी.आई.ए. के टकराव से बचे। क्योंकि उसके पास समय कम था और उसने काम ज्यादा करना था।

□□□

अमरीका का लास वेगास शहर !

यह वो जगह है, जिसे बॉक्सिंग का तीर्थ कहा जाता है ।

पूरी दुनिया में बॉक्सिंग के सबसे ज्यादा मुकाबले इसी शहर में होते है, यही वो शहर है, जहाँ दुनिया के कोने-कोने से मुक्केबाज आकर बसे तथा फिर उन्होंने बेशुमार दौलत और यश प्राप्त किया । यहाँ करोड़ों डॉलर के बड़े-बड़े मुकाबले होते हैं, बड़ा जबरदस्त सट्टा लगता है और रातों-रात इंसानों की जिंदगियां बनती-बिगड़ती हैं ।

फकीर से लेकर अरबपति आदमी तक यहाँ बॉक्सिंग के खेल से जुड़ा हुआ है ।

गोल्डी इस समय भी काफी घबराया हुआ था ।

वह चंद सेकंड पहले ही लास वेगास शहर के उस एयरपोर्ट पर उतरा था, इस समय भी उसे यही चिंता सता रही थी कि कहीं कोई उसे पहचान न ले ।

उस शहर में उसके पहचान जाने के चांस और ज्यादा थे, क्योंकि वहाँ का तो बच्चा-बच्चा उसका दीवाना था ।

हवाई जहाज से उतरकर वो काफी तेजी से कस्टम की तरफ बढ़ा, शुक्र था कि अभी तक किसी की निगाह उसके नकली बालों के विग या नकली दाढ़ी-मूंछों पर नहीं पड़ी थी ।

कस्टम पर एक बार फिर उसका जाली पासपोर्ट चेक किया गया, गोल्डी के सीने पर हथौड़े पड़ने लगे, हर पल जबरदस्त सस्पेंस का पल था, वह नहीं जानता था कि किस पल क्या हो जाये ?

उसका जाली पासपोर्ट एक बार फिर कस्टम ऑफिसरों की आंखों में धूल झोंकने में कामयाब रहा था, कस्टम से निपटने के बाद गोल्डी एयरपोर्ट के उस टैरेस की तरफ बढ़ा,

जहाँ ढेर सारी भीड़ जमा थी । वहाँ वो लोग थे, जो एयरपोर्ट पर अपने नाते-रिश्तेदारों या दोस्तों को रिसीव करने आये थे । गोल्डी जानता था, उन लोगों में वहाँ उसे रिसीव करने के लिये कोई नहीं है ।

इसलिये वो टैरेस पर एक सेकंड के लिये भी नहीं रुका, बस वह तेज-तेज कदमों से आगे की तरफ बढ़ गया ।

तभी किसी ने पीछे से अपना भारी-भरकम हाथ गोल्डी के कंधे पर रखा ।

गोल्डी को ऐसा लगा, जैसे एकदम उसके प्राण निकल गये हों ।

"मिस्टर गोल्डी !"

गोल्डी के रहे-सहे होश भी उड़ गये, वह थर-थर कांपता हुआ पलटा ।

उसके सामने पैंतालीस-पचास साल का एक काफी तन्दुरुस्त आदमी खड़ा था । वह सूटेड-बूटेड था, उसका चेहरा भारी था, उसके हाथ की सभी उंगलियों में सोने की भारी-भरकम अंगूठियां थीं, जिनमें बेशकीमती हीरे-पन्ने जड़े थे । कुल मिलाकर वह व्यक्ति पहली दृष्टि में ही अरबपति नजर आ रहा था, जिसके पास अकूत दौलत थी, अकूत धन !

उस व्यक्ति को अपने सामने देखकर गोल्डी सकपकाया ।

"य...यह अभी आपने किसका नाम लिया मिस्टर ?"

"बकवास मत करो ।" वह व्यक्ति सांप की तरह फुंफकार उठा, "तुम तमाम दुनिया की आंखों में धूल झोंक सकते हो गोल्डी, लेकिन मेरी आंखों में नहीं ।"

"प...परन्तु मैं गोल्डी कहाँ हूँ ?"

गोल्डी बिना चूं-चपड़ किये कार की पिछली सीट पर बैठ गया, वह व्यक्ति भी उसके बराबर में ही बैठ गया था।

उसी पल शोफर ने ड्राइविंग सीट संभाल ली।

तुरन्त वह बहुमूल्य कार लास वेगास शहर की साफ़-सुथरी सड़क पर दौड़ने लगी।

□□□

वह आदमी सचमुच कोई मामूली आदमी नहीं था, वह बॉक्सिंग की दुनिया की सबसे बड़ी तोप था।

उसका नाम बादशाह करीम शेख नूरानी था।

यूं तो बादशाह करीम शेख नूरानी की पैदाइश कुवैत की थी, लेकिन पिछले बीस सालों से उसने अमरीका के उसी लास वेगास शहर में डेरा डाला हुआ था। इतना ही नहीं, अब तो उसने जुगाड़बाज़ी करके किसी प्रकार अमरीका की नागरिकता भी हासिल कर ली थी।

आज की तारीख में बादशाह करीम शेख नूरानी बॉक्सिंग की दुनिया का सबसे बड़ा प्रमोटर था, उसके बारे में प्रसिद्ध था कि किसी भी बॉक्सर को रातों-रात आसमान की बुलंदियों तक पहुंचा देने की कुव्वत उसके अन्दर है।

उसने बॉक्सिंग की उसी दुनिया से इतना धन कमाया था, जिसकी कोई आसानी से कल्पना भी न कर सके।

फिर उसका सट्टे का भी बहुत बड़ा कारोबार था, सट्टे की नब्बे फीसदी मार्किट उसके ही हाथों में थी और बॉक्सिंग की दुनिया के प्रशंसक अपने-अपने फेवरेट बॉक्सरों के ऊपर जो धन लगाते थे, उसका काफी सारा हिस्सा बादशाह करीम शेख नूरानी की तिजोरी में ही पहुंचता था।

बादशाह करीम शेख नूरानी जितना दौलतमन्द आदमी था, उतना शानो-शौकत से जीने वाला आदमी भी था ।

'बादशाह' यह आलीशान रुतबा उसने अपने नाम के आगे फैशन के तौर पर जोड़ रखा था । दरअसल अपने आपको 'बादशाह' कहलवाने में उसे बड़ा फ़ख्र महसूस होता था ।

वह समझता था कि वो सच में ही बादशाह है, बॉक्सिंग की दुनिया का बेताज बादशाह !

□□□

रॉल्स रॉयस बड़ी शान से सड़क पर दौड़ी जा रही थी । बादशाह करीम शेख नूरानी इस समय भी काफी झुंझलाया हुआ था और उसके चेहरे पर कड़वाहट के निशान थे ।

"अपनी यह नकली दाढ़ी-मूंछे उतार दो ।" उसने थोड़े विषैले लहजे में गोल्डी को पुनः आदेश दिया, "अब इसकी कोई जरुरत नहीं है ।"

गोल्डी ने चुपचाप अपनी नकली दाढ़ी-मूंछे उतार दी, अपना नकली बालों का विग उतारना भी वह नहीं भूला ।

पलक झपकते ही वो अपने असली रुप में आ गया था ।

इस बीच बादशाह करीम शेख नूरानी ने सोने के होल्डर में लगा एक पाइप सुलगा लिया और उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

"तुम हिन्दुस्तान किसलिये गये थे ?" तभी बादशाह ने धमाका-सा किया ।

गोल्डी सकपकाया ।

"अब यह मत कह देना ।" बादशाह करीम शेख नूरानी गुर्राकर बोला, "कि तुम हिन्दुस्तान नहीं गये थे । मेरे पास पूरी रिपोर्ट है, तुम न सिर्फ जाली पासपोर्ट और जाली नाम से हिन्दुस्तान गये बल्कि वहाँ जाकर हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी जासूसी संस्था रॉ के चीफ से भी मिले ।"

उसकी जानकारी पर गोल्डी के नेत्र हैरानी से फैलते चले गये ।

"तुम मूर्ख हो गोल्डी, अव्वल दर्जे के मूर्ख ।" बादशाह करीम शेख नरानी उसे घुड़कता हुआ बोला, "तुम नहीं जानते, आज की तारीख में दुनिया के अंदर तुम्हारी क्या पोजिशन है, क्या रुतबा है । फिर तुम्हारी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण मुकाबला होने वाला है । मत भूलो, इस बार तुम्हें मैं प्रमोट कर रहा हूँ, मेरा तुम्हारे ऊपर दस करोड़ डॉलर का दांव लगा हुआ है । अगर तुम कहीं जाली पासपोर्ट पर सफर करते हुए पकड़े जाते, तो तुम्हें न सिर्फ जेल की हवा खानी पड़ती बल्कि वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन तुम्हें बॉक्सिंग मुकाबले से भी बर्खास्त कर देती और इस तरह मेरे दस करोड़ डॉलर की भारी-भरकम रकम डूब जाती । दस करोड़ डॉलर, इतनी बड़ी रकम किसी को भी दिवालिया बनाने के लिये काफी है ।"

गोल्डी ने जोर से गले का थूक सटका ।

वह जानता था, बादशाह करीम शेख नूरानी बिल्कुल ठीक कह रहा है ।

"जवाब दो, तुमने इतना खतरनाक कदम क्यों उठाया ?"

"म...मैं इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता ।"

"क्यों नहीं दे सकते ?" बादशाह पुनः गुर्रा उठा, "मत भूलो, मैं तुम्हारा प्रमोटर हूँ, इसलिये तुम्हारी तमाम गतिविधियों पर नजर रखना मेरा कर्त्तव्य है, और फिर वैसे भी यह मामूली घटना नहीं है, हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी जासूसी संस्था के चीफ जैसे व्यक्ति से तुम्हारी सनसनीखेज मुलाकात का रहस्य अगर कहीं खुल जाता, तो पूरे अमरीका में तहलका मच जाना था। सी.आई.ए. ने तुमसे पूछताछ करनी थी, तुम्हें संदिग्ध व्यक्ति घोषित कर दिया जाना था और इस सबका सीधा असर बॉक्सिंग मुकाबले पर पड़ता, मेरे दस करोड़ डॉलर पर पड़ता।"

"बेकार की बातें मत करो।" गोल्डी पहली मर्तबा बोला, "दस करोड़ डॉलर ! दस करोड़ डॉलर !! मैंने जो कुछ किया, तुम्हारे दस करोड़ डॉलर की खातिर ही किया, मुकाबले की खातिर ही किया।"

बादशाह करीम शेख नूरानी के नेत्र हैरत से फट पड़े, "मु...मुकाबले की खातिर !"

"हाँ-हाँ, मुकाबले की खातिर !"

"क्यों, मुकाबले पर क्या आफत आ गयी थी ?" बादशाह की आवाज में जबरदस्त सस्पेंस था।

"मुझे ब्लैकमेल किया जा रहा है।" गोल्डी अर्द्धविक्षिप्तों की तरह बोला, "मेरे ऊपर इस बात का दबाव डाला जा रहा है कि 27 अगस्त तक मैं मुकाबले से अपना नाम वापस ले लूं।"

"य...यह क्या कह रहे हो तुम ?" बादशाह करीम शेख नूरानी के शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी।

"मैं वो कह रहा हूँ, जो सच्चाई है।" गोल्डी ने दांत किटकिटाये।

अपने कारोबार से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण फैसले लेता था ।

बादशाह करीम शेख नूरानी, गोल्डी के साथ सीधा अपने उसी ऑफिस में पहुंचा ।

"अगर तुम्हें ब्लैकमेल किया जा रहा था ।" बादशाह ने अपनी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठते हुए फ़ौरन कहा, "तो तुम्हें अमरीकन पुलिस की मदद लेनी चाहिये थी ।"

"अमरीकन पुलिस में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी ।" गोल्डी ने दो टूक जवाब दिया ।

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मेरे नपुंसक होने का राज़ पूरी दुनिया को मालूम हो ।"

गोल्डी भी बादशाह करीम शेख नूरानी के सामने वाली कुर्सी पर बैठ चुका था ।

"लेकिन तुम मुझसे तो इसका जिक्र कर ही सकते थे ।" बादशाह करीम शेख नूरानी ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा और पाइप का कश लगाया, "मैं भले ही तुम्हारे लिये कुछ न करता, परन्तु कम-से-कम अपने दस करोड़ डॉलर की खातिर तो उन ब्लैकमेलरों की ऐसी-तैसी फेर-ही-फेर सकता था । तुम जानते ही हो, मैंने ऐसे बदमाशों की अक्ल ठिकाने लगाने के लिये ही एक पूरा गैंग बना रखा है, जिसका लीडर मेरा अपना सगा भतीजा प्रिंस इरफान शेख है । इतना ही नहीं, मेरे उस गैंग में अब्दाली जैसे खतरनाक जल्लाद भी हैं, जो किसी भी इंसान को पलक झपकते ही मार डालने की हिम्मत रखते हैं ।"

"मैं सब जानता हूँ ।"

"फिर तुमने मुझसे इस बात का जिक्र क्यों नहीं किया ?"

"क्योंकि मैं आपके ऊपर यह राज़ उजागर नहीं करना चाहता था।"

"तुम पागल हो, एकदम पागल !" बादशाह करीम शेख नूरानी ने झुंझलाते हुए पाइप का कश लगाया, "अगर तुम जरा भी बुद्धि से सोचते, तो तुम्हें महसूस होता कि आज की तारीख में तुम्हारा सबसे बड़ा हितैषी मैं हूँ, जो तुम्हारे लिये कुछ भी कर सकता है।"

गोल्डी थोड़ा आन्दोलित नजर आने लगा।

"अब तुम हिन्दुस्तान से क्या फाइनल करके आये हो।"

"कोई खास बात फाइनल करके नहीं आया।" गोल्डी बैचैनीपूर्वक पहलू बदलकर बोला, "मैंने रॉ चीफ को सारी कहानी सुना दी है और उन्होंने मुझसे वायदा किया है कि वो मेरे पीछे-पीछे ही अपना एक जासूस भेज रहे हैं, जो मुझे ब्लैकमेलरों के फंदे से निकालेगा और उनसे बाकी तीन ब्लू फिल्म हासिल करेगा।"

"जासूस कौन ?"

"कमांडर करण सक्सेना !"

"क...कमांडर करण सक्सेना !" बादशाह करीम शेख नूरानी के हाथ से पाइप छूटते-छूटते बचा, उसके नेत्र अचम्भे से फटे, "वही कमांडर करण सक्सेना , जो पहले भी अमरीका आकर सी.आई.ए. जैसी संस्था की नाक में नकेल डाल चुका है ?"

"हाँ, वही।"

"तौबा ! मच्छरों को मारने के लिए शेर भेजा जा रहा है।"

"क्यों नहीं किया जा सकता ।" बादशाह करीम शेख नूरानी के चेहरे की तमाम माँस-पेशियां तन गयीं और उसने पाइप की राख ट्रे में झाड़ी, "लगता है, मुझे अभी भी पूरा मिशन अपने गैंग को ही सौंपना पड़ेगा । मेरे एक सवाल का जवाब दो, अगर किसी दिन नील की लाश तालाब में तैरती मिले, तो तुम्हें कैसा लगेगा ?"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो ?" गोल्डी के नेत्र दहशत से फटे ।

"नील को ठिकाने लगाने के और भी बहुत-से तरीके हैं । उसका एक्सीडेण्ट हो सकता है, किसी दिन सुबह ही सुबह कोई भारी-भरकम ट्रक उसे सड़क पर कुचलता चला जायेगा और बस खेल खत्म ! या फिर वह बीस-तीस माले की किसी ऊंची बिल्डिंग से नीचे गिर पड़ेगी, इसके अलावा उसे इलेक्ट्रिक शॉक भी लग सकता है । अब्दाली यह काम बखूबी कर देगा, वह ऐसे कामों का एक्सपर्ट है और पहले भी कई मर्तबा इस तरह के कामों को अंजाम दे चुका है ।"

"त...तुम नील की हत्या कराना चाहते हो ?"

"मैंने कब कहा, मैं हत्या कराना चाहता हूँ । वह आत्महत्या का केस होगा या फिर एक्सीडेण्ट का केस, मगर नील से हमेशा-हमेशा के लिये छुटकारा पाने का वह तुम्हारे पास एक बेहतरीन तरीका होगा । जवाब दो, अगर नील के साथ इस तरह की कोई दुर्घटना घटती है, तो तुम्हें कोई एतराज तो न होगा ?"

गोल्डी आश्चर्य से मुँह बाये बादशाह का चेहरा देखने लगा ।

"ज्यादा सोचो मत !" बादशाह पाइप का कश लगाता हुआ बोला, "मैं नहीं समझता कि इस केस में तुम्हें ज्यादा

सोचने-विचारने की जरूरत है । नील बहुत बदजात औरत है, वह तुम्हें पहले ही काफी रंग दिखा चुकी है, वह तुम्हारी कभी नहीं हो सकती । तुम अगर उसे अपने पास रखने की कोशिश करोगे, तो वह फिर भागेगी, फिर कोई ऐसा बखेड़ा खड़ा करने की कोशिश करेगी, जिससे तुम्हारी बदनामी हो, तुम्हारी ऐसी-तैसी हो । इसलिये अब यही एक तरीका बचता है कि नील को हमेशा-हमेशा के लिए रास्ते से हटा दिया जाये । मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?"

गोल्डी विचलित हो उठा ।

वह जानता था कि बादशाह करीम शेख नूरानी काफी हद तक ठीक कह रहा है ।

गोल्डी ने अपनी गर्दन झुका ली, फिर बेहद धीमे स्वर में बोला, "तुम्हारी जो मर्जी आये करो ।"

"गुड, मैं जानता था कि तुम्हारे जैसा समझदार आदमी बिल्कुल यही फैसला करेगा ।" बादशाह ने उत्साहपूर्वक कहा ।

□□□

फिर बादशाह करीम शेख नूरानी ने अपना पाइप बुझाकर टेबल पर एक तरफ रख दिया, उसके बाद अपने भतीजे प्रिंस इरफान शेख और जल्लाद अब्दाली को वहाँ बुलाया ।

प्रिंस इरफान शेख तीस-बत्तीस साल का एक-खूबसूरत-सा नौजवान था, वह अपने रख-रखाव से गुण्डा तो हर्गिज भी नजर नहीं आता था बल्कि किसी रियासत का राजकुमार ही ज्यादा लगता था । जिस तरह बादशाह करीम शेख नूरानी ने अपने नाम के आगे बादशाह सजावट

के तौर पर जोड़ रखा था, उसी तरह इरफान शेख ने भी अपने नाम के आगे प्रिंस सजावट के तौर पर जोड़ रखा था ।

बादशाह करीम शेख नूरानी के बाद उसकी सारी मिल्कियत का मालिक प्रिंस इरफान शेख ही बनना था । सच्चाई तो ये है कि प्रिंस इरफान शेख लोगों को दण्डित करने के मामले में बादशाह से भी दो हाथ आगे था ।

अब्दाली !

अब्दाली की उम्र भी पैंतीस साल से ज्यादा नहीं थी । वह सात फुट लम्बा बेहद भारी-भरकम जिस्म का मालिक काला हब्शी था । कभी वो लास वेगास शहर में बॉक्सर बनने आया था, लेकिन जब बॉक्सर न बन सका, तो वह लास वेगास शहर में ही पेशेवर कातिल बन गया और मोटी-मोटी सुपारियां लेकर लोगों की हत्यायें करने लगा, इससे उसे काफी मोटी आमदनी होने लगी थी ।

फिर बाद में वो बादशाह करीम शेख नूरानी के गैंग में शामिल हो गया और उसका परमानेन्ट जल्लाद बन बैठा ।

आज तक वह बेशुमार लोगों को ऊपर पहुंचा चुका था ।

कितने ?

उनकी सही संख्या अब्दाली को भी मालूम न थी ।

□□□

प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली, बादशाह के सामने इज्जत से सिर झुकाये खड़े थे ।

बादशाह ने उन्हें सबसे पहले संक्षेप में पूरा घटनाक्रम समझाया ।

“अब हमें क्या करना है ?” प्रिंस इरफान शेख ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

“थोड़ी ही देर में एक फ्लाइट हिन्दुस्तान से यहाँ पहुंचने वाली है ।” बादशाह करीम शेख नूरानी अपना हाथ हिलाता हुआ बोला, “उस फ्लाइट में हिन्दुस्तान का सबसे खतरनाक जासूस कमांडर करण सक्सेना यहाँ पहुंचेगा, तुमने उसके किसी मामले में टांग नहीं अड़ानी है और न ही उसके रास्ते में रुकावट पैदा करने की कोई कोशिश करनी है । तुम लोगों का सिर्फ एक ही काम होगा, अपने आदमियों के द्वारा कमांडर की गतिविधियों पर नजर रखना ।”

“उससे क्या फायदा बादशाह ?” प्रिंस ने पूछा ।

“बहुत बड़ा फायदा है ।” बादशाह करीम शेख नूरानी बोला, “दरअसल कमांडर करण सक्सेना यहाँ आने के बाद ब्लैकमेलरों तक पहुंचने का प्रयास करेगा, वह चूंकि ऐसे मामलों में तुमसे ज्यादा एक्सपर्ट है, इसलिये ज्यादा जल्दी कामयाब होगा । वह ब्लैकमेलरों के शिकंजे से जैसे ही सभी फिल्मस हासिल करेगा, तुम लोगों ने फौरन हरकत में आ जाना है । कमांडर करण सक्सेना उन फिल्मों को ब्लैकमेलरों से छीनेगा और तुमने उन्हें कमांडर से छीन लेना है ।”

“यानि हम लोगों ने चोर पर मोर बनकर दिखाना है ।”

“बिल्कुल ।”

“और मैडम नील का क्या होगा बादशाह ?”

“अब्दाली !” बादशाह ने काले भुजंग अब्दाली की तरफ देखा, “नील को तुमने हैंडल करना है ।”

“म...मैंने ।”

□□□

चारों तरफ उस समय भी रात की गहन कालिमा फैली हई थी, जब वो बहुमूल्य रॉल्स रॉयस कार गोल्डी के महल जैसे घर में जाकर रुकी और गोल्डी कंपकंपाती टांगें जमीन पर रखकर कार से बाहर निकला।

वह पसीनों में लथपथ हो रहा था, उसके चेहरे की रंगत पीली जर्द थी।

बादशाह करीम शेख नूरानी ने उसे अपने ही शोफर के साथ भेज दिया था, ताकि वह उसे उसके बंगले तक छोड़ आये।

बंगला !

वह सचमुच महल की तरह आलीशान और बड़ा था। उसमें साठ कमरे थे, दस नौकर उसकी साज-सफाई के लिये नियुक्त थे, इसके अलावा दुनिया की हर नेमत उस बंगले के अंदर थी, परन्तु सब बेकार थी।

उसी बंगले में नील की माँ मारथा भी रहती थी।

गोल्डी हिन्दुस्तान जाने से पहले मारथा से बोलकर गया था कि वह उसकी बेटी को ढूंढने न्यूयार्क जा रहा है।

मारथा को सिर्फ यही पता था कि उसकी बेटी किसी के साथ भाग गयी है। गोल्डी की हिम्मत नहीं हुई थी कि उसकी बेटी की ब्ल्यू फिल्म वह उसे दिखाये, इसलिये उसने मारथा को यह भी नहीं बताया था कि उसकी बेटी के कारण कितना जबरदस्त हंगामा उसकी जिंदगी में हो रहा है।

वह जब जाने लगा, तब बूढ़ी मारथा ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था, "गोल्डी बेटे, जानती हूँ कि नील तुम्हारे योग्य नहीं। वह बेवकूफ लड़की नहीं

जानती कि किसी विश्व चैम्पियन की बीवी बनना कितने बड़े सौभाग्य की बात होती है, काश- वह तुम्हें समझ पायी होती । लेकिन मैं उसकी माँ हूँ मेरे बच्चे, उसकी तमाम गलतियों के बावजूद उसके लिये मेरे दिल में प्यार है, म...मैं उसे भुला नहीं सकती, क...कभी नहीं भुला सकती ।”

मारथा के उन शब्दों को याद करके गोल्डी की आंखों में आंसू छलछला आये ।

□□□

गोल्डी ने कॉलबेल दबाई ।

रॉल्स रॉयस उसे वहाँ छोड़कर अब जा चुकी थी ।

कॉलबेल दबाते ही उसके एक नौकर ने जल्दी से दरवाजा खोला ।

“स...साहब !” गोल्डी को इतनी रात गये आया देखकर नौकर चौंक पड़ा, फिर उसने जोरदार सेल्यूट मारा, “गुड मार्निंग साहब !”

हालांकि अभी सुबह नहीं हुई थी । परन्तु गोल्डी उस समय इस कदर परेशान था कि ऐसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने की उसे फुर्सत ही कहाँ थी ।

बार-बार उसकी आंखों के गिर्द नील का चेहरा चक्कर काट जाता ।

नील, जिससे वो आज भी प्यार करता था ।

उसने उसे कितना भुला देना चाहा, परन्तु वह उसे कहाँ भुला पाया था ।

गोल्डी अभी गलियारे में चंद कदम ही चला होगा कि तभी व्हील चेयर की आवाज सुनकर वो ठिठक गया ।

देखते ही देखते सामने वाले कमरे से एक व्हील चेयर बाहर निकली, जिस पर मारथा बैठी थी । मारथा, लगभग पचपन-साठ साल की उम्र ! लेकिन गोरा-चिट्टा रंग, नीली-नीली आंखें, जिनमें हलका सूनापन था, मगर चेहरे की त्वचा अभी भी चमक रही थी । ऐसा लगता था, जैसे व्हील चेयर पर साक्षात् कोई देवी बैठी हो । बूढ़ी मारथा ने अपने शरीर पर इस समय सफेद गाउन पहन रखा था, जिसमें उसकी वैभवता कुछ और बढ़ गयी थी ।

"अ...आप अभी तक सोई नहीं ममा ?" मारथा को देखते ही गोल्डी के सीने पर घूंसा-सा पड़ा था ।

"ज...जब जवान बेटी घर से बाहर हो, तो एक माँ को कहीं नींद आती है मेरे बच्चे !" मारथा ने बेहद भाव-विह्व्ल स्वर में कहा, "क...क्या नील के बारे में कुछ पता चला, वह तुम्हें कहीं मिली बेटे ?"

तड़प उठा गोल्डी ।

मारथा के उस सवाल को सुनकर उसे ऐसा लगा, जैसे कोई धीरे-धीरे उसके दिल में खंजर पेवश्त कर रहा हो ।

वह कैसे कहता कि अपनी जिस बेटी का वो इतनी बेसब्री से इन्तजार कर रही है, वो उसकी उसी बेटी के खिलाफ इस समय मौत का फरमान जारी करके आ रहा है ।

"त...तुम कुछ बोलते क्यों नहीं बेटे ?" मारथा ने उसका हाथ पकड़कर बुरी तरह झिंझोड़ा, "त...तुम खामोश क्यों हो, क्या नील तुम्हें नहीं मिली ?"

"नहीं ममा, नहीं ।" गोल्डी, मारथा की छाती से लिपटकर रो पड़ा, "नील मुझे कहीं नहीं मिली, कहीं नहीं ।"

मारथा ने बड़े प्यार से उसके बालों को सहलाया, फिर अपनी दोनों हथेलियों में उसका चेहरा भरकर ऊपर उठा लिया था ।

"तुमने उसे सब जगह ढूंढा मेरे बच्चे ?"

"ह...हाँ ममा ! हाँ, म...मैंने उसे सब जगह ढूंढा । न्यूयार्क में हर उस जगह तलाश किया, जहाँ उसके होने की जरा भी संभावना थी । ल...लेकिन वो मुझे कहीं नहीं मिली, कहीं नहीं । ए...एक बात बोलूं ममा ?" गोल्डी बड़ी मुश्किल से मारथा की नजरों का सामना कर पा रहा था ।

"ब...बोलो ।"

"अ...अब तो ऐसा लगता है ममा !" ममा गोल्डी के मुँह से हिचकी-सी उबली, "जैसे नील हमसे बहुत दूर चली गयी है और अब वो यहाँ कभी लौटकर नहीं आयेगी ।"

छलनी-छलनी हो गया था मारथा का दिल, छटपटा उठी वो बूढ़ी औरत !

"त...तुम सच कहते हो मेरे बच्चे !" मारथा ने उसे कसकर अपने अंक में समेट लिया, "तुम सच कहते हो, अब तो मुझे भी ऐसा ही लगता है कि नील कभी वापस नहीं आयेगी, कभी नहीं ।"

मारथा की बूढ़ी आंखों में भी अब आंसुओं की नन्हीं-नन्हीं बूंदें टिमटिमाने लगी थीं, फिर उसने गोल्डी को अपनी बांहों से आजाद कर दिया और व्हील चेयर के पहिए धीरे-धीरे धकेलती हुई अपने बेडरूम की तरफ बढ़ गयी ।

गोल्डी ने भी आंसू साफ किये और अपने कमरे की तरफ बढ़ा ।

अभियान का पहला दिन- 21 अगस्त

इण्डियन एयरलाइंस का वो यात्रीवाहक विमान भयानक गर्जना करता हुआ लास वेगास नवादा शहर के एयरपोर्ट पर उतरा ।

और उसके बाद उस हवाई जहाज में से उतरा था, कमांडर करण सक्सेना !

वो कमांडर , जिसका दुश्मन की धरती पर कदम रखने का हमेशा एक ही मतलब होता है, तबाही ! जबरदस्त कत्लोगारत ! खून-खराबा ! और मौत का ऐसा नंगा नाच, जिसे देखकर दुश्मन के छक्के छूट जाते हैं ।

कमांडर करण सक्सेना , जो अपने साथ ऐसी बर्बादी लाता है, जिसके निशान फिर सालों-साल नहीं मिट पाते ।

कमांडर काला लम्बा ओवरकोट और क्लेंसी हैट में सजा-धजा एक ब्रीफकेस लेकर एयरपोर्ट से बाहर निकला, उसके बाद उसने टैक्सी पकड़ी और सबसे पहले गोल्डी के बंगले की तरफ रवाना हो गया ।

दिन अब खूब अच्छी तरह निकल आया था ।

सुबह के सात बज रहे थे ।

फौरन ही कमांडर का पीछा भी शुरू हो गया ।

जल्द ही कमांडर यह बात भांप गया था कि उसका पीछा किया जा रहा है, हालांकि पीछा काफी सावधानी से किया जा रहा था, मगर फिर भी कमांडर जैसे तेज-तर्रार जासूस की निगाहों से बच पाना आसान नहीं होता ।

मुस्करा दिया कमांडर !

उसके वहाँ कदम रखते ही खेल शुरू हो चुका था, मौत का खेल ! अब हर किसी ने अपनी-अपनी चाल चलनी थी ।

गला दबा चुका होता ।" गोल्डी की आवाज में सर्प जैसी फुंफकार थी ।

"मैं तुम्हारी भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकता हूँ गोल्डी !" कमांडर ने 'डनहिल' का कश लगाया और फिर सहानुभूतिपूर्ण अंदाज में गोल्डी की तरफ देखा, "तुम्हारे ऊपर इस समय क्या गुजर रही है, इसका अंदाजा कोई भी आसानी से लगा सकता है । फिर भी मैं यही कहूँगा, तुम्हें धीरज से काम लेना चाहिये ।"

"धीरज, धीरज !" गोल्डी आक्रोश में झल्ला उठा, "मैं और कितना धीरज से काम लूं । आज 21 अगस्त हो चुकी है, जबकि मुकाबले से नाम वापस लेने की आखिरी तारीख 27 अगस्त है । मेरे पास सिर्फ सात दिन बचे हैं, सिर्फ सात दिन !"

"सात दिन !" कमांडर के होठों पर मुस्कान उभर आई, "सात दिन 'सिर्फ' नहीं होते मेरे दोस्त, सात दिन में दुनिया बदल जाया करती है । कभी-कभी तो चंद घण्टे या चंद मिनट ही जिंदगी के बड़े फैसले करने में सहायक हो जाते हैं, जबकि हमारे पास तो फिर भी पूरे सात दिन हैं ।"

"यानि तुम्हें उम्मीद है कि सात दिन में कोई न कोई करिश्मा हो जायेगा ।"

"बिल्कुल हो जायेगा ।" कमांडर ने 'डनहिल' का कश लगाया, "अब मेरे एक सवाल का जवाब दो ।"

"पूछो ।"

"क्या तुम नील की किसी ऐसी सहेली के बारे में जानते हो, जो उसके बहुत करीब रही हो और जिसे वो अपने तमाम राज बता देती हो ?"

"नहीं ।" गोल्डी की गर्दन तुरंत इंकार में हिली, "मैं नील की किसी सहेली के बारे में नहीं जानता ।"

"जवाब देने में इतनी जल्दबाजी मत करो गोल्डी, अपने दिमाग पर थोड़ा जोर डालकार सोचो, शायद तुम्हें उसकी ऐसी कोई सहेली याद आ जाये । दरअसल ब्लैकमेलर को ढूंढ निकालने में नील की सहेली हमारी काफी मदद कर सकती है ।"

गोल्डी के चेहरे पर वैचारिक खामोशी छा गयी ।

और वह सचमुच अपने दिमाग पर जोर डालकर नील की किसी सहेली को याद करने की कोशिश करने लगा ।

"नहीं ।" उसकी गर्दन खूब सोचने-विचारने के बाद फिर इंकार में हिली, "नील की किसी सहेली का नाम मुझे मालूम नहीं है । दरअसल नील की जो सहेलियां थीं, वह सब बेहद वाहियात और आवारा किस्म की लड़कियां हैं, इसलिये इस बात का सवाल ही नहीं उठता कि नील उन्हें कभी यहाँ बंगले में लेकर आती ।"

"यानि तुम नील की किसी सहेली को नहीं जानते ?"

"नहीं ।"

"बंगले में नील सबसे ज्यादा किससे घुली-मिली रहती थी ?"

"किसी से नहीं रहती थी ।" गोल्डी बोला, "जब से मेरा एक्सीडेण्ट हुआ था, तब से उसका ज्यादातर समय बाहर क्लब वगैरा में ही गुजरता था । फिर उसे एल.एस.डी. के इंजेक्शन लेने की भी भयंकर आदत पड़ चुकी थी, दिन ढलने के बाद जब वो यहाँ आती, तो नशे में उसके कदम लड़खड़ा रहे होते, वह सीधी अपने कमरे में पहुंचती थी और वहाँ जाते ही सो जाती ।"

"तुमने कभी ऐसे बर्ताव के लिये नील को डांटा नहीं ?" कमांडर ने कुर्सी पर पहलू बदलते हुए कहा और फिर 'डनहिल' का एक कश लगाया ।

"डांटा, कई बार डांटा ।" गोल्डी आहत मुद्रा में बोला, "आखिर में मुझे ही रुसवा होना पड़ता था, क्योंकि वह एकदम से मेरे ऊपर चीखकर आती तथा फिर मेरी शारीरिक स्थिति का मजाक उड़ाने लगती । तंग आकर मैंने उससे कुछ कहना ही छोड़ दिया ।"

"यानि ब्लैकमेलर के बारे में अगर कोई जानकारी मिल सकती है, तो 'गैलार्ड क्लब' से ही मिल सकती है ।"

"बिल्कुल ।"

"अब मेरे एक आखिरी सवाल का जवाब और दो ।" कमांडर सिगरेट की राख एश-ट्रे में झाड़ता हुआ बोला, "मैं जब एयरपोर्ट से यहाँ आ रहा था, तो कुछ लोग मेरा पीछा कर रहे थे । क्या तुम बता सकते हो कि मेरे यहाँ आने की खबर तुम्हारे अलावा और किस-किसको है ?"

गोल्डी के चेहरे पर एकाएक जबरदस्त सन्नाटा छाता चला गया ।

वह कुछ विचलित हो उठा था और उसके चेहरे पर आतंक के भाव नजर आने लगे थे ।

"क्या बात है ?" कमांडर सीधा उसकी आंखों में झांकता हुआ बोला, "क्या तुम उन लोगों के बारे में कुछ नहीं जानते ?"

"य...यह बात नहीं ।" गोल्डी का सकपकाया स्वर ।

"फिर ?"

गोल्डी ने रुमाल निकालकर अपने चेहरे पर छलछला आयीं पसीने की बूंदें साफ की, फिर थोड़े कंपकंपाये स्वर

पहुंच जाओ और उससे ब्ल्यू फिल्म हासिल कर लो, तो वह तुमसे फिल्मस छीन लें ।”

“क…क्यों ?” कमांडर के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी, “फ़िल्में क्यों छीन लें ?”

“क्योंकि बादशाह को तुम्हारे ऊपर शक है ।” गोल्डी ने रूमाल से फिर अपने चेहरे का पसीना साफ किया, “बादशाह समझता है कि तुम बाद में उन फिल्मों को लेकर कोई गड़बड़ी पैदा कर सकते हो, इसलिये वह कोई रिस्क नहीं लेना चाहता । वह ठोस बिजनसमैन है, उसके मेरे ऊपर चूंकि दस करोड़ डॉलर लगे हैं, इसलिये वह इस मुकाबले को लेकर काफी चिन्तित है । अगर मुकाबला न हुआ, तो उसकी सारी रकम डूब जायेगी ।”

“बड़ा अजीब आदमी है यह बादशाह !” कमांडर ने उसकी हरकत पर हैरानी जाहिर की और फिर सिगरेट का टोटा एश-ट्रे में रगड़कर बुझाया ।

“तुम कुछ भी समझ सकते हो, जो हकीकत थी, मैंने तुम्हें बता दी ।”

“यानि फिलहाल मुझे बादशाह के आदमियों से कोई खतरा नहीं ।”

“हाँ ।”

“ठीक है ।” कमांडर झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया, “अब मुझे चलना चाहिये ।”

“कहाँ जा रहे हो ?” गोल्डी ने भी उसके साथ-साथ कुर्सी छोड़ी ।

“ब्लैकमेलर तक पहुँचने के लिये मुझे काफी तेजी से कदम उठाने हैं, जल्दी ही तुमसे फिर मुलाकात होगी ।”

गोल्डी, कमांडर को छोड़ने के लिये बंगले के मुख्य दरवाजे तक गया ।

बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी उस समय भी बंगले से थोड़ा फासले पर एक कार के अन्दर मौजूद थे ।

कमांडर के होंठों पर मुस्कान दौड़ गयी ।

अब उसे उन लोगों की कोई परवाह न थी, वह समझ चुका था कि अभी उनसे मुठभेड़ होने में काफी समय बाकी है ।

□□□

उसके बाद कमांडर ने कुछ काम बड़े आनन-फानन किये ।

जैसे सबसे पहले उसने वहाँ के एक फाइव स्टार इंटर कॉन्टिनेंटल होटल में अपने लिये एक सुइट बुक कराया और उसके बाद वो लास वेगास शहर में घूमने के लिये निकल पड़ा ।

वह शहर सचमुच बॉक्सिंग का तीर्थ था ।

वहाँ पब्लिक के ऊपर बॉक्सिंग का जो जुनून चढ़ा हुआ था, वह अलग ही नज़र आता था । खासतौर पर इस समय पूरे शहर के अन्दर गोल्डी और जॉनी बैंजो के मुकाबले की ही चर्चा थी ।

शहर में जगह-जगह गोल्डी और जॉनी बैंजो की बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगी थीं, होर्डिंग लगे थे । बच्चा, जवान या बूढ़ा, अगर कोई भी खाली था, तो उसी मुकाबले के बारे में बातें कर रहा था ।

ज्यादातर लोगों को यही उम्मीद थी कि गोल्डी जीतेगा ।

लेकिन उनमें कोई भी यह रहस्य नहीं जानता था कि जिस मुकाबले को लेकर शहर में इतनी चर्चा हो रही है, उसी मुकाबले के कारण पर्दे के पीछे कितना जबरदस्त हंगामा चल रहा है ।

अगर पब्लिक को उस हंगामे की जरा भी भनक होती, तो शायद गोल्डी के हजारों-लाखों प्रशंसक आक्रोश में चीखते-चिंघाड़ते हुए जॉनी बैंजो के ऊपर हमला करके खुद ही उस हंगामे का पटाक्षेप कर देते ।

मगर शायद उस हंगामे का पटाक्षेप इतनी आसानी से होना नहीं लिखा था ।

अभी खून बहना था ।

खून !

□□□

शाम धीरे-धीरे ढल रही थी, जैसे किसी सुंदरी के चेहरे से दोपहर का चाँदी की तरह दमकता आंचल सरक गया हो और अब उसकी जगह सुरमई आंचल ने ले ली हो ।

शाम के उस समय चार बज रहे थे, जब कमांडर ने 'गैलॉर्ड क्लब' में कदम रखा ।

गैलॉर्ड क्लब, वह शायद उस शहर का सबसे ज्यादा बदनाम क्लब था । ऊपर से तुर्रा यह, कि वह क्लब बना हुआ भी सबसे ज्यादा बदनाम जगह था ।

पूरे शहर में एक वही जगह ऐसी थी, जहाँ अय्याशी का हर सामान मिलता था । कुछ भी ले लो, बस जेब में नगद रोकड़ा होनी चाहिये ।

'गैलॉर्ड क्लब' की एक बहुत बड़ी खूबी और थी, उसकी लैंड लेडी चालीस-बयालीस साल की एक काली

यही बहुत बड़ा शुक्र था कि वो हब्शी औरत अभी अपनी आधी ही नंगी छातियां दिखा रही थी, वरना अगर उसका बस चलता, तो वह अपनी सारी की सारी छातियां ही गाउन से बाहर निकालकर रख देती ।

“मुझे नशा तो चाहिये ।” कमांडर उस हब्शी औरत की आँखों में झांककर थोड़े शरारती अंदाज में मुस्कराया, “लेकिन उस नशे का नाम ‘नील’ है ।”

“नील, यह कौन-सा नशा है बाबा ?” हब्शी औरत थोड़ी हैरानी से बोली, “अपन ने तो पूरी लाइफ में इस नाम का कोई नशा नहीं सुना ।”

“यह वो नशा है ।” कमांडर की शरारत कुछ और बढ़ गयी, “जो हेरोइन, मारिजुआना या एल.एस.डी. से भी ज्यादा तेज असर करता है । इसके अलावा इस नशे की एक और खूबी है ।”

“व....वो कौन-सी ?” हब्शी औरत की आवाज में सस्पेंस पैदा हो गया ।

“यह नशा मुफ्त मिलता है, बिल्कुल बेदाम बिना किसी मोल-तौल के, एकदम गठरी भरकर ।”

“अच्छा-अच्छा वो नील !” हब्शी औरत खिलखिलाकर हंसी, “समझी-समझी, तो तुम उस गरमा-गरम छोकरी नील की बात कर रहे हो बाबा, जो गोल्डी नाम के धुआंधार बॉक्सर की बीवी है ।”

“बिल्कुल ठीक ।” कमांडर ने बड़ी स्टाइल से अपना क्लेन्सी हैट आगे झुकाया, “मैं उसी नील की बात कर रहा हूँ ।”

“क्या बात है बाबा !” हब्शी औरत ने भी अब बड़े शरारती अंदाज में कमांडर की आँखों में झांकते हुए अपनी

भंवें मटकायीं, “आज उस छोकरी लोग की याद कैसे आ गयी, अगर नशा ही करना है, तो यह नशा करो न बाबा !”

“नहीं, मुझे हाईडोज चाहिये, जो कोई नील जैसी छोकरी ही दे सकती है ।”

“अगर छोकरी के साथ ही हाईडोज लेनी है, तो यहाँ किस वास्ते खड़े होकर टाइम वेस्ट कर रहे हो । यहाँ हॉल में बहुत सारी छोकरी लोग हैं, किसी को भी पकड़कर अन्दर रुम में ले जाओ, सब रेडी मिलेंगी ।”

“नहीं, मुझे नील ही चाहिये ।” कमांडर थोड़े दृढ़ शब्दों में बोला, “दरअसल आज से पांच दिन पहले मेरी नील से मुलाक़ात हुई थी, तब नील ने मुझसे वादा किया था कि वो 21 अगस्त को ठीक चार बजे इसी क्लब में मिलेगी । बात ये है, मुझे हाई डोज के अलावा नील से कुछ जरूरी काम भी है । लेकिन मैं अब देख रहा हूँ कि वो यहाँ नहीं है ।”

“तो ऐसा बोलो न बाबा, घुमा-फिराकर बोलते हो । नील तो यहाँ पिछले कई रोज से नहीं आ रही, फिर आज ही कहाँ से आयेगी ।”

“कई रोज़ से नहीं आ रही !” कमांडर ने चौंकने का जबरदस्त अभिनय किया, “क्या कह रही हो, लेकिन नील तो कहती थी कि वो यहाँ रोजाना आती है ।”

“बिल्कुल ठीक बोलती थी, मगर रोजाना आते-आते वो छोकरी लोग एकदम से किधर गायब हो गयी, मालूम नहीं ।”

“इधर क्या नील की कोई फ्रेंड है ?”

“फ...फ्रेंड !” हब्शी औरत बुरी तरह चौंकी, “फ्रेंड के बारे में किस वास्ते पूछ रहे हो ?”

“शायद उसे नील के बारे में कुछ मालूम हो ।”

हब्शी औरत की आंखों में अब एकाएक थोड़े शक के भाव उभर आये ।

वह बड़े रहस्यमयी अंदाज में इतना आगे को झुकी कि उसके ढीले-ढाले गाउन का गला नीचे को लटक गया और उसके अन्दर से उसकी तमाम नंगी छातियां नजर आने लगीं ।

"कोई लफड़े वाली बात तो नहीं है बाबा ?"

"लफड़ा !" कमांडर जोर से खिलखिलाकर हँसा, "लफड़े वाली बात तो हण्ड्रेड परसेंट है मैडम, मैंने छोकरी से हाईडोज लेनी है, यह लफड़ा नहीं तो और क्या है ।"

"यह लफड़ा चलेगा ।" हब्शी औरत भी मुदित भाव से हँसी, "इसके अलावा बाकी कोई लफड़ा नहीं माँगता । क्योंकि अगर कोई और लफड़ा होता है, फिर सारी ज़िन्दगी में लफड़ा-ही-लफड़ा है ।"

"ठीक है, मैं तुम्हें नील की एक बड़ी पक्की फ्रेंड का नाम बताती हूँ, उसका नाम लूसी है और उसे जरूर मालूम होगा कि नील इस समय कहाँ है ।"

"लूसी !"

"हाँ, लूसी ! हॉल के पीछे एक पांच नंबर का रुम है, इस समय लूसी तुम्हें उसी रुम के अन्दर मिलेगी ।"

"थैंक्यू वैरी मच !"

कमांडर करण सक्सेना तेजी से हॉल के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ा ।

"और हाँ, एक बात और सुनो ।"

कमांडर के कदम ठिठके, "क्या बात ?"

"लूसी के रुम में थोड़ा संभलकर जाना, बड़ी खुराफाती और चंचल लड़की है, न जाने वो वहाँ क्या कर रही हो ।"

थीं, वह जब उन्माद में ऊपर-नीचे हो रहा था, तो उसकी साँसें भी इस तरह धौं-धौं चल रही थीं, जैसे वह टी.बी. का मरीज हो या फिर किसी सस्पेंस सीन का बैकग्राउंड म्यूजिक बज रहा हो ।

ऊपर से करिश्मा यह कि लड़का अभी तक कुछ कर नहीं पाया था, बिलकुल गहराइयों में पहुँचना तो बहुत दूर की बात है, वह अभी ऊपरी सतह से थोड़ा अन्दर भी दाखिल नहीं हुआ था ।

जबकि लूसी उसे पूरा सहयोग दे रही थी ।

यही वजह थी, वो झुंझलायी हुई बहुत थी और बार-बार उसे पलटकर आग बरसाती निगाहों से घूरती तथा दांत किटकिटाते हुए चीखती ।

लूसी कोई साढ़े पांच फुट लम्बी लड़की थी और उसके जिस्म का रंग एकदम सफ़ेद था । उसकी तंदरुस्ती लगातार नशा करने के बावजूद काफी थी, उसकी जांघें भारी थीं और दोनों छातियां बिना ब्रा के भी आगे को तनी थीं ।

लूसी ने अपने कूल्हे थोड़े और ऊपर को किये ।

लड़के ने भी हिम्मत जुटाकर फिर कोशिश की, वह अपनी पूरी जान लड़ा रहा था, परन्तु वह कामयाब हो पाता, उससे पहले ही वो लूसी के जिस्म पर भरभराकर गिर पड़ा ।

इतना ही नहीं, उसका पूरा जिस्म जोर से कंपकंपाया ।

लूसी फ़ौरन झुंझलाकर पलटी थी और उसने लड़के के सीने पर इतनी जोर से लात मारी कि वह चीखता हुआ पीछे जाकर गिरा ।

"साला, नामर्द !" लूसी ने उसे भस्म कर देने वाली नज़रों से घूरा, "हिजड़ा कहीं का !"

लड़के ने शर्म से पलकें झुका लीं।

"अपने आपको शेर का बच्चा समझता है।" लूसी जहरीली नागिन की तरह फुफकार उठी, "लेकिन चूहा भी नहीं है, गीदड़ भी नहीं है।"

लड़का धीरे-धीरे कपड़े पहनने लगा।

क्या मजाल जो उसकी लूसी के सामने एक भी शब्द बोलने की हिम्मत हुई हो।

फिर वो ख़ामोशी के साथ उस कमरे से बाहर निकल गया था।

उससे पहले ही कमांडर दरवाजे से एक तरफ हो गया था।

□□□

दस मिनट तक कमांडर करण सक्सेना कमरे के अन्दर न घुसा, वह जानता था कि लूसी का मूड अभी ठीक नहीं है।

फिर उसने सिगरेट जलाई और आहिस्ता से कमरे का दरवाजा खोलकर अन्दर दाखिल हुआ।

लूसी ने अपनी स्कर्ट और टॉप पहन ली थी। इसके अलावा वो हेरोइन का इंजेक्शन लेकर अभी-अभी निपटी थी, जबकि उसने पहले से ही काफी नशा किया हुआ था।

इस समय उसकी आँखें नशे की वजह से सुर्ख हो रही थीं और होठों पर लालिमा उभर आ रही थी।

"क्या तुम्हारा ही नाम लूसी है ?" कमांडर ने 'डनहिल' का कश लगाया।

"हाँ, मैं ही लूसी हूँ।" लूसी झटके से उसकी तरफ पलटी, "तुम कौन ?" लूसी की भभकती आँखों में एकाएक ढेर सारे सवाल पैदा हो गये थे।

"मैं नील का दोस्त हूँ।"

"ठीक है ।" लूसी ने बड़े बेबाक अंदाज में अपने दोनों हाथ कमांडर के कंधों पर रख दिये, "हम दोनों एक सौदा करते हैं ।"

"कैसा सौदा ?"

"मैं तुम्हें नील के बारे में सब कुछ बताऊंगी ।" लूसी के होठों पर शरारती मुस्कान दौड़ने लगी, "और तुम मुझे प्रैक्टिकल तौर पर यह करके दिखाओगे कि तुम नील को कैसे संतुष्ट करते थे ।"

"न...नहीं ।" कमांडर के शरीर में सिहरन दौड़ गयी ।

वह जानता था कि नशेड़ी लड़कियाँ बेहद कामोत्तेजक होती हैं, जिन्हें संतुष्ट करना आसान नहीं होता । खासतौर पर जिस समय उन्होंने नशा किया हुआ हो, उस समय तो उनके अन्दर बला की गर्मी होती है ।

"क्यों, क्या हुआ ।" लूसी हँसी, "क्या तुम्हें अपने ऊपर यकीन नहीं, या फिर मेरे अन्दर वो आकर्षण नहीं, जो कोई पुरुष मेरे साथ सम्बन्ध न बनाना चाहे ?"

"दोनों में से कोई भी बात नहीं ।"

"फिर देर क्यों कर रहे हो हैण्डसम ?" लूसी एकाएक उससे कसकर चिपट गयी, "कम ऑन, मुझे मसल डालो, मेरे साथ वो सब कुछ करो, जो तुम नील के साथ करते थे । मुझे कोई मर्द चाहिये, असली मर्द, जो मेरे शरीर को रौंदता हुआ गुजर जाये ।"

लूसी ने एकाएक कमांडर के होठों को अपने मुँह में दबा लिया और वह उन्हें बुरी तरह मसलने लगी ।

वह उन्मादित हो रही थी ।

उसके अंदर वासना का ज्वालामुखी फट रहा था ।

गया है । उस दिन वो कुछ उखड़ी-उखड़ी-सी थी और यह कहकर शीघ्र ही मेरे पास से चली गयी कि एक-दो दिन में ही मुझसे फिर मिलेगी, परन्तु उसके बाद वो मुझे फिर कभी नहीं मिली । इसलिये मैंने सोचा कि मैं आज इस क्लब में जाकर उसके बारे में कुछ पता करूँ ।"

"तुम्हें यहाँ का पता किसने बताया कि नील तुम्हें यहाँ मिल सकती है ?"

"नील ने ही बताया था ।" कमांडर बोला, "उसी ने एक दिन मूड में आकर बताया था कि वह 'गैलॉर्ड क्लब' में अक्सर जाती है और वहाँ लूसी नाम की उसकी एक बड़ी पक्की फ्रेंड है ।"

"ओह !"

"तुमने बताया नहीं ।" कमांडर थोड़ी बेसब्री जाहिर करता हुआ बोला, "कि नील इस समय कहाँ मिलेगी ?"

"वह अब तुम्हें कहीं नहीं मिलेगी, अब तुम उसे भूल ही जाओ तो ज्यादा बेहतर है ।"

"क...क्यों ?"

"हर 'क्यों' का जवाब नहीं होता ।" लूसी नशे की तरंग में झूमती हुई बोली, "यूं समझो, नील के साथ तुमने जो पल गुजारे वह एक खूबसूरत ख्वाब था, ह...हसीन सपना था ।"

"मगर नील को हुआ क्या ?" कमांडर बेहद आंदोलित अंदाज में झुंझलाकर बोला, "कुछ तो पता चले ।"

"उ...उसके विषय में कुछ ज्यादा ही जानने को उत्सुक हो ?" लूसी के ऊपर हेरोइन के इंजेक्शन का नशा कुछ ज्यादा ही चढ़ने लगा था ।

"हाँ...मैं उसके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ ।"

"पीछे हटो ।" कमांडर ने उसे अपने से पीछे धकेला, "पागल मत बनो ।"

"क्यों ?" लूसी हाँफती हुई बोली, "क्या तुम नील के बारे में कुछ जानना नहीं चाहते ?"

"यह बात नहीं । परन्तु अगर यही सब कुछ करना है, तो क्यों न हम कहीं और चलें ।"

"कहाँ ?"

"किसी भी एकांत जगह पर, जहाँ हम दोनों के सिवाय कोई न हो ।"

"ठीक है, मैं तुम्हें अपने फ्लैट पर लेकर चलती हूँ, वहाँ हम दोनों के सिवाय कोई न होगा ।"

"चलो ।"

कमांडर का दिमाग इस समय काफी तेजी से सक्रिय था ।

लूसी जहाँ वासना की आग में अंधी हो रही थी, वहीं कमांडर काफी तेजी से पत्ते बिछाने में लगा था ।

वह लूसी के साथ उस पांच नंबर कमरे से बाहर निकला तथा हॉल में से होता हुआ बाहर की तरफ बढ़ा ।

उसी पल कमांडर की काउण्टर के पीछे बैठी हब्शी औरत पर निगाह पड़ी, जो उसे देखकर बड़े शरारती अंदाज में मुस्करा रही थी ।

कमांडर भी हब्शी औरत की तरफ देखकर मुस्कराया तथा फिर उसने एकाएक उसकी तरफ आँख मार दी ।

सकपका उठी हब्शी औरत, फिर उसकी मुस्कान पहले से भी ज्यादा गहरी हो गयी ।

जबकि अब करण सक्सेना, लूसी के साथ 'गैलॉर्ड क्लब' से बाहर निकल चुका था ।

□□□

अगले कुछ क्षण कमांडर करण सक्सेना के लिये काफी जानलेवा साबित हुए ।

'गैलॉर्ड क्लब' के बाहर लूसी की एक नीले रंग की स्पोर्ट्स कार खड़ी थी, जिसकी छत खुली हुई थी और साइज़ भी काफी छोटा था । वह स्पोर्ट्स कार देखने में तो काफी खूबसूरत थी, मगर इतनी हल्की-फुल्की थी कि अगर कोई ढंग की मोटर साइकिल भी उसमें टक्कर मार दे, तो वह कागज की तरह पिचक जाये ।

लूसी चूँकि नशे में थी, इसलिये कमांडर ने उससे कहा कि कार वह ड्राइव करेगा । मगर लूसी उसके लिये तैयार न हुई, कार को न सिर्फ उसने ड्राइव किया बल्कि इतनी सुपर फ़ास्ट स्पीड पर ड्राइव किया कि तीन-चार जगह तो उस कार का बड़ा जबरदस्त एक्सीडेंट होते-होते बचा था । दस-पंद्रह मिनट तक कार तूफ़ान-मेल बनी सड़क पर इधर-से-उधर भागती रही तथा फिर एक काफी ऊँची बिल्डिंग के सामने झटके से जाकर रुकी ।

"माई गॉड !" कमांडर हैरानी से लूसी की तरफ देखता हुआ बोला, "तुम कार चलती हो या हवाई जहाज ?"

फिर लूसी, कमांडर के साथ उस बिल्डिंग के पहले माले पर बने एक फ्लैट के अंदर पहुँची ।

वह फ्लैट बड़ा अजीबो-गरीब था । वह एक कमरे का फ्लैट था, वहाँ ताला पड़ा हुआ था और अन्दर सिर्फ एक बेड बिछा था । सबसे अजीब बात ये थी कि उस फ्लैट में बेड के अलावा सामान के नाम पर कोई चीज न थी, एक प्लेट या एक चम्मच तक न थी ।

कमांडर फ़ौरन समझ गया कि वह लूसी का घर नहीं था, बल्कि उसका सिर्फ 'लव नैस्ट' था। लव नैस्ट यानि ऐसी एकान्त जगह, जिसे उस जैसी अय्याश औरतें सिर्फ सैक्स के रंगीन खेल के लिये इस्तेमाल करती हैं।

लूसी कमांडर को लेकर बेड पर ढेर हो गयी।

उसके बाद भी जो कुछ किया, लूसी ने ही किया।

उसने आनन-फानन में अपने और कमांडर के सारे कपड़े उतार डाले, फिर वो उसके ऊपर सवार हो गयी।

कमांडर मुस्कराया।

वह रतिसुख के लिये इतनी व्याकुल हो रही थी कि फ़ौरन ही तूफ़ान की तरह शुरू हो गयी।

□□□

पंद्रह मिनट, वह पूरे पंद्रह मिनट तक कमांडर के फौलाद जैसे जिस्म के साथ खिलवाड़ करती रही और फिर भरभराकर उसके ऊपर ढेर हो गयी।

कमांडर ने उसकी किसी हरकत का विरोध न किया, बस वह उसे सहयोग देता रहा।

पंद्रह मिनट बाद लूसी न सिर्फ कमांडर की मर्दानगी की प्रशंसिका बन चुकी थी, बल्कि उसके ऊपर से हेरोइन का नशा भी काफी उतर चुका था।

"सचमुच, तुम असली मर्द हो।" लूसी ने बड़ी तारीफी निगाहों से उसकी तरफ देखते हुए कहा तथा फिर उसके गाल का कसकर चुम्बन लिया, "ऐसे मर्द, जिसके ऊपर कोई भी लड़की अपना सब कुछ न्यौछावर कर सके।"

"अभी तक तुमने मुझे मर्दानगी दिखाने का मौका ही कहाँ दिया है माई डेलिशस डार्लिंग !" कमांडर मुस्कराया, "अभी तक तो जो कुछ किया, तुमने किया ।"

लूसी हँसी, "सचमुच मुझसे गलती हुई, लेकिन मैं क्या करती, मैं अन्दर से बेचैन थी और जल्दी ही सब कुछ कर डालना चाहती थी । दरअसल जब तुम 'गैलॉर्ड क्लब' के पांच नंबर कमरे में पहुँचे थे, तो तुम्हारे वहाँ आने से पहले ही एक खपच्ची-सा लड़का मेरा काफी मूड खराब कर चुका था । वह आधा घंटे से कोशिश कर रहा था और कुछ नहीं कर पाया था ।"

"बहरहाल तुमने सौदे की जो शर्त रखी थी, उसे मैं पूरी कर चुका हूँ ।" कमांडर बिस्तर पर थोड़ा उठकर बैठा, "अब तुम्हारी बारी है कि तुम मुझे नील के बारे में बताओ ।"

"नील !"

नील का जिक्र छिड़ते ही लूसी फिर कुछ उदास हो गयी, वह अपनी उंगली से कमांडर के सीने के बालों में आड़ी-तिरछी लकीरें खींचने लगी ।

"मुझे यह सोचकर हैरानी हो रही है कि नील ने तुम्हारे जैसे बेहद खूबसूरत और आलीशान नौजवान को छोड़कर जैकब को क्यों चुना ?"

"जैकब !"

"हाँ, जैकब !" लूसी कमांडर के बराबर में सीधी लेट गयी और उदास आँखों से ही छत को घूरने लगी, "नील अब तुम्हें इसलिये नहीं मिलेगी, क्योंकि वो हमेशा-हमेशा के लिये जैकब के साथ जा चुकी है ।"

"क...कहाँ जा चुकी है ?" कमांडर बोला ।

"इस रहस्य को कोई नहीं जानता, कोई नहीं ।"

उसमें अभी और भी पेचीदगियाँ थीं, और भी उलझनें थीं ।

□□□

"इस फोटोग्राफ्स को गौर से देखो ।" कमांडर अभी भी यह बात आसानी से मानने को तैयार नहीं था कि वो आदमी 'जैकब' नहीं है, "हो सकता है कि इस फोटोग्राफ्स के अंदर जैकब ने अपने चेहरे पर मेकअप किया हुआ हो ?"

"नहीं ।" लूसी दृढ़ शब्दों में बोली, "मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि यह आदमी जैकब नहीं है, किसी हालत में नहीं है ।"

"यह बात इतने ठोस शब्दों में कैसे कह रही तुम ?" कमांडर की आँखें सिकुड़ी और उसने बाल की खाल निकाली ।

"क्योंकि जैकब का चेहरा काफी भारी था ।" लूसी ने दलील दी, "जबकि इस फोटोग्राफ्स के अंदर जो नौजवान है, उसका चेहरा काफी पतला है । मेकअप से कोई भी आदमी अपने चेहरे की बनावट बदल सकता है, लेकिन अपने भारी-भरकम चेहरे को पतला हरगिज नहीं बना सकता ।"

कमांडर को कोई तर्क न सूझा, लूसी वाकई ठीक कह रही थी ।

"तुम्हारे पास ऐसी कोई चीज है, जिससे जैकब की पहचान हो सके ?"

"बिलकुल है ।" एकाएक लूसी उत्साहपूर्ण बोली, "मेरे पास जैकब का एक फोटोग्राफ्स ही है, एक बार नील ने और मैंने उस जैकब के साथ वो फोटोग्राफ्स इक्कठे

लूसी ने ठंडी साँस छोड़ी और फिर कमांडर की तरफ देखा।

"कहा था।" लूसी की आवाज सर्द हो उठी, "उसकी बात सुनकर मैं सन्न रह गयी थी। फिर मैंने समझा कि वो पगली लड़की शायद मजाक कर रही है। प...परन्तु वो मजाक कहाँ था। अ...अगले दिन वो सचमुच चली गयी।"

"तुम जैकब के बारे में कुछ नहीं जानती, जैसे वो कहाँ रहता था ? क्या करता था ?"

"नहीं, मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानती।"

तभी कमांडर ने अपने ओवरकोट की जेब से वो फोटोग्राफ्स निकाला, जिसे उसने ब्ल्यू फ़िल्म से तैयार किया था। उस फोटोग्राफ्स में उस नौजवान के चेहरे का क्लोज-अप था, जिसे फिल्म में नील के साथ सहवास करते दिखाया गया था।

कमांडर ने वह फोटोग्राफ्स लूसी के सामने रखा।

"इस नौजवान को पहचानती हो ?"

लूसी चौंकी, "क...कौन है यह आदमी ?"

कमांडर के दिल-दिमाग पर अब भीषण बिजली गड़गड़ाकर गिरी।

वह दंग रह गया।

उसने भौंचक्के स्वर में पूछा, "क्या यह जैकब नहीं है ?"

"नहीं।" लूसी का सपाट स्वर, "यह बिलकुल भी जैकब नहीं है !"

कमांडर का दिमाग घूमने लगा।

इसका मतलब रहस्य का जाल अभी और भी गहरा था।

खिंचवाया था। फोटोग्राफ्स मेरे घर पर है और एल्बम में लगा हुआ है।"

"तुम्हारा घर कहाँ है ?"

"इसी बिल्डिंग के आठवें माले पर एक थ्री-रूम सेट है, जहाँ मैं अपने भाई के साथ रहती हूँ। वह एक ऑफिस-वर्कर है और सवा पांच बजे तक घर आ जाता है।"

कमांडर ने अपनी रिस्टवाच देखी, पांच पच्चीस हो रहे थे।

"अब तक तुम्हारा भाई घर आ चुका होगा ?"

"हाँ, बिलकुल।"

"क्या तुम अपने भाई के सामने ही एल्बम में से जैकब का फोटोग्राफ्स निकालकर दिखा सकती हो ?"

"क्यों नहीं।" लूसी चहककर बोली, "दरअसल मेरा भाई वैसा बिलकुल नहीं है, जैसा तुम समझ रहे हो। वह बड़ा चलता पुर्जा है, मैंने इसी बिल्डिंग में यह एक कमरे का फ्लैट तो इस वास्ते ले रखा है, क्योंकि उसके सामने 'सब-कुछ' नहीं कर सकती। यह बात अलग है, वो मेरे इस फ्लैट के बारे में सारी बात जानता है और यह भी जानता है कि मैं यहाँ क्या करती हूँ। और तो और, वह अक्सर मुझसे इस फ्लैट की चाबी लेकर अपनी गर्ल-फ्रेंडों के साथ यहाँ आता है और इसी बिस्तर पर वही 'सब-कुछ' करता है, जो अभी मैंने तुम्हारे साथ किया है।"

"यानि सिर्फ एक फल दोषी नहीं है, बल्कि पूरी नस्ल की नस्ल ही बिगड़ी हुई है।"

लूसी इस तरह बड़े फख्र के साथ खिलखिलाकर हँसी, मानो कमांडर ने उसके खानदान की तारीफ में कोई बहुत बड़ी बात कह दी हो।

विलियम काहन गायब हो गया, पहले तो कभी इस तरह गायब नहीं हुआ ।”

“पड़ोस में तो कोई ऐसी जगह नहीं है ।” कमांडर ने संजीदगी से पूछा, “जहाँ वो टाइम-पास करने के लिये चला जाता हो ?”

“नहीं.वह तो कहीं भी नहीं जाता।” लूसी आतंकित स्वर में बोली, “ घर आने के बाद उसका सारा समय टी.वी. देखते हुए या फिर वीडियो-गेम खेलते हुए गुजरता है ।”

कमांडर को एकाएक न जाने क्या सूझा कि वो बड़ी तेजी से शौचालय की तरफ झपटा और उसने शौचालय का दरवाजा खोलकर देखा, वहाँ कोई न था ।

तभी लूसी ने उसी का अनुसरण करते हुए बाथरूम का भी दरवाजा खोलकर देखा, और अगले ही पल लूसी के कण्ठ से एक ऐसी हृदयविदारक तथा करुणादायी चीख निकली कि वो पूरे फ्लैट की दरो-दीवार को झनझनाती चली गयी ।

कमांडर भी बेपनाह फुर्ती से बाथरूम की तरफ झपटा और उसने अंदर का दृश्य देखा ।

तुरन्त उसके नेत्र भी अचम्भे से फैल गये ।

उनमें आतंक उभर आया ।

जबरदस्त आतंक ।

□□□

बाथरूम के फर्श पर एक चौबीस-पच्चीस साल के नौजवान युवक की खून में लथपथ लाश पड़ी थी ।

कमांडर और लूसी लिफ्ट में से बाहर निकले ।

लिफ्ट में से बाहर निकलते ही लूसी बुरी तरह चौंका, क्योंकि उसके फ्लैट का दरवाजा एकदम चौपट खुला पड़ा था ।

“लगता है, यह लड़का पागल हो गया है ।” लूसी एकदम से झुंझलाकर बोली, “आज दरवाजा ही बंद करना भूल गया ।”

वह काफी तेज-तेज कदमों से फ्लैट की तरफ बढ़ी ।

“शायद किसी गर्ल-फ्रेंड को आज घर के अंदर ही ले आया है, तभी वो इतना पागल होता है, जो दरवाजा बंद करने का होश भी न रहे ।”

लूसी की बात सुनकर कमांडर मुस्कुराया ।

“विलियम-विलियम !” लूसी जोर-जोर से ‘अपने भाई’ को आवाज देती हुई घर के अंदर दाखिल हुई ।

कमरे में कहीं कोई न था ।

लूसी तेजी के साथ दूसरे कमरे की तरफ बढ़ी ।

तब तक कमांडर भी लूसी के पीछे-पीछे फ्लैट में दाखिल हो चुका था ।

“विलियम !” लूसी ने कुछ और तेज़ स्वर में उसे आवाज दी, “विलियम !”

फिर ख़ामोशी !

फिर सन्नाटा !

जब दूसरे कमरे में भी कोई न मिला, तो लूसी तेजी से तीसरे कमरे की तरफ बढ़ गयी और यह देखकर बुरी तरह चौंकी कि वहाँ भी कोई नहीं है ।

“कमाल है !” लूसी की आवाज में अब चिंता के साथ-साथ थोड़ी घबराहट के निशान भी उभर आये थे, “आज यह

उसके शरीर से इतना खून निकलकर बाथरूम के फर्श पर बहा था कि ऐसा लग रहा था, मानो वहाँ खून का तालाब-सा बन गया हो और उस तालाब में लाश पड़ी हो।

वह जरूर विलियम था, गोली विलियम के एकदम मुँह पर लगी थी और वह पीछे से उसकी खोपड़ी को फाड़ती हुई निकल गयी थी। गोली मुँह पर लगने की वजह से उसका जबड़ा फट गया था और वो आधे से ज्यादा बाहर निकल आया था, यही वजह थी कि उसका चेहरा बड़ा भयंकर नजर आ रहा था और दहशत के कारण उसकी आंखें खुली-की-खुली रह गयी थीं।

लूसी फूट-फूटकर रोने लगी।

कमांडर उस हादसे से खुद बुरी तरह अचम्भित था, उसने कल्पना भी नहीं की थी कि एकदम से इस तरह का कोई काण्ड भी हो जायेगा। वह लूसी को तुरन्त दूसरे कमरे के अंदर ले गया।

लूसी फिर भी फूट-फूटकर रोती रही।

"क्या यही विलियम है ?"

"ह...हाँ।" लूसी बुरी तरह फफकते हुए बोली, "य...यही विलियम है। ल...लेकिन उसे किसने मारा, मैं नहीं जानती। उ...उस बेचारे की तो किसी से दुश्मनी भी नहीं थी।"

"परन्तु शायद मैं जानता हूँ।" कमांडर ने गुस्से में दांत किटकिटाये, उसकी आँखों में सुर्खी उभरती चली गयी, "कि विलियम को किसने मारा ?"

"किसने मारा ?" लूसी की गर्दन झटके से कमांडर की तरफ उठी, वह जहरीली नागिन की तरह फुंफकारी,

उसके शरीर से इतना खून निकलकर बाथरूम के फर्श पर बहा था कि ऐसा लग रहा था, मानो वहाँ खून का तालाब-सा बन गया हो और उस तालाब में लाश पड़ी हो।

वह जरूर विलियम था, गोली विलियम के एकदम मुँह पर लगी थी और वह पीछे से उसकी खोपड़ी को फाड़ती हुई निकल गयी थी। गोली मुँह पर लगने की वजह से उसका जबड़ा फट गया था और वो आधे से ज्यादा बाहर निकल आया था, यही वजह थी कि उसका चेहरा बड़ा भयंकर नजर आ रहा था और दहशत के कारण उसकी आंखें खुली-की-खुली रह गयी थीं।

लूसी फूट-फूटकर रोने लगी।

कमांडर उस हादसे से खुद बुरी तरह अचम्भित था, उसने कल्पना भी नहीं की थी कि एकदम से इस तरह का कोई काण्ड भी हो जायेगा। वह लूसी को तुरन्त दूसरे कमरे के अंदर ले गया।

लूसी फिर भी फूट-फूटकर रोती रही।

"क्या यही विलियम है ?"

"ह...हाँ।" लूसी बुरी तरह फफकते हुए बोली, "य...यही विलियम है। ल...लेकिन उसे किसने मारा, मैं नहीं जानती। उ...उस बेचारे की तो किसी से दुश्मनी भी नहीं थी।"

"परन्तु शायद मैं जानता हूँ।" कमांडर ने गुस्से में दांत किटकिटाये, उसकी आँखों में सुर्खी उभरती चली गयी, "कि विलियम को किसने मारा ?"

"किसने मारा ?" लूसी की गर्दन झटके से कमांडर की तरफ उठी, वह जहरीली नागिन की तरह फुंफकारी,

गोल्डी की मदद करने वहाँ आ चुका है और अब वह इसीलिये उसके रास्ते में रुकावटें खड़ी करने की कोशिश कर रहे थे ।

"त...तुमने जवाब नहीं दिया।" लूसी पुनः अचरजपूर्वक बोली, "तुम्हें यह रहस्य कैसे मालूम था कि जैकब का फोटो एलबम में से गायब है ?"

"कुछ अनुमान हालातों और परिस्थितियों को देखकर लगा लिये जाते हैं । कमांडर बोला, "इसी तरह परिस्थितियों को देखकर मैंने भी यह एक अनुमान लगाया था, जो इत्तेफाक से बिल्कल ठीक निकला ।

लूसी की आँखों से हैरानी के निशान फिर भी कम न हुए, वह कमांडर को अभी भी ऐसी अजीब नजरों से देख रही थी, मानो मंगल ग्रह से उतरे किसी प्राणी को देख रही हो ।

"मुझे अब चलना चाहिये ।" तभी कमांडर ने व्याकुलता का प्रदर्शन किया, "मुझे एक बहुत जरूरी काम याद आ गया है ।"

"कैसा जरूरी काम ?"

"यह बात मैं आकर बताऊंगा ।"

वह शब्द कहने के बाद कमांडर तेजी से फ्लैट से बाहर निकल गया ।

सच्चाई ये थी, उसे कोई जरूरी काम नहीं था । परन्तु वो अमरीकन पुलिस का सामना नहीं करना चाहता था, और वो जानता था कि थोड़ी-बहुत देर में विलियम की हत्या होने की वजह से वहाँ पुलिस का आगमन होगा ही ।

अलबत्ता उसे विलियम की मौत का काफी दुःख था, और इस बात का भी काफी दुःख था कि जैकब को

पहचानने का एक महत्वपूर्ण जरिया उसके हाथ लगते-लगते रह गया था ।

□□□

उसी रात कमांडर करण सक्सेना ने एक और महत्वपूर्ण काम किया । उसने लास वेगास शहर की मुख्य मार्किट में जाकर एक छोटा-सा जापानी प्रोजेक्टर खरीद लिया, जिस पर पैंतीस एम.एम. (मिलीमीटर) तक की फिल्म चल सकती थी । प्रोजेक्टर का साइज सचमुच काफी छोटा था, उसे ब्रीफकेस में भी आसानी के साथ बन्द किया जा सकता था, वह दरअसल मॉडर्न साइंस का अद्भुत चमत्कार था । कमांडर प्रोजेक्टर को लेकर उस फाइव स्टार इंटर कॉन्टिनेंटल होटल में पहुंच गया —जहाँ उसने अपने लिये एक सुइट सुबह की बुक करा दिया था ।

फाइव स्टार होटल में पहुंचकर कमांडर ने सबसे पहले भरपेट भोजन किया ।

इसके बाद वो उसी केस से सम्बंधित एक बात पता लगाने के लिये सुइट के अंदर बंद हो गया ।

उसने सुइट के सभी खिड़की-दरवाजे अंदर से कसकर बंद कर लिए, डबल-बैड पर बिछी सफेद चादर उठाकर उसे सामने दीवार पर इस तरह टांगा कि वो फिल्म का पर्दा बन गया । इसके बाद उसने प्रोजेक्टर पर ब्ल्यू फिल्म लगाई तथा फिर प्रोजेक्टर ऑन कर दिया ।

तुरन्त सामने पर्दे पर नील की ब्ल्यू फिल्म चलने लगी ।

उसने सुइट की लाइटें वगैरा सब बंद कर दी, वहाँ अंधेरा हो गया, घुप्प अंधेरा । अब सिर्फ पर्दे पर चलती हुई ब्ल्यू फिल्म ही नजर आ रही थी ।

कमांडर करण सक्सेना एक कुर्सी पर बैठ गया और ध्यान से उस फिल्म को देखने लगा ।

हालांकि अगर कमांडर करण सक्सेना चाहता, तो उस फिल्म को टीवी पर भी देख सकता था । लेकिन नहीं, इस बार उसने उस फिल्म को पर्दे पर ही देखना मुनासिब समझा था, क्योंकि वह उसके अंदर कुछ ऐसी बारीकियां नोट करना चाहता था,जिनकी तरफ अभी तक किसी का ध्यान नहीं गया था ।

फिल्म चलती रही, कमांडर एक-एक सीन और सीन का एक-एक हिस्सा बड़े गौर से देखता रहा ।

जल्द ही वो एक बात समझ गया कि वह ब्ल्यू फिल्म बनाना किसी अनाड़ी फोटोग्राफर का काम नहीं था —बल्कि उसका फिल्मांकन हंड्रेड परसेंट किसी ऐसे प्रोफेशनल फोटोग्राफर ने किया था, जिसे अपने काम का काफी तर्जुबा था ।

क्योंकि बार-बार अलग-अलग ऐंगल सेट करके उसकी फोटोग्राफी की गयी थी, इसके अलावा पूरी फिल्म में लाइटिंग की भी बड़ी अच्छी व्यवस्था थी । ऐसा लगता था, जैसे पहले बाकायदा सैट बनाया गया हो और तब उस ब्ल्यू फिल्म की शूटिंग की गयी हो ।

जितनी तेजी से फिल्म चल रही थी, उससे कहीं ज्यादा तेजी से कमांडर का मस्तिष्क सक्रिय था ।

तभी एकाएक उसके दिमाग में जबरदस्त धमाका हुआ ।

वह कुर्सी पर बैठा-बैठा उछल पड़ा था ।

पहली बार उसका ध्यान एक बेहद खास बात की तरफ गया, दरअसल ब्ल्यू फिल्म में जिस तरह से नील के लांग शॉट और क्लोज-अप लिये जा रहे थे, उस तरह के

लांग-शॉट और क्लोज-अप का फिल्मांकन वीडियो-कैमरे के द्वारा किसी भी हालत में नहीं किया जा सकता, चाहे फोटोग्राफर को अपने पेशे का कितना ही जबरदस्त तर्जुबा क्यों न हों । क्योंकि इस तरह की सुविधायें वीडियो-कैमरे के अंदर होती ही नहीं ।

"इ…इसका मतलब ।" कमांडर हकला उठा, "इ…इसका मतलब वह फिल्म 'मूवी कैमरे' के द्वारा शूट की गयी थी, जिससे फीचर फिल्में बनायी जाती हैं । या फिर 'ड्यूमेटिक कैमरे' के द्वारा, जिससे टी.वी. सीरियल वगैरा का निर्माण होता है।"

जरूर यही बात है ।

जरूर ऐसा ही हुआ होगा ।

पहले यह फिल्म 'ड्यूमेटिक कैमरे' के द्वारा शूट की गयी होगी और फिर उससे फिल्म तैयार कर ली गयी ।

कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में धमाके होने लगे, तेज धमाके ।

उसने 'डनहिल' सुलगा ली तथा फिर कुर्सी पर बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

अगर ऐसा हुआ था, तब तो ब्लैकमेलर तक बहुत आसानी से पहुंचा जा सकता था ।

क्योंकि 'ड्यूमेटिक कैमरों' या 'मूवी कैमरों' की रील साधारण कलर लैब पर नहीं धुलती बल्कि उनके लिये स्पेशल कलर लैब और एडीटिंग-रूम होते हैं, जहाँ सिर्फ-और-सिर्फ फिल्म तथा टी.वी. सीरियलों से सम्बंधित ही काम होता है ।

हॉलीवुड जैसी जगह में तो ऐसी लैबों की कोई कमी नहीं—क्योंकि वहाँ मुख्य व्यवसाय ही फिल्म निर्माण है ।

परन्तु लास वेगास जैसी जगह पर ऐसी एक-आध लैब का निकल आना भी बहुत बड़ी बात थी ।

और अगर ऐसी कोई लैब वेगास में थी, तो हंड्रेड परसेंट वह फिल्म उसी लैब के अंदर धुली थी ।

कमांडर की आंखें चमकने लगीं ।

उसे लगने लगा, उस जरिये से ब्लैकमेलर का पता काफी जल्दी लगाया जा सकता है ।

कमांडर 'डनहिल' का कश लगाते हुए कुर्सी से उठा और फिर उसने प्रोजेक्टर बंद कर दिया ।

□□□

अभियान का दूसरा दिन (22 अगस्त)

बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी अभी भी पूरी तरह कमांडर के पीछे लगे हुए थे और वो एक-एक सेकंड की रिपोर्ट रख रहे थे कि वह कब, कहाँ जा रहा है ।

कमांडर कई बार तो उनके पीछा करने से बुरी तरह झुंझला उठा ।

उसके दिल में भी आया कि वह उन्हें अच्छी तरह मजा चखा दे ।

परन्तु फिर उसने अपने गुस्से पर काबू किया ।

यह सोचकर काबू किया कि उसके पास उस मिशन को सुलझाने के लिए समय काफी कम है, इसलिये ऐसी परिस्थिति में अपना एक और दुश्मन पैदा करना ठीक नहीं ।

खास तौर पर जब दुश्मन भी बादशाह करीम शेख जैसा शक्तिशाली आदमी हो ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना फिर लूसी के पास पहुंचा ।

वह इस बार सीधा लूसी के फ्लैट पर ही पहुंच गया था, लूसी उसे वहीं मिली ।

पूरे फ्लैट में गम का माहौल छाया हुआ था, साफ लग रहा था कि वहाँ कोई मौत हो गयी है । दरो-दीवार तथा फ्लैट की हर चीज सूनी-सूनी थी । ऐसा लगता था, जैसे लूसी के साथ-साथ वह निर्जीव और निष्प्राण चीजें भी गमजदां हो गयी हों ।

विलियम की लाश का पोस्टमार्टम होकर रात ही उसे मिल गया था, लेकिन फिर भी उसके अन्तिम-संस्कार की तैयारी होते-होते दिन निकल आया । सुबह के ठीक छः बजे विलियम को ताबूत में बंद करके कब्र में उतार दिया गया था और अब तक तो तमाम लोग अपनी सान्त्वना प्रकट करके वहाँ से जा भी चुके थे ।

लूसी उस समय बिल्कुल तन्हां बैड पर बैठी थी और काफी भावुक थी ।

कमांडर को देखते ही वह कुछ और जज्बाती हो गयी ।

"विलियम अब कभी नहीं आयेगा, कभी नहीं ।" लूसी धीरे-धीरे सुबकती हुई बोली, "उसे ताबूत में बंद करके जमीन में कई फुट नीचे उतार दिया गया है । वह पागल अंधेरे से नफरत करता था, ले...लेकिन अब अंधेरा ही उसकी किस्मत है । उ...उसे अब ऐसी जगह बंद कर दिया गया है, ज...जहाँ अब वो रोशनी की एक किरण तक नहीं देख पायेगा । अब वह कभी मुझसे नीचे वाले फ्लैट की चाबी नहीं माँगेगा, अ...अब कभी कोई गर्ल-फ्रेण्ड उसके साथ नहीं होगी ।"

बोलते-बोलते लूसी जोर-जोर से सुबकने लगी — उसकी हिचकियां बंध गयीं ।

“धीरज रखो लूसी, धीरज रखो ।” कमांडर ने उसकी पीठ थपथपाई, “शायद तुम्हारा और उसका साथ इतने ही दिन का था ।”

“य...यह सब मन बहलाने की बातें हैं ।” लूसी धीरे-धीरे अपने आंसू साफ करते हुए बोली “इस बीच उसके मुँह से फिर एक हिचकी उबली थी ।

“अब कोई भी सान्त्वना देने के सिवाय कर भी क्या सकता है । मौत, यह एक ऐसा बिंदु है, जिसके बाद सब-कुछ खत्म हो जाता है । फिर तो हर शब्द और हर तर्क बेमानी है ।”

“विलियम के हत्यारे के बारे में कुछ पता चला ?” लूसी ने बड़ी उम्मीद भरी नजरों से कमांडर की तरफ देखा ।

“मैं उसी दिशा में कोशिश कर रहा हूँ ।” कमांडर ने शांत लहजे में जवाब दिया, “मुझे एक सूत्र भी मिला है, शायद उससे कुछ बात बन जाये ।”

“कैसा सूत्र ?” लूसी ने चौंक कर अपनी गर्दन ऊपर उठाई ।

“क्या तुम लास वेगास शहर के अंदर ऐसी किसी लैब का पता जानती हो, जहाँ फीचर फिल्मों या टी.वी. सीरियलों की रीलें धुलती हो ?”

लूसी की आँखों में हैरत उमड़ आयी ।

“शायद फिर भी यहाँ ऐसी कोई लैब हो ।” कमांडर ने उम्मीद जाहिर की, “यूँ समझो, अगर लास वेगास शहर के अंदर ऐसी कोई लैब हुई, तो हम अभी विलियम के हत्यारे तक पहुँच जाएंगे ।”

"म...मुझे तो इस बारे में कुछ नहीं मालूम ।" लूसी असमंजस-पूर्ण मुद्रा में बोली ।

"तुम ऐसे किसी व्यक्ति को जानती हो ।" कमांडर रहस्य की गुत्थी सुलझाने की हरचंद कोशिश करता हुआ बोला, "जिसे इस सिलसिले की कोई नॉलिज हो ?"

लूसी सोच में डूब गयी ।

वह काफी देर सोचती रही ।

"एक लड़की है ।" अकस्मात लूसी उत्साहपूर्वक बोली, "केरोल नाम है, वह जरुर इस बारे में कुछ बता सकती है ।"

"क्यों, वह क्यों बता सकती है ?"

"दरअसल केरोल कभी फ़िल्म हीरोइन बनना चाहती थी, इसलिये उसने हॉलीवुड में कई साल बर्बाद लिए थे ।" लूसी बोली, "यह बात अलग है कि वो फ़िल्म हीरोइन तो क्या फिल्मों के अंदर ढंग की एक्स्ट्रा कलाकार भी न बन सकी । अलबत्ता वहाँ उसका शारीरिक शोषण खूब हुआ, कई बड़े-बड़े प्रोड्यूसर और डायरेक्टरों ने उसके साथ अपनी रातें रंगीन कीं । बाद में तंग आकर केरोल ने हॉलीवुड छोड़ दिया था और वापस यहाँ आ गई थी । परन्तु यहाँ आने के बाद भी उसके साथ कुछ अच्छा नहीं हुआ ।"

"क्यों?" कमांडर चौंका, "यहाँ क्या हुआ उसके साथ ?"

"दरअसल यहाँ उसे एक ऐसा आदमी टकरा गया था -- जो चोरी-छिपे ब्ल्यू फिल्में बनाता था ।"

"ब—ब्ल्यू फिल्में ।" कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में एकाएक धमाका-सा हो गया ।

उसके दिमाग में ढेर सारे सर्प सरसराने लगे।

"हाँ— ब्ल्यू फिल्में ।" लूसी बोली, "उसने केरोल को फिर रंगीन सपने दिखाने शुरु कर दिये कि वह खूबसूरत है, उसमें हीरोइन बनने के तमाम गुण मौजूद हैं, अगर उसके पास ढेर सारी दौलत होती, तो वह खुद उसे हीरोइन बनाकर किसी बड़ी फिल्म में लॉन्च करता । उसने केरोल से कहा, अगर वो उसकी कुछ ब्ल्यू फिल्मों में काम कर दे, तो उसके पास दौलत इकट्ठी हो जायेगी और फिर वह उसे किसी बड़ी फिल्म में लॉन्च करने के काबिल बन जायेगा । बस फिर क्या था, केरोल ने तुरन्त हामी भर दी । लेकिन आखिरकार उसे वहाँ से भी धोखा ही मिला । एक बार केरोल ने जब मुझे यह कहानी सुनायी थी, तभी उसने मुझे यह भी बताया था कि वह आदमी ब्ल्यू फिल्म की एडीटिंग वगैरा सब-कुछ यहीं करता था ।"

"इससे तो यह साबित होता है ।" कमांडर की आंखें हजार वाट के बल्ब की मानिन्द ही जगमगाने लगीं, "कि इस शहर के अंदर भी कोई लैब है ।"

"मैं पहले ही बता चुकी हूँ, मुझे इस मामले की ज्यादा जानकारी नहीं है । परन्तु केरोल जरूर इस मामले में बिल्कुल स्पष्ट रुप से बता सकती है ।"

"केरोल इस वक्त कहाँ मिलेगी ?"

"गैलॉर्ड क्लब में ही मिलेगी, वो आजकल वहीं नौकरी करती है और जब उसके पास काम नहीं होता, तो वहीं नशे में धुत्त होकर पड़ जाती है ।"

"ओह !"

"इसके अलावा छः महीने पहले ही केरोल के साथ एक और बड़ी भयानक दुर्घटना घट चुकी है ।"

"कैसी दुर्घटना ?"

"दरअसल केरोल क्लब की छत पर चढ़कर वहाँ सफाई कर रही थी कि तभी न जाने कैसे वो ऊपर से नीचे गिर पड़ी, उसे चोट तो ज्यादा न आयीं, परन्तु उस दुर्घटना में उसके बोलने की शक्ति हमेशा के लिये जाती रही।"

"य...यानि वो अब गूंगी है ?" कमांडर के मुँह से सिसकारी छूटी।

"हाँ।"

"फिर वो हमें लैब के बारे में कैसे बतायेगी ?"

"उसकी फिक्र मत करो, वो इशारों से सब-कुछ समझा देती है और जब किसी को इशारों की भाषा समझने में दुश्वारी हो, तो वह लिखकर भी बता देती है।"

"ठीक है, तो फिर हम 'गैलॉर्ड क्लब' चलते हैं।" कमांडर बोला, "तुम्हारा साथ चलना भी बेहतर रहेगा, इससे तुम्हारा थोड़ा ध्यान बंटेगा और तुम केरोल से बातचीत भी कर सकोगी।"

"ठीक है, मैं चलती हूँ।"

□□□

"बादशाह करीम शेख नूरानी के उन आदमियों की संख्या चार थी, जो कार में बैठकर हर सेकंड कमांडर का पीछा कर रहे थे।

दरअसल उन चारों आदमियों को प्रिंस इरफान शेख और खतरनाक जल्लाद अब्दाली ने तैनात किया था।

उन चारों का जो रिंग लीडर था, उसके पास एक वॉकी-टॉकी सेट था, जिसकी रेंज इतनी थी कि वह लोग शहर में चाहे कहीं भी हों, उस पर बात की जा सकती थी।

उस वॉकी-टॉकी का दूसरा सेट प्रिंस इरफान शेख के पास था ।

प्रिंस इरफान शेख ने वॉकी-टॉकी सेट पर रिंग लीडर से बात की ।

"यस—प्रिंस स्पीकिंग !" वॉकी-टॉकी सेट पर इरफान शेख की आवाज उभरी, "प्रिंस स्पीकिंग !"

"हैलो प्रिंस—मैं पालसिंह बोल रहा हूँ ।"

"क्या रिपोर्ट है पालसिंह ?"

"हम लोग पूरी तत्परता से कमांडर के पीछे लगे हुए हैं प्रिंस !" पालसिंह नाम का वो रिंग लीडर बड़ी अलर्ट पोजीशन में बोला, "हम उसकी एक-एक नकलो-हरकत पर निगाह रख रहे हैं ।"

"अभी तक कमांडर की क्या पोजीशन है ?"

"वह पूरी लगन से जुटा हुआ है, ऐसा लगता है कि गोल्डी के मुकाबले से नाम वापस लेने की जो अंतिम तारीख 27 अगस्त है, वह उससे पहले ही अपने मकसद में कामयाब हो जायेगा ।"

"ओह, क्या वो जानता है कि तुम लोग उस पर निगाह रखे हुए हो ?"

"ऐसा ही लगता है प्रिंस, क्योंकि वह कई बार हम लोगों को पलटकर देख चुका है । अगर वह हम पर हमला कर दे, तो हम लोग क्या करें प्रिंस ?"

"तुम लोगों ने अपना बचाव करना है ।" प्रिंस इरफान शेख ने दृढ़ शब्दों में हिदायत दी, "मगर ध्यान रहे, तुमने खुद कमांडर से उलझने का कोई प्रयास नहीं करना । जहाँ तक सम्भव हो, तुमने किसी भी झगड़े से बचना है ।"

"ओ.के. प्रिंस ।"

पालसिंह ने वॉकी-टॉकी बंद कर दिया ।

□□□

सुबह के दस बज रहे थे, जब कमांडर और लूसी ने 'गैलॉर्ड क्लब' में कदम रखा ।

हब्शी औरत उस समय भी काउण्टर के पीछे बैठी हुई थी, उसने आज भी जूड़ा सिर के ऊपर कसकर बांधा हुआ था, गाउन पहन रखा था । इसके अलावा वो आज काउण्टर के पीछे बैठी एक नया काम यह कर रही थी कि बड़े दिलफरेब अंदाज में सिगरेट के कश लगा रही थी ।

कमांडर को देखकर वह फिर मुस्करायी और उसने धुएं के गोल-गोल छल्ले बनाकर उसकी तरफ उछाले ।

उसकी हरकत पर कमांडर के होठों पर अनायास ही मुस्कान दौड़ गयी ।

जबकि क्लब में पहुंचते ही लूसी की निगाहें चारों तरफ घूमी थीं ।

"केरोल तो यहाँ नहीं है।" लूसी थोड़ा रुककर बोली ।

"नहीं है, फिर कहाँ मिलेगी ?"

"वह जरूर पीछे सात नम्बर कमरे में होगी ।"

कमांडर के नेत्र फैल गये, उसमें घोर अचरज उभर आया ।

"व...वो वहाँ क्या करती है ?" कमांडर ने लूसी की तरफ देखा ।

"कुछ नहीं, बस जब उसे यहाँ कोई काम नहीं होता, तो वहीं जाकर पड़ जाती है ।"

"ओह, मैं समझ रहा था कि वो गूंगी वहाँ कुछ और करती है ।"

लूसी ने उसे कठोर नजरों से घूरा ।

“तुम उस बिल्ली की नस्ल से हो ।” लूसी गुर्रायी, “जिसे ख्वाब में भी छीछड़े नजर आते हैं ।”

कमांडर बड़े फरमायशी अंदाज में खिलखिलाकर हंस पड़ा ।

□□□

उसके बाद वह दोनों सात नम्बर कमरे में पहुंचे ।

वहाँ उन्होंने केरोल को बड़ी अजीबो-गरीब स्थिति में पाया । केरोल ने उस समय ‘मारिजुआना’ की बड़ी जबरदस्त डोज ले रखी थी ।

मारिजुआना की एक विशेषता होती है, जब कोई उस नशे को जरूरत से ज्यादा मात्रा में ले ले, तो फिर वह खामखाह रोता है, बिना

बात रोता है । और फिर तब तक उसका नशा उतरता भी नहीं, जब तक वह अच्छी तरह रो न ले ।

यही स्थिति इस समय केरोल की थी । वह सात नम्बर कमरे के कोने में नीचे फर्श पर ही घुटने सिकोड़े उकडू बैठी हुई थी, चेहरा उसने जांघों में छिपा रखा था—और वह धीरे-धीरे सुबक रही थी ।

दोनों तुरन्त समझ गये, उसने ‘मारिजुआना’ ली हुई है ।

“क...क्या यह इस पोजीशन में हमारे सवालों का जवाब दे सकेगी?” कमांडर करण सक्सेना ने लूसी का कंधा पकड़ लिया ।

“बेफिक्र रहो ।” लूसी फुसफुसाई, “मैं अभी इसे नॉर्मल पोजीशन में लाती हूँ ।”

“क्या करोगी ?”

“बस, देखते जाओ । इन नशीले पदार्थों से खेलना हमारा रोजाना का काम है ।”

कमांडर ने लूसी का कंधा छोड़ दिया ।

लूसी वहीं रखे एक पानी के जग और गिलास की तरफ बढ़ गयी थी, कमांडर गौर से उसकी एक-एक गतिविधि देखता रहा । पानी के जग के पास पहुंचकर लूसी ने अपने वेनिटी बैग में से एक छोटा-सा पैकेट निकाला, जिसमें सफेद पाउडर बंद था । फिर उसने सफेद पाउडर की एक निश्चित मात्रा गिलास के अंदर डाली और उसके बाद गिलास को पानी से लबालब भर दिया । फिर लूसी, केरोल के नजदीक पहुंची ।

“केरोल !” उसने आहिस्ता से केरोल को पुकारा ।

केरोल सुबकती रही ।

“केरोल !” लूसी ने इस बार केरोल के कंधे पकड़कर झिंझोड़े ।

अब केरोल पर प्रतिक्रिया हुई ।

उसने दोनों जांघों के बीच से अपना चेहरा बाहर निकाला ।

वह सचमुच अनिंद्य सुंदरी थी और हॉलीवुड की हीरोइन बनने के काबिल थी ।

उसे देखकर कौन कह सकता था, वो ‘गूंगी’ है और किस्मत की इतनी सताई हुई है ।

लूसी को देखते ही केरोल की हिचकी-सी उबल पड़ी, वह एकदम झटके से उठी और लूसी से कसकर चिपट गयी, फिर उसने हिड़कियों से रोना शुरू कर दिया ।

“रिलेक्स !” लूसी ने उसकी पीठ थपथपाई, “रिलैक्स माई हनी डार्लिंग ।”

केरोल ने फौरन अपने आंसू साफ किये, और कमांडर से कसकर हाथ मिलाया साथ ही हल्के से मुस्कराने की भी कोशिश की।

फिर अपनी उंगलियां नचायीं, "मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

कमांडर ने भी उसी की तरह गूंगे-बहरों की स्टाइल में उंगली नचाकर जवाब दिया था, "मुझे भी तुमसे मिलकर अच्छा लगा।"

कमांडर की हरकत पर केरोल हंस पड़ी।

लूसी के होठों पर भी मुस्कान दौड़ गयी।

"यह जीवन बहुत छोटा-सा है मिस केरोल, इस जीवन में चाहे कितने ही दुःख क्यों न आयें, हमें इसी तरह हंसते रहना चाहिये।"

केरोल ने आहिस्ता से अपनी पलकें झपकायीं।

"दरअसल मिस्टर करण को तुमसे एक आवश्यक काम था।" लूसी बोलीं, "इसीलिये मैं इन्हें तुम्हारे पास ले आयी।"

"क्या काम ?" केरोल की उंगलियां फिर हिलीं।

"एक बार तुम बता रही थीं कि जिस व्यक्ति ने तुम्हारे साथ मिलकर ब्ल्यू फिल्में बनायीं और तुम्हें धोखा दिया, वह उन फिल्मों की एडीटिंग वगैरा सब-कुछ यहीं करता था, इसी शहर में।"

केरोल की गर्दन स्वीकृति में हिली।

"इसका मतलब !" कमांडर फौरन उत्साहपूर्वक आगे बढ़ा, "इस शहर के अंदर कोई ऐसा लैब भी है, जहाँ ड्यूमेटिक या मूवी कैमरे की फिल्में धुल सकती हैं ?"

केरोल ने फिर स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

जिसका मतलब था, “तुमने मेरा नशा उतारने के लिये मुझे ‘एण्टी ड्रग्स’ दी?”

“हाँ ।” लूसी ने सख्ती से कहा, “मैंने तुम्हें ‘एण्टी ड्रग्स’ दी, लेकिन तुम बताओ, तुमने आज फिर मारिजुआना क्यों ली ? मैडम (हब्शी औरत) ने तुमसे कितनी बार मना किया है कि तुम इतना जबरदस्त नशा मत किया करो, किसी दिन तुम्हारी जान भी जा सकती है ।”

केरोल ने अपनी नजरें नीचे झुका ली ।

“क्यों तुम कभी-कभी खुद अपनी जान की दुश्मन बन जाती हो केरोल ?”

उसने फिर अपनी उंगलियों से कुछ इशारे किये ।

जिसका मतलब था, “मैं अपने अतीत को नहीं भुला पाती लूसी, अतीत की याद आते ही मेरे ऊपर यह वहशीपन सवार हो जाता है ।”

“लेकिन अपने साथ अतीत का यह बोझा लेकर तुम कब तक चलोगी, आखिर कब तक ?”

केरोल की उंगलियां फिर हिलीं, “श...शायद आखिरी सांस तक ।”

वह बात कहते हुए केरोल की आंखों में आंसू आ गये थे ।

□□□

“इनसे मिलो ।” लूसी ने शीघ्र ही माहौल को भावनात्मक होने से बचाया, “यह मेरे दोस्त हैं, मिस्टर करण ।”

"वैरी गुड !" कमांडर का उत्साह बढ़कर हजार गुना हो गया, "क्या तुम बता सकती हो कि लास वेगास शहर के अंदर वो लैब किस जगह है ?"

केरोल ने उंगलियों से जल्दी-जल्दी कुछ इशारे किये ।

वो पूछ रही थी, "तुम उस लैब के विषय में क्यों जानना चाहते हो ?"

"दरअसल मैं एक शौकिया फोटोग्राफर हूँ ।" कमांडर ने फौरन जवाब दिया, "मैंने ड्यूमेटिक कैमरे पर अपने पसंदीदा बॉक्सरों की एक फिल्म तैयार की है और अब उसे धुलवाना चाहता हूँ । मेरी जेब में इतने पैसे नहीं हैं—जो उसे धुलवाने के लिये हॉलीवुड की किसी लैब में जा सकूं ।" वह शब्द कहने के बाद कमांडर बड़े खिसियाने ढंग से मुस्कराया ।

केरोल कुछ न बोली ।

शायद वो कमांडर के जवाब से संतुष्ट नहीं हुई थी ।

"क्या बात है ।" लूसी बोली, "क्या तुम लैब के बारे में कुछ बताना नहीं चाहतीं ?"

"ऐसी कोई बात नहीं ।" केरोल की उंगलियां जल्दी से हिलीं ।

"तो फिर मैं समझती हूँ कि तुम्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं होना चाहिये कि यह उस लैब का एड्रेस क्यों जानना चाहते हैं ।"

केरोल की गर्दन फिर स्वीकृति में हिली और उसने उंगलियां हिलाई, "ठीक कहते हो तुम ।"

उसके बाद केरोल ने वहीं बेड पर रखी कागज-पेंसिल उठा ली थी और फिर कागज पर कुछ पंक्तियां लिखीं—

"वैरी गुड !" कमांडर का उत्साह बढ़कर हजार गुना हो गया, "क्या तुम बता सकती हो कि लास वेगास शहर के अंदर वो लैब किस जगह है ?"

केरोल ने उंगलियों से जल्दी-जल्दी कुछ इशारे किये।

वो पूछ रही थी, "तुम उस लैब के विषय में क्यों जानना चाहते हो ?"

"दरअसल मैं एक शौकिया फोटोग्राफर हूँ।" कमांडर ने फौरन जवाब दिया, "मैंने ड्यूमेटिक कैमरे पर अपने पसंदीदा बॉक्सरों की एक फिल्म तैयार की है और अब उसे धुलवाना चाहता हूँ। मेरी जेब में इतने पैसे नहीं हैं—जो उसे धुलवाने के लिये हॉलीवुड की किसी लैब में जा सकूं।" वह शब्द कहने के बाद कमांडर बड़े खिसियाने ढंग से मुस्कराया।

केरोल कुछ न बोली।

शायद वो कमांडर के जवाब से संतुष्ट नहीं हुई थी।

"क्या बात है।" लूसी बोली, "क्या तुम लैब के बारे में कुछ बताना नहीं चाहतीं ?"

"ऐसी कोई बात नहीं।" केरोल की उंगलियां जल्दी से हिलीं।

"तो फिर मैं समझती हूँ कि तुम्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं होना चाहिये कि यह उस लैब का एड्रेस क्यों जानना चाहते हैं।"

केरोल की गर्दन फिर स्वीकृति में हिली और उसने उंगलियां हिलाई, "ठीक कहते हो तुम।"

उसके बाद केरोल ने वहीं बेड पर रखी कागज-पेंसिल उठा ली थी और फिर कागज पर कुछ पंक्तियां लिखीं—

"वैरी गुड !" कमांडर का उत्साह बढ़कर हजार गुना हो गया, "क्या तुम बता सकती हो कि लास वेगास शहर के अंदर वो लैब किस जगह है ?"

केरोल ने उंगलियों से जल्दी-जल्दी कुछ इशारे किये।

वो पूछ रही थी, "तुम उस लैब के विषय में क्यों जानना चाहते हो ?"

"दरअसल मैं एक शौकिया फोटोग्राफर हूँ।" कमांडर ने फौरन जवाब दिया, "मैंने ड्यूमेटिक कैमरे पर अपने पसंदीदा बॉक्सरों की एक फिल्म तैयार की है और अब उसे धुलवाना चाहता हूँ। मेरी जेब में इतने पैसे नहीं हैं—जो उसे धुलवाने के लिये हॉलीवुड की किसी लैब में जा सकूं।" वह शब्द कहने के बाद कमांडर बड़े खिसियाने ढंग से मुस्कराया।

केरोल कुछ न बोली।

शायद वो कमांडर के जवाब से संतुष्ट नहीं हुई थी।

"क्या बात है।" लूसी बोली, "क्या तुम लैब के बारे में कुछ बताना नहीं चाहतीं ?"

"ऐसी कोई बात नहीं।" केरोल की उंगलियां जल्दी से हिलीं।

"तो फिर मैं समझती हूँ कि तुम्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं होना चाहिये कि यह उस लैब का एड्रेस क्यों जानना चाहते हैं।"

केरोल की गर्दन फिर स्वीकृति में हिली और उसने उंगलियां हिलाई, "ठीक कहते हो तुम।"

उसके बाद केरोल ने वहीं बेड पर रखी कागज-पेंसिल उठा ली थी और फिर कागज पर कुछ पंक्तियां लिखीं—

लैब चर्च रोड के इलाके में है, मोंटी हिल मार्किट के अंदर, पहली मंजिल पर ।

लैब के मालिक का नाम, अलेग्जेण्डर !

कमांडर ने कागज पर लिखी उन पंक्तियों को पढ़ा और हल्के से मुस्करा दिया ।

“थैंक्यू—थैंक्यू वैरी मच !”

केरोल के खूबसूरत चेहरे पर भी धीमी-सी मुस्कान दौड़ गयी ।

□□□

अलेग्जेण्डर, यह सैंतालीस-अड़तालीस वर्ष के एक ऐसे अधेड़ व्यक्ति का नाम था, जिसका डील-डौल तो काफी लम्बा-चौड़ा था, परन्तु वो सारा डील-डौल किसी मरियल भैंसे की तरह नीचे को लटक गया था ।

अलेग्जेण्डर आज की तारीख में पूरी तरह कार्टून नजर आता था । वह हमेशा एक बड़ी मोहरी वाली पेंट पहने रहता, जिसकी बेल्ट भी उसके काफी ढीली थी, इसीलिये वो उस पेंट में बच्चों की तरह गेलिस भी बांधे रखता था ।

उम्र के साथ-साथ अलेग्जेण्डर की आंखें भी काफी कमजोर हो गयी थीं, उसकी आंखों पर बेहद मोटे लैंस वाला चश्मा चढ़ा रहता था, उन लैंसों में से उसकी आंखें ऐसी बड़ी-बड़ी नजर आती, मानो वह किसी इंसान की आंखें न होकर दैत्य की आंखें हों ।

आज से तकरीबन पंद्रह साल पहले अलेग्जेण्डर ने कई लाख डॉलर लगाकर लैब का वो कारोबार शुरु किया था ।

उस कारोबार को शुरु करते समय अलेग्जेण्डर काफी खुश था, उसे लग रहा था कि अभी उसके ऊपर दौलत की

बारिश होने लगेगी और वो रातों-रात करोड़पति बन जायेगा ।

दरअसल उसने वहाँ लैब इसलिये खोली थी—क्योंकि पहली बात तो उस शहर में बॉक्सिंग मुकाबले देखने के लिये देश-विदेश से पर्यटक ही बहुत आते थे । फिर अलेग्जेण्डर ने बहुत से पर्यटकों को बॉक्सिंग मुकाबले के दौरान ड्यूमेटिक कैमरे पर फिल्में भी बनाते देखा था, लेकिन उन फिल्मों को धोने की व्यवस्था चूंकि उस शहर में नहीं थी, इसलिये वो परेशान घूमते थे ।

अलग्जेण्डर को लगा, अगर वो लैब खोल लेगा, तो उसके पास फिल्म धुलवाने वाले ऐसे लोगों की लाइन लग जायेगी ।

मगर लैब खोलने के बाद अलेग्जेण्डर को दिन में तारे नजर आ गये ।

क्योंकि तीन-चार दिन में ऐसी मुश्किल से एक फिल्म धुलने के लिये अलेग्जेण्डर के पास आती थी, जिससे उसकी लैब का खर्च भी नहीं निकल पाता था ।

अलेग्जेण्डर परेशान हो उठा, वो समझ न सका कि वह क्या करे । उसकी सारी रकम उस कारोबार में फंस चुकी थी और उस लैब को खरीदने वाला भी वहाँ कोई न था ।

तभी अलेग्जेण्डर को रोशनी की किरण नजर आयी, उससे दो-तीन ऐसे व्यक्ति आकर मिले, जो ब्ल्यू फिल्में बनाते थे । उनका काम चूंकि गैर-कानूनी था, इसलिये वो हमेशा ऐसी लैब की तलाश में रहते थे, जहाँ उनका काम गुपचुप हो सके । अलेग्जेण्डर फौरन उनका काम करने के लिये तैयार हो गया ।

"जी नहीं, उसकी भी बाप फिल्म है । आप जरा अंदर आइये, फिर मैं आपको उसके दर्शन कराता हूँ ।"

अलेग्जेण्डर तुरन्त उस डार्क-रूम की तरफ बढ़ गया, जहाँ फिल्म धोने की व्यवस्था थी और वहीं उसने प्रोजेक्टर भी लगा रखा था, ताकि फिल्म को देखा जा सके ।

उसकी पूरी लैब में एक भी नौकर नहीं था ।

इसके पीछे भी खास वजह थी, वह चूंकि गैर-कानूनी काम करता था, इसलिये नौकर वगैरा रखने का रिस्क उसने कभी नहीं लिया ।

□□□

डार्क-रूम में पहुंचकर कमांडर ने ब्रीफकेस एक तरफ रख दिया और फिर दरवाजे को अंदर से कसकर बंद किया ।

"य...यह क्या कर रहे हो ?" अलेग्जेण्डर को तेज झटका लगा, "द...दरवाजा अंदर से क्यों बंद कर लिया ?"

"फिल्म दिखा रहा हूँ, एक्शन फिल्म ! और जब फिल्म दिखाई जाये तो उस समय दरवाजा वगैरा तो अंदर से बंद ही रहना चाहिये, या नहीं ?"

अलेग्जेण्डर फिर कुछ कहता, उससे पहले ही कमांडर बड़े रौद्र रूप में उसके सामने पहुंच गया तथा फिर धड़ाक से उसका घूंसा इतने प्रचण्ड वेग के साथ अलेग्जेण्डर के मुँह पर पड़ा, जैसे घन पड़ गया हो ।

अलेग्जेण्डर चिंघाड़ता हुआ पीछे रखी एक टेबल से जाकर टकराया तथा फिर धड़ाम से नीचे फर्श पर गिरा ।

कमांडर फिर उसके नजदीक पहुंचा और उसने उसकी दोनों गेलिस पकड़कर झटके से खड़ा किया ।

"य...यह क्या कर रहे हो ?" अलेग्जेण्डर की आंखों में आतंक की छाया दौड़ी, "क...क्या कर रहे हो ?"

"हाँ, लेकिन उससे पहले मैं तुम्हें एक फ़िल्म दिखाऊंगा ।"

"हे माई जीसस !" अलेग्जेण्डर का चेहरा एकदम सफेद झक्क पड़ गया, "अभी और भी फ़िल्म देखनी बाकी है ।"

"बेफिक्र रहो—वह ऐसी फ़िल्म नहीं है । वह ब्ल्यू फ़िल्म, जो तुम अक्सर देखते हो ।"

कमांडर ने रिवाल्वर हाथ में लिये-लिये अपना ब्रीफकेस खोला—उसमें से पेन ड्राइव में मौजूद फिल्म निकाली और फिर वह फिल्म प्रोजेक्टर पर लगा दी ।

तुरंत सामने पर्दे पर ब्ल्यू फ़िल्म चलने लगी ।

□□□

लूसी जो अभी तक एकदम मूकदर्शक बनी उस सारे ड्रामे को देख रही थी, जैसे ही उसकी नजर ब्ल्यू फ़िल्म के अंदर 'नील' पर पड़ी, वह उछल गयी ।

"य...यह तो नील है !" लूसी के मुँह से हैरतअंगेज ढंग सिसकारी छूटी, "य...यह क्या चक्कर है ?"

"यह चक्कर बहत गहरा है ।" कमांडर करण सक्सेना बोला, "इस चक्कर को तुम इतनी आसानी से नहीं समझ पाओगी ।"

उस समय अलेग्जेण्डर भी उस फिल्म को देखने की कोशिश कर रहा था, परन्तु चूंकि उसके चश्मे का एक शीशा टूटा हुआ था, इसलिये उसे फिल्म देखने में भारी दुश्वारी हो रही थी ।

तब उसने उस मुश्किल का हल निकाला और अपनी उस एक आंख पर हाथ रख लिया, जिसका शीशा टूटा हुआ

था, तुरन्त उसे फिल्म बिल्कुल साफ-साफ नजर आने लगी ।

जैसे-जैसे अलेग्जेण्डर ने फिल्म के दृश्य देखे, वैसे-वैसे ही उसके नेत्र फटे ।

लगभग बीस मिनट तक फिल्म चलाने के बाद कमांडर ने प्रोजेक्टर बंद कर दिया ।

"तुम्हें ज्यादा फिल्म दिखाने से इसलिये कोई फायदा नहीं है ।" कमांडर रिवॉल्वर लेकर वापस अलेग्जेण्डर के सामने खड़ा होता हुआ बोला, "क्योंकि यह फिल्म तुम इसी लैब के अंदर बैठकर पहले भी एक मर्तबा देख चुके हो ।"

"म...मैं इस फिल्म को देख चुका हूँ ?"

"हाँ, क्यों, मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा ?"

अलेग्जेण्डर सकपकाया ।

उसके होश उड़ने लगे ।

"दरअसल यह फिल्म धुलवाने के लिये तुम्हारे पास जैकब नाम का एक आदमी आया था ।" कमांडर ने रिवॉल्वर अलेग्जेण्डर के चेहरे के इर्द-गिर्द घुमाई, "वैसे यह बात ज्यादा पुरानी भी नहीं है, सिर्फ कुछ दिन पहले का किस्सा है । इसलिये ऐसा भी नहीं हो सकता कि तुम इस सिलसिले को भूल गये होओ ।"

"म...मैंने यह फिल्म नहीं धोयी ।" अलेग्जेण्डर हिम्मत करके बोला ।

कमांडर ने रिवॉल्वर फौरन अलेग्जेण्डर के माथे के बीचों-बीच रख दी ।

तुरन्त उसके गले की घण्टी उछली और उसके माथे पर पसीने चुहचुहाने लगे ।

था, तुरन्त उसे फिल्म बिल्कुल साफ-साफ नजर आने लगी।

जैसे-जैसे अलेग्जेण्डर ने फिल्म के दृश्य देखे, वैसे-वैसे ही उसके नेत्र फटे।

लगभग बीस मिनट तक फिल्म चलाने के बाद कमांडर ने प्रोजेक्टर बंद कर दिया।

"तुम्हें ज्यादा फिल्म दिखाने से इसलिये कोई फायदा नहीं है।" कमांडर रिवॉल्वर लेकर वापस अलेग्जेण्डर के सामने खड़ा होता हुआ बोला, "क्योंकि यह फिल्म तुम इसी लैब के अंदर बैठकर पहले भी एक मर्तबा देख चुके हो।"

"म...मैं इस फिल्म को देख चुका हूँ ?"

"हाँ, क्यों, मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा ?"

अलेग्जेण्डर सकपकाया।

उसके होश उड़ने लगे।

"दरअसल यह फिल्म धुलवाने के लिये तुम्हारे पास जैकब नाम का एक आदमी आया था।" कमांडर ने रिवॉल्वर अलेग्जेण्डर के चेहरे के इर्द-गिर्द घुमाई, "वैसे यह बात ज्यादा पुरानी भी नहीं है, सिर्फ कुछ दिन पहले का किस्सा है। इसलिये ऐसा भी नहीं हो सकता कि तुम इस सिलसिले को भूल गये होओ।"

"म...मैंने यह फिल्म नहीं धोयी।" अलेग्जेण्डर हिम्मत करके बोला।

कमांडर ने रिवॉल्वर फौरन अलेग्जेण्डर के माथे के बीचों-बीच रख दी।

तुरन्त उसके गले की घण्टी उछली और उसके माथे पर पसीने चुहचुहाने लगे।

"सचमुच यह फिल्म तुमने नहीं धोयी अलेग्जेण्डर ?" कमांडर ने रिवॉल्वर का सैफ्टी-कैच पीछे खींचा।

अलेग्जेण्डर की टांगें खौफ से कंपकंपाने लगीं।

वह मौत को साक्षात् देख रहा था।

"दरअसल तुम अभी मुझे पहचानते नहीं हो।" कमांडर जहरीले सर्प की मानिन्द फुंफकारा, "वरना तुम्हें मालूम होता कि किसी भी इंसान को मार डालना मेरे लिये कितना मामूली काम है। तब शायद तुम्हें जवाब देने में इतनी देर न लगती। अगर तुम मुझे कुछ बताना नहीं चाहते, तो अपने आपको मरा समझो।"

कोल्ट रिवॉल्वर एकाएक बड़ी तेजी से कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी।

"सुनो-सुनो!" अलेग्जेण्डर फौरन बौखलाया-सा बोला, "मेरी बात सुनो।"

"कहो।"

"य...यह सच है।" अलेग्जेण्डर थर-थर कांपता हुआ बोला, "कि यह फिल्म मैंने ही धोई, म...मगर तब मुझे मालूम नहीं था कि इस फिल्म के पीछे कोई बड़ा लफड़ा जुड़ा हुआ है। अगर मुझे मालूम होता, तो इस फिल्म को धोना तो बहुत दूर, मैं इसे हाथ भी न लगाता, इसे छूता भी नहीं।"

"यानि तुम यह कबूल करते हो कि जैकब नाम का एक आदमी तुमसे यह फिल्म धुलवाने आया था ?"

"म...मुझे यह नहीं मालूम कि उस आदमी का नाम क्या था।" अलेग्जेण्डर शुष्क लहजे में बोला, "मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि वह ठीक-ठाक कद-काठी वाला नौजवान था, जो मेरे पास यह फिल्म लेकर आया। उसके पास

ऐसी-ऐसी तीन फिल्में और थीं, उसने हाथ-के-हाथ मुझसे सभी फिल्में धुलवाईं । इस बीच उसने एक सेकंड के लिये भी फिल्मों को अपनी नजरों से ओझल नहीं होने दिया था, सारा काम उसने अपने सामने कराया और फिर मेरा भुगतान करके यहाँ से चला गया ।"

"क्या तुम अजनबी लोगों की ब्ल्यू फिल्में भी धो देते हो ?" कमांडर ने आश्चर्य से पूछा ।

"नहीं ।" अलेग्जेण्डर की गर्दन इंकार में हिली, "मैं अजनबी लोगों की ब्ल्यू फिल्में नहीं धोता ।"

"फिर तुमने उसी की क्यों धोई ?"

"दरअसल वह मेरे लिये बिल्कुल अजनबी नहीं था ।" अलेग्जेण्डर बोला, "उसे मेरे पास एडगर लेकर आया था ।"

"एडगर, वह कौन ?"

"फिल्म के अंदर जो नौजवान लड़का लीड रोल कर रहा है, उसी का नाम एडगर है ।"

कमांडर के दिमाग में अब जबरदस्त बम-सा फटा, "त...तुम इस लड़के को जानते हो ?"

"क्यों नहीं, ब्ल्यू फिल्म जगत का हर आदमी इस लड़के को जानता है ।" अलेग्जेण्डर बोला, "दरअसल यह लड़का यूँ तो एक होटल में सिंगर है, लेकिन पार्ट टाइम जॉब के तौर पर यह इस तरह की ब्ल्यू फिल्मों में काम करता है, जिससे इसे अच्छी-खासी आमदनी हो जाती है ।"

"यह एडगर कहाँ मिलेगा ?"

"इसके घर का एड्रेस तो मुझे नहीं मालूम, बस इतना जानता हूँ कि 'किंग होटल' में सिंगर है और शाम के 7 बजे के बाद वहाँ इसका शो होता है ।"

"किंग होटल !"

"हाँ।"

"शाम के 7 बजे !"

"हाँ।"

□□□

अभी करण सक्सेना, एडगर के सिलसिले में ही पूछताछ कर रहा था कि पूरे डार्क-रूम में जबरदस्त भूकम्प आ गया।

डार्क-रूम के दरवाजे पर पहले कुछेक बड़ी प्रचण्ड चोटें पड़ी थीं, कमांडर कुछ समझ पाता, उससे पहले ही डार्क-रूम का दरवाजा बड़ी भयंकर ध्वनि के साथ चौखट से उखड़ गया और फिर गड़गड़ाता हुआ अंदर गिरा।

दरवाजे के गिरते ही छः नकाबपोश धड़धड़ाते हुए अंदर घुस आये। वह सबके सब अपने हाथों में यूनीवर्सल मशीनगनें पकड़े हुए थे—उनके सिर पर रबड़ के काले थैले चढ़े थे, जिनमें से उनकी सिर्फ आंखें चमक रही थीं।

अंदर डार्क-रूम में आते ही उन्होंने धुआंधार गोलियां बरसानी शुरु कर दी।

कमांडर ने फौरन एडीटिंग टेबल के सामने जो टी.वी. सेटों की कतार लगी हुई थी, उनकी तरफ छलांग लगा दी और पलक झपकते ही उनके पीछे जाकर छिप गया।

जबकि अलेग्जेण्डर और लूसी भागकर एडीटिंग टेबिल के नीचे घुस गये।

सब-कुछ अकस्मात् हुआ था।

एकाएक।

धांय —धांय —धांय —।

"मिस्टर करण !" तभी एक नकाबपोश गला फाड़कर चिल्लाया, "अगर अपनी जिंदगी चाहते हो, तो पीछे से बाहर निकल आओ ।"

कमांडर हंसा ।

"मेरा बाहर निकलना, तुम सबके लिये मौत साबित होगा बेवकूफों !"

"हमें मौत मंजूर है, हम देखना चाहते हैं कि तुम कितने बड़े जांबाज हो ।"

उसी क्षण एक टी.वी. सेट दीवार में से निकलकर हवा में उछला और सीधा एक नकाबपोश के चेहरे पर जाकर लगा, वह नकाबपोश चीखता हुआ नीचे गिर पड़ा था ।

फिर टी.वी. की जगह खाली हुए फ्रेम में कमांडर का आग बरसाता चेहरा चमका, और साथ ही चमकी कोल्ट रिवॉल्वर !

धांय—धांय—धांय— ।

उसकी रिवॉल्वर ने फिर गोलियां उगल दी थीं ।

इस बार दो नकाबपोश कटे वृक्ष की तरह नीचे गिर पड़े, गोलियां उन दोनों की गर्दन में जाकर लगी थीं ।

नकाबपोशों ने भी फौरन कमांडर के ऊपर धुआंधार गोलियाँ बरसा डाली, लेकिन तब तक कमांडर का चेहरा फ्रेम में गायब हो गया था और वो नीचे बैठ चुका था ।

पहले से भी ज्यादा गुस्से में पागल हो गये नकाबपोश, आखिर उनके तीन साथी मारे जा चुके थे, तीन ! उन्होंने हर तरफ बुरी तरह तोड़-फोड़ मचानी शुरू कर दी ।

एक नकाबपोश प्रोजेक्टर पर जोर-जोर से मशीनगनसे गोलियां बरसाने लगा, तो दूसरा नकाबपोश फिल्म धोने के संयंत्र को बर्बाद करने लगा ।

इस बीच कमांडर ने अपनी रिवॉल्वर का चैम्बर देखा—उसमें गोलियां खत्म हो चुकी थीं ।

कमांडर ने फौरन अपने हैट की ग्लिप के अंदर से दूसरी रिवॉल्वर निकाल ली ।

□□□

तभी घटना घटी ।

अपनी लैब को इतनी बुरी तरह बर्बाद होते देख अलेग्जेण्डर से चुप न रहा गया, वह फौरन चीखता-चिल्लाता हुआ टेबल के नीचे से बाहर निकला ।

"यह सब क्या हो रहा है ?" वह हाथ उठा-उठाकर पागलों की तरह चिल्लाया, "तुम सब मेरी लैब को क्यों बर्बाद कर रहे हो, मैंने आखिर तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

एक साथ मशीनगन से कई सारी गोलियां निकली और अलेग्जेण्डर के पूरे जिस्म को छलनी कर गयीं, वह चीखता हुआ नीचे फर्श पर ढेर हो गया ।

अलेग्जेण्डर की लाश बिल्कुल लूसी के सामने जाकर गिरी थी, इसलिये उसके कण्ठ से भी तेज चीख निकल गयी ।

जबकि लूसी की चीख सुनकर उस नकाबपोश के कान खड़े हो गये थे, जो प्रोजेक्टर पर मशीनगन से गोलियां बरसा रहा था । उसने झटके से गर्दन घुमाकर उस टेबल के नीचे झांका, जहाँ सिकुड़ी-सिमटी-सी लूसी बैठी थी ।

नकाबपोश ने वहीं खड़े-खड़े धांय से गोली चलायी, गोली सीधी लूसी के दिल में जाकर लगी और वो हृदयविदारक ढंग से गला फाड़कर वहीं टेबल के नीचे ढेर हो गयी ।

लूसी की चीख सुनकर कमांडर के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गिरी थी ।

वह फौरन टी.वी. सेटों के पीछे से निकलकर एकदम नकाबपोशों के रु-ब-रु पहुंच गया ।

नकाबपोशों की मशीनगनें धड़ाधड़ कमांडर की तरफ उठीं ।

लेकिन !

कमांडर की रिवॉल्वर उनसे कहीं ज्यादा पहले तीनों की तरफ उठ गयी थी ।

फिर तीन गोलियां चलीं ।

तीनों गोलियां नकाबपोशों के माथे पर ठीक उस जगह जाकर लगीं, जहाँ औरतें बिंदी लगाया करती हैं ।

तीनों के माथे से खून के फव्वारे छूटे ।

वह बेहद करुणादायी अंदाज में चीखे और फिर खड़े-खड़े पीछे जा गिरे ।

अब वहाँ आठ लाशें पड़ी थीं ।

करण सक्सेना, लूसी की लाश के करीब पहुंचा, टेबल के नीचे खून का तालाब-सा बना था । लेकिन लूसी की आंखें अभी भी खुली हुई थीं और वो कमांडर की तरफ मुस्कराते हुए इस तरह देख रही थी, जैसे अभी भी जिंदा हो ।

कमांडर की आंखें सजल हो उठीं ।

उसकी जिंदगी मौत का कैसा सैलाब बन गयी थी, वह जहाँ भी कदम रखता था, वहीं लाशें बिछने लगती थीं ।

कमांडर ने प्रोजेक्टर से अपनी फिल्म निकाल कर ब्रीफकेस में डाली और फिर आहिस्ता-आहिस्ता कदमों से चलता हुआ लैब से बाहर निकला ।

धुआंधार गोलियां चलने के कारण बाहर मार्किट में पब्लिक का काफी हुज्जूम जमा हो गया था और सब गर्दन उठा-उठाकर लैब की तरफ ही देख रहे थे, अलबत्ता पुलिस वहाँ अभी नहीं पहुंची थी ।

किसी व्यक्ति को लैब से बाहर निकलते देखकर पब्लिक में आतंक की लहर दौड़ गयी, सब इधर-उधर होने लगे ।

कमांडर भीड़ के बीच में से गुजरकर लूसी की स्पोर्टस् कार में जाकर बैठा, फिर उसने स्पोर्टस् कार स्टार्ट की—अगले ही पल कार सड़क पर दौड़ने लगी ।

फौरन ही बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमियों की कार भी उसके पीछे लग गयी थी ।

□□□

पालसिंह इस समय अपनी दौड़ती हुई कार की पिछली सीट पर बैठा हुआ था, वॉकी-टॉकी सेट उसके हाथ में था, जो ऑन था और जिस पर वह इस समय प्रिंस इरफान शेख से थोड़ी घबरायी आवाज में बात कर रहा था ।

"लगता है, अलेग्जेण्डर की लैब में बहुत जबरदस्त गड़बड़ हो गयी है प्रिंस !" पालसिंह बेचैनी के आलम में सीट पर दायें-बायें पहलू बदलता हुआ बोला, "वहाँ बेपनाह गोलियां चलने और चीख-पुकार की आवाजें मैंने सुनी हैं, परन्तु उस तमाम हंगामे के बावजूद कमांडर करण सक्सेना बिल्कुल सही-सलामत लैब से नीचे आ गया है ।"

"क्या उसके साथ कोई और भी लैब से नीचे उतरा ? प्रिंस इरफान शेख ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

शाम के ठीक सात बज रहे थे, जब कमांडर करण सक्सेना ने 'किंग होटल' में कदम रखा।

किंग होटल !

वह एक पांच सितारा होटल था और लास वेगास शहर के सबसे आलीशान होटलों में उसकी गणना होती थी। उस होटल की प्रसिद्धि की एक और भी बड़ी महत्वपूर्ण वजह थी, दरअसल बॉक्सिंग की दुनिया का जो भी विश्व चैम्पियन बनता था, किंग होटल में उसके लिये फौरन साल-के-साल तक के वास्ते एक डीलक्स सुइट अपने आप बुक हो जाता था, यह इनाम होता था किंग होटल की मैनेजिंग कमेटी की तरफ से विश्व चैम्पियन के लिये।

कमांडर ने जब किंग होटल के मुख्य हॉल में कदम रखा, तो उस समय वहाँ डासिंग फ्लोर पर एक कैबरे नर्तकी डांस कर रही थी और वहाँ एडगर का कहीं कुछ पता न था।

कमांडर एक खाली टेबल पर जाकर बैठ गया और उसने स्कॉच का ऑर्डर दिया।

जल्द ही वेटर उसे स्कॉच भी सर्व कर गया।

वह धीरे-धीरे स्कॉच चुसकने लगा, अब उसे एडगर का बेसब्री से इंतजार था।

एडगर, उसे वह चूंकि ब्ल्यू फिल्म में कई मर्तबा देख चुका था—इसलिये हजारों आदमियों की भीड़ में भी अलग पहचान सकता था।

ठीक सवा सात बज रहे थे, जब डांसिंग फ्लोर पर एडगर प्रकट हुआ।

वह बड़ा चमकदार-सा काले रंग का सूट पहने हुए था —गले में उसने काले रंग की 'बो' लगा रखी थी। इसके अलावा वो बहुत हलके आसमानी रंग की शर्ट पहने था

और सिर पर गोल्फ कैप थी। इसमें कोई शक नहीं कि वो उस समय किसी स्टेट का राजकुमार लग रहा था, लेकिन कौन जानता था कि वो राजकुमार-सा नजर आने वाला नौजवान ब्ल्यू फिल्मों में चंद डॉलरों के लिये लगभग भाड़े पर काम करता है।

डांसिंग फ्लोर पर आते ही एडगर ने माइक पकड़ लिया और फिर एक बड़ा उत्तेजक गीत गाने लगा।

उसकी आवाज सुरीली थी।

जैसे ही उसने गीत गाना शुरू किया, पब्लिक ने जोरदार तालियां बजायीं।

थोड़ी देर तक गीत गाने के बाद वह खुद ही अपने गीत पर डांस भी करने लगा था।

लगभग साढ़े आठ बजे तक उसका प्रोग्राम चला।

इसमें कोई शक नहीं, उसने सारा प्रोग्राम बेहद लाजवाब ढंग से पेश किया था और कहीं कोई बोरियत न थी।

कमांडर मंत्रमुग्ध-सा अपनी जगह बैठा रहा।

फिर वह प्रोग्राम खत्म करके होटल में ही बने 'ड्रेसिंग रूम' में चला गया।

□□□

पांच मिनट बाद ही कमांडर करण सक्सेना भी उसके ड्रेसिंग रूम तरफ बढ़ गया।

जब वह ड्रेसिंग रूम से थोड़ा ही दूर था, तभी उसने एक भारी-भरकम आदमी को एडगर के ड्रेसिंग रूम से निकलते देखा और फिर वह तेज-तेज कदम रखता हआ उससे विपरीत दिशा में चला गया।

कमांडर ड्रेसिंग रूम के सामने पहुंचकर ठिठका।

उसने ड्रेसिंग रूम का दरवाजा थोड़ा-सा खोला और अंदर झांका।

अंदर उसे एडगर नजर न आया।

तब उसने दरवाजा थोड़ा और खोला तथा अंदर दाखिल हुआ।

फौरन उसे एडगर दिखाई दिया।

ड्रेसिंग रूम में एक काफी लम्बे साइज की ईजी चेयर पड़ी हुई थी, जिस पर टांग फैलाये एडगर लेटा था और वह ईजी चेयर आगे-पीछे झूले की तरह झूल रही थी।

ईजी चेयर का मुँह दूसरी तरफ था और एडगर शायद उस पर आराम कर रहा था।

"हैलो मिस्टर एडगर !" कमांडर दरवाजे के पास खड़ा-खड़ा गरमजोशी से बोला, "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?"

ईजी चेयर एकाएक झूला-सा झूलते-झूलते रुक गयी।

"मैंने दरअसल अभी-अभी तुम्हारा गीत सुना।" कमांडर धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, "मुझे तुम्हारा गीत काफी अच्छा लगा—इसलिये मैंने सोचा कि मैं क्यों न ड्रेसिंग रूम में जाकर तुम्हें बधाई दूं।"

एडगर कुछ न बोला।

"क्या बात है !" कमांडर अब ईजी चेयर के काफी नजदीक जाकर खड़ा हो गया, "क्या तुम्हें अपनी प्रशंसा पसंद नहीं ?"

फिर खामोशी-चुप्पी !

"दरअसल मैं ब्ल्यू फिल्म देखने का भी काफी शौकीन रहा हूँ।" कमांडर मुस्कराकर बोला, "आज तब एकाएक तुम्हारे ऊपर नजर पड़ी—तो मेरे दिमाग में बम-सा फटा।

कमांडर फौरन समझ गया, उसने जिस भारी-भरकम आदमी को एडगर के ड्रेसिंग रूम से निकलकर जाते देखा था, जरूर उसी ने एडगर की हत्या की है ।

कमांडर एकदम दौड़ता हुआ ड्रेसिंग रूम से बाहर निकला और उसके बाद उसी दिशा में भागा, जिस तरफ वो भारी-भरकम आदमी गया था ।

लेकिन अब उस आदमी का कहीं पता न था ।

उसने 'किंग होटल' में ही कुछ और जगह भी उसे तलाशा । मगर वो कहीं न मिला ।

वो नदारद हो चुका था ।

कमांडर हताश हो गया ।

नील और जैकब तक पहुंचने के उसके हाथ जितने सूत्र लगे थे, वह सब एक के बाद एक उसके हाथ से निकलते जा रहे थे ।

□□□

गोल्डी अभी भी चिन्ताओं से घिरा था ।

यूँ तो वह थोड़ी देर पहले ही बॉक्सिंग की प्रैक्टिस करके लौटा था, परन्तु मुकाबले में उसके अंदर कोई दिलचस्पी न थी । वह जो कर रहा था, अपने कुछ बेहद खास प्रशंसकों के दबाव में आकर कर रहा था या फिर कोच के कहने पर ।

तभी कमांडर करण सक्सेना भी वहीं गोल्डी से मिला ।

"ब्लैकमेलर का कुछ पता चला ?" कमांडर को देखते ही गोल्डी ने सबसे पहला सवाल यही किया ।

"मैं पूरी कोशिश में लगा हुआ हूँ ।" कमांडर कुर्सी पर बैठने के बाद 'डनहिल' सुलगाता हुआ बोला, "लेकिन अभी तक एक बड़ा अजीबो-गरीब मामला चल रहा है ।"

“कैसा अजीबो-गरीब मामला ?”

“जितना मैं इस कोशिश में लगा हूँ कि जल्द-से-जल्द ब्लैकमेलर तक पहुंचूं, उतना ही ब्लैकमेलर भी इस प्रयास में जुटा है कि मैं उस तक कभी न पहुंच पाऊं। इसीलिये वह हर जगह मेरे से पहले पहुँच जाता है और हर उस सूत्र को खत्म कर डालता है, जिससे मेरी कामयाबी के रास्ते खुल सकते हैं।”

कमांडर ने उसे पहले विलियम की मौत के बारे में बताया, और फिर लूसी, अलेग्जेण्डर तथा एडगर की मौत का किस्सा भी विस्तारपूर्वक सुनाया।

“ए...एडगर !” गोल्डी, एडगर का किस्सा सुनते ही उछला, “य...यह वही एडगर है, जो नील के साथ फ़िल्म में था ?”

“हाँ।” कमांडर ने ‘डनहिल’ का ढेर सारा धुआं ऊपर की तरफ उछाला, “वही एडगर है।”

“ल...लेकिन अगर उसी का नाम एडगर है, तो वही तो वह व्यक्ति था, जो असली ब्लैकमेलर था।”

“नहीं, एडगर असली ब्लैकमेलर नहीं था।” कमांडर बोला, “उसकी हैसियत इस पूरे खेल में एक मामूली प्यादे जैसी है, मोहरे जैसी है। दरअसल सारा खेल जॉनी बैंजो के कहने पर जैकब नाम का एक आदमी खेल रहा है, जो अभी तक पूरी तरह पर्दे के पीछे है। जैकब ही वो आदमी है, जिससे नील अक्सर क्लब में मिलती थी और फिर हमेशा-हमेशा के लिये उसके साथ चली गयी। एडगर को तो सिर्फ इसीलिये इस्तेमाल किया गया, क्योंकि जैकब खुद पर्दे पर नहीं आना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि

अगर कभी किसी वजह से मामला बिगड़ जाये, तो उसकी आसानी से शिनाख्त हो सके।"

"ओह, यानि नील अब जैकब के पास है।"

"बिलकुल।"

"और जैकब कहाँ है, इस रहस्य को कोई नहीं जानता।"

"हाँ।"

गोल्डी के चेहरे पर सस्पेंस छा गया।

"मामला वाकई काफी पेचीदा है।"

"पेचीदा भी और खून-खराबे से भरपूर भी।" कमांडर बोला, "क्योंकि दुश्मन ने अभी तक जो हरकतें की हैं—उससे बिलकुल स्पष्ट साबित होता है कि वह हत्याएं करने से नहीं घबराता बल्कि जिस प्रकार उसके आदमियों ने काफी तेजी से खून-खराबा किया है, उससे ऐसा महसूस होता है, मानो वह सब प्रोफेशनल किलर हों।"

"यानि दुश्मन कमजोर नही है।"

"कमजोर तो किसी भी हालत में नहीं है। दुश्मन के पास बेहद अलर्ट और खतरनाक लोगों की एक पूरी टीम है, जो काम कर रही है। वह लोग अभी तक किसी भी मोर्चे पर जरा भी नहीं चुके हैं।"

गोल्डी की परेशानी कुछ और बढ़ गयी तथा उसने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला।

"जॉनी बैंजो के बारे में कोई रिपोर्ट है?" कमांडर ने 'डनहिल' की राख एश-ट्रे में झाड़ी।

"कोई खास रिपोर्ट नहीं है।" गोल्डी ने निराश मुद्रा में कहा, "सिर्फ इतना ही मालूम हुआ है कि वह बड़े जोर-शोर से मुकाबले की तैयारी कर रहा है।"

गोल्डी स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति एकदम बेड से उछलकर खड़ा हो गया और फिर बेपनाह तेजी से मारथा के बेडरूम की तरफ झपटा ।

□□□

मारथा को चूँकि दिल की बीमारी थी, इसीलिये वो कभी भी अपने बेडरूम का दरवाजा अंदर से बंद करके नहीं सोती थी ।

गोल्डी फौरन दरवाजे के पल्ले को धकेलता हुआ मारथा के बेडरूम में जा घुसा ।

सामने ही बिस्तर पर मारथा बैठी थी, पसीनों से बुरी तरह लथपथ, चेहरे का रंग उड़ा हुआ और खौफ से थर-थर कांपती हुई । बुरी हालत थी मारथा की, जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था ।

"ममा !" गोल्डी ने उसे पकड़कर बुरी तरह झिंझोड़ा, "क्या हुआ ममा ?"

मारथा मानो नींद से जागी, उसे एकाएक बड़ा तेज झटका लगा ।

"ग...गोल्डी ! गोल्डी को अपने सामने देखते ही मारथा जज्बाती हो उठी, उसकी आँखों से आंसू बह निकले, "ग...गोल्डी !"

मारथा कसकर गोल्डी से चिपट गयी और जोर-जोर से रोने लगी ।

"क्या बात है ममा ?" गोल्डी ने उसे फिर झिंझोड़ा, "क्या हुआ, अ...आप चिल्लायी क्यों थी ?"

"म...मैंने सपने में नील को देखा बेटे !"

"न...नील !" गोल्डी के सीने पर घूंसा-सा पड़ा ।

"हाँ, नील ! म...मैंने देखा कि नील कहीं फंसी हुई है, किसी जाल में फंसी हुई है और एक लम्बा-चौड़ा काला भुजंग आदमी धीरे-धीरे मेरी बेटी की तरफ बढ़ रहा है, वह उसे मार डालना चाहता है, वह उसकी हत्या करना चाहता है। ए...ऐसा लगता है, जैसे वह कोई जल्लाद हो, खतरनाक जल्लाद !"

"ज...जल्लाद !" गोल्डी की आँखों के गिर्द एकाएक 'अब्दाली' का चेहरा घूम गया।

और !

अब्दाली का चेहरा घूमते ही गोल्डी के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये थे।

"ग...गोल्डी !" मारथा फूट-फूटकर रोने लगी, "मेरी बेटी को बचा लो गोल्डी, नील को बचा लो, व...वरना वह जल्लाद उसे मार डालेगा, वह उसका खून कर देगा।"

"आप बेफिक्र रहें ममा !" गोल्डी ने मारथा की पीठ थपथपाई, "बेफिक्र रहें, नील को कुछ नहीं होगा। ऐसा कोई जल्लाद नहीं है, जो नील को मार डालना चाहे, यह जरूर आपक वहम है।"

"नहीं।" मारथा ने जल्दी से अपनी गर्दन दायें-बायें हिलाई, "य...यह मेरा वहम नहीं हो सकता, एक ही रात में यह सपना मुझे कई बार दिखाई दे चुका है। वह बहुत लम्बा-चौड़ा आदमी है, उसका रंग एकदम स्याह है, मानो काला हब्शी हो। ज...जरूर ऐसा कोई आदमी है, जो नील को मार डालने का इच्छुक है।"

"ऐसा कोई आदमी नहीं है ममा, कोई नहीं है।" गोल्डी उसे यकीन दिलाता हुआ बोला, "सपने कभी सच नहीं

"हाँ, नील ! म...मैंने देखा कि नील कहीं फंसी हुई है, किसी जाल में फंसी हुई है और एक लम्बा-चौड़ा काला भुजंग आदमी धीरे-धीरे मेरी बेटी की तरफ बढ़ रहा है, वह उसे मार डालना चाहता है, वह उसकी हत्या करना चाहता है। ए...ऐसा लगता है, जैसे वह कोई जल्लाद हो, खतरनाक जल्लाद !"

"ज...जल्लाद !" गोल्डी की आँखों के गिर्द एकाएक 'अब्दाली' का चेहरा घूम गया।

और !

अब्दाली का चेहरा घूमते ही गोल्डी के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये थे।

"ग...गोल्डी !" मारथा फूट-फूटकर रोने लगी, "मेरी बेटी को बचा लो गोल्डी, नील को बचा लो, व...वरना वह जल्लाद उसे मार डालेगा, वह उसका खून कर देगा।"

"आप बेफिक्र रहें ममा !" गोल्डी ने मारथा की पीठ थपथपाई, "बेफिक्र रहें, नील को कुछ नहीं होगा। ऐसा कोई जल्लाद नहीं है, जो नील को मार डालना चाहे, यह जरूर आपक वहम है।"

"नहीं।" मारथा ने जल्दी से अपनी गर्दन दायें-बायें हिलाई, "य...यह मेरा वहम नहीं हो सकता, एक ही रात में यह सपना मुझे कई बार दिखाई दे चुका है। वह बहुत लम्बा-चौड़ा आदमी है, उसका रंग एकदम स्याह है, मानो काला हब्शी हो। ज...जरूर ऐसा कोई आदमी है, जो नील को मार डालने का इच्छुक है।"

"ऐसा कोई आदमी नहीं है ममा, कोई नहीं है।" गोल्डी उसे यकीन दिलाता हुआ बोला, "सपने कभी सच नहीं

"हाँ, नील ! म...मैंने देखा कि नील कहीं फंसी हुई है, किसी जाल में फंसी हुई है और एक लम्बा-चौड़ा काला भुजंग आदमी धीरे-धीरे मेरी बेटी की तरफ बढ़ रहा है, वह उसे मार डालना चाहता है, वह उसकी हत्या करना चाहता है। ए...ऐसा लगता है, जैसे वह कोई जल्लाद हो, खतरनाक जल्लाद !"

"ज...जल्लाद !" गोल्डी की आँखों के गिर्द एकाएक 'अब्दाली' का चेहरा घूम गया।

और !

अब्दाली का चेहरा घूमते ही गोल्डी के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये थे।

"ग...गोल्डी !" मारथा फूट-फूटकर रोने लगी, "मेरी बेटी को बचा लो गोल्डी, नील को बचा लो, व...वरना वह जल्लाद उसे मार डालेगा, वह उसका खून कर देगा।"

"आप बेफिक्र रहें ममा !" गोल्डी ने मारथा की पीठ थपथपाई, "बेफिक्र रहें, नील को कुछ नहीं होगा। ऐसा कोई जल्लाद नहीं है, जो नील को मार डालना चाहे, यह जरूर आपक वहम है।"

"नहीं।" मारथा ने जल्दी से अपनी गर्दन दायें-बायें हिलाई, "य...यह मेरा वहम नहीं हो सकता, एक ही रात में यह सपना मुझे कई बार दिखाई दे चुका है। वह बहुत लम्बा-चौड़ा आदमी है, उसका रंग एकदम स्याह है, मानो काला हब्शी हो। ज...जरूर ऐसा कोई आदमी है, जो नील को मार डालने का इच्छुक है।"

"ऐसा कोई आदमी नहीं है ममा, कोई नहीं है।" गोल्डी उसे यकीन दिलाता हुआ बोला, "सपने कभी सच नहीं

होते, आप देखना, नील एक दिन अपने आप लौट आयेगी, बिलकुल ठीक-ठाक लौट आयेगी ।"

"वह अब कभी नहीं लौटेगी मेरे बच्चे, कभी नहीं ।" मारथा भावविह्व्ल लहजे में बोली, "तुम्हारे पास ताकत है, तुम्हारे पास इज्जत है, तुम्हारे पास सब-कुछ है बेटे, सिर्फ तुम ही अब नील को बचा सकते हो ।"

"आप बेफिक्र रहें ममा, मैं नील को बचाने की पूरी-पूरी कोशिश करूँगा । अब आप भी सो जाओ, काफी रात हो रही है, फिर आपकी तबियत भी ठीक नहीं रहती ।"

फिर भी मारथा काफी देर तक रोती रही और गोल्डी उसे दिलासा दिलाता रहा ।

आख़िरकार मारथा थक-हारकर वापस बिस्तर पर लेट गयी थी । लेकिन गोल्डी के दिल-दिमाग में युद्ध अभी भी छिड़ा था, वह अब्दाली को भुला नहीं पा रहा था ।

उसका शैतानी रुप बार-बार उसकी आँखों के गिर्द बिजली की तरह कौंध उठता ।

□□□

अभियान का तीसरा दिन (23 अगस्त)

कमांडर करण सक्सेना को वह तमाम रास्ते बंद नजर आ रहे थे, जिसके द्वारा नील या जैकब तक पहुँच जा सके ।

इसी कारण वह काफी झुंझलाया हुआ था । सारी रात उसे यही सोचते-सोचते हो गयी थी कि अब उसे अपना अगला कदम क्या उठाना चाहिये, लेकिन वो खूब सोचने-विचारने के बावजूद भी अपने अगले कदम के बारे में कोई फैसला नहीं कर पा रहा था ।

कमांडर के सामने इस समय कई मुश्किलें थीं ।

पहली मुश्किल ये थी, वो अभी तक जैकब को पहचानता ही नहीं था।

दूसरी मुश्किल ये थी, वो अभी तक इस बात के प्रति भी कन्फर्म नहीं था कि नील और जैकब उसी शहर के अंदर हैं या फिर वहाँ से वो कहीं और चले गये हैं।

बहरहाल उन्हीं तमाम उलझनों से घिरा कमांडर उस समय स्टार टी.वी. पर एक फ़िल्म देख रहा था, फ़िल्म अंग्रेजी में थी और बेहद जबरदस्त सस्पेंस फ़िल्म थी, जिसमें एक के बाद एक कई हत्याएं हो गयी थीं। दरअसल फ़िल्म के हीरो को कुछ बेहद महत्वपूर्ण कागजों की तलाश थी, लेकिन वो उन कागजों की तलाश में जहाँ कहीं भी जाता था, वहीं किसी न किसी की हत्या हो जाती थी।

फ़िल्म में थोड़ी देर पहले ही हीरो को मालूम हुआ था कि उसे जिन कागजों की तलाश है, वह कागज एक कंपनी के जनरल मैनेजर के पास हैं।

हीरो फौरन उस जनरल मैनेजर के ऑफिस में पहुँचता है।

मगर यह क्या, जैसे ही वो जनरल मैनेजर के ऑफिस में घुसता है,सामने ही कुर्सी पर जनरल मैनेजर की गोलियों से छलनी लाश पड़ी थी।

वह सन्न रह जाता है, भौंचक्का। लेकिन फिर भी वो काफी जल्दी-जल्दी ऑफिस के अंदर उन कागजों को ढूंढ़ता है, मगर खूब कोशिश करने के बाद भी कागज उसे वहाँ नहीं मिलते।

वह तुरंत ऑफिस से बाहर निकलता है और वहाँ से भागता है।

उसकी अब बुरी हालत है, वह पसीनों में लथपथ है और परेशान हाल ।

उन कागजों को हासिल करने के उसके पास जितने रास्ते थे, वह सब बंद हो गये थे ।

अब ऐसा कोई तरीका नहीं था, जिस पर वह आगे बढ़ सके ।

इस समय हीरो की हालत बिल्कुल कमांडर जैसी थी । तभी एकाएक उसके दिमाग में एक नया आइडिया कौंधता है ।

जबरदस्त आइडिया !

वह जनरल मैनेजर के घर जाता है और वहाँ कागजों की खोजबीन करता है । इत्तेफाक से कागज उसे वहाँ मिल जाते हैं ।

मगर फिर हीरो के साथ एक सनसनीखेज घटना घटती है ।

□□□

फ़िल्म वाकई जबरदस्त थी ।

लेकिन एक प्रसंग को देखते ही कमांडर एकदम झटके से उछलकर खड़ा हो गया और उसने टी.वी. बंद कर दिया ।

नील और जैकब तक पहुँचने का जो रास्ता उसे रात से नहीं सुझाई दे रहा था, वह उसे फ़िल्म की बदौलत अब एकाएक सुझाई दे गया था ।

वह तुरंत टेलीफोन की तरफ झपटा ।

उसने रिसीवर उठाया और कोई नंबर डायल करना चाहा ।

लेकिन शीघ्र ही वो ठिठका ।

उसका दिमाग इस समय काफी तेजी से चल रहा था, वहाँ से कहीं भी टेलीफोन करना खतरनाक था । वह फौरन अपने सुइट से बाहर निकला, ताला लगाया, और सीधा होटल से बाहर बने एक पी.सी.ओ. पर पहुँचा ।

वहाँ से उसने शीघ्रपूर्वक एक नंबर डायल किया ।

"यस, किंग होटल !" तुरंत दूसरी तरफ से 'किंग होटल' के रिसेप्शनिस्ट की आवाज उभरी ।

मैं पुलिस हेडक्वार्टर से एक सब-इंस्पेक्टर बोल रहा हूँ । कमांडर भारी रौब-दाब वाले लहजे में बोला ।

"स...सब-इंस्पेक्टर ! कल तुम्हारे होटल के अंदर एडगर नाम के एक व्यक्ति की हत्या हो गयी थी, जोकि एक सिंगर था ।"

"ज...जी हाँ, जी हाँ, कल एडगर की हत्या हो गयी थी, ल...लेकिन अब क्या हुआ ?"

"मुझे एडगर के घर का एड्रेस चाहिये, फौरन !"

"घ...घर का एड्रेस !" रिसेप्शनिस्ट बुरी तरह चौंक कर बोला, "परन्तु पुलिस तो उनके घर का एड्रेस कल ही ले गयी थी ।"

"हाँ, एड्रेस ले गयी थी । लेकिन वो एड्रेस पुलिस से कहीं गायब हो गया है, इसीलिये तुरंत ही दूसरा एड्रेस चाहिये । क्यों, तुम लोगों को पता देने में कोई एतराज है ?"

"न...नहीं, हमें भला एतराज क्यों हो सकता है ।"

"फिर ?"

"आप एक मिनट होल्ड कीजिये, मैं अभी एड्रेस देता हूँ ।"

बड़ी शानो-शौकत से रहने वाला आदमी था, वहीं उसके फ्लैट की स्थिति उतनी ही बुरी थी ।

सबसे ज्यादा वहाँ शराब की बोतलें फैली पड़ी थीं, जिनसे साबित होता था कि एडगर को अपने जीवन में शराब पीने का काफी शौक रहा था ।

बहरहाल !

अंदर घुसते ही कमांडर ने काफी तेजी से फ्लैट की तलाशी लेनी आरम्भ कर दी ।

सबसे पहले उसने आलमारियों की तलाशी ली, वहाँ तीन आलमारियाँ बनी हुई थीं ।

उसके बाद उसने फ्लैट की लगभग सभी चीजों को एक-एक करके खंगाला, परन्तु वहाँ उसे ऐसी कोई भी चीज न मिली. जिससे नील या जैकब के बारे में कैसी भी कोई जानकारी मिल सके ।

लगभग एक घंटे तक कमांडर उस फ्लैट की बड़ी बारीकी से तलाशी लेता रहा, और जब उसे कहीं कुछ न मिला, तो वह हताश हो गया ।

उसे अपनी कोशिश भी बेकार होती महसूस हुई ।

वह बेहद थके-थके कदमों के साथ फ्लैट से बाहर निकला, दरवाजा बंद करके ताला लगाया और फिर सीढ़ियाँ उतरता हुआ नीचे की तरफ बढ़ गया ।

□□□

नीचे उतरते ही कमांडर करण सक्सेना के दिमाग में जबरदस्त धमाका हुआ ।

वह उस समय काफी हताश था और उम्मीद की जितनी भी किरणें थीं, वह सब बुझ गयी थी ।

तभी कमांडर चौंका ।

एकाएक उसकी नजर नीचे सीढ़ियों के पास ही लगे एक लैटर-बॉक्स पर जाकर जम गयी, जिस पर 'एडगर' लिखा था, दरअसल उस लैटर-बॉक्स कि झिरी में से एक चिट्ठी नजर आ रही थी, जो उसके अंदर पड़ी थी ।

कमांडर ने फौरन दायें-बायें देखा ।

वहाँ आसपास कोई न था ।

कमांडर करण सक्सेना तुरंत लैटर-बॉक्स के नजदीक जाकर खड़ा हो गया तथा फिर पलक झपकते ही उसने लैटर-बॉक्स का ताला खोल डाला और उसके अंदर से चिट्ठी निकाल दी ।

वह एक सफेद लिफाफा था और उसके ऊपर मियामी की मोहर लगी थी ।

कमांडर ने आनन-फानन लिफाफा खोलकर उसके अंदर से चिट्ठी निकाल ली ।

अगले ही पल उसकी आँखों में बेतहाशा चमक दौड़ गयी ।

वह जैकब की चिट्ठी थी, जो उसने एडगर को लिखी थी ।

हैलो एडगर,

आज ही तुम्हारा पत्र मिला । तुमने अपने पत्र में 'नील' के विषय में काफी बातें लिखी हैं । ऐसा लगता है दोस्त, जब से तुमने फ़िल्म बनाते समय नील के साथ सहवास किया है, तब से तुम उसे एक क्षण के लिये भी नहीं भुला पाये हो । वह लड़की ही ऐसी है, उसे जो एक बार देख ले, फिर आसानी से भुला नहीं पाता, जबकि तुमने तो उसके साथ सहवास किया है ।

वैसे तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है । जल्द ही तुम्हें नील के साथ बिस्तर पर वक्त गुजारने का फिर एक और मौका मिलने वाला है । दरअसल मैंने उसकी एक और फ़िल्म बनानी है और हमेशा की तरह पर्दे पर उसके साथ सहवास भी तुम ही करोगे । लेकिन ध्यान रहे, इस बार नील कि ब्ल्यू फ़िल्म उसकी पहली चारों फिल्मों से ज्यादा जबरदस्त होनी चाहिये, जो उसके पति के उस फ़िल्म को देखते ही होश उड़ जायें । इसके लिये सनसनीखेज दृश्यों की प्रैक्टिस तुम अभी से शुरू कर दो, मैं भी इन दिनों नील के साथ ऐसे दृश्यों की रिहर्सल कर रहा हूँ, जिनसे तुम्हें शूटिंग के दौरान काफी लाभ होगा ।

इस बार हम फ़िल्म की शूटिंग भी मियामी में ही करेंगे ।

मेरे अगले पत्र का इन्तेजार करना ।

तुम्हारा दोस्त

, जैकब

उस पत्र के नीचे जैकब का एड्रेस भी लिखा था,

जैकब

गोल्डन गेट फार्म हाउस

माल रोड,मियामी ।

उस एड्रेस को पढ़ते ही कमांडर की आँखों में विलक्षण चमक कौंध उठी ।

एक ही झटके में उसकी सारी हताशा रफूचक्कर हो गयी थी ।

इसका मतलब नील और जैकब मियामी में थे ।

वो वहाँ के किसी फार्म हाउस में थे ।

कमांडर ने पत्र को तेजी के साथ अपनी जेब में ठूंसा और लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ आगे की ओर बढ़ गया ।

मियामी !

अगर लास वेगास बॉक्सिंग की दुनिया का तीर्थ था, तो 'मियामी' भी बॉक्सिंग की दुनिया में एक खास जगह थी । लास वेगास के बाद वही वो शहर था, जहाँ बॉक्सिंग के बड़े-बड़े मुकाबले होते थे और लाखों-करोड़ों डॉलर के दाँव खेले जाते थे ।

वह जल्दी-जल्दी अपने अभियान की आगामी रूपरेखा तैयार करने लगा ।

□□□

जॉनी बैंजो, अट्ठाईस वर्ष का बॉक्सर !

वह भी एक काला हब्शी था और उसकी कद, काठी भी गोल्डी की भांति ही लम्बी-चौड़ी थी ।

जॉनी बैंजो के चेहरे की माँस-पेशियाँ कठोर थीं, उसके चेहरे पर क्रूरता थी, और वह शक्ल से ही कोई बदमाश नजर आता था ।

दरअसल जॉनी बैंजो बॉक्सिंग की दुनिया में आने से पहले एक खतरनाक किस्म का 'डकैत' था, जिसने बड़ी-बड़ी डकैतियाँ डाली थीं—हत्याएं की थीं, इसके अलावा और भी दर्जनों किस्म के अपराध किये थे ।

वह पैदाइशी तौर पर 'मुजरिम' था ।

परन्तु उसकी जिन्दगी में रोमाँचकारी परिवर्तन उस समय आया, जब वो एक डकैती डालने के जुर्म में दो साल की सजा काटकर जेल से बाहर निकला और तभी उसकी एक ऐसे आदमी से मुलाक़ात हुई, जो बॉक्सिंग का कोच था, और उसने उसके मसल्लस देखकर कहा कि अगर वो बॉक्सर बने तो पूरी दुनिया में तहलका मचा सकता है ।

जॉनी बैंजो का चेहरा तमतमाने लगा, उसकी आँखों ने खून छलक आया था ।

उसने और ज्यादा जोर-जोर से उछलकर सेंड बैग पर घूंसे मारे ।

ऐसा लगा, जैसे वो अपने जिस्म की सारी शक्ति समेटकर एक ही बिंदु पर ले आया हो, घूंसों के अंदर ।

सेंड बैग धाड़-धाड़ करके उछले ।

बेरोमीटर की सुई झटके से आगे की तरफ बढ़ी ।

"मिस्टर जॉनी !" कोच फिर गला फाड़कर चिल्लाया, "थोड़ी और हिम्मत करो, थोड़ी और, अभी भी तुम गोल्डी से पीछे हो, काफी पीछे ।"

जॉनी बैंजो ने और ज्यादा प्रचण्ड शक्ति से सेण्ड बैग पर घूंसे मारे ।

वह उसकी ताकत की पराकाष्ठा थी और अब उसकी हिम्मत भी जवाब दे गयी थी, वह एकाएक घूंसे बरसाता-बरसाता वहीं पड़ी एक कुर्सी पर धम्म से गिरा और इतनी जोर-जोर से सांस लेने लगा, जैसे उसके फेफड़े फटने वाले हों ।

उसके शरीर से पसीने इस तरह बह रहे थे, जैसे किसी ने नल खोल दिया हो ।

सचमुच जॉनी बैंजो को उस समय काफी बुरी हालत थी, काफी बुरी ।

□□□

जबकि जॉनी बैंजो के कोच के चेहरे पर गहरी निराशा के चिन्ह उभर आये थे, उसने तौलिये जॉनी बैंजो के चेहरे और

गर्दन का पसीना साफ किया, फिर वो वहीं सामने पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

जॉनी बैंजो पांच मिनट के अंदर ही नॉर्मल हो गया था और अब फलों के जूस का गिलास धीरे-धीरे सिप कर रहा था।

"मुझे हालात अच्छे नजर नहीं आ रहे मिस्टर जॉनी !"

कोच के चेहरे पर अभी भी निराशाजनक भाव थे।

"क्यों ?" जॉनी बैंजो ने चौंककर सुर्ख-सुर्ख आंखों से अपने कोच की तरफ देखा, "हालात अच्छे क्यों नहीं नजर आ रहे ?"

"दरअसल पहले तुम्हारे घूंसे की प्रहार क्षमता डेढ़ सौ पौण्ड थी, यानि जब तुम किसी दूसरे मुक्केबाज के घूंसा मारते थे, तो उसे ऐसा महसूस होता था, जैसे डेढ़ सौ पौण्ड वजन वाला लोहे का कोई बाट तुमने अपनी भरपूर शक्ति से उसके जिस्म के ऊपर दे मारा हो, अपनी इतनी जबरदस्त प्रहार क्षमता के बावजूद तुम उस समय गोल्डी से हार गये थे, क्योंकि गोल्डी के घूंसे की शक्ति दो सौ पौण्ड थी, यानि तुमसे पचास पौण्ड ज्यादा।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" जॉनी बैंजो गुर्राया, उसके चेहरे की भृकुटी तन गयी।

"मैं यह कहना चाहता हूँ मिस्टर जॉनी, जब तम डेढ़ सौ पौण्ड का घूंसा होने के बावजूद गोल्डी से हार गये थे, तो फिर तुम उससे 31 अगस्त को कैसे जीत सकते हो, क्योंकि अब तो तुम्हारे घूंसे की अधिकतम शक्ति घटकर एक सौ पैंतीस पौण्ड ही रह गयी है। मैं समझता हूँ कि तुमने गोल्डी को चैलेंज देकर ठीक नहीं किया, मुझे नहीं लगता कि तुम इस बार भी उससे जीत पाओगे।"

"मैंने जीतना है।", जॉनी बैंजो चिंघाड़ उठा, उसके चेहरे पर और ज्यादा खून की बारिश होने लगी थी, "मैंने इस बार हर हालत में जीतना है, दुनिया की कोई ताकत मुझे नहीं रोक सकती।"

"बेवकूफ मत बनो जॉनी !" कोच भी चिंघाड़ा, "अपनी ताकत को पहचानो, अगर तुम रिंग के अंदर अपना मजाक उड़वाना नहीं चाहते—अगर तुम नहीं चाहते कि गोल्डी सिर्फ चंद घूंसों में तुम्हें धराशायी कर दे, तो चुपचाप मुकाबले से अपना नाम वापस ले लो—इसी में तुम्हारी भलाई है।"

"मैं, और नाम वापस ले लूं।" जॉनी बैंजो एकाएक बहुत जोर से दरिन्दों की तरह खिलखिलाकर हँसा, वह एकाएक शैतान नजर आने लगा था, "अगर तुम्हें मेरे ऊपर यकीन नहीं है सूअर आदमी, तो दफा हो जाओ यहाँ से।" जॉनी बैंजो चिंघाड़ा, "मुझे नहीं चाहिये तुम्हारे जैसा कोच, जो अपने बॉक्सर का हौसला बढ़ाने की बजाय उसे दुश्मन के सामने घुटने टेकने के लिये कहता है। अगर औकात ही पहचाननी है, तो अपनी औकात पहचान कंजर, तेरे जैसे कोच बॉक्सिंग की इस दुनिया में दो-दो टके में मिलते हैं।"

कोच का चेहरा भी अब लाल-भभूका हो गया था, लेकिन फिर भी उसने अपने गुस्से पर जब्त किया।

"ठीक है।" कोच कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया, "मैं जा रहा हूँ जॉनी, लेकिन मेरी बात लिख लो, गोल्डी को चैलेंज देकर तुमने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल की है। तुम उसे किसी भी हालत में हरा नहीं पाओगे।, तुम्हारा यह गुस्सा ही तुम्हें ले डूबेगा।"

"साले सूअर !" जॉनी बैंजो एकाएक स्प्रिंग लगे किसी खिलौने की भांति हवा में उछला और उसने धड़ाक से कोच के चेहरे पर एक प्रचण्ड घूंसा जड़ दिया ।

कोच चिंघाड़ता हुआ पीछे जा गिरा, उसके मुँह से खून बहने लगा और एक दांत टूट गया ।

"अहमक के पट्ठे !" जॉनी बैंजो उसका गिरेहबान पकड़कर बुरी तरह झिंझोड़ता हुआ चिल्लाया , "तू देखेगा, तू अपनी इन्हीं आंखों से देखेगा कि इस बार जीत मेरी होगी, मैं दोबारा विश्व चैम्पियन बनूंगा और अगर मुकाबले से नाम ही वापस लेने की बात है, तो गोल्डी अपना नाम वापस लेगा, गोल्डी !"

जॉनी बैंजो ने भड़ाक् से एक और प्रचण्ड घूंसा कोच के चेहरे पर जड़ दिया था ।

कोच की हृदयविदारक चीख निकल गयी और उसने खून की एक बड़ी उल्टी कर दी ।

□□□

कमांडर ने टेलीफोन पर गोल्डी से बात की ।

"हैलो मिस्टर गोल्डी, मैं कमांडर करण सक्सेना बोल रहा हूँ ।"

"ओह, मिस्टर करण !" कमांडर की आवाज सुनते ही गोल्डी के शरीर में बिजली-सी दौड़ गयी , "क्या रिपोर्ट है?"

"रिपोर्ट काफी अच्छी है ।" कमांडर उत्साह में भरकर बोला , "यूं समझिये, मुझे आधे मिशन में कामयाबी हासिल हो चुकी है । दरअसल नील और जैकब इस समय कहाँ छिपे हैं , मुझे यह मालूम हो गया है ।"

"क...क्या कह रहे हो तुम?" गोल्डी के मुँह से तीव्र सिसकारी छूट गयी, उसके नेत्र हैरत से फटते चले गये, "क...कहाँ हैं, कहाँ हैं वह दोनों ?"

"वह दोनों इस समय मियामी के एक फार्म हाउस के अंदर हैं और मैंने बस तुम्हें यही सूचना देने के लिये फोन किया था। मैं अब से ठीक आधा घण्टा बाद फ्लाइट पकड़कर मियामी के लिये रवाना हो रहा हूँ, मैंने अभी-अभी टिकट बुक कराया है।"

"ओह !"

"जल्द ही तुमसे फिर लास वेगास के अंदर ही मुलाकात होगी, परन्तु लगता है कि मैं जब मियामी से वापस लौटूंगा, तो मेरा 7 दिन का यह अभियान कामयाब हो चुका होगा। ब्ल्यू फिल्मों की सभी कैसटें मेरे कब्जे में होंगी और नील भी मेरे साथ होगी।"

"काश !" गोल्डी ने गहरी सांस ली, "काश, ऐसा ही हो मिस्टर करण !"

"ऐसा ही होगा, तुम चिन्ता न करो।"

□□□

"बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी हर पल कमांडर के पीछे थे।

कमांडर ने जब अमरीकन एयरलाइंस के दफ्तर में घुसकर मियामी के लिये टिकट बुक कराया, तो उन सबके कान खड़े हो गये।

पालसिंह ने फौरन वॉकी-टॉकी सेट पर प्रिंस इरफान शेख से सम्बन्ध स्थापित किया।

"एक काफी सनसनीखेज रिपोर्ट है प्रिंस !" पालसिंह उत्तेजनापूर्वक बोला ।

"क्या ?"

"अभी-अभी कमांडर ने एयरलाइंस के दफ्तर से कहीं बाहर जाने के लिये टिकट बुक कराया है, इतना ही नहीं, उसने किसी से टेलीफोन पर बात भी की है, शायद गोल्डी से !"

"उसने कहाँ जाने के लिये टिकट बुक कराया है?"

"यह मालूम नहीं हो सका प्रिंस !"

"एयरलाइंस के दफ्तर का नाम बताओ ?"

"अमरीकन एयरलाइंस !"

"कमांडर की अब क्या पोजीशन है ?"

"वह फिर एक टैक्सी में बैठ चुका है और अब शायद एयरपोर्ट की तरफ जा रहा है ।" पालसिंह तेजी से परिस्थिति बयान करता हुआ बोला, "अगर वो सचमुच एयरपोर्ट पर ही पहुंचता है और वहाँ जाकर किसी फ्लाइट में बैठता है, तो हम क्या करें प्रिंस?"

"तुम लोग फिलहाल कमांडर का पूरी मुस्तैदी से पीछा करते रहो ।" प्रिंस इरफान शेख बोला, "मैं अभी पांच मिनट के अंदर बताता हूँ कि अगर कमांडर फ्लाइट पकड़कर लास वेगास से कहीं बाहर जाता है, तो तुमने उस पोजीशन में क्या करना है ।"

"ओ.के. प्रिंस !"

□□□

बादशाह करीम शेख नूरानी जैसा धुरंधर आदमी भी उस खबर को सुनकर चौंक पड़ा था कि कमांडर करण सक्सेना

“एक मिनट रुकिये, मैं अभी मिस्टर पिण्टो को बुलाती हूँ ।” लाइन पर सन्नाटा छा गया ।

जबकि बादशाह ने बेचैनीपूर्वक पाइप के कस लगाये थे और अपनी रिस्टवॉच में टाइम देखा, घड़ी की सुई हमेशा की तरह धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ रही थी ।

“हैलो!” जल्द ही एक पुरुष की आवाज लाइन पर उभरी, “पिण्टो स्पीकिंग !”

“पिण्टो, मैं बोल रहा हूँ । मैं, बादशाह करीम शेख नूरानी ।”

“ब...बादशाह, अ...आप !” पिण्टो हड़बड़ा उठा, “अ...आपने किस वास्ते फोन किया?”

“मेरी बात बहुत ध्यान से सुनो पिण्टो, तुमसे एक बहुत जरूरी काम आ पड़ा है । दरअसल अभी थोड़ी देर पहले ही तुम्हारी एयरलाइंस के दफ्तर से एक हिन्दुस्तानी आदमी ने कहीं जाने के लिये टिकट बुक कराया है । तुमने फौरन रिकार्ड चैक करके मुझे यह बताना है कि उसने कहाँ जाने के लिये टिकट बुक कराया है और कितनी देर बाद उसकी फ्लाइट, जितनी जल्द-से-जल्द संभव हो, मुझे इन सब सवालों के जवाब दो ।”

“हिन्दुस्तानी आदमी ?”

“यस ।”

“वह काला ओरवकोट तो पहने हुए नहीं था बादशाह ?”

“बिल्कुल वही-वही । क्या तुमने उसे देखा था पिण्टो ?”

“बिल्कुल देखा था बादशाह !” पिण्टो व्यग्रतापूर्वक बोला , “उसके टिकट की डिटेल बताने के लिये मुझे

रिकॉर्ड चेक करने की कोई जरूरत नहीं । दरअसल जिस समय वह आदमी टिकट बुक कराने दफ्तर आया था, तो उस समय मैं ही काउण्टर पर बैठा था और मैंने ही उसका टिकट बुक किया था ।

"वैरी गुड, उसने कहाँ का टिकट बुक कराया ?"

"मियामी ।"

"म...मियामी !" बादशाह करीम शेख नूरानी के ऊपर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी, "क...कितनी देर बाद उसकी फ्लाइट मियामी के लिये रवाना हो रही है ?"

"सिर्फ पच्चीस मिनट बाद ।"

"ओह !"

"बात क्या है बादशाह, आप कुछ ज्यादा ही परेशान हैं ?"

"तुम फौरन एक काम करो पिण्टो, हमारे उसी फ्लाइट से मियामी जाने के लिये चार टिकट बुक करो और फिर उन टिकटों को लेकर जल्द-से-जल्द फ्लाइट छूटने से पहले एयरपोर्ट पहुंचो, वहाँ तुम्हें हमारे वह चारों आदमी मिल जायेंगे, जिनके नाम टिकट बुक कराये गये हैं ।"

"ओ.के. बादशाह, मैं अभी टिकट लेकर एयरपोर्ट पहुंचता हूँ । आप मुझे उन चारों आदमियों की डिटेल बोलो, जिनके नाम टिकट बुक करने हैं ।"

बादशाह करीम शेख नूरानी काफी तेजी से उन चारों की डिटेल पिण्टो को बताने लगा ।

□□□

मियामी जाने वाले हवाई जहाज ने जल्द ही लास वेगास की धरती छोड़ दी थी और अब वह आकाश की अनन्त ऊंचाइयों में परवाज करने लगा था ।

कमांडर उस समय काफी शान्त नजर आ रहा था और वह हवाई जहाज की अगली सीट पर बैठा था । अपनी दोनों कोल्ट रिवॉल्वर उसने अपने ब्रीफकेस के फॉल्स बॉटम के नीचे छिपा दी थीं और वहीं नील की ब्ल्यू फिल्म की पेन ड्राइव भी छिपाई हुई थी, ताकि कस्टम की चैकिंग के दौरान वह दोनों चीजें अधिकारियों के हाथ न लग सकें ।

बादशाह करीम शेख नूरानी के चारों आदमी उससे थोड़ा पीछे बैठे हुए थे, परन्तु कमांडर की नजर उन पर भी पड़ गयी थी । उन्हें वहाँ देखकर वह पहले तो थोड़ा विचलित हुआ, लेकिन जल्दी ही नॉर्मल हो गया ।

इसमें कोई शक नहीं, वह लोग हाथ धोकर उसके पीछे पड़े हुए थे ।

□□□

तभी उड़ते हुए हवाई जहाज के अंदर ही कमांडर के साथ एक और बड़ी अजीबो-गरीब घटना ने जन्म लिया ।

इस बार उसकी उलझन का केन्द्र एक लड़की बनी ।

लड़की काफी खूबसूरत थी । उसका रंग गोरा-चिट्टा था और आँखें गहरी नीली थीं । उसके व्यक्तित्व को खूबसूरत बनाने में उसकी आंखों के अलावा उसके बालों का भी काफी योगदान था । लड़की के बाल बेहद घने और लम्बे थे, जिन्हें उसने नीचे से गोलाई में काटा हुआ था और ऊपर सिर्फ एक छोटा-सा रबड़ बैण्ड डाल रखा था ।

लड़की हवाई जहाज की सर्विस गर्ल थी ।

जल्द ही वो लम्बे बालों वाली लड़की उसे ब्लडी मैरी सर्व कर गयी थी ।

कमांडर करण सक्सेना कॉकटेल धीरे-धीरे सिप करता रहा, उतनी ही देर वो लम्बे बालों वाली लड़की कोई-न-कोई बहाना बनाकर उसके इर्द-गिर्द मंडराती रही ।

कमांडर के बराबर में ही साठ साल का एक बूढ़ा आदमी बैठा हुआ था, जो काफी तन्दुरुस्त था और रईस भी था ।

लड़की की हरकतें देखकर मुस्कराया ।

"तुम सचमुच काफी किस्मत वाले हो नौजवान !"

"क्यों ?"

"क्योंकि लड़कियां तुम्हारे आगे-पीछे घूमती हैं और तुम्हारी उनके अंदर कोई दिलचस्पी नहीं है ।"

कमांडर खिलखिलाकर हँस पड़ा ।

"दरअसल यह मेरे लिये कोई नई बात नहीं है ।"

"इसीलिये तो कह रहा हूँ कि तुम किस्मत वाले हो ।" बूढ़ा फख्र से उसकी तरफ देखता हुआ बोला, "जानते हो नौजवान, जब मैं तुम्हारे जैसी उम्र का था, तो मेरी तमन्ना हुआ करती थी कि खूबसूरत लड़कियां मुझे लिफ्ट दें, मुझसे बातें करें । लेकिन अफसोस !" बूढ़े ने बर्फ जैसी ठण्डी आह भरी, "मेरी सारी जवानी पतझड़ के सूखे पत्ते की तरह गुजर गयी, परन्तु कभी किसी खूबसूररत लड़की ने मुझे लिफ्ट नहीं दी और जो लड़की मेरी जिंदगी में जीवन-साथी बनकर आयी, वह ठिगनी भी थी और बदसूरत भी ।"

वह बात बूढ़े ने कुछ ऐसे अंदाज में कही कि कमांडर की हँसी छूट गयी ।

जबकि बूढ़ा भी अपनी बात पर धीरे-धीरे मुस्कराने लगा था ।

□□□

हवाई जहाज अब आधे से ज्यादा सफर तय कर चुका था।

तभी वही लम्बे बालों वाली लड़की कमांडर करण सक्सेना के लिये चायनीज खाने की एक ट्रे सजाकर ले आयी।

"ख...खाना !" कमांडर खाने को देखते ही चौंका, "म...मैंने खाने का ऑर्डर तो नहीं दिया था।"

"मैं जानती हूँ हैण्डसम, तुमने खाने का ऑर्डर नहीं दिया था।" लड़की बड़े दिलफरेब अंदाज में मुस्करायी, "दरअसल यह चायनीज खाना हमारी एयरलाइंस का सबसे लाजवाब डिश है, जो यात्री मुझे अच्छे लगते हैं, वह अगर यह डिश न भी मंगाये, तब भी मैं उन्हें अपनी इच्छा से यह डिश सर्व कर देती हूँ।"

"लेकिन मुझे भूख नहीं है।"

"तुम खाना टेस्ट करके देखो, मेरी गारण्टी है कि भूख अपने आप लगने लगेगी।"

"ल...लेकिन...।"

"ओह, कम ऑन !" तभी कमांडर के बराबर में बैठे बूढ़े ने उसके कोहनी मारी, "जब कोई लड़की इतनी जिद करे, तो उसकी बात फौरन मान लेनी चाहिये।"

"अजीब मामला है, लड़की न हुई, आफत हो गयी।"

वह लड़की अपनी नीली-नीली आँखें चमकाते हुए हँसी।

"लगता है, तुमसे ज्यादा समझदार तुम्हारे बराबर में बैठे यह अंकल हैं।" लड़की बोली।

“यही तो अपनी बदनसीबी है ।” बूढ़े ने फिर जोरदार अंदाज में ठंडी आह भरी, “कि जब किसी ने हमें ‘समझदार’ समझा, तब तक हम ‘अंकल’ बन गये ।”

लड़की फिर हँस पड़ी ।

इस बीच कमांडर ने चायनीज खाना टेस्ट करके देखा ।

इसमें कोई शक नहीं, खाना वाकई लाजवाब और लजीज बना हुआ था । उस बूढ़े आदमी ने और कमांडर ने वह खाना मिल-बांटकर खाया, तो जल्द ही वह सारा खाना खत्म हो गया ।

इस दरम्यान कमांडर और उस लड़की के बीच अच्छी-खासी दोस्ती भी कायम हो गयी थी—इतना ही नहीं,वह अब आपस में काफी घुल-मिलकर बातें भी कर रहे थे ।

पीछे बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी पहले की तरह ही बिलकुल शांत बैठे थे और वे मूकदर्शक बने सिर्फ सारा तमाशा देख रहे थे ।

□□□

23 अगस्त की शाम को ठीक साढ़े चार बजे, यह वो समय था, जबकि अमरीकन एयरलाइन्स का वह यात्रीवाहक विमान भयानक गर्जना करता हुआ मियामी एयरपोर्ट पर उतरा ।

मियामी एयरपोर्ट अमेरिका के सबसे ज्यादा आलीशान एयरपोर्टों में से एक है, इसके अलावा वहाँ का रनवे भी अमरीका के बाकी दूसरे एयरपोर्टों के मुकाबले कहीं ज्यादा लम्बा-चौड़ा है ।

“ओ.के. हैण्डसम !” हवाई जहाज के रनवे पर लैंड करते ही लम्बे बालों वाली लड़की ने कमांडर से कसकर हाथ

मिलाया, "उम्मीद है कि मेरी वजह से तुम बोर नहीं हुए होओगे ?"

"बिलकुल भी नहीं, बल्कि तुम्हारी वजह से यह सफर अच्छा-खासा मजेदार गुजरा ।"

"वैरी गुड !" लड़की की नीली-नीली आँखों में चमक कौंधी, "अगर जिन्दगी रही, तो हम फिर कभी मिलेंगे ।"

"क्यों नहीं ।"

"आओ, मैं तुम्हें दरवाजे तक छोड़ आऊं ।"

फिर वह कमांडर को विदा करने दरवाजे तक गयी ।

कमांडर अभी हवाई जहाज के दरवाजे से थोड़ा ही दूर था कि एकाएक उस लड़की का पैर जोर से फर्श पर फिसला, वह चीखी और धड़ाम से कमांडर के ऊपर जा गिरी ।

"क...क्या हुआ ?" कमांडर ने एकाएक बौखलाकर उसे अपनी बांहों में जकड़ा, "क...क्या हुआ ?"

तुरन्त कई दूसरे आदमी भी लड़की को संभालने के लिये उसकी तरफ झपटे ।

लेकिन लड़की जितनी तेजी से गिरी थी, उससे कहीं ज्यादा तेजी से अपने कपड़े ठीक करती हुई संभल भी गयी ।

"स...सॉरी, मेरा पैर थोड़ा फिसल गया था, व...वैरी सॉरी ।"

"कोई बात नहीं, ऐसा कभी-कभी हो जाता है ।" कमांडर ने नीचे पड़ा उसका वेनिटी बैग उठाकर उसे दे दिया ।

"थैंक्यू !" लड़की अपना वेनिटी बैग संभालती हुई बोली ।

फिर कमांडर ने हाथ हिलाते हुए लड़की से विदा ली और तेज-तेज कदमों से हवाई जहाज की सीढ़ियां उतरता चला गया ।

□□□

जिस समय कमांडर करण सक्सेना हवाई जहाज की सीढ़ियां उतर रहा था, ठीक उसी समय एयरपोर्ट के कस्टम क्लियरेंस में तेज हलचल मची हुई थी ।

क्योंकि थोड़ी देर पहले ही वहाँ एक अजनबी आदमी ने टेलीफोन करके बताया था कि अभी-अभी लास वेगास से जो फ्लाइट वहाँ आयी है, उसके अंदर एक हिन्दुस्तानी आदमी सफर कर रहा है, जिसके पास 'विजय कुमार' नाम का एक जाली पासपोर्ट है, इतना ही नहीं, वो दो लाख डॉलर की हेरोइन लेकर मियामी आया है ।

उस अजनबी आदमी ने टेलीफोन पर यह भी बताया कि कथित 'विजय कुमार' ने वो हेरोइन किस जगह छिपा रखी है ।

तुरन्त खबर पूरे कस्टम क्लियरेंस में फैल गयी ।

पुलिस को अलर्ट कर दिया गया, सारे कस्टम अधिकारी चौंकन्ने नजर आने लगे ।

एक अजीब-सी अफरा-तफरी वहाँ दिखाई पड़ने लगी थी ।

□□□

जबकि कमांडर अपने सिर पर मंडरा रहे खतरे से पूरी तरह अनभिज्ञ था ।

रहते हैं, दोस्त रहते हैं, शादी थी, कोई फंक्शन था, या बिजनिस के सिलसिले में आये थे ?"

"इनमें से कोई बात नहीं है ।" कमांडर थोडा कठोर लहजे में बोला, "मैं दरअसल बॉक्सिंग जगत का एक प्रशंसक हूँ तथा 31 अगस्त को लास वेगास में गोल्डी और जॉनी बैंजो के बीच जो मुकाबला होने जा रहा है, उसे देखने के लिए ही हिन्दुस्तान से अमरीका आया था ।"

"मुकाबला लास वेगास में होने जा रहा है ।" अधिकारी पहले की भांति स्पीड से बोला, "फिर अब मियामी में क्या करने आये हो ?"

"एकदम साधारण-सी बात है महाशय !" कमांडर बोला, "मुकाबला होने में अभी चूँकि काफी समय बाकी है, इसीलिये मैंने सोचा कि क्यों न इस बीच मियामी ही घूम लिया जाए । फिर मेरा मियामी आना गैर-क़ानूनी भी नहीं है, आखिर मेरे पास मियामी का वीजा भी है, यह देखिये !"

"काफी चालाक आदमी हो ।" अधिकारी ने कमांडर को खतरनाक नजरों से घूरा, "चालाक और हाजिरजवाब भी । यानि मियामी तुम सिर्फ घूमने के इरादे से आये हो ?"

"जी हाँ ।"

"बाकी कोई इरादा नहीं ?"

"और क्या इरादा हो सकता है ?"

"सवाल मत करो ।" अधिकारी चिल्ला उठा, "सिर्फ मेरे सवाल का जवाब दो, समझे !"

कमांडर खामोश हो गया ।

उसी पल उस अधिकारी ने उसके ब्रीफकेस का सारा सामान टेबिल के ऊपर पलट दिया था, लेकिन उसके अंदर से कोई भी खास चीज न निकली ।

"आखिर बात क्या है ?" कमांडर इस बार थोडा झुंझलाकर बोला, "तुम लोग क्यों मेरे से इस तरह सवाल-जवाब कर रहे हो, क्यों इतनी बेदर्दी से मेरी तलाशी ली जा रही है ?"

"चुप रहो, बिलकुल खामोश !" वही अधिकारी पुनः चिंघाड़ उठा, "और मैंने तुमसे पहले भी कहा, सवाल मत करो ।"

ब्रीफकेस की आनन-फानन तलाशी लेने के बाद उस कस्टम ऑफिसर ने कमांडर के ओवरकोट के जेब में हाथ डाल दिया ।

फौरन उसका हाथ जेब में एक पल के लिए ठिठका और जब झटके से बाहर निकला, तो अधिकारी के हाथ में 'डनहिल' सिगरेट के तीन बड़े-बड़े पैकेट दबे हुए थे ।

□□□

सिगरेट के उन पैकेटों को देखकर कमांडर करण सक्सेना के नेत्र भी हैरानी से फटे, उनमें आश्चर्य उभर आया ।

जबकि अधिकारी ने वह तीनों पैकेट जोर से टेबिल पर पटक दिये थे और फिर कमांडर को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरता हुआ चिल्लाया, "क्या सिगरेट के यह तीनों पैकेट तुम्हारे हैं ?"

कमांडर चुप !

"जवाब दो !" अधिकारी और बुरी तरह दहाड़ा, "क्या यह पैकेट तुम्हारे हैं, क्या इनके मालिक तुम हो ?"

"द...दरअसल यह सच है कि मैं 'डनहिल' सिगरेट पीता हूँ ।" कमांडर एकाएक बड़ी दुविधापूर्ण स्थिति में फंसा हुआ बोला, "ल...लेकिन यह तीनों पैकेट मेरे नहीं हैं, म...मैं

नहीं जानता कि यह पैकेट मेरी जेब के अंदर कहाँ से आ गये ।”

“बको मत !” अधिकारी गुर्राया, “सच्चाई ये है कि तीनों पैकेट तुम्हारे हैं, तुम बेवकूफ समझते हो हमें? इतना ही नहीं, सिगरेट के इन पैकेटों के अंदर जो दो लाख की हेरोइन है, इसके मालिक भी तुम हो ।”

“ह...हेरोइन !” कमांडर का दिमाग घूम गया, “इन पैकेटों के अंदर हेरोइन है ।”

“हाँ, यह देखो, यह देखो !”

कस्टम अधिकारी ने धड़ाधड़ सिगरेट के पैकेट खोलते ही उनके अंदर से सिगरेट निकलकर नीचे गिर पड़ी, फिर अधिकारी ने उन तमाम सिगरेटों को तोड़ डाला । सिगरेट तोड़ते ही उनके अंदर से तम्बाकू की जगह हेरोइन निकल-निकलकर टेबिल पर जमा होने लगी ।

“य...यह हेरोइन मेरी नहीं है ।” कमांडर चिल्लाया, “यह हेरोइन मेरी नहीं है ।”

“तुम झूठ बोल रहे हो ।” अधिकारी उससे भी ज्यादा जोर से चिल्लाया, “यह हेरोइन तुम्हारी ही है, सच्चाई ये है कि तुम एक स्मगलर हो, ड्रग सप्लायर हो ।”

“न...नहीं, मैं ड्रग सप्लायर नहीं हूँ ।” उस एकाएक जन्मी परिस्थिति ने कमांडर जैसे आदमी को भी बौखला डाला था, “म...मैं नहीं जानता कि यह पैकेट मेरी जेब में कहाँ से आये । मुझे फंसाया जा रहा है, कोई मेरे खिलाफ चाल चल रहा है ।”

“लेकिन कौन !” एक दूसरा अधिकारी गरजकर बोला था, “कौन तुम्हारे खिलाफ चाल चल रहा है, कौन तुम्हारी जेब में यह पैकेट प्लांट कर सकता है ?”

ऊपर लड़खड़ाकर गिरी, मेरे दावा है कि उसने तभी मेरी जेब में यह तीनों पैकेट प्लांट कर दिये थे।"

"यानि तुम्हारे मुताबिक इन पैकेटों को थोड़ी देर पहले ही तुम्हारी जेब के अंदर प्लांट किया गया है ?"

"बिलकुल।"

"ठीक है।" कस्टम अधिकारी एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला, "उस सर्विस गर्ल का नाम बताओ।"

"नाम तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन उस सर्विस गर्ल के बाल काफी लम्बे-लम्बे थे और उसकी आँखें नीली थी।"

"ओ.के., उस सर्विस गर्ल को अभी बुलाया जाता है।"

उस अधिकारी ने अपने नजदीक ही खड़े एक पुलिसकर्मी को इशारा किया, तो वह फौरन उस सर्विस गर्ल को बुलाने के लिये वहाँ से चला गया।"

□□□

मुश्किल से दस मिनट बाद ही वह पुलिसकर्मी भी लौट आया।

"लड़की कहाँ है ?"

"लड़की का नाम किटी है, और अभी-अभी यहाँ से अमरीका एयरलाइन्स की जो फ्लाइट इंग्लैंड के लिये रवाना हुई है, लड़की उसमें अपनी ड्यूटी को अंजाम देने जा चुकी है।"

"य...यानि लड़की इंग्लैंड गयी।" कमांडर के मुँह से सिसकारी छूटी।

"हाँ।"

"अब वह कब लौटेगी ?"

"उसका एक सप्ताह का टूर है, एक सप्ताह बाद जब वह फ्लाइट इंग्लैंड से वापस आयेगी, तभी किटी भी लौटेगी ।"

"थैंक गॉड !"

कमांडर के दिमाग में अनार छूटने लगे, उसे अच्छी तरह चारों तरफ से कसा जा रहा था ।

"किटी नाम की उस लड़की के बारे में कुछ और पता चला ?" कस्टम अधिकारी ने पुलिसकर्मी से सवाल किया ।

"कुछ छोटी-मोटी बातें पता चली हैं ।" पुलिसकर्मी बोला, "जैसे किटी नाम की वह लड़की पिछले चार साल से अमरीकन एयरलाइंस में सर्विस गर्ल की नौकरी कर रही है, इन चार सालों में उसका रिकॉर्ड बिल्कुल साफ-सुथरा है, इस दौरान उसने ऐसा कुछ नहीं किया, जो उस पर इस बात का शक किया जा सके कि वह नशीले पदार्थ स्मग्ल करने वाले किसी गैंग की सदस्या भी हो सकती है । इन बातों के अलावा किटी के विषय में दो बड़ी महत्वपूर्ण बातें पता चली हैं ।"

"क्या-क्या ?"

"पहली बात, किटी के डैडी अमरीकन एयरलाइंस में ही पायलेट हैं और पिछले कई सालों से अपनी जिम्मेदारी को बड़ी कुशलता से अंजाम दे रहे हैं ।"

"ओह !"

"इसके अलावा दूसरी बात !" पुलिसकर्मी ने धाराप्रवाह ढंग से बोलते हुए कहा, "किटी के अंकल अमरीका की मौजूदा सरकार में एक बड़े ऊंचे ओहदे पर हैं और उनकी छवि भी बिल्कुल साफ-सुथरी है ।"

“यानि किटी पर यह जो इल्जाम लगा रहा है, वह बिल्कुल बेबुनियाद है ।”

“एकदम बेबुनियाद है ।”

“सुना !” कस्टम अधिकारी तेजी से कमांडर की तरफ घूमकर चिल्लाया, “सुना, यह क्या कह रहा है । तुम एक बेइन्तहाँ शरीफ लड़की पर खामखाह नशीले पदार्थ स्मग्ल करने का इल्जाम लगा रहे हो, यह सब तुम्हारी एक चाल है । तुम किटी को अपने साथ, अपने गुनाह में इसलिये शामिल करना चाहते हो, क्योंकि तुम जानते हो कि उसका सम्बन्ध राजनैतिक लोगों से है और उनकी बदौलत किटी के साथ-साथ तुम भी अदालत से बरी हो जाओगे ।”

“मैं किटी की फैमिली बैकग्राउण्ड के विषय में पहले से कुछ नहीं जानता था ।”

“तुम सब-कुछ जानते थे ।” अधिकारी ने दांत किटकिटाये, “तुम्हारा यह सोचा-समझा षड्यन्त्र था कि अगर तुम फंसे, तो तुम अपने साथ-साथ किटी को भी फंसाओगे । सच्चाई ये है कि तुम मियामी के अंदर हेरोइन की कोई डील करने आये थे, मगर अपनी डीलिंग में कामयाब हो पाते, उससे पहले ही तुम इत्तेफाक से फंस गये ।”

“तुम लोग मेरे बारे में जितने अंदाजे लगा रहे हो, वह सब गलत हैं ।” कमांडर झल्लाकर बोला, “मैं फिर कहूँगा मेरे खिलाफ साजिश रची जा रही है, मुझे फंसाया जा रहा है ।”

“लेकिन कौन तुम्हें फंसाना चाहेगा ?”

कमांडर चुप !

शक्ल-सूरत से ही शैतान नजर आने वाले ।

कमांडर और उससे बरामद सारे सामान को अपनी कस्टडी में लेते ही वह पुलिस वैन में सवार हो गये थे और उसके बाद वह पुलिस वैन तुरन्त ही तूफानी स्पीड से उनके हैडक्वार्टर की तरफ दौड़ पड़ी थी ।

कमांडर अब तक यह बात भली-भांति समझ गया कि यह 'दुश्मन' द्वारा चली गयी एक चाल है, ताकि वो 27 अगस्त तक पुलिस के चक्कर में ही उलझा रहे और गोल्डी मुकाबले से नाम वापस लेने पर मजबूर हो जाये ।

चाल वाकई दुश्मन ने शानदार चली थी ।

□□□

पुलिस वैन अभी भी सड़क पर धुआंधार स्पीड से दौड़ रही थी ।

वैन का पिछला हिस्सा काफी बड़ा था, और वहाँ एक मेज के चारों तरफ कुर्सियां कुछ इस अंदाज में रखी थीं कि वैन का दो हिस्सा कांफ्रेंस-हॉल जैसा नजर आने लगा था ।

कमांडर उस दौड़ती हुई वैन में एक कुर्सी पर बैठा था और उसे चारों तरफ से घेरे नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड के वह छः खतरनाक मैम्बर बैठे थे, जिनकी आंखें इस समय शोले उगल रही थीं और वो कमांडर को भस्म कर देने वाली नजरों से घूर रहे थे ।

"हूँ !" एक मैम्बर ने सरकारी सांड की तरह गहरी हुंकार भरी, "तो तुम्हारा यह कहना है कि तुम बहुत शरीफजादे हो और तुम्हें कोई जबरदस्ती इस सारे जाल में फंसा रहा है ?"

"हाँ, यह सच है। मुझे वाकई फंसाया जा रहा है।" हालांकि कमांडर उनके खतरनाक इरादे भांप चुका था, लेकिन फिर भी उसने बे-हिचक जवाब दिया।

"कंजर आदमी!" तभी उसके बराबर में बैठे एक आदमी ने धड़ाक् से अपनी चौड़ी हथेली कमांडर की गर्दन पर फिट कर दी, "तू शायद जानता नहीं, हम नारकाटिक्स विभाग के आदमी हैं, और सुबह से शाम तक हमारा मुकाबला तेरे जैसे ही ड्रग सप्लायरों से होता है। जो अपने आपको बड़े शरीफजादे समझते हैं, जो अपने बचाव के लिये तेरी तरह ही नये-नये तर्क पेश करते हैं। लेकिन आखिरकार उन्होंने अपना गुनाह कबूलना होता है और वो कबूलते हैं, यह बात अलग है कि जब तक उन्हें उनकी खुराक नहीं मिल जाती, तब तक वो कुछ भी नहीं कबूल करते।"

"गधे आदमी!" कमांडर के सामने बैठे एक दूसरे मैम्बर ने धड़ाक् से उसका गिरेहबान पकड़ लिया और उसे बुरी तरह झिंझोड़ा, "तुझे मालूम है कि तू अब कितनी बड़ी आफत में फंस चुका है, तेरी भलाई इसी में है कि तू नई-नई कहानियां सुनाने की बजाय चुपचाप अपना गुनाह कबूल कर ले।"

"मैं कहानियां नहीं सुना रहा हूँ।"

"तू कहानियां ही सुना रहा है।" नारकाटिक्स विभाग का वो आदमी गला फाड़कर चिल्लाया और फिर उसने कमांडर के गाल पर इतनी जोर से झापड़ मारा कि कमांडर के नेत्र फैल गये, वो चौंक पड़ा।

"भैय्ये!" तभी एक अन्य मैम्बर ने कमांडर को कुत्ते की तरह पुचकारा, "अपनी खैरियत चाहता है, तो जल्दी सीधे रास्ते पर आ जा। हम कस्टम अधिकारी नहीं हैं, जो तेरे

साथ ज्यादा देर तक पुच-पुच करेंगे । हम अगर पुच-पुच करना जानते हैं, तो धुलाई करना भी जानते हैं । जल्दी बोल, तू किस गैंग का आदमी है, किसके लिये काम करता है या फिर खुद ही किसी गैंग का सरगना है ।"

कमांडर कुछ न बोला ।

"जवाब दे मेरे भाई !" जिस मैम्बर ने कमांडर का गिरेहबान कसकर पकड़ा हुआ था, वह उसे बुरी तरह झिंझोड़ता हुआ बोला, "क्यों अपनी खाल में भूस भरवाना चाहता है, क्यों अपनी इस अच्छी-खासी फ्रेश बॉडी में कट लगवाना चाहता है । जल्दी बता, तू किस गैंग का आदमी है ?"

"मैं किसी गैंग का आदमी नहीं हूँ ।"

"तो फिर खुद ही किसी गैंग का सरगना होगा ।"

"मैं सरगना भी नहीं हूँ ।" कमांडर करण सक्सेना तिलमिलाकर बोला, "मैं तुम लोगों से फिर कह रहा हूँ, अगर असली दोषी को पकड़ना है, तो जल्दी से किटी को पकड़ने का इंतजाम करो, क्योंकि वही असली अपराधी है ।"

"यह ऐसे बातों से नहीं मानेगा ।" उस मैम्बर ने कमांडर करण सक्सेना का गिरेहबान छोड़ दिया और बेहद हताश अंदाज में गर्दन हिलाई, "यह बहुत हरामी आदमी है । हरामी भी है और घुटा हुआ भी है। इसे खुराक देनी ही पड़ेगी ।"

फिर नारकाटिक्स विभाग का वह मैम्बर अपने कपड़ों पर इस तरह हाथ मारता हुआ कुर्सी से खड़ा हो गया, जैसे चींटियां भगा रहा हो ।

इस बार उनके आगे-आगे काफी तेज कदमों से एक और आदमी भी चला आ रहा था ।

वह उनके मुकाबले काफी लम्बा-चौड़ा था ।

उसका सिर घुटा हुआ था और दाढ़ी-मूंछे सफाचट थीं । उसने बाकायदा मिलिट्री की वर्दी पहनी हुई थी और उस वर्दी पर लगे कई सारे स्टार बता रहे थे कि वह आदमी 'नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड' का कप्तान है ।

वह कप्तान उनसे भी ज्यादा बड़ा शैतान नजर आ रहा था, उसकी आंखों में पेशेवर हत्यारे जैसी चमक थी और दोनों कंधे बेहद चौड़े थे ।

वह तेज-तेज कदमों से चलता हुआ कमांडर के नजदीक पहुंचा, वहीं एक स्टूल पड़ा था, वह उस स्टूल को खींचकर कमांडर के बिल्कुल सामने बैठ गया ।

"क्या नाम है इसका ?" वह बेहद व्यस्त आदमी की तरह थोड़ी बेचैनी जाहिर करता हुआ बोला ।

"विजय कुमार ।"

नारकाटिक्स विभाग के उन छः में से एक मैम्बर बोला, इस समय वह अपने कप्तान के आसपास ही बड़ी अलर्ट पोजीशन में खड़े थे ।

"विजय कुमार ।" कप्तान ने अपनी गर्दन हिलाई, "यह नाम कैसे मालूम हुआ ?"

"इसके पासपोर्ट में लिखा था ।"

"पासपोर्ट दिखाओ ।"

फौरन एक मैम्बर ने अपनी जेब के अंदर से पासपोर्ट निकालकर कप्तान की तरफ बढ़ाया ।

कप्तान ने पासपोर्ट के पन्ने पलटकर काफी गौर से देखे और फिर पासपोर्ट वापस उसी मैम्बर को लौटा दिया, जिसकी जेब में पासपोर्ट

रखा था।

"इसका यह नाम जाली भी हो सकता है।"

"बिल्कुल हो सकता है सर।" एक अन्य मैम्बर ने काफी तत्परतापूर्वक जवाब दिया, "बल्कि यह आदमी जितना घुटा हुआ और चालाक है, उससे तो मुझे यह हण्ड्रेड परसेण्ट सच लगता है कि इसका नाम जाली ही होगा। अगर पासपोर्ट भी जाली निकल आये, तब भी कोई बड़ी बात नहीं।"

"मुझे केस की पूरी तफ्सील बताओ।"

"यह एक हिन्दुस्तानी आदमी है सर, इसका कहना है कि यह हिन्दुस्तान से लास वेगास में सिर्फ इसलिये आया था, ताकि यह गोल्डी और जॉनी बैंजो का बॉक्सिंग मुकाबला देख सके। परन्तु मुकाबले में चूंकि कुछ दिन बाकी थे, इसलिये यह घूमने के वास्ते मियामी चला आया।"

"फिर ?"

"अभी इसकी फ्लाइट मियामी एयरपोर्ट पर उतरी भी नहीं थी कि तभी वहाँ के कस्टम विभाग में एक गुमनाम आदमी ने टेलीफोन किया।"

"क्या कहा उसने ?"

"उसने कहा कि अभी-अभी लास वेगास से जो फ्लाइट आयी है, उसके अंदर एक 'विजय कुमार' नाम का यात्री सफर कर रहा है, जिसके पास दो लाख डॉलर की हेरोइन है। इतना ही नहीं, उस व्यक्ति ने टेलीफोन पर यह भी बताया कि वह हेरोइन विजय कुमार के पास कहाँ रखी हुई है।"

"वैरी इंट्रेस्टिंग, सचमुच काफी मजेदार किस्सा है ।" कप्तान की आंखों में विलक्षण चमक कौंधी, "उसके बाद क्या हुआ ?"

"जैसे ही यह कस्टम क्लियरेंस में पहुंचा, तो फौरन इन कस्टम अधिकारियों और पुलिसकर्मियों ने इसे चारों तरफ से घेर लिया ।" एक मैम्बर अपने कप्तान को पूरे केस की डिटेल समझाता हुआ बोला, "और फिर दो लाख डॉलर की हेरोइन ठीक उसी जगह से बरामद हुई, जहाँ से गुमनाम व्यक्ति ने कस्टम अधिकारियों को टिप दी थी ।"

"कहाँ से ?"

"डनहिल सिगरेट के उन तीन पैकेटों के अंदर से, जो इसकी जेब में पड़े हुए थे । दरअसल सारी हेरोइन सिगरेटों के अंदर तम्बाकू की जगह भरी हुई थी, जिसे सिगरेट तोड़-तोड़कर बाहर निकाला गया ।"

"वैरी गुड !" कप्तान ने अपने गंजे सिर को धीरे-धीरे सहलाया, "यानि उसने ड्रग को इधर-से-उधर ले जाने के लिये एक बिल्कुल नया तरीका इजाद किया था ।"

"यस सर !"

"अब ये क्या कहता है ?"

"यह अभी भी अपने आपको निर्दोष बताता है ।" मैम्बर बोला, "इसका कहना है कि इसे फंसाया जा रहा है, इसके खिलाफ चाल चली जा रही है । सिगरेट के वह तीनों पैकेट इसकी जेब में प्लाण्ट किये गये थे । यह कहता है कि वह तीनों पैकेट हवाई जहाज की एक सर्विस गर्ल ने इसकी जेब में प्लाण्ट किये, जिसका नाम किटी था ।"

"किटी !"

"जी हाँ ।"

"तो, मिस्टर विजय कुमार !" कप्तान सीधा कमांडर से संबोधित हुआ, "तुम अब भी यही कहते हो कि तुम्हें फंसाया जा रहा है ?"

"हाँ, मैं अब भी यही कहता हूँ ।" कमांडर जोरदार शब्दों में बोला, "और अपनी बात साबित करने के लिये मेरे पास एक सबूत भी है ।"

"कैसा सबूत ?"

"अभी-अभी खुद आपके आदमी ने कहा कि मेरी फ्लाइट मियामी एयरपोर्ट पर उतरी भी नहीं थी कि उससे पहले ही कस्टम क्लियरेंस में किसी गुमनाम आदमी का मेरे खिलाफ टेलीफोन आ गया, क्या इस एक पॉइंट से, इसी एक बात से साबित नहीं हो जाता कि 'कोई' मेरे खिलाफ चाल चल रहा था, बाकायदा प्री-प्लान षड्यन्त्र मेरे खिलाफ फैलाया जा रहा था ।"

"नहीं ।" कप्तान की गर्दन इंकार की सूरत में हिली, "इससे यह बिल्कुल भी साबित नहीं होता कि तुम निर्दोष हो । हाँ, इससे यह जरूर साबित होता है कि तुम्हें किसी ने जान-बूझकर पुलिस के शिकंजे में फंसाया । लेकिन जहाँ तक फंसाने की बात है, तो तुम्हारा कोई दुश्मन भी तुम्हें फंसा सकता है, वह नहीं चाहता होगा कि तुम्हारी यह बिजनेस डील कामयाब हो और तुम्हारे हाथ-पैर मियामी तक फैलें ।"

कमांडर के दिमाग में सीटी बजने लगी, उसकी आंखों के गिर्द अंधेरा घिरने लगा ।

कप्तान मुस्कराया, "मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा हैण्डसम ?"

कमांडर चुप ।

उसके मजबूत तर्क को काटने के लिये उसके पास कोई जवाब न था ।

“मुझे तो लगता है हैण्डसम, तुम कोई बहुत बड़े ड्रग सप्लायर हो ।” कप्तान ने आगे कहा, “जो इत्तेफाक से हमारे हत्थे चढ़ गये हो ।”

“मैं ड्रग सप्लायर नहीं हूँ ।” कमांडर चिल्लाया ।

“तुम ड्रग सप्लायर ही हो ।” कप्तान के शब्दों में दृढ़ता उभर आयी तुम जरूर किसी बहुत बड़े क्राइम रैकेट के बॉस हो, किसी गैंग के किंग हो, तुम जो भी हो, अपने क्षेत्र की हस्ती हो, मैं इंसान को सिर्फ उसकी आंखों से पहचान लिया करता हूँ ।” यह शब्द बोलते-बोलते कप्तान ने सिगरेट अपने हाथ में ले ली ।

कमांडर अलर्ट हो उठा ।

वो भांप गया कि अब वह क्या करने जा रहा था ।

इस तरह के टॉर्चर वो खद भी पहले कई बार कर चुका था ।

लेकिन कप्तान नहीं जानता था, आज उसके सामने कमांडर करण सक्सेना है । वो कमांडर करण सक्सेना, जो अन्तर्राष्ट्रीय जासूस होने के साथ-साथ कई विद्याओं का महारथी भी है । फाइट की विभिन्न कलाओं में पारंगत होने के अलावा उसने हिन्दुस्तान की योग विद्याओं का भी काफी ज्ञान हासिल किया था ।

कमांडर ने जैसे ही देखा कि अब कप्तान उसे ‘सिगरेट’ से टॉर्चर करेगा, उसने योग के द्वारा अपने जिस्म की सारी नसों को बुरी तरह तान लिया और उन्हें सुन्न जैसी अवस्था में ले आया । उस पोजिशन में किसी भी शारीरिक कष्ट का अहसास काफी कम होता है ।

तभी कप्तान ने कमांडर का हाथ अपने हाथ में ले लिया था और फिर जलती सिगरेट उसकी कलाई पर रख दी ।

कमांडर को बस ऐसा लगा, जैसे चींटियां काट रही हों । लेकिन फिर भी उसने पीड़ा से तिलमिलाने का जबरदस्त अभिनय किया, वरना उन सभी लोगों को शक हो जाता कि वह कोई साधारण आदमी नहीं है ।

जब तक सिगरेट उसकी कलाई पर रखी रही, तब तक वह बुरी तरह तिलमिलाने का अभिनय करता रहा ।

"हैण्डसम !" कप्तान पहले की तरह ही मुस्कराता हुआ बोला, "मैं समझता हूँ कि तुम्हें अब यह स्वीकार कर ही लेना चाहिये कि तुम ड्रग सप्लायर हो ।"

"नहीं ।" कमांडर छटपटाने का नाटक करता हुआ बोला, "म...मैं यह कभी स्वीकार नहीं करुंगा ।"

"ठीक है, देखते हैं, कौन जीतता है ।"

कप्तान ने अब सिगरेट कमांडर के सीने पर रख दी ।

अब कमांडर के सीने पर चींटियां-सी चलने लगीं, लेकिन वो पीड़ा से छटपटाने का अभिनय लगातार करता रहा ।

□□□

कप्तान ने एक के बाद एक चार सिगरेट फूंक डाली, कमांडर करण सक्सेना का ऐसा कोई अंग न बचा, जिसे उसने न दागा हो, परन्तु वो फिर भी कमांडर से अपनी मन-माफिक बात कहलवाने में असफल रहा ।

यह बात न सिर्फ कप्तान के लिये बल्कि वहाँ मौजूद सभी छः आदमियों के लिये भी काफी हैरानी की थी ।

उसके बाद फौरन ही कप्तान ने लोहे का एक हेलमेट तलब किया, जिसमें बिजली के तार झूल रहे थे । फिर लोहे का वो हेलमेट कमांडर के सिर पर रख दिया गया ।

कमांडर ने पुनः योग विद्या का सहारा लिया ।

उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और आंखें बंद करके अपने दिमाग को ऐसी अनन्त गहराइयों में ले गया , जहाँ अंधकार-ही-अंधकार था, घोर अंधकार ! कुछ सेकेंड में ही उसका दिमाग एकदम विचार-शून्य हो गया । जैसे किसी ने उसका ब्रेनवाश कर दिया हो और बाकी शरीर से उसके दिमाग का कोई मतलब न रहा हो ।

वह बड़ी अजीब स्थिति थी, और बिना शक योग द्वारा ही ऐसा संभव था ।

उसी पल कप्तान ने कमांडर के दिमाग को बिजली के झटके देने शुरु कर दिये, तेज झटके ।

परन्तु कमांडर का दिमाग अब हाड़-माँस का न होकर पत्थर का टुकड़ा बन चका था । उस पर बिजली के झटके का इतना ही असर हो रहा था कि जब भी उसे करंट लगता, वह जोर से हिलता और उसके पूरे शरीर में लहर-सी दौड़ जाती ।

कमांडर फिर भी जोर-जोर से चिल्लाने का अभिनय करता रहा ।

कप्तान ने एक के बाद एक टॉर्चर के तमाम शस्त्र कमांडर के ऊपर प्रयोग किये, लेकिन फिर भी वो अपने मकसद में कामयाब न हो सका और आखिर में थक-हारकर वापस स्टूल पर बैठ गया ।

नारकाटिक्स स्कवॉयड के तमाम आदमी हतप्रभ थे ।

पालसिंह बड़ी मुस्तैदी के साथ रिपोर्ट देता हुआ बोला, “जैसा कि मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ, कमांडर से एयरपोर्ट पर भी काफी पूछताछ की गयी थी और उम्मीद है कि उससे अब यहाँ भी पूछताछ की जा रही होगी ।”

“कोई और रिपोर्ट ?”

“नहीं प्रिंस, जब तक कमांडर पुलिस के फंदे में फंसा हुआ है, तब तक बाकी कोई और रिपोर्ट नहीं दी जा सकती ।”

“कमांडर करण सक्सेना के पुलिस के फंदे से निकलने की कोई उम्मीद है ?”

“लगता तो नहीं प्रिंस !” पालसिंह ने वह शब्द थोड़े झिझकते हुए कहे, “दरअसल वह कमांडर को जिस तरह से घेरकर हैडक्वार्टर तक लाये हैं, उससे तो यही लगता है कि वो उसे आसानी के साथ अपने फंदे से नहीं निकलने देंगे । लेकिन अगर कमांडर कोई करिश्मा कर जाये, तो बात अलग है ।”

“वह जरूर कोई करिश्मा करेगा ।”

“मुझे भी ऐसा ही लग रहा है ।” पालसिंह बोला, “परन्तु फिर भी एकदम साफतौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि नारकाटिक्स स्कवॉयड के आदमी भी इस समय काफी अलर्ट हैं । हमारे लिये कोई और संदेश हो तो बोलिये प्रिंस ।”

“नहीं, फिलहाल तुम्हारे लिये कोई संदेश नहीं है ।” प्रिंस बोला, “तुम लोग सिर्फ पूरी मुस्तैदी के साथ हैडक्वार्टर पर नजर रखो ।”

“ओ.के. प्रिंस!”

पालसिंह ने ट्रांसमीटर सेट ऑफ कर दिया ।

□□□

पालसिंह, प्रिंस इरफान शेख को रिपोर्ट दे रहा था, और प्रिंस इरफान शेख उस रिपोर्ट को आगे बादशाह करीम शेख नूरानी तक सर्कुलेट कर रहा था।

"नारकाटिक्स विभाग के आदमी मूर्ख हैं, अव्वल दर्जे के मूर्ख !" बादशाह करीम शेख नूरानी तक जैसे ही वो रिपोर्ट पहुंची, वह लगभग गुर्रा उठा, "इस पूरे सिलसिले की सबसे ज्यादा हास्यास्पद बात तो यही है कि नारकाटिक्स विभाग के आदमी अभी तक इसी रहस्य को नहीं जानते कि उन्होंने कमांडर जैसे अन्तर्राष्ट्रीय जासूस को पकड़ा हुआ है। सच्चाई तो ये है कि उन्होंने चूहेदान के अंदर शेर को जकड़ रखा है, वह उससे सात जन्म तक भी कुछ नहीं कबूलवा पायेंगे, मेरी गारण्टी है।"

"मुझ तो लगता है बादशाह !" अब्दाली भी बादशाह के सुर-में-सुर मिलाता हुआ बोला, "अगर कमांडर करण सक्सेना जैसा आदमी आज की रात भी उनके हैडक्वार्टर में गुजार ले तो बहुत बड़ी बात है।"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम !" बादशाह करीम शेख नूरानी बोला, "सचमुच कमांडर करण सक्सेना वहाँ से भागने की कोई-न-कोई तरकीब निकाल लेगा, वह उस हैडक्वार्टर के अंदर ज्यादा देर रुकने वाला नहीं है। उन मूर्खों के बीच से भाग निकलना उसके लिये ऐसा मामूली काम होगा, जैसे हथेली पर बैठी मक्खी मार दी। मुझे अब एक आशंका और हो रही है।"

"क्या ?"

प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली के कान यकायक खड़े हुए।

"मुझे लग रहा है कि अब वह समय भी काफी नजदीक आ रहा है, जब तुम दोनों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है, बहुत जल्द शायद तुम्हें मियामी जाना पड़ेगा ।"

"हम मियामी जाने के लिये तैयार हैं बादशाह ।" दोनों बे-हिचक बोले ।

□□□

'नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड' के हैडक्वार्टर में एक रहस्यमयी मीटिंग चल रही थी ।

वह लोग चूंकि अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद कमांडर से उसका अपराध कबूलवाने में असफल रहे थे, इसलिये वो काफी चिन्तित थे, और उसी सिलसिले में बातचीत कर रहे थे कि अब उनका अगला कदम क्या हो ?

"इसमें कोई शक नहीं ।" नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड का एक मैम्बर बड़े जोरदार ढंग से बोल रहा था, "कि वह आदमी जो भी है, बेहद खतरनाक है, बेहद घाघ है, बेहद दिलेर है । अगर उसकी जगह कोई भी बड़े से बड़ा धुरंधर होता, और उसे इस कदर टॉर्चर किया जाता, तो उसने हर हालत में टूट जाना था । लेकिन वह इतने टॉर्चर के बावजूद भी नहीं टूटा, इसी से साबित होता है कि वह कोई मामूली आदमी नहीं है ।"

"वह सब ठीक है ।" नारकाटिक्स स्कवॉयड का कप्तान थोड़ा झुंझलाकर बोला, "लेकिन सवाल ये है कि अब हम उससे किस तरह जुर्म कबूल करायें ?"

"मुझे तो नहीं लगता ।" तभी एक दूसरा मैम्बर बोला, "कि उससे कुछ भी जबरदस्ती कबूल कराया जा सकता है ।"

"बिल्कुल ठीक बात है ।" एक अन्य मैम्बर ने भी उस बात की हिमायत की, "अगर उससे कुछ भी टॉर्चर के बल पर या जोर- जबरदस्ती के बल पर कबूल कराया जा सकता तो वह अब तक कबूल कर लेता । क्योंकि फिलहाल हमारे हैडक्वार्टर के अंदर टॉर्चर का ऐसा कोई शस्त्र नहीं बचा है, जो उस पर प्रयोग न किया गया हो ।"

"लेकिन सवाल ये है ।" कप्तान मेज पर घूंसा मारकर बोला, "कि फिर हम क्या करें ? क्या इसी तरह खामोश बैठे रहें ? क्या इसी तरह विचार-विमर्श करते रहें ?"

उन सबके बीच अजीब-सा पैना सन्नाटा व्याप्त हो गया ।

कोई कुछ न बोला ।

"मैं एक बात कहना चाहता हूँ ।" थोड़ा रुककर एक मैम्बर बेहद धीमे स्वर में बोला ।

"क्या कहना चाहते हो ?" कप्तान का खतरनाक चेहरा तुरन्त उस मैम्बर की तरफ उठा ।

"हालांकि मेरी बात काफी अजीब है ।" मैम्बर ने भूमिका-सी बांधी, "मगर फिर भी मैं चाहूँगा कि उस पर संजीदगी से गौर किया जाये ।

"अब बोलो भी कुछ ।"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वह आदमी जो कह रहा है, वही ठीक हो ?"

"क...क्या मतलब ?" कप्तान चौंका ।

"मेरे कहने का मतलब ये है ।" मैम्बर की आवाज पहले की तरह ही धीमी थी, "कि वो आदमी सचमुच निर्दोष भी तो हो सकता है, क्या पता उसे वाकई 'कोई' फंसा रहा हो ।"

"तुम्हें लगता है ।" गंजे सिर वाले उस कप्तान की एकदम से भृकुटि तन गयी, "कि वह आदमी निर्दोष हो सकता है उस जैसा हरामजादा और नम्बरी आदमी निर्दोष हो सकता है ?"

मैम्बर की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी और वह फौरन सकपकाकर दायें-बायें देखने लगा, वह बात कहते हुए पहले ही उसकी हवा खराब हो रही थी ।

"मैं गारण्टी से कह सकता हूँ ।" कप्तान ने गुस्से में मेज पर फिर जोरदार घूंसा मारा, "कि वह आदमी किसी भी हालत में निर्दोष नहीं हो सकता, वह कोई बहुत पहुंची हुई 'चीज' है । उसकी आंखें बताती हैं कि वो हमसे अपना कोई गहरा राज छिपा रहा है, हमारी तमाम कोशिशों के बावजूद छिपा रहा है । और वो राज कोई छोटा नहीं हो सकता, किसी भी हालत में नहीं हो सकता ।"

"लेकिन वो राज हमें किस तरह पता चले ?"

"यही तो आफत है ।" कप्तान की आंखों में शोले से लपलपाने लगे, "यही तो मुश्किल है ।"

"अब तो सिर्फ एक ही तरीका बचा है ।" जब काफी देर की गरमा-गरम बहस के बाद भी कोई नतीजा न निकला, तब एक मैम्बर बोला ।

"क्या ?"

सबके चेहरे उस मैम्बर की तरफ उठे ।

"फिलहाल तो हम इस प्रोग्राम को यहीं खत्म करें, और कल सुबह उस आदमी को दोबारा टॉर्चर करें, आज से कहीं ज्यादा टॉर्चर करें, हो सकता है कि अपना जो जुर्म उसने आज नहीं कबूल किया, उसे कल कबूल कर ले ।"

शाम अब धीरे-धीरे ढल रही थी, उस समय शाम के साढ़े छः बज रहे थे ।

'नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड' के हैडक्वार्टर में उस वक्त सिर्फ चार आदमी थे, जिन्हें कमांडर की निगरानी के वास्ते वहाँ छोड़ा गया था कि कहीं वो फरार न हो जाये ।

बाकी कप्तान सहित तमाम लोग वहाँ से जा चुके थे ।

वह चूंकि नारकाटिक्स स्कवॉयड का हैडक्वार्टर था, इसलिये वहाँ पुलिस का कोई ज्यादा बड़ा इंतजाम भी न था । शाम को छः बजे के बाद जब सबकी ड्यूटी खत्म हो जाती थी, तो वहाँ आमतौर पर सिर्फ एक आदमी रहता था ।

मगर आज वह चार थे, उनकी संख्या इसलिये बढ़ा दी थी, क्योंकि आज वहाँ एक कैदी मौजूद था ।

कमांडर अभी भी हैडक्वार्टर के टॉर्चर रुम में बंद था और पहले की तरह ही कुर्सी से बंधा था ।

उसे खाने वगैरा के लिये भी कुछ नहीं दिया गया था ।

वह अकेला कुर्सी से बंधा बैठा था और काफी चिन्ता में डूबा हुआ था ।

तीन दिन गुजर चुके थे ।

23 अगस्त की वो सुरमई शाम भी धीरे-धीरे रात के काले आंचल में डूबती जा रही थी और अभी तक वो नील या जैकब तक नहीं पहुंच सका था ।

दुश्मन वाकई बेहद चालाक था ।

इस बार उसने कमांडर को अच्छी तरह बांधा था ।

करण सक्सेना, नील और जैकब के बारे में जितना सोच रहा था उतनी ही उसकी चिन्ता बढ़ रही थी ।

फिर जब उसका ध्यान भटककर गोल्डी की तरफ चला जाता तो चिन्ता में और कई गुना वृद्धि हो जाती ।

समय कम था ।

जबकि काम उसने काफी करना था ।

□□□

तभी टॉर्चर रूम का दरवाजा खुला और नारकाटिक्स स्कवॉयड के दो मैम्बर अंदर आ गये ।

कमांडर उनके अंदर आते ही भांप गया कि उन्होंने अभी-अभी काफी मात्रा में शराब पी है । कारण, उनके कदम नशे की वजह से बुरी तरह लड़खड़ा रहे थे और उनके मुँह से शराब के भभकारे निकल रहे थे ।

“क्या हाल हैं नौजवान !” उनमें से एक अंदर आते ही कमांडर को देखकर हंसा, “भूख-वूख तो नहीं लग रही ?”

“नहीं ।” कमांडर ने भी उसकी बात का हंसकर ही जवाब दिया, “मुझे भूख नहीं लगती ।”

“वैरी गुड ! यह तो काफी अच्छा है, जो तुम्हें भूख नहीं लगती । ऐसा मालूम होता है, तुम्हारे ऊपर पिटाई का भी असर नहीं होता ।”

कमांडर फिर हंसा ।

इस बीच वह दोनों कमांडर के सामने ही पड़ी मेज-कुर्सियों पर बैठ गये थे, फिर टाइम पास करने के लिये उन्होंने अपनी जेब से ताश की गड्डी निकाल ली और ताश खेलने लगे ।

उनमें से एक ताश की गड्डी में फुरेरी बड़ी स्टाइल से लगाता था और फुरेरी लगाकर खुश होता था ।

"वैसे एक बात बोलूं मिस्टर !" वही मैम्बर ताश बांटता हुआ कमांडर से सम्बोधित हुआ ।

"बोलो ।"

"बस आज की रात ही तुम्हारे पास है, जितना आराम करना चाहते हो, कर लो ।"

"क्यों ?" कमांडर चौंकन्ना होकर बोला, "फिर क्या होगा ?"

"फिर तो जो होगा ।" उस मैम्बर ने अपने ताश के पत्ते उठाकर देखे और उन्हें करीने से लगाना शुरू किया, "उसकी तुम फिलहाल कल्पना भी नहीं कर सकते । यह बात तुम अभी कह रहे हो कि तुम्हारे ऊपर पिटाई का असर नहीं होता, परन्तु कल जब तुम्हारा हैलीकॉप्टर बनाकर तुम्हारी पंखुड़ियें जोर-जोर से घुमाई जायेंगी, तो तुम्हारी ऐसी-तैसी हो जायेगी । कल सबसे पहले तो कप्तान साहब ही तुम्हारी धुलाई करेंगे, आज तो उन्होंने तुम्हारी कुछ भी धुलाई नहीं की, जो उनका कल तुम्हारी धुलाई करने का प्लान है । वह तुम्हारी वजह से बहुत गुस्से में हैं, इस समय उनका पारा बहुत हाई है ।"

"और अगर मान लो ।" कमांडर संजीदगी के साथ बोला, "मैं उन्हें कल भी कुछ नहीं बताता, फिर क्या होगा ?"

"फिर तो समझो कि तुम्हारा बेड़ागर्क हो गया ।" इस बार दूसरे मैम्बर ने हंसकर कहा ।

"क...क्यों ?"

"क्योंकि उस पोजीशन में तुम्हें सी.आई.ए. को सौंप दिया जायेगा ।"

तहलका मचना था, इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है ।

फिर तो राई का पहाड़ बन जाना था ।

वह अमरीका आया था गोल्डी को ब्लैकमेलरों के शिकंजे से आजाद कराने जबकि फिर तो उसे ब्लैकमेलरों को भूलकर सी.आई.ए. से जंग लड़नी थी । जबकि उसके पास उस अभियान में समय वैसे ही काफी कम था ।

कमांडर ने सी.आई.ए. के बारे में जितना सोचा, उतना ही वो परेशान हुआ ।

उसे जल्दी कुछ करना था ।

जल्दी ।

अगर वो एक बार सी.आई.ए. के शिकंजे में जकड़ गया, फिर तो पूरे मिशन का बेड़ागर्क हो जाना था ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना काफी देर तक उन मुद्दों पर विचार करता रहा ।

फिर काफी सोच-समझकर उसने एक चाल चली ।

दोनों मैम्बर अभी भी पूरी तन्मयता से ताश खेल रहे थे और कमांडर की तरफ उनका जरा भी ध्यान नहीं था ।

“दोस्तों !” कमांडर उन दोनों से सम्बोधित हुआ, “मेरी बात सुनो ।”

तुरन्त वह ताश खेलते-खेलते रुक गये और उन्होंने कमांडर की तरफ देखा ।

“क्या बात है ?” उनके चेहरों पर तल्खी उभरी ।

“दरअसल अभी-अभी मैंने तुम लोगों के प्रस्ताव पर काफी गौर किया है ।” कमांडर बोला, “और तुम्हारे प्रस्ताव

पर गौर करने के बाद मैं इसी नतीजे पर पहुंचा कि सचमुच मुझे आखिरकार सारी सच्चाई उगलनी ही होगी ।"

"वैरी गुड !" दोनों के चेहरे चमक उठे, "वाकई, काफी समझदार आदमी हो तुम तो । फिर क्या फैसला किया ?"

"फैसला क्या करना है, सोचता हूँ, जब सच्चाई उगलनी ही है तो फिर क्यों मूर्खों की तरह अपने जिस्म की चमड़ी उधड़वाई जाये । लेकिन.... ।"

"लेकिन क्या ?"

"मेरी एक शर्त है ।"

"जल्दी बोलो, क्या शर्त है ?" वह दोनों उत्तेजनावश अपनी-अपनी कुर्सी से खड़े हो गये थे ।

"दरअसल मैं सच्चाई सिर्फ तुम्हारे कप्तान के सामने उगलना चाहता हूँ और मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें अभी यहाँ बुला लो ।"

"यह कौन-सा मुश्किल काम है, हम अभी उन्हें यहाँ बुलाते हैं ।"

वह दोनों तुरन्त ताश वगैरा खेलना भूलकर कमरे से बाहर निकल गये ।

□□□

मुश्किल से पंद्रह मिनट बाद ही कप्तान भी वहाँ पहुंच गया ।

उन दोनों की भांति ही वह भी काफी उत्साहित नजर आ रहा था और उसे इस बात पर सख्त आश्चर्य हो रहा था कि आखिर उस जैसा घाघ आदमी इतनी आसानी से सब-कुछ बताने के लिये कैसे तैयार हो गया ।

जो इतने टॉर्चर के बावजूद नहीं टूटा था, वह इतनी आसानी से कैसे टूट गया ।

कप्तान जबरदस्त सस्पेंस में उलझा कमांडर के सामने पहुंचा और स्टूल खींचकर बैठ गया । स्कवॉयड के चारों मैम्बर भी बड़ी कौतूहलता के साथ उसके इर्द-गिर्द यूं जमा हो गये थे, जैसे वहाँ जादू का कोई 'शो' होने वाला हो ।

"क्या यह सच है ।" कप्तान स्टूल पर बैठते ही बोला, "कि तुम अपने बारे में सब-कुछ बता देना चाहते हो ?"

"हाँ ।" कमांडर संजीदगी से बोला, "यह बात सच है ।"

"थैंक गॉड !" तब कहीं जाकर कप्तान को अपने कानों पर यकीन हुआ, "मैं तो सोच रहा था कि यह लोग मेरे साथ कोई मजाक-वजाक कर रहे हैं, परन्तु यहाँ तो मामला वाकई बहुत सीरियस है ।"

कप्तान ने रूमाल निकालकर जल्दी से अपना चेहरा साफ किया, उसकी आंखें अभी भी हैरानी से फैली हुई थीं ।

"म...मगर यह सारा परिवर्तन एकाएक हुआ कैसे ?" कप्तान पुनः बोला ।

"अब इस किस्से को छोड़ो । इंसान को हमेशा आम खाने से मतलब रखना चाहिये कप्तान साहब, गुठलियां गिनने से कभी कोई फायदा नहीं होता ।"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम ।" कप्तान की गर्दन जल्दी-जल्दी स्वीकृति में हिली, "वाकई, तुम एकाएक काफी बुद्धिमानी की बातें करने लगे हो । ऐसा लगता है, जैसे थोड़ी ही देर में तुम्हारा पूरी तरह कायाकल्प हो गया है । हाँ तो, अब जल्दी से बताओ कि तुम्हारा किस

नारकाटिक्स गैंग से ताल्लुक है, या फिर तुम किस गैंग के लीडर हो ?"

"बताता हूँ, बताता हूँ, पहले मेरे कुर्सी से हाथ-पैर खोलो ।

"ह...हाथ-पैर खोलने से क्या मतलब है ?"

"मतलब भी सामने आ जायेगा ।" कमांडर बेहद धैर्यपूर्वक बोला, "चिन्ता मत करो, मैं तुम लोगों के बीच से भागना वाला नहीं हूँ । और मैं भाग भी कैसे सकता हूँ, मैं अकेला हूँ और मेरे पास कोई हथियार भी नहीं है । जबकि तुम पांच हो और सभी हथियारबंद हो ।"

"ठीक बात है ।" कप्तान की गर्दन पुनः स्वीकृति में हिली, तुम कैसे भाग सकते हो । नम्बर दो !"

"यस सर !" फौरन एक मैम्बर बड़ी तत्परता के साथ आगे बढ़ा ।

"मिस्टर विजय कुमार के हाथ-पैर खोल दो ।"

'नम्बर दो' ने पलक झपकते ही कमांडर को बंधनमुक्त कर दिया ।

बंधनमुक्त होते ही मुस्कराया कमांडर , उसने कुर्सी पर पहलू बदला और काफी देर से जकड़े पड़े अपने अंगों को ढीला छोड़ दिया । ऐसा करने से उसे काफी राहत महसूस हुई ।

"अब आप लोग एक काम और करें ।" कमांडर बोला ।

"क्या ?"

"मेरा ब्रीफकेस ले आयें ।"

"ब...ब्रीफकेस !" कप्तान के साथ-साथ सभी मैम्बरों के नेत्र विस्मयपूर्वक फैले, "उसका क्या करोगे तुम ?"

"मेरा पासपोर्ट कहाँ है ?"

"पासपोर्ट अभी भी रिकॉर्ड-रूम में है ।"

"पासपोर्ट भी मंगाओ ।"

"पासपोर्ट का तुम क्या करोगे ?"

"तुम लोग बस मेरा कमाल देखते जाओ ।" कमांडर बड़ी नाटकीय मुद्रा में बोला, "मैं आज ऐसा हंगामा करूंगा, जिसकी तुम अभी तक कल्पना भी नहीं कर रहे हो । दरअसल मेरा 'विजय कुमार' नाम जो तुम लोगों को मालूम है, वह भी नकली है और मेरा असली नाम सुनते ही तुम लोग सारा रहस्य समझ जाओगे कि मैंने क्या मायाजाल बुना था ।

"परन्तु अगर तुम्हें अपना 'असली नाम' ही बताना है ।" कप्तान एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला, "तो वह नाम तो तुम बिना पासपोर्ट के भी बता सकते हो ?"

"बिल्कुल बता सकता हूँ जनाब ।" कमांडर बोला, "लेकिन पासपोर्ट की मौजूदगी में मुझे एक रहस्य के ऊपर से पर्दा उठाना है, इसीलिये बेहतर यही होगा कि पहले सारा सामान यहीं मेरे पास आ जाये और फिर उसके बाद मैं धमाके करना शुरु करूं ।"

"अ...अजीब बात है ।"

"कुछ भी अजीब बात नहीं है, तुम लोग ज्यादा बारीकी से सोच रहे हो, इसीलिये अजीब बात लग रही है । बेहतर यही होगा कि तुम लोग अपने दिमाग पर ज्यादा जोर न डालो और जैसा मैं कह रहा हूँ, वैसा करो ।"

कप्तान ने बेहद उलझनपूर्ण अंदाज में अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरा और फिर 'नम्बर एक' को आंख से इशारा किया ।

तुरन्त ही नम्बर एक पासपोर्ट भी ले आया ।

"वैरी गुड !" कमांडर ने अपना पासपोर्ट, ब्रीफकेस की जेब के अंदर डाला, "अब मैं सारे रहस्य तुम लोगों के सामने खोलता हूँ । दरअसल इस ब्रीफकेस के अंदर एक बहुत बड़ी तोप छिपी हुई है और बेहद खास जगह छिपी हुई है, तुम सब लोग मेरे करीब आ जाओ, क्योंकि अब मैं उस तोप को निकालने जा रहा हूँ ।"

सस्पेंस के मारे उन पांचों की बुरी हालत थी ।

वह फौरन कमांडर के इर्द-गिर्द आकर खड़े हो गये । यह जबरदस्त कौतूहलता का ही असर था कि कप्तान भी स्टूल छोड़कर खड़ा हो गया था और कमांडर के बराबर में खड़ा होकर बड़ा उत्सुकता से ब्रीफकेस के अंदर झांकने लगा था ।

उसी पल कमांडर ने ब्रीफकेस के तल में लगा एक नन्हा-सा बटन दबाया और फिर बड़े इत्मीनान के साथ फॉल्स बॉटम अलग किया ।

जैसे ही फॉल्स बॉटम अपनी जगह से हटा, फौरन उसके नीचे मौजूद दोनों कोल्ट रिवॉल्वर नजर आने लगीं ।

रिवॉल्वरों पर नजर पड़ते ही उन पांचों के नेत्र अचम्भे से फटे, वह खतरा भांप गये, उनके हाथ धड़ाधड़ अपनी-अपनी गनों और पिस्टलों की तरफ झपटे ।

परन्तु वह हमले के लिये तैयार हो पाते, उससे पहले ही कोल्ट रिवॉल्वर कमांडर की उंगलियों के गिर्द अद्वितीय फुर्ती से घूमी और फिर धांय, धांय, धांय...एक साथ पांच गोलियां चलीं ।

वह पांचों गला फाड़कर चिल्ला उठे, गोलियां सीधे उनकी खोपड़ियों में जाकर लगी थीं, पांचों की खोपड़ियां

टैक्सी ड्राइवर ने मीटर डाउन किया, टैक्सी स्टार्ट की, और अगर ही पल वो टैक्सी तूफानी गति से सड़क पर दौड़ने लगी ।

"जान बची-लाखों पाये ।" कमांडर ने टैक्सी के दौड़ते ही छुटकारे की सांस ली ।

मगर अभी उसकी जान कहाँ बची थी ।

अभी तो वह और भी ज्यादा बड़े जंजाल में फंसने वाला था ।

□□□

टैक्सी पहले की तरह ही मियामी की रंग-बिरंगी रोशनी में नहाई सड़क पर काफी तेज रफ्तार से दौड़ रही थी ।

लेकिन जल्द ही कमांडर करण सक्सेना को अहसास हो गया कि वह टैक्सी चालक उसे किसी होटल में ले जाने की बजाय कहीं और ही ले जा रहा है । क्योंकि उसने बीच रास्ते में तीन-चार होटलों के नियोन साइन देखे थे, जो अंधेरे में चमक रहे थे, परन्तु टैक्सी चालक ने उनमें से किसी भी होटल के सामने टैक्सी रोकने की जरूरत महसूस नहीं की थी ।

तभी एक होटल का नियोन साइन और पीछे छूट गया तथा अब टैक्सी काफी कम आबादी वाली सड़क पर दौड़ रही थी ।

"ऐ मिस्टर !" उसी पल कमांडर टैक्सी ड्राइवर के ऊपर झुक गया, "यह तुम मुझे कहाँ लेकर जा रहे हो ?"

टैक्सी ड्राइवर कुछ न बोला, "वह पहले की तरह बड़ी शान्त मुद्रा में टैक्सी ड्राइव करता रहा । ऐसा लगा, जैसे वह बहरा हो ।

"तुम जवाब क्यों नहीं देते ?" कमांडर चिल्लाया ।

"जवाब तुम्हें मैं देती हूँ मिस्टर करण ।" टैक्सी में वह एक बिल्कुल नई आवाज गूंजी, वह एक लड़की की आवाज थी ।

कमांडर ने चौंककर आवाज की दिशा में देखा, वह आवाज उसकी सीट के नीचे से आयी थी । जब तक कमांडर ने आवाज की दिशा में देखा, तब तक वह लड़की फुर्ती के साथ सीट के नीचे से निकलकर ऊपर आ चुकी थी ।

कमांडर अद्वितीय फुर्ती से अपने ब्रीफकेस की तरफ झपटा ।

"हरकत नहीं ।" लड़की ने गुर्राते हुए रिवॉल्वर बिल्कुल उसकी पीठ से सटा दी, "हरकत नहीं मिस्टर करण, अगर तुम जरा भी हरकत करोगे, तो गोली तुम्हारे जिस्म के आर-पार होगी ।"

कमांडर ठिठक गया ।

लड़की ने जितने दृढ़ अंदाज में वह शब्द कहे थे, उससे साफ जाहिर था कि वह जो कह रही है, उसे कर गुजरेगी ।

वही किटी थी । अमरीकन एयरलाइंस की वही सर्विस गर्ल, जिसने कमांडर की जेब में हेरोइन प्लाण्ट की थी ।

"त...तुम !" कमांडर आहिस्ता से किटी की तरफ घूमा, "ल...लेकिन तुम तो इंग्लैण्ड चली गई थीं ।"

"हाँ ।" किटी विष-कन्या की तरह मुस्कराई, मैं इंग्लैण्ड ही जाने वाली थी, बल्कि इंग्लैण्ड जाने वाली फ्लाइट के अंदर सवार भी हो गयी थी । परन्तु तभी मैंने अपनी तबियत खराब होने का ड्रामा किया और बिल्कल ऐन मौके पर अपनी वो ट्रिप कैंसिल करके नीचे उतर आयी । यह बात

पुनः गला फाड़कर चिल्लाई किटी, फिर वो सीट पर ढेर हो गयी ।

परन्तु इस बीच एक चूक कमांडर से भी हुई ।

वह भूल गया था कि टैक्सी में किटी के अलावा भी कोई और है ।

जैसे ही किटी चीखती हुई नीचे गिरी थी । उसी पल टैक्सी ड्राइवर ने एकदम ब्रेक लगाकर टैक्सी रोक दी और फिर लोहे की एक मजबूत रॉड कसकर कमांडर के सिर में मारी ।

चीखा कमांडर ।

उसके हाथ से किटी की रिवॉल्वर छूट गयी ।

आंखों के सामने अंधेरा छा गया और रंग-बिरंगे तारे झिलमिलाने लगे ।

प्रहार सचमुच काफी शक्तिशाली था, कमांडर को ऐसा लगा, जैसे उसकी खोपड़ी खुल गयी हो ।

वह धड़ाम से नीचे गिरा तथा गिरते ही बेहोश हो गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं, उसके सिर में भयंकर पीड़ा अभी भी हो रही थी और उसे ऐसा अहसास हुआ, जैसे उसके सिर में कोई बहुत मोटा-सा गूमड़ उछल आया हो ।

शुक्र था, उसका सिर नहीं फटा था । कमांडर को यह अहसास भी अपने आप हुआ कि वह ज्यादा देर तक बेहोश नहीं रहा था । आंखें खुलते ही उसने खुद को एक बड़ी अजीबोगरीब-सी जगह पर पाया । वह लोहे का एक काफी बड़ा कमरा था, जिसके अंदर वो बंद था, वह पूरी

तरह लोहे का बना था । उसमें जो दरवाजे थे, वह भी मजबूत लोहे के थे ।

इसके अलावा वहाँ सामान के नाम पर भी कोई चीज न थी, सिर्फ एक छोटा-सा पेट्रोमेक्स जल रहा था, जिसका प्रकाश चारों तरफ बिखरा हुआ था ।

या फिर वहाँ लोहे की एक लम्बी-सी बेंच पड़ी थी जिस पर इस समय वह लेटा था और उसके हाथ-पैर नायलोन की रस्सी से इतने कसकर बंधे हुए थे कि वह बेंच के साथ लगभग पूरी तरह चिपक गया था और अपनी इच्छा से एक इंच भी इधर-उधर नहीं हिल सकता था ।

तभी वहाँ तीन साये प्रकट हुए ।

कमांडर ने लेटे-लेटे पेट्रोमेक्स की रोशनी में देखा कि उनमें से एक किटी थी, दूसरा टैक्सी चालक था, और तीसरा एक लम्बा-चौड़ा हब्शी था, जो उनके साथ किसी मरखने हाथी की तरह चल रहा था ।

“लगता है, इसे होश आ गया ।” वह काला हब्शी वहाँ आते ही बोला ।

“हाँ, इसे वाकई होश आ गया ।” किटी भी बोली ।

तुरन्त वह तीनों कमांडर की बेंच के नजदीक आकर खड़े हो गये ।

“हैलो मिस्टर करण !” किटी उसे देखकर अपने चिर-परिचित अंदाज में मुस्कराई, “तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं लगी ?”

“नहीं ।” कमांडर भी मुस्कराया, “ऐसे लोहे के डंडे अक्सर मेरे जिस्म से टकराकर लौट जाते हैं ।”

“काफी दिलचस्प आदमी हो ।” किटी हंसी, “जो ऐसी खतरनाक परिस्थिति में भी मजाक कर रहे हो ।”

वाकई, उन्होंने उसे कैद करने के लिये काफी नायाब जगह चुनी थी। ऐसी जगह, जिसका विचार भी पहले कभी किसी के दिमाग में नहीं कौंधा।

"लेकिन तुम लोग कौन हो ?" कमांडर ने फिर किटी के चेहरे की तरफ देखा, "और मुझे इस तरह बंधक क्यों बनाया गया है ?"

"दरअसल हम उसी ब्लैकमेलर के संगी-साथी हैं।" किटी ने इस बार बे-हिचक जवाब दिया, "जो गोल्डी को ब्लैकमेल कर रहा है। हम नहीं चाहते कि 31 अगस्त को लास वेगास में गोल्डी और जॉनी बैंजो के बीच जो मुकाबला होने जा रहा है, उसमें किसी भी हालत में गोल्डी की जीत हो। परन्तु आज की तारीख में हमारे लिये सबसे बड़ा 'खतरा' तुम बने हुए हो, एक तुम्हीं वह शख्स हो, जिसकी वजह से हमारा सारा प्लान चौपट हो सकता है।"

"यानि इसीलिये तुमने मेरी जेब में दो लाख डॉलर की वो हेरोइन प्लांट की।" कमांडर बोला, "ताकि मुझे पुलिस पकड़ ले और मैं तुम लोगों के रास्ते से हट जाऊं।"

"बिल्कुल ठीक।" इस बार टैक्सी चालक गुर्राकर बोला, "अब हमें यह कबूल करने में कोई हिचक नहीं कि सचमुच हमारा यही प्लान था। हम चाहते थे कि जब तक गोल्डी मुकाबले से अपना नाम वापस नहीं ले लेता, तब तक तुम पुलिस के शिकंजे में ही रहो। "

"यानि 27 अगस्त तक।"

"हाँ, 27 अगस्त तक। अगर तुम 27 अगस्त तक पुलिस के शिकंजे में रहते, तो हमारा काम काफी आसान हो जाता। परन्तु इस बीच हमें नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड की कार्यकुशलता पर भी पूरा-पूरा शक था।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह नहीं जानते थे कि तुम कमांडर करण सक्सेना हो । उन्हें नहीं मालूम था कि उन्होंने कितनी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय ताकत को बंदी बनाया हुआ है । उनका व्यवहार तुम्हारे साथ साधारण कैदियों जैसा था । और इसी बात का हमें डर था, हमें यही खतरा था कि तुम उनकी उस अल्प जानकारी का लाभ उठाकर किसी भी पल उनकी कैद से भाग सकते हो, जैसा कि हुआ भी, तुम उनकी कैद से चंद घण्टों में ही भाग निकले ।"

"हूँ ।" कमांडर ने गहरी हुंकार भरी, "तो इसीलिये तुम किटी के साथ नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड के हैडक्वार्टर के बाहर टैक्सी में पहरा दे रहे थे, ताकि अगर मैं वहाँ से भागूं, तो तुम लोग मुझे दबोच लो ।"

"हाँ, हम लोग इसीलिये वहाँ मौजूद थे । और जैसा कि देख रहे हो, हम अपने मकसद में कामयाब भी रहे ।"

"वाकई काफी समझदार आदमी हो ।"

□□□

कमांडर ने लोहे के उस डिब्बे में पुनः चारों तरफ दृष्टिपात किया, तो वह फौरन भांप गया कि वह सचमुच मालगाड़ी का ही डिब्बा था और वह लोग गलत नहीं कह रहे थे ।

"अब तुम लोगों की क्या योजना है ।" कमांडर ने फिर उन तीनों की तरफ देखा, "मुझे कब तक मालगाड़ी के इस डिब्बे में कैद रखना चाहते हो ?"

"हमारी योजना में कोई ज्यादा फेरबदल नहीं हुआ है ।" हब्शी ने पहले की तरह गंभीरतापूर्वक जवाब दिया, "हमारी वही योजना है, तुम 27 अगस्त तक इसी डिब्बे के अंदर कैद

रहोगे । सिर्फ चार दिन की बात है, और मैं समझता हूँ कि यह चार दिन आसानी के साथ गुजर जायेंगे। इस बीच तुम भी हमें पूरा-पूरा सहयोग दोगे क्योंकि तुमसे हमारी कोई दुश्मनी नहीं है । अगर दुश्मनी होती, तो हमारे 'नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड' के हैडक्वार्टर में सिर्फ एक टेलीफोन करने की देर थी कि तुम विजय कुमार नहीं बल्कि 'करण सक्सेना' हो, फिर तुम चंद घण्टे में तो क्या सात जन्म तक भी उनके शिकंजे से नहीं निकल सकते थे । मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा हूँ ?"

कमांडर कुछ न बोला ।

"27 अगस्त को गोल्डी जैसे ही मुकाबले से अपना नाम वापस लेगा ।" हब्शी ने आगे कहा, "और जॉनी बैंजो को वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन जैसे ही विश्व चैम्पियन घोषित करेगी, हम तुम्हें भी इस कैद से रिहा कर देंगे, फिर तुम अपनी इच्छा से कहीं भी जाने के लिये स्वतंत्र होओगे ।"

"यानि तुम लोग नहीं चाहते कि मैं गोल्डी की किसी भी तरह कोई मदद करूं ?"

"यही बात है ।" किटी बोली, "इसके अलावा एक बात और मैं तुम्हारे सामने बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहती हूँ ।"

"क्या ?"

"तुम मालगाड़ी के इस डिब्बे से भाग निकलने की कैसी भी कोई कोशिश मत करना ।" किटी उसे धमकी देती हुई बोली, "क्योंकि अगर तुमने यहाँ से भाग निकलने का कैसा भी कोई प्रयास किया, तो गारण्टी से तुम्हारी यहाँ लाश पड़ी होगी । तुम्हारे जैसे खूबसूरत और दिलेर नौजवान पर गोली चलाते समय मुझे दुःख होगा, परन्तु मैं चुकुंगी नहीं । याद रखो, तुम्हारा यहाँ से भाग निकलना आसान नहीं है, क्योंकि

हम लोग अच्छी तरह जानते हैं कि तुम अन्तर्राष्ट्रीय जासूस कमांडर हो और तुम्हारे जैसे खतरनाक आदमी को जरा-सी भी छूट देने का मतलब साफ-साफ अपनी मौत को दावत देना होता है। अगर हम लोगों के जाने के बाद तुम्हें किसी चीज की जरूरत पड़े, तो तुम यह घण्टी बजा देना।"

"घ...घण्टी!"

"हाँ, घण्टी। यह देखो!" किटी ने उसका नायलोन की रस्सी से बंधा हाथ घण्टी पर रखा, "यह घण्टी बेंच के ऊपर ही लगी है। और तुम्हारा हाथ बंधा होने के बावजूद सहूलियत से घण्टी तक पहुंच सकता है क्योंकि घण्टी हाथ के बिल्कुल नजदीक है। तुम पर बजाओगे, तो हम लोग फौरन यहाँ आ जायेंगे और तुम्हारी जरूरत पूरी करेंगे।"

फिर किटी ने घण्टी भी बजाकर दिखाई।

घण्टी की आवाज वाकई काफी तेज थी और मालगाड़ी के डिब्बे से बाहर तक उसकी आवाज गूंजी थी।

"ओ.के.।"

कमांडर ने धीरे से गर्दन हिला दी।

"कुछ कहना चाहते हो ?"

कमांडर कुछ न बोला।

फिर वह तीनों जिस तरह मालगाड़ी के डिब्बे का दरवाजा खोलकर अंदर आये थे, उसी तरह वहाँ से चले गये।

बाहर निकलते ही उन्होंने लोहे का भारी-भरकम दरवाजा भी बंद कर दिया और लोहे का मोटा सरकण्डा सरकने की आवाज भी आयी।

सचमुच वह उसके प्रति काफी सावधानी बरत रहे थे।

□□□

अब वो वहाँ अकेला था ।

कमांडर करण सक्सेना सोच में डूब गया ।

इसमें कोई शक नहीं, उसे एक आफत से निकले ज्यादा समय नहीं हुआ था और वो फौरन ही एक दूसरी आफत में फंस चुका था ।

बल्कि वो आफत, पहली आफत से भी ज्यादा बड़ी थी ।

उसकी रिवॉल्वर, पासपोर्ट वगैरा सब-कुछ उस तीनों के कब्जे में थे और कमांडर जानता था कि उसने जितनी आसानी से 'नारकाटिक्स पुलिस स्कवॉयड' के हैडक्वार्टर में वह चीजें हासिल कर ली थीं, उतनी आसानी से उन चीजों को वहाँ हासिल करना असम्भव था ।

क्योंकि वह जरूरत से ज्यादा चालाक लोग थे, और सबसे बड़ी बात यह कि वो उसकी असलियत से वाकिफ थे ।

कमांडर सोचता रहा ।

सोचता रहा ।

वह लोग 27 अगस्त तक उसे वहाँ कैद करके रखना चाहते थे, जबकि उसने किसी भी हालत में 27 अगस्त तक वहाँ कैद नहीं रहना

था ।

उसने जल्दी ही कुछ करना था ।

कुछ ऐसा करना था, जो उस कैद से निकलकर भाग सके और गोल्डी के करियर को किसी तरह उन दरिंदों के हाथों से बचा सके ।

परन्तु उसे सबसे पहले तो वहाँ से निकलना ही आसान नहीं लग रहा था ।

प्यास भी बहुत लग रही है, ऐसी अवस्था में मुझे रात को नींद भी नहीं आ पायेगी ।”

कमांडर को पूरी उम्मीद थी कि खाना खाने की वजह से उसके हाथ-पैर जरूर खोले जायेंगे, ताकि वो बेंच पर सीधा बैठ सके और खाना खा सके ।

कमांडर की बात सुनकर हब्शी ने किटी और टैक्सी चालक की तरफ देखा ।

“ठीक है ।” फिर हब्शी बिना विचलित हुए बोला, “हम तुम्हारे खाने का अभी इंतजाम करते हैं । किटी, जाओ तुम खाना लेकर आओ ।”

किटी तुरन्त वहाँ से चली गयी ।

जरूर स्टील की चादर बनाने वाली उस कम्पनी के अंदर उन्होंने सारा इंतजाम कर रखा था ।

□□□

मुश्किल से पांच मिनट में ही किटी खाने की ट्रे लेकर आ गयी । ट्रे में स्लाइस्ड के अलावा आमलेट और टमाटर का सूप था, इसके अलावा एक छोटे से जग में पानी था ।

खाने के आते ही हब्शी, कमांडर की तरफ बढ़ा ।

फिर उस काले हब्शी ने जो किया, उसने कमांडर की सारी उम्मीदों पर पानी फेर डाला ।

दरअसल जिस बेंच पर उसे बांधा गया था, वह एक फोल्डिंग बेंच थी, उसमें जगह-जगह पेंच कसे हुए थे, और उस बेंच को कई तरह से इस्तेमाल किया जा सकता था ।

काले हब्शी ने उस फोल्डिंग बेंच के दो पेंच ढीले किये, अपने मजबूत हाथों से उसके पाइप पीछे किये और फिर उस बेंच का आधा हिस्सा एकदम सीधा खड़ा कर दिया ।

अब वह बेंच कुर्सी जैसा रूप अख्तियार कर चुकी थी ।

कमांडर की इस समय टांगें फैली हुई थीं और कमर का सारा हिस्सा बैठने जैसी मुद्रा में आ चुका था । यानि अब खाना- खाने के लिये उसके पैर वगैरा खोलने की कोई जरूरत नहीं थी ।

उसी पल किटी ने आगे बढ़कर खाने की ट्रे उसकी गोद में रख दी और काले हब्शी ने उसका सिर्फ एक सीधा हाथ खोल दिया । फिर वह उसे चारों तरफ से घेरकर खड़े हो गये ।

"हाँ, अब खाना शुरू करो ।"

कमांडर समझ गया, उसका आइडिया फ्लॉप हो चुका है ।

उसने चुपचाप भोजन करना शुरू कर दिया ।

मुश्किल से पांच मिनट में ही वो भोजन समाप्त कर चुका था, फिर उसने पानी पीया और उसके बाद किटी ने आगे बढ़कर उसका हाथ धुलवाया तथा तौलिये से साफ किया ।

ट्रे भी अब उसकी गोद में से हटा ली गयी थी ।

"कुछ और चाहिये ?" हब्शी ने पूछा ।

अगर एक सिगरेट और मिल जाये, तो बेहतर होगा । दरअसल मुझे खाना खाने के बाद सिगरेट पीने की आदत है ।"

"क्यों नहीं, तुम्हें सिगरेट भी मिलेगी । मैं पहले ही बता चुका, तुम्हें हम कोई परेशानी यहाँ नहीं होने देंगे मिस्टर करण ! क्योंकि तुम्हारे से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है ।" फिर उस लम्बे-चौड़े हब्शी ने किटी की तरफ देखा, "किटी !"

"यस !" किटी तुरन्त अलर्ट पोजीशन में खड़ी हुई ।

"मिस्टर करण को सिगरेट दो ।"

किटी ने फौरन अपनी जीन्स की जेब से 'डनहिल' का पैकेट और सिगरेट लाइटर निकाला ।

कमांडर चौंका, वह दोनों चीजें उसकी थीं ।

यानि बेहोशी की अवस्था में ही उसकी जेबों की तलाशी भी ली गयी थी ।

फिर किटी ने खुद एक सिगरेट सुलगाई और वो जलती हुई सिगरेट कमांडर को सौंप दी । उन्होंने उसके हाथ में सिगरेट लाइटर तक सौंपना ठीक नहीं समझा था ।

कमांडर सिगरेट पीने लगा।

वह तीनों तब तक एक सेकंड के लिये भी वहाँ से नहीं हिले, जब तक कमांडर ने पूरी सिगरेट न पी ली और जलता हुआ टोटा नीचे न फेंक दिया ।

किटी ने उस जलते हुए टोटे को भी फौरन अपने सेंडल से रगड़कर बुझा दिया था और फिर वह टोटा मालगाड़ी के डिब्बे से बाहर फेंक दिया ।

वह हद से ज्यादा सावधानी बरत रहे थे ।

वह उसे कोई मौका नहीं देना चाहते थे ।

तभी हब्शी ने आगे बढ़कर उसकी बेंच को वापस पहले की तरह नीचे कर दिया और उसके पेंच कस डाले ।

फिर उन्होंने पेट्रोमेक्स भी बुझा दिया था ।

उसके बाद वो पहले की तरह मालगाड़ी के डिब्बे का दरवाजा बंद करके वहाँ से चले गये ।

□□□

बादशाह करीम शेख नूरानी के वह दोनों हाथ मेज पर फैले हुए थे, जिनमें हीरे-पन्नों से सुसज्जित ढेर सारी सोने की अंगूठियां थीं ।

बादशाह के माथे पर सिलवटें पड़ी हुई थीं और आंखें कुछ अजीब-से अंदाज में सिकुड़कर छोटी हो गयी थीं, साफ जाहिर था कि वो कुछ सोच रहा है ।

“मैं समझता हूँ कि तुम दोनों को अब ज्यादा देर नहीं करनी चाहिये ।” बादशाह करीम शेख नूरानी अपने हाथों को मेज पर फैलाये-फैलाये बोला, “अब वक्त आ गया है, जब हंगामा होगा । कमांडर को जरूर मालूम हो गया है कि नील कहाँ है, इसीलिये वो मियामी पहुंचा है ।”

“यानि आप चाहते हैं बादशाह !” अब्दाली आदर के साथ बोला, “कि हम दोनों फौरन मियामी पहुंच जायें और इस महासंग्राम में कूद पड़ें ?”

“बिल्कुल । तुम लोगों ने अब फौरन से भी पेश्तर मियामी पहुंचना चाहिये ।” बादशाह करीम शेख नूरानी बोला, “कल सुबह की फ्लाइट से ही अपने टिकट बुक कराओ और मियामी पहुंचो ।”

“लेकिन कमांडर अभी उन लोगों के शिकंजे में है बादशाह ।” प्रिंस इरफान शेख बोला ।

“अभी शिंकजे में है ।” बादशाह करीम शेख नूरानी, प्रिंस की आंखों में झांकता हुआ बोला, “परन्तु हो सकता है कि कल सुबह तक जब तुम मियामी पहुंचो, तब तक वह उन लोगों के शिकंजे से भी भाग निकले । मत भूलो, उसका नाम कमांडर करण सक्सेना है, उसे कोई भी ज्यादा देर तक कैद करके नहीं रख सकता ।”

"यानि हम लोग कल सुबह ही अपना मियामी जाने का बंदोबस्त करें।"

"बिल्कुल, अब इस मामले में ज्यादा देर करनी बेवकूफी होगी।"

"ठीक है बादशाह !" अब्दाली तत्पर लहजे में बोला, "हम लोग कल सुबह ही मियामी जाकर इस महासंग्राम में कूदते हैं। वैसे भी आजकल मेरी हथेली काफी खुजला रही है, बहुत दिन से कोई खून नहीं किया।"

वह बात कहकर अब्दाली खिसियानी-सी हंसी हंसने लगा था, लेकिन सच्चाई ये थी कि 'खून' के नाम से ही उसकी आंखों में चमक पैदा हो गयी थी।

□□□

अभियान का चौथा दिन (24 अगस्त)

अपने मिशन के बारे में सोचते-सोचते रात कमांडर करण सक्सेना की कब आंख लग गयी थीं, उसे पता न चला।

फिर तो उसकी सुबह ही आंख खुलीं।

मालगाड़ी के डिब्बे में उस समय भी गहन अंधकार छाया हुआ था और हाथ-को-हाथ भी बड़ी मुश्किल से सुझाई दे रहा था।

सिर्फ दरवाजे की एक झिरी में से कुछ रोशनी अंदर आ रही थी और उसी से कमांडर को अंदाजा हुआ था कि दिन निकल आया है।

तभी मालगाड़ी के डिब्बे का दरवाजा खुला और किटी अंदर आ गयी, किटी उस समय अकेली थी।

"हैलो हैण्डसम !" किटी अंदर आते ही बोली, "रात कैसी गुजरी ?"

"अच्छी गुजरी ।"

"इस बेंच पर कोई परेशानी तो नहीं हुई थी ?"

"कैसी बात करती हो ।" कमांडर आश्चर्यपूर्वक बोला, "इतने लम्बे-चौड़े बिस्तर पर भी कहीं किसी को परेशानी होती है ?"

किटी हंसने लगी, "तुम मजाक वाकई अच्छा कर लेते हो ।"

"यह मजाक नहीं है डार्लिंग, सच्चाई है । अब यह मेरी बदकिस्मती है, जो तुम इसे मजाक समझ रही हो ।"

किटी फिर खुलकर हंसी ।

उसी पल कमांडर की आंखें किटी की स्कर्ट की जेब पर जाकर स्थिर हो गयी थीं, जिसमें से 32 कैलीबर की रिवॉल्वर की बैरल बिल्कुल साफ-साफ बाहर झांक रही थी ।

यही वो क्षण था, जब कमांडर के दिमाग में वहाँ से भाग निकलने का एक और आइडिया कौंधा । वह आइडिया सचमुच लाजवाब था, अगर वो उस समय किटी से शौचालय जाने के लिये कहे, तब तो उसे हण्ड्रेड परसेण्ट उसके हाथ-पैर खोलने थे ।

"क्या सोचने लगे डियर ?"

"कुछ नहीं, सुबह हो गयी है न ।" कमांडर अपना पत्ता फेंकता हुआ बोला, "इसलिये मुझे 'बड़े घर' जाना है ।"

"ब...बड़े घर !" किटी सकपकाई, फिर एकाएक बहुत जोर से खिलखिलाकर हंसी, "ओह, समझी, समझी ! शौचालय !"

"यस डार्लिंग, तुमसे क्या छिपा है ।"

"जस्ट ए मिनट, मैं अभी सारा इंतजाम करती हूँ। किटी ने मुस्कराकर कहा।

फिर किटी मालगाड़ी के उस डिब्बे से उतरकर चली गयी।

□□□

इंतजाम !

कमांडर करण सक्सेना समझ न सका कि वो कैसा इंतजाम करने गयी है।

शायद वो उस लम्बे-चौड़े हब्शी और टैक्सी चालक को बुलाने गयी थी, ताकि उनकी देखरेख में उसे खोल सके। या फिर कुछ और बात थी।

कमांडर का दिल धड़कने लगा।

दो मिनट बाद ही किटी लौट आयी, उसके साथ काला हब्शी या टैक्सी चालक तो न था। अलबत्ता जो चीज लेकर किटी लौटी, उसे देखकर कमांडर का सारा उत्साह काफूर हो गया।

वह अपने हाथों में प्लास्टिक का कमोड उठाकर ला रही थी।

मालगाड़ी के डिब्बे में आकर किटी ने एक और ऐसा काम किया, जिससे कमांडर की रही-सही उम्मीद भी खत्म हो गयी।

उसने बेंच की सतह के साथ लगा हुआ हुक अंगूठे की सहायता से प्रेश करके नीचे दबाया तथा फिर किसी स्लाइडिंग डोर की तरह उसे झटके से एक तरफ खींच दिया। तुरन्त कमांडर के नितम्बों के नीचे से लोहे की प्लेट एक

बाहर निकलते ही उसने दरवाजा भी बंद कर दिया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना फौरन हरकत में आ गया था ।

यह उसके पास गोल्डन चांस था, गोल्डन चांस ! पिछले बारह घण्टों में उसे यह पहला मौका मिला था, जब उसका एक हाथ आजाद था और वो अकेला भी था ।

किटी के जाते ही कमांडर करण सक्सेना ने फौरन उन गांठों को खोलने की कोशिश शुरु कर दी, जिन्हें किटी लगाकर गयी थी । गांठें सचमुच काफी कसकर लगी थीं, फिर एक हाथ से किसी भी गांठ को खोलना वैसे भी मुश्किल काम होता है ।

कमांडर ने हिम्मत न हारी, वह फिर भी गांठ खोलने की कोशिश करता रहा ।

उसके पसीने छूटने लगे।

उसकी बांह अकड़ गयी ।

मगर वो फिर भी जुटा रहा ।

लगभग तीन मिनट बाद उससे पहली गांठ खुली । लेकिन उस एक गांठ को खोलने में ही उसकी ऐसी-तैसी बुल गयी थी ।

उसके बाद बाकी गांठों को खोलना कमांडर के लिये काफी आसान काम साबित हुआ ।

जल्द ही उसने अपने दोनों हाथ आजाद कर लिये ।

दोनों हाथ आजाद होते ही वो उत्साह से भर गया ।

यही वो पल था, जब किटी ने बाहर से लोहे का सरकण्डा खड़खड़ाया ।

"क्या मैं अंदर आ सकती हूँ ?"

"नहीं ।" कमांडर आनन-फानन अपनी रस्सियां खोलता हुआ चिल्लाया, "अभी एक मिनट रुको ।"

"क्या कर रहे हो ?"

"बस थोड़ी देर और ।"

कमांडर अपने सारे बंधन खोलता चला गया, जल्द ही वो पूरी तरह बंधनमुक्त हो चुका था ।

बंधनमुक्त होते ही वो दरवाजे के पास जो खड़ा हुआ ।

"क्या मैं अब अन्दर आ जाऊं ?" जल्दी ही किटी की आवाज फिर आयी ।

"हाँ, आ जाओ ।"

उसी पल सरकण्डा सरका, और फिर वो भारी-भरकम लोहे का दरवाजा किर्र-किर्र की आवाज करता हुआ खुलता चला गया ।

फौरन किटी अंदर आ गयी ।

"अरे !" बेंच खाली देखते ही किटी के नेत्र अचम्भे से फट पड़े, "यह क्या ?"

उसी पल कमांडर करण सक्सेना दरवाजे के पीछे से निकलकर एकदम से किटी के सामने जा खड़ा हुआ, और किटी संभल पाती, उससे पहले ही उसने किटी के चेहरे पर कराटे का मंकी ब्लो प्रहार कर दिया ।

हृदयविदारक चीख निकल गयी किटी के कण्ठ से, वह उछलकर डिब्बे की दीवार से जाकर टकराई और नीचे गिरी ।

वह उठ पाती, उससे पहले ही कमांडर ने झपटकर उसकी स्कर्ट की जेब से रिवॉल्वर निकाल ली ।

कमांडर करण सक्सेना दनदनाता हुआ अब उस कमरे में जा घुसा था, जिसमें से वो हब्शी निकला था ।

दरअसल वह वो कमरा था, जिसे उन तीनों ने फिलहाल वक्ती तौर पर अपने रहन-सहन का ठिकाना बना रखा था ।

सामने ही टैक्सी चालक बैठा एक स्टोव पर चाय बना रहा था । परन्तु गोलियां चलने और हब्शी के चीखने की आवाज सुनते ही उसने झट से अपनी रिवॉल्वर निकाल ली थी ।

जैसे ही कमांडर कमरे में घुसा, उसने तुरन्त कमांडर पर फायर किया ।

कमांडर एकदम अपनी दोनों टांगें फैलाकर नीचे फर्श पर बैठ गया, फिर उसकी टांगें घूमकर धड़ाधड़ उस टैक्सी चालक पर पड़ी ।

टैक्सी चालक खोलती हुई चाय और जलते हुए स्टोव पर जाकर गिरा ।

वह बिलबिला उठा ।

कमांडर ने उस पर गोली चलायी ।

लेकिन टैक्सी चालक हद से ज्यादा फुर्तीला था, जलने के बावजूद उसने एकदम से अपना स्थान छोड़ दिया था, यही वजह रही, गोली उसके कंधे को छूती हुई गुजरी ।

अपना स्थान छोड़ते ही उसने सीधे कमांडर के ऊपर जम्प लगायी तथा उसकी दोनों टांगों के बीच में जा घुसा और उसे एकदम से पलट दिया ।

सब-कुछ अप्रत्याशित ढंग से हुआ था ।

कमांडर को पलटते ही वह उस कमरे से निकलकर भागा ।

कमांडर ने भी बेपनाह तेजी दिखाई थी ।

उसने भी उसके लगभग पीछे-पीछे ही कमरे से बाहर छलांग लगायी ।

टैक्सी चालक अब अद्वितीय फुर्ती से मालगाड़ी के उस डिब्बे की तरफ दौड़ा जा रहा था, जो प्राइवेट रेलवे लाइन पर खड़ा था ।

जरूर उसका यह प्लान था कि वो किसी तरह उस डिब्बे के अंदर जाकर बंद हो जाये, फिर कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था ।

कमांडर मुस्कराया ।

वह एक ही जगह ठिठककर खड़ा हो गया और रिवॉल्वर पुनः उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी ।

टैक्सी चालक अब दौड़ता हुआ मालगाड़ी के डिब्बे तक पहुंच चुका था ।

फिर उसने पाइप पकड़कर पहले पायदान पर कदम रखा ।

और, उसके बाद जैसे ही दूसरे पायदान पर कदम रखने के लिये पैर आगे बढ़ाया ।

तभी धांय से गोली उसकी गर्दन में जाकर लगी ।

वह चीख तक न सका ।

उसके नेत्र हैरत से फैल गये ।

कुछ देर वो पाइप पकड़े दोनों पायदानों पर उसी मुद्रा में खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे पहले पाइप के ऊपर से उसका हाथ छूटा तथा फिर वो धड़ाम से पीछे जाकर गिरा ।

कमांडर ने नजदीक जाकर उसका चेहरा देखा, गोली उसकी गर्दन में से होती हुई जबड़े और नाक वाले हिस्से की धज्जियां उड़ाती हुई पार निकल गयी थी ।

मरने के बाद उसका चेहरा इतना भयानक हो गया था कि आसानी के साथ पहचाना भी न जा सके ।

कमांडर फौरन ही उसकी लाश से पीछे हट गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना को अपना ब्रीफकेस उसी कमरे में से बरामद हो गया था, जिसमें टैक्सी चालक बैठा चाय बना रहा था ।

उसने ब्रीफकेस खोलकर देखा, “उसमें उसकी दोनों कोल्ट रिवॉल्वर भी पड़ी थीं और पासपोर्ट भी मौजूद था ।

कमांडर ने सबसे पहले एक महत्वपूर्ण काम किया, उसने वह सभी चीजें ब्रीफकेस के फॉल्स बॉटम के नीचे छिपा दी । फिर अपने कपड़े झाड़े और उसके बाद वह बड़े इत्मीनान के साथ टहलता हुआ उस कम्पनी से बाहर निकल गया ।”

□□□

सुबह के सात बज रहे थे ।

सड़क पर अभी सन्नाटा था और उस समय तक वहाँ कोई इक्का-दुक्का वाहन ही आता-जाता दिखाई दे रहा था ।

कम्पनी से बाहर निकलते ही कमांडर को सबसे पहले थोड़े फासले पर ही वो काली कार खड़ी नजर आयी, जिसमें बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी बैठे थे ।

कमांडर की निगाहें कार से हटकर आसपास घूमीं, वहाँ टैक्सी कोई न थी । टैक्सी के अलावा ऐसा कोई साधन भी न था, जिससे फिलहाल वहाँ से रुख्सत हुआ जा सके ।

उधर, कमांडर को देखते ही बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमियों ने भी कार स्टार्ट कर दी थी और वो कार सड़क पर दौड़ने ही वाली थी कि तभी कमांडर ने हाथ देकर उस कार को रुकने का इशारा किया।

कार बिल्कुल कमांडर के नजदीक आकर रुकी।

"क्या बात है ?" पालसिंह ने अपनी गर्दन कार की खिड़की में से बाहर निकाली, "कार किसलिये रुकवाई ?"

"क्या तुम लोग मेरी थोड़ी हेल्प कर सकते हो ?" कमांडर बोला।

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं।" पालसिंह ने बे-हिचक कहा-"बोलो क्या चाहते हो ?"

"यहाँ आसपास कोई टैक्सी वगैरा नहीं है। तुम मुझे आगे मुख्य सड़क तक छोड़ दो, जहाँ से कोई टैक्सी मिल जाये।"

"जरूर, क्यों नहीं।" पालसिंह ने आगे बढ़कर कार का दरवाजा खोल दिया, "आओ, अंदर आओ।"

कमांडर फौरन कार की पिछली सीट पर पालसिंह के बराबर में जा बैठा।

तुरन्त ही कार सड़क पर दौड़ने लगी।

□□□

कार में सब खामोश थे, सब चुप।

यह बात उन सबको रोमाँचित कर रही थी कि जिस कमांडर करण सक्सेना का वह पिछले कई दिन से पीछा कर रहे हैं, इस समय वही कमांडर उनकी कार के अंदर मौजूद है।

उसकी कूलेण्ट खत्म हो गयी थी । जैसे ही इंजन ठण्डा हुआ, हम लोग फिर चल पड़े ।"

"हूँ !" कमांडर ने हुंकार भरी, "हूँ !"

तभी मुख्य सड़क आ गयी और इधर-उधर खड़ी टैक्सियां नजर आने लगीं ।

"ठीक है ।" कमांडर बोला, "तुम लोग मुझे यहीं उतार दो ।"

बादशाह के आदमी ने फौरन कार रोक दी ।

"इसमें कोई शक नहीं कि तुम लोग खिलाड़ी हो ।" करण सक्सेना, पालसिंह के बराबर में बैठा-बैठा बोला, "सवालों के जवाब देने अच्छी तरह जानते हो । लेकिन एक बात मैं फिर भी कहूँगा दोस्त ।"

"क...क्या ?"

"तुम लोग अभी कच्चे खिलाड़ी हो । यह देखो !"

फिर कमांडर करण सक्सेना ने वो हरकत दिखाई, जिसकी पालसिंह ने उस वक्त उम्मीद भी न की थी ।

कमांडर ने एकाएक पालसिंह की जेब के अंदर हाथ डाल दिया ।

पालसिंह हकबकाया, वह कुछ समझ पाता, उससे पहले ही कमांडर का हाथ पालसिंह की जेब के अंदर से ट्रांसमीटर सेट लेकर बाहर निकला तथा फिर उसने वो ट्रांसमीटर बेधड़क पालसिंह की गोद में डाल दिया ।

"लो, मैं तो जा रहा हूँ मिस्टर पालसिंह ।"(नोट : कमांडर को पाल सिंह का नाम कैसे मालूम , इसका कहीं जिक्र नहीं है) कमांडर करण सक्सेना अपना ब्रीफकेस संभालता हुआ बोला, "लेकिन मेरे जाते ही तुम प्रिंस

था, मैंने डॉक्टर को भी फोन कर दिया है। लेकिन आप भी जल्द-से-जल्द यहाँ पहुँचो।"

"म...मैं अभी पांच मिनट में वहाँ पहुंचता हूँ।"

"ओ.के. साहब।"

□□□

फिर सचमुच गोल्डी ने बड़ी जबरदस्त फुर्ती दिखाई थी।

उसने बेहद आनन-फानने कपड़े पहने तथा फिर उससे भी ज्यादा आनन-फानन दौड़ता हुआ अपनी कार में सवार हुआ, और अगले ही पल कार सड़क पर विद्युत गति से यूं दौड़ी, जैसे बंदूक से कोई गोली निकली हो।

गोल्डी पांच मिनट से भी पहले अपने आलीशान बंगले पर पहुंच चुका था।

वहाँ डॉक्टर उससे भी पहले मौजूद था।

मारथा बिस्तर पर लेटी थी और डॉक्टर ने उसके सिर की पट्टी कर दी थी। लेकिन मारथा को अभी होश नहीं आया था। नौकरों ने उस बिस्तर को चारों तरफ से घेर रखा था।

"य...यह सब कैसे हुआ ?" गोल्डी ने वहाँ पहुंचते ही नौकरों से चिल्लाकर पूछा, "य...यह बेहोश कैसे हुई ?"

कोई नौकर कुछ न बोला, सबने अपनी-अपनी नजरें नीचे झुका लीं।

"तुम लोग जवाब क्यों नहीं देते, खामोश क्यों हो ?"

"ब...बात ये है गोल्डी साहब !" एक नौकर हिम्मत करके बोला, "जैसे ही आप क्लब में प्रेक्टिस करने के लिये जाते हैं, तभी मैडम मारथा भी नील मेमसाहब के बेडरूम

में घुस जाती हैं और फिर उनका सारा दिन मेमसाहब के बेडरूम में ही गुजरता है ।”

“क...क्यों ?” गोल्डी को झटका लगा, वह चौंका, “यह सारा दिन नील के बेडरूम में क्या करती हैं ?”

“आप सुनेंगे, तो आपको हैरानी होगी साहब !” नौकर दुःखी मुद्रा में बोला, “मारथा मैडम, मेमसाहब के बेडरूम में जाकर उनके कपड़ों और तस्वीर को देख-देखकर घण्टों तक रोती हैं । रोते-रोते उनकी हिड़कियां बंध जाती हैं साहब, उनका रोना हममें से किसी से भी देखा नहीं जाता । जब से नील मेमसाहब गयी हैं, तब से उनका यही हाल है । अगर आज तक हममें से किसी ने आपको यह बात नहीं बतायी, तो सिर्फ इसलिये नहीं बतायी कि आप भी खामखाह परेशान होंगे ।”

गोल्डी सन्न रह गया, उस घटना ने उसकी अंतरात्मा तक को झिंझोड़ डाला था ।

“आ...आज भी मारथा मैडम, नील मेमसाहब के बेडरूम में ही थीं ।” नौकर भाव-विह्वल लहजे में आगे बोला, “व...वो रो रही थीं कि तभी रोते-रोते न जाने क्या हुआ कि उनकी जोरदार चीख निकल गयी और वो व्हील चेयर से नीचे जा पड़ीं ।”

“अ...ओह !”

“दरअसल यह सब डिप्रेशन की वजह से हुआ है ।” तभी डॉक्टर, गोल्डी से सम्बोधित हुआ, “डिप्रेशन की वजह से और बहुत ज्यादा सोचने के कारण ।”

“इसका इलाज क्या है ?”

“मेडिकल साइंस में इसका कोई इलाज नहीं ।”

“फ...फिर ?”

"य...यह आप कैसी बात कर रही हैं ममा !" गोल्डी के हलक से भी आंसुओं की हिचकी-सी उबली थी, "भला माँ की वजह से भी कभी बेटा परेशान होता है, ब...बल्कि माँ का दुःख-दर्द बांटकर तो बेटे को संतोष मिलता है।"

"त...तुम सचमुच बहुत अच्छे हो गोल्डी।" मारथा प्यार भरी नजरों से गोल्डी को देखते हुए उसके बाल सहलाने लगी, "बहुत अच्छे ! शायद इसीलिये इन दुनिया में तुम्हें इतने दुःख मिले हैं। और...और मेरी बेटी ने भी तो तुम्हारे दुःखों को काफी बढ़ा दिया है मेरे बच्चे, वह पागल लड़की हीरे को पहचान नहीं सकी, मुझे बहुत अफसोस है, बहुत अफसोस।"

"अ...आप नील के बारे में इतना क्यों सोचती हैं ममा ?"

"माँ हूँ, इसलिये सोचती हूँ बेटे !" मारथा ने गहरी सांस लेकर कहा, "फिर तुम्हारे घर की बर्बादी भी तो नहीं देखी जाती। कोई सगा बेटा भी किसी अपाहिज माँ का इतना ख्याल नहीं रखता होगा। जितना तुम मेरा रखते हो। अब तो सिर्फ उस दिन का बेसब्री से इंतजार है, जिस दिन नील लौटेगी। कभी-कभी सोचती हूँ, पता नहीं वो बेवकूफ लौटेगी भी या नहीं लौटेगी।"

"नील जरूर लौटेगी ममा !" गोल्डी यकीन के साथ बोला, "वो जरूर लौटेगी।"

"अ...और अगर वो न लौटी ?" मारथा का आशंकित स्वर, "अ...और अगर उसे कुछ हो गया तो ?"

"नहीं ममा, नहीं।" गोल्डी ने फौरन मारथा के मुँह पर हाथ रख दिया, "ए...ऐसे अपशब्द मत बोलो, तुम देखना, नील एक दिन लौट आयेगी, ज...जरूर लौट आयेगी।"

"इसका इलाज खुद तुम्हारे पास है मिस्टर गोल्डी !" डॉक्टर सपाट लहजे में बोला, "तुम्हें हर वो काम करने की कोशिश करनी चाहिये, जिससे मैडम खुश रह सकें, आनन्दित रह सकें। याद रखो मिस्टर गोल्डी, मैडम का बूढ़ा शरीर है, अब इनकी खुशियां ही इनकी जिंदगी बन सकती हैं। इस उम्र में अगर गम लग जायें, तो वह पूरे शरीर को दीमक की तरह चाट जाते हैं।"

गोल्डी सकते जैसी अवस्था में खड़ा रहा।

इस बीच डॉक्टर ने मारथा के बाजू में एक इंजेक्शन लगाया था और फिर चला गया।

गोल्डी धम्म से एक कुर्सी पर गिर पड़ा, उसका दिमाग घूमने लगा।

मारथा, वह अपाहिज औरत सिर्फ नील की ही माँ नहीं थी बल्कि खुद गोल्डी भी उससे अपनी माँ जैसा ही प्यार करता था।

□□□

मारथा को लगभग आधा घण्टे बाद होश आया, उसके चेहरे पर गहरी वेदना और दुःख के निशान थे।

होश में आने के बाद उसने जैसे ही अपनी आंखों के सामने गोल्डी को देखा, तो उसका दुःख और बढ़ गया, उसकी आंखों में आंसू झिलमिलाने लगे।

"म...मेरी वजह से तुम्हें काफी परेशानी होती है न बेटे ?" मारथा ने अपनी कंपकंपाती हथेलियों में गोल्डी का चेहरा भर लिया, "म...मैं तुम्हें बहुत तंग करती हूँ न ?" वह जोर-जोर से रोने लगी।

मगर वो शब्द बोलते हुए खुद गोल्डी की आवाज भी कंपकंपा रही थी, वह अब्दाली को भुला नहीं पाया था।

जब भी वो नील के बारे में सोचता, तभी रह-रहकर उसकी आंखों के गिर्द अब्दाली का चेहरा भी चक्कर काट जाता।

□□□

कमांडर ने एक बार फिर कागज पर लिखे उस एड्रेस को देखा, जहाँ नील और जैकब ठहरे हुए थे,

जैकब

गोल्डन गेट फार्म हाउस

माल रोड, मियामी।

इस समय कमांडर एक टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा था और वो टैक्सी माल रोड की तरफ ही दौड़ी जा रही थी।

कमांडर इस बात को लेकर काफी आशंकित था कि पता नहीं अब नील और जैकब उस फार्म हाउस में होंगे भी या नहीं।

उसने पीछे मुड़कर देखा, बादशाह करीम शेख नूरानी के आदमी अब उसका पीछा नहीं कर रहे थे।

जरूर अपनी पोल खुलने की वजह से या तो वह झेंप गये थे। या फिर उन्होंने कमांडर पर नजर रखने का कोई और जरिया ढूंढ निकाला था।

टैक्सी अब शहर से बाहर की तरफ दौड़ रही थी।

जल्द ही टैक्सी एक ऐसे इलाके में पहुंची, जहाँ फार्म हाउस ही फार्म हाउस बने हुए थे।

लेकिन फार्म हाउस के विशालकाय फाटक के ऊपर ही एक बोर्ड टंगा था, और उस पर ऐसा संदेश लिखा था, जिसे पढ़ते ही कमांडर की आंखों में बेतहाशा चमक दौड़ गयी,

आवश्यकता है

आवश्यकता है बेहतरीन नस्ल के घोड़ों की देखभाल करने के लिये एक साईस की । साईस बहादुर हो, जांबाज हो, और घोड़ों देखभाल करने का उसे कम-से-कम तीन साल का अनुभव हो ।

अच्छा वेतन मिलेगा । जिस व्यक्ति में यह सभी खूबी हों, वह तुरंत मिलें ।

कमांडर के होठों पर मुस्कान दौड़ गयी ।

"लगता है बेटा !" कमांडर होठों-ही-होठों में बड़बड़ाया, "तुम्हारे साईस बनने का समय भी आ गया । अब तुम्हें यह काम भी करके देख ही लेना चाहिये ।"

कमांडर ने अपने कपड़ों पर नजर डाली, जो किसी प्रभावशाली व्यक्ति के कपड़े लग रहे थे ।

"चल करण, अब फटाफट अपनी यह ड्रेस भी चेंज कर डाल ।"

फिर कमांडर ने आनन-फानन ओवरकोट उतार डाला और क्लेन्सी हैट भी उतार दिया, वह दोनों चीजें उसने ब्रीफकेस के अंदर बंद कर दी । फिर उसने अपने बाल थोड़े बिखेर लिये, शर्ट का ऊपर का बटन खोल डाला, और आस्तीन के कफ खोलकर उन्हें यूं ही उबड़-खाबड़ अंदाज में ऊपर की तरफ चढ़ा लिये ।

पलक झपकते ही वो एक ऐसा साधारण-सा आदमी नजर आने लगा था, जिसे अपने रख-रखाव की बहुत कम फिक्र थी ।

फिर कमांडर ने फाटक के दायीं तरफ दीवार पर लगी कॉलबेल का बटन दबाया, तो तुरन्त अंदर जोर से हॉर्न जैसी आवाज गूंजी थी ।

□□□

उसे ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा, जल्द ही पैंतालीस-छियालीस वर्ष के एक अधेड़ आदमी ने फाटक खोला, जिसका जिस्म काफी तन्दुरुस्त था, उसने पुलिस वालों जैसी वर्दी पहनी हुई थी, और कंधे पर एकनाली बंदूक लटकी थी, जिसमें 315 बोर की गोली चलती थी ।

वह जरूर उस फार्म हाउस का चौकीदार था ।

"कहिये !" वह फाटक खोलते ही कमांडर करण सक्सेना से बड़े अदब के साथ बोला, "क्या काम है आपको ?"

"मेरा नाम करण है ।" कमांडर भी उसी के समान अदब से बोला, "और मैं एक हिन्दुस्तानी आदमी हूँ ।"

"फिर ?"

"आपके फाटक पर एक बोर्ड लटका है, जिस पर लिखा है । कि यहाँ फार्म हाउस में एक साईस की जरूरत है ।"

"जी हाँ, यह सही है ।"

"मैं दरअसल उसी नौकरी के सिलसिले में यहाँ आया हूँ ।"

"य...यानि !" चौकीदार के नेत्र फटे, "यानि तुम साईस की नौकरी करना चाहते हो ?"

"हाँ"

चौकीदार ने कमांडर को बड़ी अचम्भित निगाहों से ऊपर से नीचे तक देखा ।

"आप चिन्ता न करें महाशय ।" कमांडर मुस्कराया, "मैंने बड़ी-बड़ी घोड़ियों को अपने काबू में कर रखा है ।"

"वह साधारण घोड़ी नहीं है मेरे भाई । उसकी सवारी बड़ी टेढ़ी खीर है, मान जाओ, इसी में भला है ।"

"नहीं ।" कमांडर दृढ़तापूर्वक बोला, "अब तो मुझे देखना ही है, वह घोड़ी कैसी है । और सच बात तो ये है, मुझे नौकरी की भी सख्त जरूरत है ।"

"ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी ।" चौकीदार बोला, "मैंने तुम्हें जितना समझाना था, समझा दिया । अब कोई जानते-बूझते नरक में कूद जाये, तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ।"

"इस फार्म हाउस के मालिक का क्या नाम है ?"

"जैकब ।"

कमांडर की आंखें और चमक उठीं ।

यानि नील और जैकब अभी उसी फार्म हाउस के अंदर थे ।

"मुझे मिस्टर जैकब से मिलवाने का बंदोबस्त करो, तो बड़ी मेहरबानी होगी ।"

"ठीक है, तुम यहीं खड़े रहो, मैं अभी अंदर से आता हूँ ।"

"कोई बात नहीं ।"

फिर चौकीदार फाटक खुला छोड़कर वहाँ से चला गया ।

□□□

जल्द ही वो वापस लौटा ।

"आओ ।" आते ही वो कमांडर से सम्बोधित हुआ, "मिस्टर जैकब तुम्हें बुला रहे हैं ।"

"चलो।"

कमांडर तुरन्त फाटक से अंदर दाखिल हुआ और चौकीदार के पीछे-पीछे चल पड़ा।

सामने ही फार्म हाउस के बीचों-बीच एक बड़ा खूबसूरत कॉटेज बना हुआ था, जिसमें सीमेण्ट की चादर की बड़े स्टाइल में डिजाइन की हुई लाल छत पड़ी थी, जो कॉटेज के ऊपर बेहद खूबसूरत लग रही थी।

चौकीदार उस कॉटेज के बराबर में से होता हुआ कमांडर को लेकर फार्म हाउस के पिछले हिस्से में पहुंचा।

फार्म हाउस का पिछला हिस्सा भी काफी शानदार था।

वहाँ एक काफी लम्बा-चौड़ा हरी घास का मैदान था। एक तरफ घोड़ों का बाड़ा बना हुआ था, जहाँ सचमुच बड़े-बड़े कीमती नस्ल के अरबी घोड़े-घोड़ियां थीं, इसके अलावा मैदान के बीच में ही एक स्वीमिंग पूल भी बना था।

कमांडर ने जब चौकीदार के साथ फार्म हाउस के उस पिछले हिस्से में कदम रखा तो उसने देखा कि एक लम्बा-चौड़ा नौजवान आदमी सफेद रंग के एक काफी तन्दुरुस्त घोड़े पर सवार था और उस घोड़े को स्वीमिंग पूल के चारों तरफ दौड़ाते हुए वह राइडिंग कर रहा था।

उस नौजवान ने चौड़े चेक की जैकेट और एकदम चुस्त पेंट पहनी हुई थी, पैरों में शिकारी जूते थे और आंखों पर काले रंग का चश्मा चढ़ा रखा था।

जरूर वही जैकब था।

फिर कमांडर की निगाहें स्वीमिंग पूल के पानी पर जाकर टिक गयीं, वहाँ एक खूबसूरत नवयौवना राफ्ट पर सीधी लेटी तैर रही थी। उसने तेज सुर्ख रंग की स्वीमिंग कास्ट्यूम

पहनी हुई थी, जिसमें से उसका आधे से ज्यादा कहर ढाता बदन चमक रहा था ।

कमांडर उसे देखते ही पहचान गया, वो नील थी ।

कमांडर ने राहत की सांस ली, आखिरकार उसकी मेहनत कामयाब हो ही गयी थी ।

वो अपनी मंजिल पर पहुंच ही गया था ।

तभी जैकब ने स्वीमिंग पूल का एक चक्कर और काटा तथा फिर उस सफेद घोड़े को बिल्कुल कमांडर के सामने ही रोका ।

घोड़ा जोर से हिनहिनाया, उसने जोर-जोर से अपने पैर जमीन पर पटके और सीधा खड़ा हो गया ।

जैकब फौरन घोड़े से नीचे कूद गया था ।

"हैलो यंगमैन !" वह बड़े मर्दाना अंदाज में बोला, "क्या तुम्हीं साईस की नौकरी करना चाहते हो ?"

"जी साहब ।"

"जिस्म से तो काफी तन्दुरुस्त लगते हो, मालूम होता है कि जिंदगी में कसरत खूब जमकर की है ।"

"ऐसी कोई बात नहीं साहब, बस कभी-कभार थोड़ी-बहुत शौकिया तौर पर कर लेता हूँ ।"

"अच्छा है, अच्छा है । जो लोग अपनी सेहत का ख्याल रखते हैं, उनकी जिंदगी की गाड़ी काफी दिन चलती है ।"

इस बीच नील भी वहाँ आ गयी थी । वह अभी भी स्वीमिंग कास्ट्यूम पहने हुए थी, उसका पूरा बदन भीगा हुआ था । अलबत्ता वह अपने बालों को तौलिये से धीरे-धीरे रगड़ रही थी ।

उस स्वीमिंग कास्ट्यूम में नील 'अंगारा' लग रही थी और उसे देखकर साफ महसूस होता था कि वो सैक्स की भूखी औरत है।

"इससे मिलो जान !" नील को देखते ही जैकब बोला, "यह आदमी हमारे यहाँ साईस की नौकरी करने आया है।"

"दैट्स वण्डरफुल !" नील चहक उठी और फिर अपनी सुरीली आवाज में बोली, "परन्तु एक बात मैं तुम्हें एडवांस में ही बता देना चाहती हूँ नौजवान !"

"क्या ?"

"यहाँ साईस की नौकरी करना लोहे के चने चबाने के बराबर होता है।"

"मुझे ऐसे काम पसंद हैं मैडम !" कमांडर मुस्कराया, "जो चैलेन्जिंग हों।"

"वैरी गुड !" नील की आंखों में चमक कौंधी, "बातों से तो मर्द आदमी मालूम होते हो।"

"मैं हर तरह से मर्द हूँ।"

"नाम क्या है तुम्हारा ?"

"करण।"

"मिस्टर करण !" जैकब कमांडर को गौर से देखता हुआ बोला, "मैं तुम्हें एक बात और बता दूं, यहाँ बड़े-बड़े अड़ियल किस्म के घोड़े-घोड़ियां हैं, जो अच्छे-अच्छे आदमी को नचाकर रख देते हैं।"

"आप मुझे कुछ कर दिखाने का मौका दें महाशय !" कमांडर सिर नवांकर बोला, "खुद-ब-खुद साबित हो जायेगा कि घोड़े ज्यादा अड़ियल हैं या फिर मैं ज्यादा अड़ियल हूँ।"

इस समय वह अपनी पूरी जान लगा रहा था, मगर उस बेचारे जानवर को यह कहाँ मालूम था कि आज वो अन्तर्राष्ट्रीय जासूस कमांडर से भिड़ बैठा है ।

जब जिम्मी अपने दोनों अगले पैर कुछ ज्यादा ही धरती पर पटकने लगा, तो कमांडर ने फौरन गर्दन छोड़कर उसके दोनों पैर पकड़ लिये थे ।

अब मुकाबला और ज्यादा जोरदार था ।

जिम्मी बुरी तरह हिनहिनाने और उछलने लगा ।

उसकी हिनहिनाहट की आवाज से पूरा फार्म हाउस थर्रा उठा ।

चौकीदार भी दौड़कर वहाँ आ गया था और हैरतअंगेज से उस नजारे को देखने लगा था ।

नील और जैकब भी भौंचक्के थे ।

जल्द ही वो क्षण आ गया, जब जिम्मी के थकावट की वजह से सारे कस-बल निकल गये और उसका उछलना-कूदना भी कम हो गया ।

उसी पल कमांडर ने जिम्मी की लगाम पकड़ी थी और फिर एकदम उछलकर उसकी पीठ पर जा बैठा ।

फिर उसने ऐड़ लगायी, तो वह बिल्कुल उसी तरह ही कमांडर को लेकर स्वीमिंग पूल के चारों तरफ तूफानी गति से दौड़ने लगा, जैसे कुछ देर पहले जैकब को लेकर दौड़ रहा था ।

“वैरी गुड !” जैकब जोर-जोर से ताली बजाता हुआ खुशी से चिल्ला उठा, “वैरी गुड मिस्टर करण, तुमने सचमुच साबित कर दिया कि तुम मर्द हो, असली मर्द, जो हमेशा जीतता है ।”

उसी पल कमांडर ने फिर जिम्मी के ऊपर छलांग लगा दी थी।

इस बार उसने दो काम एक साथ करने चाहे।

पहला काम, लगाम पकड़ना। दूसरा काम, लगाम पकड़ते ही एकदम से जिम्मी की पीठ पर सवार हो जाना।

जिम्मी के ऊपर झपटते ही इस बार उसने लगाम पकड़ ली तथा फिर उछलकर जैसे ही जिम्मी की पीठ पर सवार होना चाहा, वह हिनहिनाते हुए फिर बुरी तरह उछला और उसने कमांडर को पटकी दे मारी।

"लगता है दोस्त !" जैकब उसका मखौल उड़ाता हुआ बोला, "यह जिस्म सिर्फ दिखावे के लिये बना रखा है, मर्द नाम के लिये ही हो।"

कमांडर की आंखों में अब गुस्सा झलकने लगा था।

वह पुनः तीर की तरह जिम्मी के ऊपर झपटा और इस बार उसकी गर्दन को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया।

जिम्मी ने पहले की तरह ही जोर-जोर से हिनहिनाते हुए अपने पैर पटके, बुरी तरह उछला। परन्तु इस बार कमांडर उसे छोड़ने के लिये तैयार न हुआ।

दोनों के बीच द्वन्द युद्ध-सा छिड़ गया था।

दोनों महारथी थे।

दोनों शातिर थे।

नील और जैकब अब आंखें फाड़े उस नजारे को देख रहे थे।

जिम्मी अपने आपको कमांडर के शिकंजे से छुड़ाने की हरचन्द कोशिश कर रहा था, लेकिन वो असफल था।

कमांडर तूफानी गति से ही घोड़े को दौड़ाता रहा और फिर उसे जैकब तथा नील के सामने लाकर एकदम से रोका, उसके बाद जैकब से भी कहीं ज्यादा मर्दाना अंदाज में नीचे कूद पड़ा ।

नील की आंखें भी अब बेतहाशा चमक रही थीं ।

“वाकई तुम बहादुर आदमी हो मिस्टर करण !” नील भी उसकी प्रशंसा के पुल बांधती हुई बोली, “तुमने साबित कर दिखाया कि तुमने जो कहा, वो सब सच था ।”

“तो फिर मैं नौकरी पक्की समझूं ?” कमांडर ने बड़े आदर के साथ उन दोनों के सामने सिर झुकाया ।

“बिल्कुल पक्की ।” जैकब बोला, “मगर शुरु में हम तुम्हें ज्यादा तनख्वाह नहीं देंगे, सिर्फ आठ सौ डॉलर । बाद में तुम्हारा काम देखकर तनख्वाह बढ़ा दी जायेगी ।”

“मुझे कोई एतराज नहीं साहब ।” कमांडर मुस्कराया और उसने पुनः अदब के साथ गर्दन झुकाई ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना अब वहाँ से जा चुका था ।

फार्म हाउस का चौकीदार उसे उसका क्वार्टर दिखाने ले गया था, जहाँ उसने रहना था ।

“लगता है, हमें इस बार ठीक आदमी मिल गया है डियर ।” नील, कमांडर के जाते ही बोली ।

“यह तो वक्त आने पर ही पता चलेगा जान, यह आदमी ठीक है या नहीं ।” जैकब ने सफेद घोड़े की पीठ थपथपाई ।

“क्यों ?”

"वह तो मुझे नहीं भुला पाया, लेकिन लगता है कि तुम्हारी दिलचस्पी मेरे अंदर कम होती जा रही है ।" नील थोड़े शिकायत भरे अंदाज में जैकब के गाल पर उंगली फिराने लगी ।

"तुमसे यह बात किसने कही ?"

"कुछ बातें कही नहीं जातीं डियर ।" नील के होठों पर शैतानी किस्म की मुस्कान थी, "बल्कि कुछ बातों को महसूस किया जाता है, समझा जाता है ।"

"यह तुम्हारी गलतफहमी है जान !" जैकब ने उसके गाल का बड़ी गरमजोशी के साथ चुम्बन लिया, "मैं तुमसे बेहद-बेहद प्यार करता हूँ ।"

"जबान से कुछ मत कहो ।" नील इठलाई, "अगर सचमुच प्यार करते हो तो साबित करो ।"

"क...कैसे साबित करूं ?"

"सोचो ।" नील चंचल अंदाज में मुस्कराने लगी, "दिमाग से नहीं दिल से सोचो डियर, मोहब्बत का इजहार किस तरह किया जाता है ।"

"समझा ।" जैकब के होठों पर भी शातिराना मुस्कान खिली, "समझा ।"

फिर वह एकदम से नील के ऊपर झपट पड़ा ।

परन्तु नील कुछ कम शैतान न थी, वह खिलखिलाकर हंसती हुई भागी और फौरन स्वीमिंग पूल में कूद पड़ी ।

जैकब ने भी उसके पीछे-पीछे ही पूल में छलांग लगा दी थी ।

□□□

चौकीदार ने कमांडर को जो सर्वेण्ट क्वार्टर दिखाया, वह कॉटेज की बगल में ही बना हुआ था और काफी हद तक साफ-सुथरा था ।

आमतार पर फार्म हाउसों के अंदर सर्वेंट क्वार्टरों का हालत अच्छी नहीं होती, उनके मुकाबले वो काफी बेहतर था ।

कमांडर करण सक्सेना ने अपना ब्रीफकेस उसी क्वार्टर की एक अलमारी में बंद कर दिया और सिर्फ सावधानी के तौर पर उसमें से एक रिवॉल्वर निकालकर अपनी जेब में रख ली ।

उसके बाद कमांडर का ज्यादातर दिन घोड़ों के बीच में ही गुजरा था । वहाँ तकरीबन दो दर्जन घोड़े थे और हर घोड़ा बेशकीमती था ।

उस फार्म हाउस को देखने के बाद कमांडर ने यही अनुमान लगाया कि वह जरूर जॉनी बैंजो का फार्म हाउस था, क्योंकि फार्म हाउस की इतनी कीमती जगह और इतने कीमती घोड़े किसी जैकब जैसे साधारण आदमी के हर्गिज भी नहीं हो सकते थे ।

लेकिन कुछ सवाल कमांडर के दिमाग को बुरी तरह झिंझोड़ रहे थे ।

जैसे, क्या जैकब को अभी उसके यानि कमांडर के बारे में कुछ मालूम नहीं था कि एक जासूस खास तौर पर हिन्दुस्तान से आया हुआ है और अब उसी की तलाश में जुटा है ।

जितनी आसानी से उसने उसे साईस की नौकरी दे दी, उससे तो यही लगता था कि वो अभी हंगामे से पूरी तरह

अंजान था, वरना वो उसे कम-से-कम इतनी आसानी से नौकरी न देता ।

फिर कमांडर ने उसे अपना नाम भी असली बताया था, करण नाम सुनते ही उसने उछल पड़ना चाहिये था ।

इसके अलावा कमांडर के दिमाग में कुछ और सवाल भी कौंध रहे थे ।

जैसे, अगर जैकब उस सारे हंगामे से अंजान था, तो फिर किटी,हब्शी और टैक्सी चालक ने किसके कहने पर उसे मालगाड़ी के डिब्बे के अंदर कैदी करके रखा था ?

कौन था वो आदमी ?

इससे एक नतीजा और भी निकलता था । जरूर जॉनी बैंजो ने किसी और आदमी को ब्लैकमेलिंग का वह केस सौंपा था और जैकब तो सिर्फ एक माध्यम था, अलबत्ता उसे पेश इस तरह किया जा रहा था, मानो वही सारे फसाद की जड़ हो ।

बहरहाल !

मामला काफी पेचीदा था ।

वह उतना आसान हर्गिज भी नहीं था, जितना शुरु में नजर आ रहा था ।

कमांडर करण सक्सेना को यह बात भी काफी अजीब लग रही थी कि जैकब से उसके लास वेगास या मियामी वगैरा आने का रहस्य किसलिये छिपाया गया है ।

कमांडर जितना उन सवालों पर गौर कर रहा था, उतनी ही उसकी उलझन बढ़ती जा रही थी ।

जिन तीन ब्ल्यू फिल्मों की तलाश में करण सक्सेना, जैकब तक पहुंचा था, अभी उसे उन फिल्मों का मिलना भी आसान नजर नहीं आ रहा था ।

"मैं दरअसल तुम्हें मुबारकबाद देने के लिये आयी हूँ।" नील उसे हटाकर खुद-ब-खुद ही क्वार्टर के अंदर आ गयी, "तुम वाकई बहादुर नौजवान हो। मैंने ऐसी शक्ति पहले कभी किसी नौजवान की बाजुओं में नहीं देखी, जो किसी घोड़े की टांगें पकड़कर उसे बेबस बना डाले। वाकई इसके लिये बेपनाह ताकत चाहिये और वो ताकत तुम्हारे फौलाद जैसी बाजुओं में है।"

"ल...लेकिन इस बात की मुबारकबाद तो आप मुझे दोपहर ही दे चुकी थीं मैडम।"

"बिल्कुल दे चुकी थी।" नील अदा के साथ मुस्करायी, "मगर वो मुबारकबाद तुम्हारी बहादुरी के मुकाबले काफी कम थी।"

"क्या मतलब ?"

"मैं तुम्हें उस बहादुरी के ऐवज में ऐसा आलीशान तोहफा देना चाहती हूँ, जिसे तुम कभी न भुला सको। जो तुम्हारे वास्ते हमेशा-हमेशा के लिये यादगार बन जाये।"

"म...मैं कुछ समझा नहीं।"

"दोपहर तुमने एक घोड़े की सवारी की थी डियर।" नील बड़ी मदमस्त आंखों से कमांडर की तरफ देखते हुए फुसफुसाई, "अब अगर चाहो, तो घोड़ी की सवारी कर सकते हो।"

"घोड़ी, क...कहाँ है घोड़ी ?"

नील ने अपने हाथ ऊपर करके जानलेवा अंगड़ाई ली।

"इतनी खूबसूरत और आलीशान घोड़ी तुम्हारे सामने खड़ी है, और पूछते हो कि कहाँ है घोड़ी ! डियर !" नील मुस्कराई, "यूं समझो कि छप्पन व्यंजनों से सजी थाली

तुम्हारे सामने रखी है, बस भोग लगाना बाकी है । आओ, और अपना इनाम हासिल कर लो ।"

"नहीं ।" कमांडर ने नील की तरफ से पीठ कर ली, "चली जाओ यहाँ से ।"

"बेवकूफ मत बनो डियर !" नील पुनः कमांडर के सामने आ खड़ी हुई, "तुमने ऐसा आलीशान इनाम अपनी पूरी जिंदगी में कभी हासिल नहीं किया होगा ।"

"फिर भी मेरी तुम्हारे अंदर कोई दिलचस्पी नहीं ।"

नील की आंखों में हैरानी के निशान उभरे ।

उसने एकाएक झटके से अपनी नाइटी उतार फेंकी ।

नाइटी उतरते ही नील का साफ-सुथरा और संगमरमर की तरह सुडौल बदन चमक उठा था ।

उसके वक्ष काफी बड़े-बड़े थे और कमांडर को चुनौती देते प्रतीत हो रहे थे ।

"मेरी तरफ देखो डियर !" नील ने उसे झिंझोड़ा, "मेरी तरफ देखो, क्या तुम अब भी यही कहते हो कि तुम्हारी मेरे अंदर कोई दिलचस्पी नहीं ? क्या अभी भी मुझे देखकर तुम्हारे अंदर कोई हरकत नहीं हो रही, कोई अहसास नहीं जाग रहा ?"

"प्लीज !" कमांडर ने सख्ती से आंखें बंद कर लीं और चिल्लाया, "प्लीज, तुम चली जाओ यहाँ से ।"

वह गोल्डी की बीवी है, यह बात कमांडर के दिमाग में लगातार डंके की तरह बज रही थी, वह गोल्डी की बीवी है ।

वह उस भलेमानस आदमी की बीवी है, जिसे 'विश्व चैम्पियन' के खिताब की हिफाजत करने के लिये वो हिन्दुस्तान से इतनी दूर आया था ।

□□□

परन्तु गोल्डी जितना भलामानस था, नील उतनी ही बद्फेलियों से भरी हुई थी ।

तभी नील ने एक ऐसी हरकत की, जिसने कमांडर करण सक्सेना जैसे आदमी को भी हिला डाला ।

वह एकदम कमांडर से चिपट गयी थी ।

उसका जिस्म जल रहा था ।

उसकी आंखों से शोले निकल रहे थे ।

"पागल आदमी !" नील फुंफकार उठी और उसने करण के बाल पकड़कर झिंझोड़े, "अगर तुमने मेरी इच्छा पूरी न की, तो मैं शोर मचाने लगूंगी । मेरी आवाज सुनकर अभी जैकब यहाँ आ जायेगा और फिर हंटर से तुम्हारी खाल उधेड़ता हुआ फार्म हाउस से बाहर निकालेगा ।"

कमांडर सन्न रह गया ।

उसे उम्मीद नहीं थी, नील इतना भी गिर सकती है ।

"मेरी जिंदगी में तुम पहले मर्द हो ।" नील आक्रोश में गुर्रायी, "जिसने मझे ठुकराया है । और मैं इस बात का बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूँ, तुम्हें मेरी इच्छा पूरी करनी ही होगी । तुम नहीं जानते, पहले चारों साईस मेरी वजह से ही भागे हैं । वह चारों मेरे गुलाम थे, चारों मेरे साथ सेक्स करते थे, परन्तु उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था, जो मुझे पूरी तरह संतुष्ट कर पाये । सेक्स के दौरान मैं उन्हें ललकारने लगती थी, उनकी मर्दानगी को चुनौती देने लगती थी, इसी हीन भावना की वजह से वो एक के बाद एक यहाँ से भाग खड़े हुए । अगर तुम नौकरी करना चाहते हो, तो मुझे संतुष्ट करो, वरना तुम्हारी भी खैर नहीं ।"

कमांडर समझ गया, सचमुच वो काफी खतरनाक थी ।

उसके हाथ कमांडर की कमर के गिर्द सख्ती के साथ कस गये ।

पूरे शरीर में मदन लहरी का जोरदार कम्पन्न हुआ ।

फिर वो पराजित योद्धा की तरह बिस्तर पर फैल गयी और आंखें बंद किये-किये बुरी तरह हाँफने लगी ।

लगभग दस मिनट बाद उसकी सांसें नियंत्रित हो पायी थीं ।

सांसें नियंत्रित हुईं, तो उसने आहिस्ता से अपनी पलकों की चिलमनें हटाई । कमांडर अभी भी उसके ऊपर लेटा हुआ था ।

वह बड़े प्यार से उसे देखने लगी ।

"क्या देख रही हो ?"

"कुछ नहीं ।" नील ने गहरी सांस ली और अपनी गोरी-चिट्टी बांहों में पुनः कमांडर को भींचकर आंखें मूंद लीं, "कुछ भी तो नहीं डियर ! देख रही हूँ, क्या सचमुच सैक्स में इतनी शक्ति होती है ।"

"सैक्स एक असीमित शक्ति का नाम है मैडम, जिसकी पूर्णता को शायद ही आज तक कोई मर्द प्राप्त कर पाया हो ।"

करण सक्सेना, नील के ऊपर से उठ गया और फिर बिस्तर से टांगें नीचे लटकाकर सिगरेट सुलगाने लगा ।

नील भी उसके साथ-साथ बिस्तर से उठ बैठी थी ।

"एक बात कहूँ ?"

नील ने बैठे-बैठे पीछे से उसके कंधे पर हाथ रख लिया और एक वक्ष को उसकी नंगी पीठ से बिल्कुल सटा दिया ।

"कहो ।"

"त...तुम सचमुच घोड़ी की सवारी करना जानते हो ।" नील वह शब्द कहते हुए लजा गयी और मुस्कराते हुए उसकी जांघ पर उंगली से गोल-गोल दायरे बनाने लगी ।

कमांडर के होठों पर भी अनायास मुस्कान थिरक उठी थी ।

"मैं आज तक जैकब को ही सबसे शक्तिशाली समझती थी, ल...लेकिन, लेकिन...। "

"लेकिन क्या ?"

"तुम उससे भी ज्यादा शक्तिशाली हो ।"

"क्या यह बात दोपहर ही साबित नहीं हो गयी थी ।" कमांडर बोला, "जब मैंने घोड़े की सवारी की थी ।"

"घोड़े और घोड़ी की सवारी में बहुत फर्क होता है डियर ।" नील ने आहिस्ता से उसके गाल का चुम्बन लिया, "घोड़े की सवारी बहुत लोग कर सकते हैं, परन्तु घोड़ी की सही मायनों में सवारी करने के लिये वास्तव में ही कोई मर्द चाहिये ।"

"लगता है ।" कमांडर बोला, "सवारियों का कुछ ज्यादा ही तर्जुबा है ।"

"हाँ ।" नील बेधड़क बोली, "इसमें कोई शक नहीं, मैं वास्तव में ही इस क्षेत्र में स्पेशलिस्ट हूँ । मैं दरअसल पुरुषों से काफी जल्दी बोर हो जाती हूँ, परन्तु लगता है कि तुमसे मेरी यारी काफी लम्बे टाइम तक निभने वाली है ।"

कमांडर हँसा ।

"बहरहाल, अब तो इस मीटिंग को यही खत्म करें ।" कमांडर खड़े होकर कपड़े पहनने लगा, "मुझे अभी सोना भी है, ताकि सुबह जल्दी उठकर घोड़ों का काम देख सकूँ । आखिर मेरी नई-नई नौकरी का सवाल है ।"

"नॉटी मैन ।" नील उसकी बात पर हँसी, फिर उसने कमांडर का एक और प्रगाढ़ चुम्बन लिया तथा उसके बाद अपनी नाइटी पहनने लगी ।

पूरे फार्म हाउस में अभी भी घनघोर सन्नाटा था ।

पहले की तरह ही हर तरफ उल्लू बोल रहे थे ।

□□□

अभियान का पांचवां दिन (25 अगस्त)

बादशाह करीम शेख नूरानी ने बुरी तरह चौंककर अपने सामने बैठे गोल्डी की तरफ देखा ।

बादशाह के नेत्र हैरानी से फैल गये थे, उसे एकाएक अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ था कि वो शब्द गोल्डी ने ही कहे हैं ।

"य...यानि ।" बादशाह करीम शेख नूरानी भौंचक्के लहजे में बोला, "यानि तुम अब यह चाहते हो कि अब्दाली, नील की हत्या न करे बल्कि वह उसे पकड़कर तुम्हें सौंप दे ।"

"ह...हाँ ।" गोल्डी का संजीदा स्वर, "मैं अब यही चाहता हूँ बादशाह, मैं नील की मौत किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं कर सकता ।"

"तुम पागल हो गये हो, बिल्कुल पागल ।" बादशाह चिल्ला उठा, "बेवकूफ आदमी, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो । मैंने तुम्हारे जैसा मूर्ख अपनी जिंदगी में नहीं देखा, जिस लड़की ने तुम्हारे वास्ते इतने झंझट पैदा किये, जिस लड़की की खातिर तुम आज ब्लैकमेलिंग के इस मुकाम तक पहुंचे, तुम उसी की हिफाजत करना चाहते

"क्योंकि अब्दाली और इरफान शेख आज सुबह ही इस काम को अंजाम देने के लिये मियामी के वास्ते रवाना हो चुके हैं, हमें कल ही रिपोर्ट मिली थी कि नील मियामी में है, वह दोनों तो अब तक मियामी पहुंचकर शायद अपने काम में भी जुट गये हों ।"

"न...नहीं ।" गोल्डी आन्दोलित हो उठा, "नहीं बादशाह, उन्हें रोको, उ...उन्हें नील की हत्या करने से रोको ।"

"मगर मैं अब कैसे रोक सकता हूँ मेरे भाई !" बादशाह हताश मुद्रा में बोला, "तीर कमान से छूट चुका है ।"

"आपके पास उनका टेलीफोन नम्बर तो होगा ?"

"न...नम्बर तो है ।" बादशाह करीम शेख नूरानी हिचकिचाते हुए बोला, "लेकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि वो दोनों टेलीफोन वाली जगह पर होंगे भी या नहीं ?"

"आप ट्राई करो बादशाह ।"

"म...मगर ।"

"यह एक नहीं दो जिंदगी का सवाल है, इसलिये ज्यादा सोचो मत ।"

"ठीक है, अगर तुम कहते हो, तो मैं ट्राई करता हूँ । परन्तु एक बात मैं फिर भी कहूँगा गोल्डी, नील को जिंदा छोड़कर तुम अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल कर रहे हो, उसकी वजह से तुम फिर किसी संकट में फंसोगे, फिर किसी मुसीबत का जन्म होगा ।"

वह शब्द कहते हुए बादशाह करीम शेख नूरानी ने टेलीफोन अपनी तरफ खींचा और कुछ नम्बर डायल किये ।

□□□

तभी गोल्डी ने एक और काम किया।

उसने टेलीफोन का 'स्पीकर' वाला बटन दबा दिया, ताकि दूसरी तरफ से बोलने वाले आदमी की आवाज को भी आसानी के साथ सुन सके।

बादशाह ने उसे कठोर निगाहों से घूरा, परन्तु गोल्डी ने परवाह न की।

"हेलो।" शीघ्र ही टेलीफोन के स्पीकर पर एक अनजानी आवाज उभरी, जिसे गोल्डी ने साफ-साफ सुना।

"कौन, पालसिंह ?"

"जी हाँ।"

"मैं बादशाह बोल रहा हूँ।" बादशाह करीम शेख नूरानी का कठोर स्वर, "मेरी फौरन अब्दाली से बात कराओ।"

"अ...ओह !" बादशाह का नाम सुनते ही पालसिंह हड़बड़ा उठा, "आप एक मिनट होल्ड करें, मैं अभी मिस्टर अब्दाली को बुलाता हूँ बादशाह।"

फिर टेलीफोन लाइन पर सन्नाटा छा गया।

एक मिनट तो क्या, आधा मिनट भी नहीं लगा, उससे पहले ही अब्दाली की हड़बड़ाई आवाज स्पीकर पर उभरी।

"यस बादशाह, मैं अब्दाली बोल रहा हूँ। कैसे फोन किया ?"

"तुम्हें एक जरूरी संदेश देना है अब्दाली।"

"बोलो बादशाह।"

"नील के जीवन में थोड़े-बहुत दिन के अंदर ही एक हादसा घटने वाला था, उसने खुद-ब-खुद किसी बीस-पच्चीस मंजिली इमारत के ऊपर से कूद जाना था, किसी भारी भरकम ट्रक से उसका एक्सीडेंट हो जाना था, या फिर

"कुछ भी है गोल्डी, मैंने अपनी पूरी जिंदगी में तुम्हारे जैसा इंसान नहीं देखा ।"

"अच्छा ही है बादशाह, जो आगे भी इस जैसा इंसान न देखो ।" गोल्डी भाव-विह्व्ल स्वर में बोला, "क्योंकि इस गोल्डी की जिंदगी में दुःखों के सिवा कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं ।"

फिर गोल्डी कुर्सी छोड़कर उठा और थके-थके कदमों से बाहर की तरफ बढ़ गया ।

बादशाह करीम शेख नूरानी भी पाइप के कश लगाता हुआ उसे जाते देखता रहा था ।

□□□

गोल्डी के जाते ही बादशाह करीम शेख नूरानी ने मियामी का फिर वही नम्बर डायल किया, जिस पर उसने थोड़ी देर पहले बात की थी ।

तुरन्त ही टेलीफोन की घण्टी जाने लगी ।

"हैलो !" पुनः टेलीफोन पर पालसिंह की आवाज उभरी ।

"मैं बादशाह बोल रहा हूँ पालसिंह ।" इस बार बादशाह काफी तेज स्पीड से बोला, "अब्दाली कहीं गया तो नहीं पालसिंह?"

"न...नहीं बादशाह, मगर बात क्या है ? मिस्टर अब्दाली और प्रिंस बस कहीं जाने के लिये तैयार ही हो रहे हैं ।"

"तुम फौरन मेरी अब्दाली से बात कराओ ।"

"ओ.के. बादशाह ।"

फिर जल्द ही अब्दाली की आवाज भी टेलीफोन लाइन पर उभरी ।

"अब क्या हुआ बादशाह ?"

"कुछ नहीं हुआ ।" बादशाह करीम शेख नूरानी ने गुस्से में दांत किटकिटाये, "यह साला गोल्डी पागल हो गया है, दिमाग फिर गया है इसका । वह मेरे सामने बैठा था और स्पीकर पर तुम्हारी आवाज भी सुन रहा था, इसीलिये मुझे तुझको ऐसा आदेश देना पड़ा ।"

"य यानि !" अब्दाली की आवाज खुशी से कंपकंपायी, "यानि... ।"

"हाँ, तुमने नील को किसी भी हालत में छोड़ना नहीं है । उसका निपटना ही बेहतर है ।"

"म...मगर फिर आप गोल्डी को क्या जवाब देंगे ?"

"कह देंगे, वह ब्लैकमेलरों के साथ मुठभेड़ में मारी गई । या, फिर ब्लैकमेलर उसे दबोचने के लिये उसका पीछा कर रहे थे कि तभी वो सचमुच एक ट्रक के नीचे आकर कुचल गयी । इसी तरह कुछ और कहानियां भी प्लांट की जा सकती हैं, कहानियां प्लांट करना कौन-सा मुश्किल काम है ।"

"वैरी गुड !" अब्दाली चहक उठा, "वैरी गुड ! सचमुच आपका जवाब नहीं बादशाह !"

"अब बातें छोड़ो और जल्दी कोई कारनामा करके दिखाओ ।"

"आप बेफिक्र रहें बादशाह, जल्दी कोई कारनामा होगा, बहुत जल्दी । गुड बाय !"

"गुड बाय !"

□□□

लास वेगास का प्रसिद्ध किंग होटल, और किंग होटल का एक काफी बड़ा कांफ्रेंस हॉल !

"लेकिन मिस्टर बैंजो !" वह एक पुरुष की आवाज थी, "बॉक्सिंग की दुनिया में यह हवा काफी गरम है कि आप इस बार भी हार जायेंगे ।"

"वह सब बेवकूफ लोग हैं ।" जॉनी बैंजो भड़क उठा, "पागल लोग हैं जो इस तरह की बातें कर रहे हैं । दरअसल वह सब दुश्मन के खेमे के आदमी हैं और उन्हें खासतौर पर इसी काम के लिये नियुक्त किया गया है कि वो इस तरह की अफवाहें फैलायें और मैंने ऐसे ही लोगों के सवालों का जवाब देने के लिये यह प्रेस-कांफ्रेंस आयोजित की है । 31 अगस्त फैसले का दिन है ।" जॉनी बैंजो शेर की तरह गरजता हुआ बोला, "31 अगस्त को ऐसे तमाम लोगों के मुँह पर जबरदस्त तमाचा लगेगा, जो इस तरह की बातें कर रहे हैं । आप मेरी यह बात लिख लें और इस बात के गवाह रहें । इसके अलावा मैं एक बात और भी कहना चाहूँगा ।"

"क्या ?"

"27 अगस्त मुकाबले से नाम वापस लेने की आखिरी तारीख है और अभी 27 अगस्त में दो दिन बाकी हैं, हो सकता है कि 31 अगस्त से पहले 27 अगस्त को ही कोई नया हंगामा हो जाये ।"

"कैसा हंगामा ?"

"इंतजार करो ।" जॉनी बैंजो ने मुस्कराते हुए सस्पेंस क्रियेट किया, "27 अगस्त को कुछ भी हो सकता है ।"

"फिर भी, कोई आइडिया ?"

"हो सकता है कि 27 अगस्त को गोल्डी मुकाबले से नाम ही वापस ले ले ।"

कांफ्रेंस हॉल में हंसी का फव्वारा-सा छूटा ।

"आप शायद मजाक कर रह हैं मिस्टर बैंजो ।"

जॉनी बैंजो की भवें तन गयीं, "मैं मजाक नहीं करता ।"

"फिर तो हम इसे आपकी खुशफहमी ही कहेंगे मिस्टर बैंजो !" पीछे से एक रिपोर्टर की आवाज आई, "आपको शायद मालूम नहीं कि सट्टा बाजार में भी गोल्डी की पोजिशन शुरू से ही आपसे अच्छी चल रही है, बॉक्सिंग जगत के ज्यादातर प्रशंसक गोल्डी पर ही पैसा लगा रहे हैं, क्योंकि उन्हें पूरी-पूरी उम्मीद है कि यह मुकाबला गोल्डी जीतने वाला है ।"

"वह सब लोग धोखे में हैं ।" जॉनी बैंजो हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा, "वह सब उन्हीं अफवाहों की वजह से गोल्डी पर ज्यादा पैसा लगा रहे हैं, जो अफवाहें बाकायदा प्री-प्लान तरीके से बॉक्सिंग जगत में उड़ाई गयी हैं । परन्तु बाद में जब उन तमाम लोगों का पैसा डूबेगा, तब उन्हें इस बात का सख्त अफसोस होगा कि उन्होंने गोल्डी पर पैसा लगाया है तो क्यों लगाया ।"

"और बॉक्सिंग जगत में आपकी आक्रमण शक्ति को लेकर जो बातें कही जा रही हैं ।" वह एक लड़की की आवाज थी, "उस विषय में आप कुछ कहेंगे ?"

"किस तरह की आक्रमण शक्ति ?"

"कहा जा रहा है कि अब आपके घूंसों में पहले जैसी ताकत नहीं रह गई है, अब आपके पंच उतने प्रभावशाली नहीं हैं, आपके मुक्कों में वो जान नहीं है ।"

"यह देखो, यह देखो मेरे घूंसों की शक्ति !"

जॉनी बैंजो एकाएक बिगड़ेल सांड की तरह भड़क उठा था और जोर-जोर से अपने सामने रखी लकड़ी की मेज पर घूंसे बरसाने लगा ।

धड़ाधड़, धड़ाधड़, धड़ाधड़ ।

जॉनी बैजो के घूंसे मेज पर इस तरह पड़े, जैसे मेज पर हथौड़े बरस रहे हों।

पलक झपकते ही मेज की धज्जियां उड़ गयीं।

जॉनी बैंजो के दोनों घूंसे लहू-लुहान हो गये।

परन्तु फिर भी जॉनी बैंजो का गुस्सा कम नहीं हुआ था, वह धड़ाधड़-धड़ाधड़ घूंसे बरसाता ही रहा था और साथ-साथ चिल्लाता भी जा रहा था, "यह देखो मेरे घूंसों की शक्ति, यह देखो मेरे घूंसा की शक्ति !"

वह तब तक न रुका, जब तक प्रेस रिपोर्टर और कैमरामैनों ने दौड़कर उसे जकड़ लिया।

□□□

जॉनी बैंजो इस समय अपने प्राइवेट रुम में था।

उसके दोनों हाथों पर सफेद पट्टी बंधी हुई थी और वो अपने बारकाउण्टर के आगे कुर्सी पर बैठा था। शराब का गिलास उसके हाथ में था, जिसे वो धीरे-धीरे चुसक रहा था।

जॉनी बैंजो की आंखें बंद थीं।

उसके माथे की नसें फूली हुई थीं।, उन फूली हुई नसों से साफ जाहिर था कि उसका गुस्सा अभी कम नहीं हुआ है।

गोल्डी की तारीफ उसे बर्दाश्त नहीं होती थी। और यह बात भी उसे बहुत कम बर्दाश्त थी कि लोग उसे उसकी कमजोरियां गिनायें।

तभी दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर जॉनी बैंजो ने आंखें खोलीं, बार काउण्टर के बीच में एक शीशा लगा

आप हार के अहसास से बौखला गये हैं । आप दिमागी संतुलन खो बैठे हैं ।"

"सूअर हैं सब-सूअर ! पाजी आदमी !"

जॉनी बैंजो ने आवेश में शराब से भरा गिलास उठाया और गटागट तीन-चार घूंट पी गया ।

"मैं एक बात कहूँ सर !" सेक्रेटरी वहीं नजदीक पड़ी एक कुर्सी पर बैठता हुआ बोला ।

"क्या कहना चाहते हो ?"

"हालात वाकई ऐसे नहीं हैं सर, जो आप गोल्डी के साथ यह मुकाबला लड़ें । इसमें कोई दो राय नहीं कि आपका दिमागी संतुलन वास्तव में ठीक नहीं है ।"

जॉनी बैंजो ने एकाएक भस्म कर देने वाली नजरों से अपने सेक्रेटरी को घूरा ।

"तुम भी वही सब बकवास करने लगे, जो दूसरे लोग कर रहे हैं ।"

"नहीं सर !" सेक्रेटरी ने बिना विचलित हुए धैर्य के साथ जवाब दिया, "मैं वो कह रहा हूँ, जो हकीकत है, सच्चाई है । आप अपने दिल पर हाथ रखिये और फिर कहिये कि आप सचमुच यह मुकाबला जीत सकते हैं ।"

जॉनी बैंजो शराब के कुछ घूंट और भर गया, उसका ऊपर का होंठ बड़े अजीब अंदाज में फड़फड़ाने लगा था ।

"अब आप चुप क्यों हो गये सर ?"

"तुम एक बॉक्सर की हालत नहीं समझ सकते बेवकूफ !" जॉनी बैंजो गुस्से में चिंघाड़ उठा, "जब किसी बॉक्सर से उसका खिताब छीना जाता है तो उसे ऐसा महसूस होता है, जैसे किसी माँ से उसके बच्चे को छीना जा रहा हो और विश्व चैम्पियन का खिताब छिन जाना तो

बहुत बड़ी बात है, जब से मुझे गोल्डी ने हराया है, तब से मैं छटपटा रहा हूँ, अंगारों पर लोट रहा हूँ। मैं अपनी उस पराजय को आज तक एक लम्हे के लिये भी नहीं भूला हूँ, जब गोल्डी ने मुझसे मेरा विश्व चैम्पियन का खिताब छीन लिया था।"

"लेकिन सर, यह तो इस संसार की नियति है।" सेक्रेटरी बुद्धिजीवियों की तरह बोला, "इस दुनिया में ऐसा कोई बॉक्सर नहीं, जिसने सदा-सदा के लिये विश्व चैम्पियन के खिताब पर अधिकार कर लिया हो। फ्लायड पेटरसन से लेकर सोनी लिस्टन, जो फ्रेजियर और मौहम्मद अली तक सभी को विश्व चैम्पियन बनने के बाद हार का मुँह देखना पड़ा है। और इसमें अजीब भी कुछ नहीं, जब कोई सबसे ऊपर पहुंच जाता है तो फिर उसे नीचे आना-ही-आना है। गोल्डी को भी एक दिन हारना पड़ेगा, यह बात अलग है कि उसे हराने वाला बॉक्सर आपके अलावा कोई और हो। आपको अपनी पराजय मुस्कराते हुए खेल भावना से स्वीकार करनी चाहिये सर! मैं समझता हूँ, आप 27 अगस्त को मुकाबले से नाम वापस ले लें, तभी आपका गौरव बचा रहेगा।"

"नहीं।" जॉनी बैंजो दहाड़ा, "मैं अपना नाम किसी हालत में वापस नहीं ले सकता, यह मुकाबला होगा, हर हालत में होगा। अगर मुकाबले से नाम ही वापस लेना है तो गोल्डी वो नाम वापस लेगा। जो लोग आज मेरी इस बात पर हंस रहे हैं, 27 अगस्त को वही लोग चौंक पड़ेंगे।"

फिर जॉनी बैंजो ने शराब के कुछ घूंट और भरे थे।

फिर वो कुर्सी पर लुढक गया और उसके खर्राटे वहाँ गूंजने लगे।

सेक्रेटरी के चेहरे पर गहरे अफसोस के निशान उभर आये थे ।

वो कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना की 25 अगस्त के दिन की शुरूआत अन्य दिनों से काफी अलग थी ।

सुबह सात बजे ही वो घोड़ों के बाड़े में जा घुसा और वहाँ की साज-सफाई में जुट गया । थोड़ी देर में उसने पूरे बाड़े को चमका डाला । जब जैकब वहाँ आया, तो बाड़े को देखकर चौंका ।

"वैरी गुड !" जैकब के चेहरे पर खुशी दौड़ी थी, "तुम तो सचमुच काफी काम के आदमी हो मिस्टर करण ।"

"अभी आपने मेरा काम देखा ही कहाँ है साहब, जब मेरा असली काम देखोगे, तब आपकी और ज्यादा तबियत खुश होगी ।"

"यानि तुम अभी बहुत कुछ करके दिखाने वाले हो ?"

"जी हाँ । अभी तो मैंने आपको अपने काम का सही मायने में सैम्पल भी नहीं दिखाया ।"

"वैरी गुड ! वैरी गुड !!"

तभी नील भी वहाँ आ गयी । रात पूर्ण सैक्स की वजह से उसका चेहरा अभी भी शीशे की तरह चमक रहा था और उसके चेहरे पर बेइन्तहा खुशी बिखरी पड़ी थी ।

कमांडर को देखकर उसकी खुशी और दोगुनी हो गयी ।

"मिस्टर करण, मैं समझता हूँ कि तुमने आज का अपना काम निपटा लिया है ।" जैकब बोला, "थोड़ी देर बाद ही मैं

"अब अगर तुम हमारे साथ चलोगे तो एक भयानक गड़बड़ हो जायेगी।"

"क्या ?"

"लोग तुम्हें साहब समझेंगे और मुझे नौकर।"

कमांडर बड़े फरमायशी अंदाज में हंसा।

"आप मजाक सचमुच काफी अच्छा कर लेते हैं साहब !"

फिर कमांडर वहीं खड़ी शेवरलेट कार की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा, जबकि नील और जैकब फौरन ही शेवरलेट की पिछली सीट पर विराजमान हो गये थे।

"चलूँ साहब ?"

"चलो।"

तुरन्त शेवरलेट का इंजन गरज उठा और अगले ही पल शेवरलेट फार्म हाउस के विशाल फाटक की तरफ लपकी।

25 अगस्त !

वह तारीख कमांडर के दिमाग में अभी भी गूंज रही थी।

उसके पास अब दो दिन थे।

सिर्फ दो दिन!

उसने जल्द-से-जल्द उन फिल्मों का पता लगाना था।

❑❑❑

काफी देर तक नील और जैकब मियामी शहर के बेहद सुंदर और भव्य बाजारों में खरीदारी करते रहे थे।

जबकि कमांडर करण सक्सेना चुपचाप उनके पीछे-पीछे घूमता रहा। लेकिन उसका दिमाग हर पल सक्रिय

था, वह हर लम्हां यह सोच रहा था कि उसने क्या करना है, उसका अगला कदम क्या होगा ।

उन दोनों के साथ वहाँ आने के पीछे भी एक महत्वपूर्ण वजह थी, दरअसल करण सक्सेना, नील को ज्यादातर अपनी निगाहों के सामने रखना चाहता था । वह नहीं चाहता था कि जैकब को फिर कोई ऐसा मौका हासिल हो, जो वह नील को लेकर फिर कहीं भाग जाये ।

कई घण्टे तक खरीदारी करने के बाद नील और जैकब फिर एक कैसिनो में पहुंचे ।

उस कैसिनो का नाम 'मूनलाइट कैसिनो' था और वह कैसिनो एक फाइव स्टार इंटर कॉन्टिनेंटल होटल की दसवीं मंजिल पर बना हुआ था । वह एक पूरी तरह शीशे का बना रेलवे प्लेटफार्म जैसा बड़ा हॉल था, जहाँ जुआ चलता था, और उस कैसिनो के बारे में प्रसिद्ध था कि वह न सिर्फ मियामी का सबसे बड़ा कैसिनो है बल्कि वहाँ सबसे मोटा जुआ भी खेला जाता है ।

उस कैसिनो में ज्यादातर यूरोपियन स्टाइल जुआ होता था ।

चारों तरफ बड़ी-बड़ी और भिन्न-भिन्न प्रकार की रोलेट मशीनें लगी हुई थीं । लेकिन शीशे के उस हॉल में एक तरफ टेबलें भी मिल हुई थीं और वहाँ ताश के पत्तों से फ्लैश चल रही थी ।

दांव हर जगह टोकनों से ही लगाये जा रहे थे ।

नील और जैकब एक टेबल पर जाकर बैठ गये, जहाँ पहले से ही एक लम्बा-चौड़ा अंग्रेज बैठा था ।

"दांव खेलोगे ?" जैकब ने उस अंग्रेज की आंखों में झांका ।

कमांडर , जो उस पूरे खेल पर बड़ी बारीकी के साथ नजर रखे हुए था, उसे शीघ्र ही मालूम हो गया था कि जैकब उस अंग्रेज के साथ बेईमानी कर रहा है । दरअसल जैकब फार्म हाउस से ही जुआ खेलने की पूरी तैयारी करके आया था और उसने अपनी आस्तीन के कफ में कई सारे पत्ते छुपा रखे थे । इतना ही नहीं, वह ताश के पत्ते बिल्कुल उसी गड्डी से मैच करते थे, जिसका इस्तेमाल 'मूनलाइट क्लब' में हो रहा था । और जैकब इतनी सफाई के साथ अपने कफ में से पत्ते निकालता था कि उस लम्बे-चौड़े अंग्रेज को जरा भी भनक नहीं मिलती थी कि उसके साथ क्या घपला हो रहा है ।

पत्ते दो बार बंटे ।

लेकिन फिर जैकब जीता ।

एक के बाद एक जैकब ने लगातार पांच बाजियां जीत ली थीं ।

अंग्रेज पसीनों में नहा गया था ।

उसके सामने थोड़ी देर पहले ही जो टोकनों का ढेर लगा हुआ था, वह एक-एक करके सब गायब हो गया ।

जबकि जैकब खुशी से फूला नहीं समा रहा था ।

"स्टीवर्ट !" अंग्रेज ने रुमाल से अपने चेहरे के पसीने साफ करते हुए एक स्टीवर्ट को आवाज दी ।

"यस सर !" तुरन्त एक स्टीवर्ट ट्रे लेकर दौड़ता हुआ उसके नजदीक आया ।

"यह लो ।" अंग्रेज ने दो हजार डॉलर के नोट स्टीवर्ट की ट्रे में डाले, "दो हजार के टोकन लेकर आओ ।"

"अभी लाया सर !"

स्टीवर्ट बड़ी तेजी के साथ वहाँ से गया और फिर उतनी ही तेजी के साथ टोकन लेकर लौटा।

उसने सारे टोकन अंग्रेज के सामने बड़ी नफासत से लगा दिये।

फिर पत्ते बंटे।

फिर खेल शुरु हुआ।

चार बाजियों में ही अंग्रेज फिर कंगला हो गया।

उसकी अब बुरी हालत हो चुकी थी।

“तुमने सचमुच सही कहा था दोस्त !” जैकब ने अंग्रेज का सफेद झक्क चेहरा देखकर मखौल उड़ाया, “आज का दिन सचमुच काफी अच्छा गुजरेगा। एक-एक बाजी और हो जाये ?”

“हाँ-हाँ, क्यों नहीं।” अंग्रेज ने पुनः रुमाल से पसीने साफ किये और खिसियाने ढंग से हंसा, “ल...लेकिन मैं पहले बाथरूम हो आऊं, फिर इत्मीनान से आकर बैठता हूँ।”

“ठीक है।”

अंग्रेज फौरन लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वहाँ से चला गया।

□□□

एक स्टीवर्ट, जो उस सारे नजारे को देख रहा था, वह अंग्रेज के जाते ही हंसता हुआ जैकब की तरफ बढ़ा।

“मिस्टर, यह तो अब नहीं आने वाला।” स्टीवर्ट बोला, “यहाँ रोजाना ऐसे बहुत जुआरी होते हैं, जो इसी की तरह बाथरूम जाते हैं और फिर नहीं लौटते।”

“मुझे मालूम है।”

"लेकिन अगर आप कुछ और दांव खेलना चाहते हैं सर, तो आज यहाँ एक प्रिंस आये हुए हैं जो इस खेल के बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं । मैं समझता हूँ कि उनके साथ खेलने में आपको काफी आनन्द आयेगा और वैसे भी !" स्टीवर्ट ने आहिस्ता से अपनी आंख दबाई, "उनके पास दौलत की कोई कमी नहीं । आप तो जानते हैं कि अरब के शेखों के पास कितनी दौलत होती है ।"

"क्या वह कोई शेख है ?" जैकब की आंखें और चमक उठीं ।

"जी हाँ ।"

"वैरी गुड-वैरी गुड ! किधर है आसामी ?"

"वो देखिये !" स्टीवर्ट ने हॉल में ही एक टेबल की तरफ इशारा किया, "प्रिंस साहब अपने एक हब्शी दोस्त के साथ मौजूद हैं ।"

फौरन जैकब के साथ-साथ नील और कमांडर की दृष्टि भी उस टेबल की तरफ गयी, वहाँ प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली बैठे थे । परन्तु चूंकि कमांडर ने उन दोनों में से किसी को भी पहले नहीं देखा था, इसलिये न पहचान सका ।

तुरन्त वह अपने तमाम टोकनों सहित प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली वाली टेबल पर शिफ्ट हो गये ।

काश, उस वक्त उन तीनों को मालूम होता कि वह कितने बड़े 'चक्कर' में फंसने जा रहे हैं । उन्हें सोची-समझी साजिश के तहत वहाँ शिफ्ट किया गया था ।

जैकब ने पहले बड़ी गरमजोशी के साथ प्रिंस इरफान शेख से हाथ मिलाया ।

"क्या आप मुझे अपने साथ कुछ दांव खेलने की इज्जत बख्शेंगे प्रिंस !" जैकब उसे भरपूर इज्जत देता हुआ बोला, "मैंने अभी-अभी कैसिनो में आपके खेल की काफी तारीफ सुनी है ।"

"ओह, क्यों नहीं, क्यों नहीं ।" प्रिंस इरफान शेख ने भी गरमजोशी के साथ ही जवाब दिया, "बैठिये-बैठिये ।"

नील और जैकब अब प्रिंस के सामने बैठ गये ।

जैकब उस क्षण खुशी से फूला नहीं समा रहा था ।

उसकी नजर प्रिंस के सामने ढेर की सूरत में लगे पचास हजार डॉलर से भी ज्यादा मूल्य के टोकनों पर थी ।

वह प्रिंस को ऐसा मुर्गा समझा रहा था, जो बस उसके साथ हलाल होने वाला था ।

"तो खेल शुरु करें प्रिंस ?"

"खुशआमदीद ! जरुर-जरूर ।"

फिर ताश की गड्डी उठी ।

उसे जोर-जोर से फेंटा गया और उसके बाद पत्ते बंटे । कमांडर , जो एक बार फिर टेबल के नजदीक ही हाथ बांधे खड़ा हुआ सारे खेल को देख रहा था, एकाएक उसके होठों पर मुस्कान दौड़ गयी ।

प्रिंस बेईमानी के मामले में जैकब से भी ज्यादा हरामी चीज था ।

जैकब ने तो सिर्फ कुछ ही पत्ते अपने कफ में लगा रखे थे, जबकि प्रिंस ने तो ताश की पूरी गड्डी ही अपने कपड़ों में भिन्न-भिन्न हिस्सों में छिपा रखी थी, जहाँ से वो इतनी सफाई के साथ पत्ते निकालता था कि जैकब जैसे चोर को भी उसकी भनक नहीं होती थी ।

जल्द ही प्रिंस ने पहली बाजी जीत ली ।

फिर तो जैकब की धज्जियां बिखरनी शुरू हो गयीं, पूरे एक घण्टे तक खेल चला और उस एक घण्टे में सारे टोकन जैकब के सामने से खिसककर प्रिंस के सामने पहुंच गये।

जैकब की अंग्रेज की तरह ही हवा खराब हो गयी और वो टेबल छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

"क्या बात है मिस्टर जैकब !" प्रिंस इरफान शेख ने उसका मजाक उड़ाया, "क्या सारी दौलत खत्म हो गयी ?"

"य...यह बात नहीं।" जैकब हकला उठा।

"फिर ?"

जैकब से कोई जवाब देते न बना।

□□□

तभी करण सक्सेना, प्रिंस इरफान शेख के सामने आ गया।

"एक बहुत छोटा-सा दांव मैं भी आपके साथ खेलना चाहता हूँ जनाब।" कमांडर बोला।

"आपकी तारीफ ?" प्रिंस इरफान शेख की भवें उठीं।

"मेरी तारीफ कोई नहीं।" कमांडर धाराप्रवाह ढंग से बोला, "मैं मिस्टर जैकब का एक अदना-सा नौकर हूँ। बल्कि अदने से भी ज्यादा अदना नौकर हूँ और आपका खेल देखकर आपका मुरीद बन चुका हूँ। वैसे तो यह आप जैसे बड़े आदमी की शान में गुस्ताखी वाली बात ही है कि आप एक नौकर के साथ खेलें, लेकिन मैं अपनी ख्वाहिश को दबा नहीं पा रहा हूँ, अगर आप मेरे साथ खेलेंगे, तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"कितना बड़ा दांव लगाओगे ?" प्रिंस इरफान शेख ने कमांडर की आंखों में झांका।

की तरफ बढ़ा दी, जिस पर गुलाब के कई सारे फूल बने हुए थे।

कमांडर मुस्कराया।

"थैंक्यू वैरी मच सर!"

"योर वेलकम!"

कमांडर ताश की गड्डी लेकर वापस टेबल पर पहुंचा।

जैसे ही प्रिंस इरफान शेख की निगाह उस फूल वाली गड्डी पर पड़ी, वह सकपका उठा।

"य...यह नई गड्डी क्यों ले आये?"

"दरअसल वह ताश की गड्डी खेलते-खेलते काफी पुरानी हो गयी और उसके कुछ ताश भी मुड़ गये थे, इसलिये मैंने सोचा कि नई गड्डी ले लूं, आखिर आप जैसी महान् हस्ती के हाथ इन ताश के पत्तों को छूने जा रहे हैं।" वह शब्द कहते हुए कमांडर ने प्रिंस की आंखों में झांका, "मैंने कुछ गलत तो नहीं किया प्रिंस?"

"न...नहीं।" प्रिंस उसके आंखों में झांकने से हड़बड़ा उठा, "क...कुछ भी गलत नहीं किया।"

"शुक्रिया!"

कमांडर मुस्कराते हुए अब उस कुर्सी पर बड़ी शान के साथ बैठ गया, जिस कुर्सी को छोड़कर थोड़ी देर पहले ही जैकब उठा था।

फिर उसने पचास डॉलर का एक टोकन प्रिंस इरफान शेख से ही ले लिया।

उसके बाद खेल शुरु हुआ।

दोनों तरफ से पचास-पचास डॉलर के टोकन पहले ही दांव पर लग गये।

फिर नई-नकोर ताश की गड्डी फेंटी गयी और पत्ते बंटे।

वह खेल ज्यादा देर नहीं चला, जल्दी ही कमांडर ने प्रिंस इरफान शेख को हरा डाला था ।

अब उसके पास सौ डॉलर हो गये ।

फिर कमांडर ने सौ डॉलर दांव पर लगाये ।

इसी तरह वो एक के बाद एक प्रिंस से बाजी खेलता चला गया और जीतता चला गया ।

नील और जैकब भी अब मंत्रमुग्ध से कमांडर के खेल को देखने लगे ।

एक घण्टे में ही उसने प्रिंस से बीस हजार डॉलर जीत लिये ।

प्रिंस के छक्के छूट गये, वह समझ गया कि अगर वो कुछ देर और उस आदमी के सामने बैठा तो उसने उसके सारे टोकन जीत लेने हैं ।

कमांडर पूरी ईमानदारी से खेल रहा था, लेकिन उसकी हर चाल अद्भुत थी ।

"वाकई !" प्रिंस ने दिल खोलकर कमांडर की तारीफ की, "तुम्हारे खेल की जितनी प्रशंसा की जाये कम है मिस्टर, तुम गैम्बलर हो ।"

"शुक्रिया !"

"एकदम साफ बात है ।" प्रिंस इरफान शेख ने हंसते हुए कहा, मैं पूरी तरह कंगला नहीं बनना चाहता, इसलिये मेरी तुमसे और दांव खेलने की इच्छा नहीं है ।"

प्रिंस की बात पर सब जोर से हंसे ।

कमांडर भी हंसा ।

"कोई बात नहीं ।" कमांडर ने हंसते हुए ही कहा, "मेरे लिये इतनी ही दौलत काफी है ।"

“मिस्टर जैकब !” फिर प्रिंस, जैकब से सम्बोधित हुआ, “तुम सचमुच बहुत किस्मत वाले हो, जो इतना जहीन और काबिल आदमी तुम्हारी नौकरी कर रहा है, वरना इसके वास्ते दौलत की क्या कमी। यह तो मिट्टी के ढेर में फूंक मार दे, तो इसके लिये दौलत के अम्बार लग जायें ।”

“ज...जी हाँ, अब तो मुझे भी कुछ-कुछ ऐसा ही लग रहा है ।”

“आपने ‘शेख पैलेस’ का नाम तो सुना ही होगा ?”

“शेख पैलेस !” शेख पैलेस के नाम से जैकब के दिमाग में बम फटा, “व...वो शेख पैलेस, जो कई सौ एकड़ जमीन पर फैला हुआ है? जिसे बनाने के लिये मियामी के आस-पास के कई गांव खरीदे गये और जिसक अंदर एक बहुत विशाल जंगल भी है ।

“जी हाँ ।” प्रिंस बोला, “मैं उसी ‘शेख पैलेस’ की बात कर रहा हूँ ।”

“उस पैलेस का नाम भला मियामी में कौन नहीं जानता । वह तो मियामी शहर की सबसे आलीशान चीज है, मियामी की नाक है । मैंने सुना, उस पैलेस के अंदर एक बड़ा भव्य महल बना है ।”

“जी हाँ, आपने बिल्कुल ठीक सुना है ।”

“दरअसल वह पैलेस मेरा ही है ।” प्रिंस इरफान शेख बड़ी स्टाइल से गर्दन झुकाकर बोला ।

“व...वह !” जैकब हड़बड़ा उठा, “वह पैलेस आपका है ?”

“जी हाँ ।”

"माई गॉड !" जैकब के नेत्र फट पड़े, "आप इतने रईस आदमी हैं । मैं तो समझ रहा था कि आप अरब के यूं ही कोई साधारण से शेख हैं, लेकिन आप तो...आप तो...।"

प्रिंस मुस्कराता रहा ।

"दरअसल मैंने उस पैलेस का जिक्र आप लोगों के सामने इसलिये किया है ।" प्रिंस बात काटकर बोला, "क्योंकि आज आप तीनों के साथ मेरा वक्त काफी अच्छा गुजरा, इसलिये मेरी ख्वाहिश है कि आप लोग मेरी मेहमाननवाजी कबूल करें और कुछ दिन के लिये मेरे साथ उस पैलेस में आकर रहें, इससे मुझे दिली खुशी हासिल होगी ।"

"य...यानि !" इस बार नील की आवाज खुशी से कंपकंपायी, "यानि आप हमें कुछ दिन उस आलीशान महल में गुजारने का मौका देना चाहते हैं ?"

"जी हाँ । वैसे आप लोग मियामी में रहते कहाँ हैं ?"

जैकब ने फौरन प्रिंस इरफान शेख को अपने माल रोड के फार्म हाउस का एड्रेस बता दिया ।

"ओ.के., ठीक दो घण्टे बाद मेरी एक कार आप लोगों को लेने के लिये आपके फार्म हाउस पहुंच जायेगी ।

"न...नहीं ।" जैकब हड़बड़ाकर बोला, "कार भेजने की जरूरत नहीं, हमारे पास अपनी कार है ।"

"फिर भी मेरी कार पहुंच जायेगी ।" प्रिंस इरफान शेख नम्रतापूर्वक बोला, "ताकि वो कार आपकी कार का मार्गदर्शन करती हुई आप लोगों को पैलेस ला सके ।"

इस बार जैकब कुछ न बोला ।

फिर प्रिंस इरफान शेख खड़ा हो गया ।

इस बीच एक बड़ी महत्वपूर्ण बात ये रही कि अब्दाली ने एक भी शब्द अपनी जबान से न निकाला ।

वह बस इस तरह खामोश बैठा रहा, मानो गूंगा हो ।

□□□

शेख पैलेस, जो बादशाह करीम शेख नूरानी की अपनी निजी सम्पत्ति था ।

इस समय प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली उसी 'शेख पैलेस' के आलीशान ड्राइंग वाले हॉल में बैठे थे ।

"वह तीनों अब से बस थोड़ी देर बाद ही इस महल के अंदर पहुंचने वाले हैं ।" प्रिंस इरफान शेख, अब्दाली से बोला, "और जैसे ही वह लोग यहाँ पहुंचेंगे, हमारा काम शुरु हो जायेगा ।"

"मैं जानता हूँ ।" अब्दाली थोड़ा कड़वा-सा मुँह बनाकर बोला, "कि उन लोगों के आते ही हमारा काम शुरु हो जायेगा, इसलिये मुझे ज्यादा समझाने की कोशिश मत करो । और मैं यह भी जानता हूँ कि तब मैंने क्या करना है ।"

"लेकिन तुम एक बात अभी भी नहीं जानते अब्दाली !"

प्रिंस थोड़ा अब्दाली की तरफ झुक गया ।

"क्या बात ?"

"दरअसल मैंने योजना में अब थोड़ी फेरबदल कर दी है ।"

"फ...फेरबदल !" अब्दाली के दिमाग में धमाका हुआ, "बादशाह की बिना मर्जी के फेरबदल कर दी है ?"

"हाँ । दरअसल वह एक बहुत मामूली-सी फेरबदल है, जिसमें मैंने बादशाह से इजाजत लेनी जरूरी नहीं समझी ।"

अब्दाली की उत्सुकता एकाएक अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी ।

"क्या फेरबदल की है ?" अब्दाली ने पूछा ।

"दरअसल बादशाह ने नील को ठिकाने लगाने की जिम्मेदारी तुम्हें सौंपी है, ठीक ?"

"बिल्कुल ठीक ।"

"लेकिन अब बस तुमने इतना करना होगा कि जब नील को ठिकाने लगाओ, तो उसके साथ-साथ एक और आदमी को भी ठिकाने लगा देना ।"

"क...किसे ?"

"कमांडर को ।" प्रिंस ने बेहद सामान्य लहजे में कहा ।

"क...कमांडर !" अब्दाली उछला ।

"बैठो, इत्मीनान से बैठो ।"

"लेकिन कमांडर करण सक्सेना एक अन्तर्राष्ट्रीय जासूस है ।" अब्दाली बेहद सनसनीखेज लहजे में बोला, "वह बेहद शातिर आदमी है । अगर हमने उसे ठिकाने लगाने का प्रयास किया तो वह कुछ भी कर सकता है, यहाँ कोई भी नया हंगामा जन्म ले सकता है । तुमने देखा नहीं, उसने अभी जुए में तुम्हें किस प्रकार हरा डाला था ।"

"मैं जानता हूँ ।" प्रिंस जहरीले सांप की तरह फुंफकारा, "सब-कुछ जानता हूँ लेकिन मत भूलो, एक बार इस महल में आने के बाद फिर वो कुछ नहीं कर पायेगा, फिर हमारा पलड़ा भारी होगा । इसके अलावा एक बात और याद रखो

अब्दाली, कमांडर करण सक्सेना की मौत के बिना हमारी जीत अधूरी होगी।”

अब्दाली सोच में डूब गया।

“क्या सोच रहे हो ?”

“मैं समझता हूँ कि हमें इस बारे में एक बार बादशाह से जरूर बात कर लेनी चाहिये।”

“बादशाह से बात करते ही गड़बड़ हो जायेगी।” प्रिंस झल्ला उठा।

“क्यों ?”

“तुम जानते ही हो, बादशाह दिमाग से ज्यादा काम लेते हैं। आज अगर इस मिशन में इतना टाइम लगा है, तो सिर्फ बादशाह की वजह से। क्योंकि वह एक-एक पत्ता खूब सोच-समझकर चलते हैं। मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?”

“य...यह बात तो ठीक है।” अब्दाली ने भी कबूल किया।

“बादशाह का दिमाग यह कभी इजाजत नहीं देगा कि हम कमांडर जैसे अन्तर्राष्ट्रीय जासूस को निपटा डालें। वो हमसे यही कहेंगे कि जिस कमांडर को सी.आई.ए., आई.एस.ए., सी.ई.एल.डी. या सर जॉन जैसा आदमी नहीं मार सका, उसे हम जैसे छछूंदर कैसे मार सकते हैं। उनका हमारे लिये, यही आदेश होगा कि हम अपना काम तो करें, लेकिन कमांडर से दूर-दूर रहें।”

अब्दाली भी अब प्रिंस की बातों से प्रभावित नजर आने लगा था।

“तुम्हारी बातों में जान तो है।”

मर्सडीज बेंज वो कार थी, जिसे प्रिंस इरफान शेख ने उन तीनों को लेने के लिये फार्म हाउस भेजा था। मर्सडीज के पीछे-पीछे शेवरलेट कार भी थी, जिसमें करण सक्सेना, नील, और जैकब बैठे हुए थे।

पैलेस के सामने रुकते ही मर्सडीज के ड्राइवर ने फौरन दो बार हॉर्न बजाया।

हॉर्न की आवाज सुनते ही अंदर मौजूद चौकीदार ने लोहे के दरवाजे में लगी छोटी-सी जाली को सरकाकर बाहर झांका तथा फिर दरवाजा खोल दिया। तुरन्त मर्सडीज बेंज और शेवरलेट कारें पैलेस के अंदर दाखिल हो गयीं तथा फिर एक लम्बे-चौड़े ड्राइव-वे पर दौड़ने लगीं।

ड्राइव-वे के दोनों तरफ नारियल और देवदार के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष खड़े थे। वह ड्राइव-वे लगभग आधा किलोमीटर लम्बा था और पूरी तरह वृक्षों से घिरा था।

आधा किलोमीटर का सफर तय करने के बाद जैसे ही उनकी कार ड्राइव-वे पर दायीं तरफ मुड़ी , तो सामने भव्य महल नजर आने लगा।

हालांकि अभी तक कोई गड़बड़ नहीं हुई थी, लेकिन फिर भी न जाने क्यों कमांडर करण सक्सेना की छठी इन्द्री खतरे का संकेत दे रही थी, और उसे लग रहा था कि कुछ होने वाला है, कुछ होने वाला है। इसीलिये उसने सावधानी के तौर पर अपनी दोनों कोल्ट रिवॉल्वर क्लेंसी हैट की ग्लिप में छुपा रखी थीं।

महल को देखते ही उन तीनों की तबियत प्रसन्न हो गयी
।

वह राजस्थान के राजपूताना महलों की तरह विशाल और भव्य था। इतना ही नहीं, उसे देखने के लिये अपनी गर्दन क्रेन की तरह चारों तरफ घुमानी पड़ती थी।

शेवरलेट से उतरते ही कमांडर की नजर सबसे पहले वहीं घूमते पालसिंह पर पड़ी।

पालसिंह को देखते ही वह सकपकाया।

वह फौरन भांप गया कि वह तीनों एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत अब बादशाह करीम शेख नूरानी के शिकंजे में फंस चुके हैं। कमांडर ने कोई परवाह न की, आखिर वो भी तो गोल्डी का ही हित चिन्तक था।

तभी कारों की आवाज सुनकर प्रिंस इरफान शेख, अब्दाली के साथ महल में से बाहर निकला।

"वेलकम-वेलकम !" उन तीनों को देखते ही प्रिंस इरफान शेख ने प्रसन्नचित मुद्रा में चिल्लाकर कहा, "मोस्ट वेलकम टू माई हम्बल पैलेस !"

वह तीनों छः-सात सीढ़ियां चढ़कर चबूतरे पर पहुंचे, जो महल से आगे निकला हुआ था।

प्रिंस ने बारी-बारी उन तीनों से गरमजोशी के साथ हाथ मिलाया।

"आप लोगों को यहाँ तक पहुंचने में कोई दिक्कत तो नहीं हुई ?"

"जी नहीं, कोई दिक्कत नहीं हुई।" जैकब बोला।

"वैरी गुड, दरअसल हम अरेबियन अपने मेहमानों का बहुत ख्याल रखते हैं।"

फिर प्रिंस इरफान शेख ने बड़े राजसी अंदाज में जोर से ताली बजायीं।

तुरन्त वहाँ एक नौकर दौड़कर आया।

कमांडर ने देखा, वो उन्हीं चारों में से एक था, जो उसका पीछा कर रहे थे। मगर उस वक्त उसने कमांडर की तरफ नजर उठाकर नहीं देखा।

"यस प्रिंस !" उसने इरफान शेख के सामने अदब से गर्दन झुकाई।

"तुम साहब लोगों का सामान कार में से निकालकर महल की पहली मंजिल पर शिफ्ट कर दो।"

"ओ.के. प्रिंस।"

वह नौकर सामान निकालने के लिये तेजी के साथ शेवरलेट कार की तरफ बढ़ गया।

□□□

"आइये !" इस इरफान शेख पुनः उन तीनों से सम्बोधित हुआ, "आइये, अब हम लोग कुछ देर आराम से बैठकर गपशप करते हैं। वैसे भी सफर की वजह से आप लोग थक गये होंगे।"

फिर वह तीनों प्रिंस और अब्दाली के पीछे-पीछे उस प्लेग्राउण्ड जितने बड़े महल के चबूतरे पर चलते हुए उन कुर्सियों की तरफ बढ़े, जो वहीं चबूतरे के एक कोने में पड़ी थीं।

कुर्सियों पर बैठते ही प्रिंस ने फिर बड़े राजसी अंदाज में ताली बजायी।

इस बार शीघ्र ही उन सबके लिये चाय और कुछ मेवे के आइटम सर्व कर दिये गये, जिनमें बादाम तथा अखरोट जैसी चीजें प्रमुख थीं।

नील उस राजसी ठाठ-बाट से बहुत प्रभावित नजर आ रही थी, हालांकि वो भी गोल्डी जैसे दौलतमंद आदमी की

बीवी थी, जो खुद किसी महल जैसे घर में रहता था । मगर ऐसी शानो-शौकत उसकी भी न थी ।

"लीजिये !" चाय के आते प्रिंस पुनः उन तीनों से अदब के साथ बोला, "आप लोग चाय लीजिये ।"

फिर चाय का दौर शुरु हुआ ।

महल की पिछली साइड में वो भयानक जंगल नजर आ रहा था, जो उस पैलेस का एक हिस्सा था और कई किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ था ।

महल के दायें-बायें कुछ हथियारबंद गार्ड भी घोड़ों पर इधर-उधर विचरण कर रहे थे, स्वाभाविक-सी बात थी, इतने बड़े पैलेस की देखभाल कोई पैदल घूमकर तो नहीं कर सकता था ।

"कमाल है !" नील हैरत से उस जंगल पर दृष्टि दौड़ाती हुई बोली, "आप इतने बड़े पैलेस में अकेले रहते हैं ?"

"जी हाँ ।" प्रिंस इरफान शेख मुस्कराया, "आज तक तो अकेला ही रहता था, परन्तु अब आप लोग थोड़े दिन के वास्ते मेरा अकेलापन बांटने के लिये यहाँ आ गये हैं, जिससे मुझे अपार खुशी मिल रही है ।

"आपको डर नहीं लगता, इतने बड़े पैलेस में अकेले रहते हुए ?" जैकब ने पूछा ।

"डर तो इंसान को इंसानों से लगा करता है मिस्टर जैकब, इन तनहाइयों से भला क्या डरना ।"

"बहुत खूब-बहुत खूब !" जैकब खिलखिलाकर हंसा, "आप तो शायर भी हैं ।"

"तनहाइयां इंसान को थोड़ा रसिक और प्रकृति प्रेमी बना ही देती हैं ।"

"इस महल में डेढ़ सौ-दो सौ कमरे तो होंगे ?" कमांडर ने चाय का कप खाली करके गोल टेबल पर रखते हुए पूछा ।

"डेढ़ सौ-दो सौ नहीं बल्कि इस महल के अंदर पूरे चार सौ कमरे हैं ।"

"च...चार सौ !" कमांडर जैसे आदमी के भी कमरों की संख्या सुनकर नेत्र फैल गये ।

"जी हाँ, चार सौ ।" प्रिंस इरफान शेख बोला, "यह आठ मंजिला महल इतना विशालकाय और भूल-भुलैयों से भरा है कि अगर एक बार कोई नया आदमी इसके अंदर गुम हो जाये, तो उसे तलाशने में मुश्किल हो जायेगी । क्योंकि इस महल की हर मंजिल पर पचास कमरे हैं तथा हर कमरा एक जैसा है । इसीलिये मैंने आप लोगों को महल की पहली मंजिल पर शिफ्ट कराया है, क्योंकि अगर मैंने कहीं आप लोगों को महल की ऊपर वाली मंजिलों पर शिफ्ट कर दिया होता, तो आप लोग बस वहाँ सात दिन एक-दूसरे को ही ढूंढते फिरते ।"

वह बात कहकर प्रिंस इरफान शेख जोर से हंसा ।

वह तीनों भी मुस्करा दिये थे ।

लेकिन अब्दाली चुप बैठा था, एकदम खामोश । उसका व्यक्तित्व पत्थर जैसा था, जो हर परिस्थितियों में निर्जीव रहता है ।

इस बीच उन सभी ने अपनी-अपनी चाय खत्म कर ली ।

उसके बाद प्रिंस ने फिर जोर से दो बार ताली बजायी ।

फौरन पालसिंह हाजिर हुआ ।

"यस प्रिंस !"

"साहब लोगों को उनके कमरे में छोड़ आओ, ताकि यह आराम कर सकें और ध्यान रहे, इन्हें यहाँ किसी भी किस्म की को परेशानी नहीं होनी चाहिये ।

"ऐसा ही होगा प्रिंस ।"

फिर तीनों पालसिंह के साथ-साथ महल की पहली मंजिल की तरफ बढ़े गये ।

□□□

कमरे वाकई शानदार थे ।

उनकी छतें ऊंची थीं, उनका आकार काफी बड़ा था और वहाँ सुख-सुविधा के तमाम साधन उपलब्ध थे।

उन तीनों को रहने के लिये अलग-अलग कमरे दिये गये थे और सभी कमरे बराबर-बराबर थे । प्रत्येक कमरे से अटेच्ड बाथरूम था, बाथरूम का आकार भी काफी बड़ा था ।

पालसिंह उन तीनों को उनके कमरे दिखाकर चला गया ।

कुछ देर तीनों ने अपने-अपने कमरे में आराम किया ।

शाम होते ही डिनर के लिये उनका बुलावा आ गया ।

वह सब एक काफी बड़े डायनिंग हॉल में जमा हुए, जो महल के ग्राउण्ड फ्लोर पर बना हुआ था । लगभग पांच तरह के उन्हें खाने परोसे गये, सभी खाने बेहद स्वादिष्ट थे।

जल्द ही वह सब भोजन करके भी निपट गये।

"मिस्टर जैकब !" फिर प्रिंस इरफान शेख, जैकब से सम्बोधित हुआ, "अब मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ, बाकी की तीन ब्ल्यू फिल्म और उनके ओरिजनल प्रिण्ट तुमने कहाँ छुपा रखे हैं ?"

"यानि एक व्यक्ति ने इतनी देर तुम्हारे साथ सहवास किया, तुम्हारी चार-चार फिल्में बनायी गयीं और तुम्हें तब भी कुछ नहीं पता ?"

"मुझे यह पता था कि मेरी फिल्म बनायी जा रही है ।" नील चीखकर बोली, "परन्तु मैं यह नहीं जानती थी कि उस फिल्म के बलबूते पर गोल्डी को ब्लैकमेल किया जायेगा । मैं तो समझ रही थी कि यह सारा काम शौक-शौक में हो रहा है ।"

"मैडम, जैकब सांप की नस्ल का आदमी है ।" प्रिंस इरफान शेख गुर्राकर बोला, "इस जैसा आदमी कोई भी काम शौक-शौक में नहीं करता । यह तुम्हारे साथ इसलिये चिपका हुआ था या इसने तुम्हें इसलिये अपने साथ चिपका रखा था, क्योंकि तुम गोल्डी जैसे विश्व-प्रसिद्ध बॉक्सर की बीवी हो और गोल्डी को यह ब्लैकमेल कर रहा था । अगर मेरी ब्लैकमेलर वाली कहानी पर यकीन नहीं आता, तो कमांडर से पूछ लो ।"

"क...कमांडर !" नील उछली, "कौन कमांडर ?"

"तुम्हारा साईस, तुम्हारा वफादार नौकर ! बेवकूफ लोगों, यह जो काला ओवरकोट पहने आदमी तुम्हारे साथ-साथ घूम रहा है, यह कोई मामूली आदमी नहीं है । यह अन्तर्राष्ट्रीय जासूस कमांडर करण सक्सेना है, यह भारत की सी.आई.डी. की नाक है, और यह भी गोल्डी के ही कहने पर उन ब्ल्यू फिल्मों को हासिल करने के लिये तुम लोगों के साथ-साथ घूम रहा है ।"

नील के हैरानी से नेत्र फैल गये, उसने चौंककर कमांडर करण सक्सेना की तरफ देखा ।

कमांडर आहिस्ता से मुस्करा दिया ।

नील के और ज्यादा छक्के छूटे ।

"ग...गोल्डी ने वो ब्ल्यू फिल्म देखी थी ?" नील ने कमांडर से पूछा ।

"जी हाँ ।"

"और मेरी ममा ने ?"

"शायद गोल्डी ने उन्हें भी वो फिल्म दिखायी हो ।"

"सूअर, हरामी !" नील एकाएक जंगली बिल्ली की तरह जैकब के ऊपर झपट पड़ी, "तुमने मुझे धोखा दिया, मुझे बेवकूफ बनाया, तुम कुत्ते की नस्ल के हो बल्कि कुत्ते से भी ज्यादा बद्तर !"

उसने धड़ाधड़ जैकब के मुँह पर तमाचे बरसा डाले ।

"बस, अब बहुत हो चुका ।" जैकब एकाएक गुस्से में झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ, फिर उसने नील को धक्का दिया, तो वह सीधे अपनी कुर्सी पर जाकर गिरी, "तुम लोग काफी अपनी बक-बक कर चुके हो । तुम किन ब्ल्यू फिल्मों की बात कर रहे हो प्रिंस, मैं नहीं जानता । और न ही में गोल्डी को ब्लैकमेल कर रहा हूँ । हाँ अब तम्हारे इस विशालकाय महल में मेरा दम जरूर घुट रहा है ।"

फिर जैकब तेज-तेज कदमों से फर्श को रौंदता हुआ डायनिंग हॉल से बाहर निकल गया ।

जबकि प्रिंस इरफान शेख के होठों पर पहले की तरह ही मुस्कान मंडराती रही थी ।

उसने जैकब को रोकने का कैसा भी कोई प्रयास न किया
।

□□□

दो मिनट बाद ही यह राज खुला कि प्रिंस ने उसे क्यों नहीं रोका था ।

बाहर से एकाएक कुत्तों के जोर-जोर से भोंकने की आवाज़ आयी तथा जैकब के भी चीखने-चिल्लाने की आवाजें महल में गूंजी ।

शीघ्र ही जैकब चीख-पुकार मचाता हुआ तथा बुरी तरह दौड़ता वापस डायनिंग हॉल में आ घुसा । सबने देखा, उसके पीछे-पीछे तीन बड़े खतरनाक किस्म के डोबरमैन कुत्ते दौड़े चले आ रहे थे ।

जैकब पसीनों में लथपथ था, वह बदहवासों की तरह दौड़ता हुआ वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठा और जोर-जोर से हाँफने लगा ।

कुत्ते डायनिंग हॉल के दरवाजे पर ही ठिठककर बैठ गये और वहीं से जैकब को घूरते हुए अपनी जबान लपलपाने लगे।

"वैरी गुड-वैरी गुड मिस्टर जैकब !" प्रिंस इरफान शेख खतरनाक अंदाज में मुस्कराया, "तुम सचमुच काफी समझदार आदमी हो, जो वापस आ गये । वरना फाड़ डालना इनका शगल है ।"

जैकब शान्त बैठा रहा ।

"हाँ तो मिस्टर जैकब, हम बातों का सिलसिला फिर शुरू करते हैं । वह तीन ब्ल्यू फिल्में और उनके ओरिजनल प्रिण्ट कहाँ हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम, वो फिल्में कहाँ हैं ।" जैकब दहाड़ उठा, तुम लोगों को वह फिल्में कभी नहीं मिलने वालीं ।"

"यह बात है !" प्रिंस ने उसे चैलेन्जिंग अंदाज में घूरा ।

"हाँ-हाँ, यही बात है ।"

"म...मैं बताता हूँ, बताता हूँ। ब...ब्ल्यू फिल्में मेरे फ्लैट में हैं।"

"कौन-से फ्लैट में ?"

"लास वेगास वाले फ्लैट में।"

"फ्लैट में किस जगह ?"

"म...मेरे बेड के नीचे एक संदूक रखा है, उसी के अंदर सभी फ़िल्में तथा ओरिजनल प्रिण्ट हैं।"

"वैरी गुड !" प्रिंस मुस्कराया, "अब फ्लैट का एड्रेस बताओ।"

जैकब ने उसी अवस्था में अपने लास वेगास वाले फ्लैट का एड्रेस भी बताया।

फिर प्रिंस इरफान शेख ने एक खास किस्म की सीटी बजायी, तो वह तीनों कुत्ते जैकब को छोड़कर एक तरफ हट गये तथा फिर टहलते हुए डॉयनिंग हॉल से बाहर चले गये।

जैकब पहले की तरह बदहवास अवस्था में फर्श से उठा और फिर जल्दी-जल्दी अपने कपड़े झाड़ने लगा।

उसके चेहरे पर जबरदस्त आतंक के निशान थे।

साफ लग रहा था, अगर डोबरमैन कुत्ते न होते तो जैकब प्रिंस को आसानी से उन ब्ल्यू फिल्मों के बारे में बताने वाला नहीं था।

"सॉरी मिस्टर जैकब !" प्रिंस इरफान शेख ने भी नाटकीय मुद्रा में उसकी पीठ पर लगी थोड़ी धूल झाड़ी, "अफसोस है कि मुझे तुम्हारे साथ इस तरह का बर्ताव करना पड़ा। मैंने पहले ही कहा था, हम अरेबियन लोग अपने मेहमानों के साथ काफी इज्जत से पेश आते हैं, इस लिहाज से जो कुछ हुआ, ठीक नहीं हुआ। मगर किया क्या

जा सकता है, कभी-कभी उंगली थोड़ी टेढ़ी करनी पड़ जाती है, क्योंकि उससे पहले घी नहीं निकलता ।"

जैकब ने खून का-सा घूंट भरा ।

"बहरहाल अब तुम कुछ दिन बड़े आराम से यहाँ रह सकते हो ।" प्रिंस बोला, "क्योंकि मैंने अभी थोड़ी देर बाद ही लास वेगास फोन कर देना है, जहाँ से मेरा एक खास आदमी तुम्हारे फ्लैट पर जाकर ब्ल्यू फिल्मों के प्रिण्ट निकाल लायेगा । जैसे ही प्रिण्ट हमारे आदमियों के हाथ लगेंगे, फिर तुम भी आजाद होओगे ।"

जैकब कुछ न बोला ।

उसके चेहरे पर सिर्फ फटकार बरस रही थी ।

वह गुस्से में फुंफकारता हुआ एकाएक कमांडर के सामने खड़ा हुआ ।

"तुम कमांडर करण सक्सेना हो ?" जैकब चिंघाड़ा ।

"हाँ ।"

"तुम कैसे कमांडर करण सक्सेना हो ?" जैकब ने पहले से भी ज्यादा जोर से गला फाड़ा, "अगर तुम कमांडर करण सक्सेना हो, तो इस हरामी का एक घूंसे से मुँह क्यों नहीं फोड़ डालते ?"

कमांडर के होठों पर बाल से भी ज्यादा बारीक मुस्कान दौड़ गयी ।

"मिस्टर जैकब !" कमांडर बोला, "तुम शायद भूल रहे हो कि तुम एक ब्लैकमेलर हो और मैं गोल्डी के पक्ष की तरफ से इस अभियान पर काम कर रहा हूँ ।"

जैकब के चेहरे पर खून और निचुड़ गया ।

"मैं समझता हूँ ।" प्रिंस बोला, "अब तुम सब लोगों को अपने-अपने कमरे में जाकर आराम करना चाहिये ।"

तुरन्त सबने अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़ दीं।

"एक मिनट!" तभी अब्दाली भी अपनी कुर्सी छोड़ खड़ा हुआ, "मुझे भी आप लोगों से एक जरूरी काम है।"

"क...कैसा काम?" कमांडर चौंका।

"अगर आप लोगों को एतराज न हो, तो मैं आप तीनों की तलाशी लेना चाहता हूँ।"

किसी के एतराज का प्रश्न ही न था।

अगर कोई एतराज जाहिर करता, तभी कौन-सा झण्डे गड़ जाने थे।

अब्दाली ने तलाशी लेनी थी और ली।

परन्तु किसी के पास से कैसा भी कोई हथियार बरामद न हुआ।

अब अब्दाली के साथ-साथ प्रिंस भी चौंका।

उन्हें सबसे ज्यादा हैरानी कमांडर के ऊपर थी, जिसकी जेब से एक चाकू तक न मिला था।

□□□

सारा घटनाक्रम ज्यूं-ज्यूं अंत की तरफ बढ़ रहा था, ठीक उसी अनुपात में कमांडर करण सक्सेना को कुछ उलझा हुआ नजर आ रहा था।

बेहद पेचीदा, बेहद सस्पेंसफुल!

इस समय कमांडर के दिमाग में उस पूरे मिशन को लेकर कई सारे सवाल मंडरा रहे थे, जिनके जवाब वो जल्द से जल्द चाहता था। उसे अभी भी लग रहा था, कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है, कुछ घोटाला है।

महल की पहली मंजिल पर पहंचने के बाद करण सक्सेना, नील को लेकर जैकब के कमरे में पहुंचा।

तुरन्त सबने अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़ दीं ।

“एक मिनट !” तभी अब्दाली भी अपनी कुर्सी छोड़ खड़ा हुआ, “मुझे भी आप लोगों से एक जरूरी काम है ।”

“क...कैसा काम ?” कमांडर चौंका ।

“अगर आप लोगों को एतराज न हो, तो मैं आप तीनों की तलाशी लेना चाहता हूँ ।”

किसी के एतराज का प्रश्न ही न था ।

अगर कोई एतराज जाहिर करता, तभी कौन-सा झण्डे गड़ जाने थे ।

अब्दाली ने तलाशी लेनी थी और ली ।

परन्तु किसी के पास से कैसा भी कोई हथियार बरामद न हुआ ।

अब अब्दाली के साथ-साथ प्रिंस भी चौंका ।

उन्हें सबसे ज्यादा हैरानी कमांडर के ऊपर थी, जिसकी जेब से एक चाकू तक न मिला था ।

□□□

सारा घटनाक्रम ज्यूं-ज्यूं अंत की तरफ बढ़ रहा था, ठीक उसी अनुपात में कमांडर करण सक्सेना को कुछ उलझा हुआ नजर आ रहा था ।

बेहद पेचीदा, बेहद सस्पेंसफुल !

इस समय कमांडर के दिमाग में उस पूरे मिशन को लेकर कई सारे सवाल मंडरा रहे थे, जिनके जवाब वो जल्द से जल्द चाहता था । उसे अभी भी लग रहा था, कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है, कुछ घोटाला है ।

महल की पहली मंजिल पर पहंचने के बाद करण सक्सेना, नील को लेकर जैकब के कमरे में पहुंचा ।

जैकब उस समय कुर्सी पर बैठा था और जोर-जोर से अपना सिर धुन रहा था ।

"क्या कर रहे हो ?" कमांडर बोला ।

"अपनी किस्मत फोड़ रहा हूँ ।" जैकब झुंझला उठा, "लेकिन तुम्हें इससे क्या, तुम्हें मुझसे क्या मतलब !"

"देखो अपना दिमाग ठण्डा करो ।" करण सक्सेना, नील के साथ वहीं पड़े एक सोफे पर बैठ गया, "मैं तुमसे कुछ बातचीत करने आया हूँ ।"

"कैसी बातचीत ?" जैकब ने उसे अपनी लाल-लाल आंखों से घूरा ।

"मेरे कुछ सवालों का जवाब दो । अगर वो ब्ल्यू फिल्में तुम्हारे ही पास हैं, तो इससे तो यह जाहिर होता है कि तुमने ही किटी वगैरा को मेरे पीछे लगाया था । तुमने ही मेरी जेब में हवाई जहाज के अंदर हेरोइन प्लाण्ट करवाई और मुझे मियामी पुलिस द्वारा पकड़वाने का प्रयास किया ।"

"पता नहीं तुम क्या कह रहे हो ।" जैकब ने उसे आश्चर्यपूर्वक देखा, "तुम चले जाओ यहाँ से, तुम्हारी कोई बात मेरी समझ में नहीं आ रही ।"

"देखो, यह कोई मामूली सवाल नहीं है । इसके ऊपर बहुत कुछ टिका है, क्या तुम अमरीकन एयरलाइंस की सर्विस गर्ल किटी को नहीं जानते, क्या तुमने उसे मेरे पीछे नहीं लगाया था ?"

"मैं किसी किटी-विटी को नहीं जानता ।"

"इतनी जल्दी जवाब मत दो जैकब, खूब सोच-समझकर जवाब दो ।"

"मैं सोच-समझकर ही जवाब दे रहा हूँ। जैकब चिल्ला उठा, "मैं कोई पागल नहीं हूँ, जो यूं ही उट-पटांग बकने लगूंगा।"

कमांडर के दिमाग में अब अनार छूटने लगे।

उसका दिमाग चकरघिन्नी की तरह घूम रहा था और वो नहीं समझ पा रहा था कि क्या चक्कर है।

"तुमने प्रिंस को ब्ल्यू फिल्मों के प्रिण्ट के बारे में जो जानकारी दी है, क्या वो सही है ?" कमांडर ने अगला सवाल किया, "क्या सचमुच ब्ल्यू फ़िल्में और उनके ओरिजनल प्रिण्ट तुम्हारे लास वेगास वाले फ्लैट के अंदर ही हैं ?"

"तुम्हें क्या लगता है, मैं ऐसी परिस्थिति में झूठ बोल सकता था ?"

"सीधे-सीधे जवाब दो जैकब !" कमांडर गुर्राया।

"मैं सीधे-सीधे ही जवाब दे रहा हूँ। मैंने जो कहा, सब सच था।"

"और तुमने किसके कहने पर यह सब किया ?"

"जॉनी बैंजो के कहने पर किया।" जैकब बोला, "जॉनी बैंजो का यह काफी पहले से प्लान था कि वो गोल्डी को चैलेन्ज करेगा तथा उससे अपना 'विश्व चैम्पियन' का खिताब वापस हथियायेगा। इसके लिये उसने मुझे चुना, मैं नौजवान था, हैण्डसम था, चालबाज था, और इन सबसे ऊपर एक अच्छा सिनेमाटोग्राफर (फिल्म कैमरामैन) था। हॉलीवुड की फिल्म इण्डस्ट्री में मेरा छोटा-मोटा भी दांव नहीं लगा था, इसलिये मैं लास वेगास में रहने लगा था। जॉनी बैंजो ने गोल्डी को ब्लैकमेल करने का प्लान बनाया, जॉनी बैंजो के और मेरे बीच में दस लाख बाकायदा प्री-

एक बार फिर वो तमाम घटनाक्रम को अपने दिमाग में दौड़ाने लगा।

सभी सवालों का जवाब उसे मिल रहा था।

सिर्फ एक ही सवाल का जवाब उसे हासिल नहीं था, किटी को किसने उसके पीछे लगाया ?

और बस यही एक सवाल सारी गड़बड़ कर रहा था।

□□□

रात के साढ़े ग्यारह का समय।

कमांडर की चंद मिनट पहले ही आंख लगी थीं कि तभी उसके कमरे का दरवाजा धड़ाक् से खुला, उसने अंदर से सिटकनी नहीं लगायी थी, फिर नील धड़धड़ाती हुई उसके कमरे में दाखिल हुई।

उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

उसने कमांडर को झिंझोड़ कर उठाया।

"क...क्या बात है ?" कमांडर एकदम से उठा।

"ज...जैकब 'पैलेस' में से भागने की कोशिश कर रहा है।" नील फुसफुसाई।

"क्या कह रही हो तुम !"

"जल्दी से मेरे साथ आओ, जल्दी !"

कमांडर फौरन नील के साथ-साथ दौड़ता हुआ अपने कमरे में से बाहर निकला और महल के टैरेस की तरफ झपटा।

टैरेस पर पहुंचते ही उसकी सांस रुक गयी।

टैरेस की बगल में ही एक काफी लम्बा वाटर पाइप था, जो नीचे से महल के टॉप फ्लोर तक चला गया था और वह बरसात में पतनाले वगैरा का काम करता था।

कमांडर आहिस्ता से उठा और नील के पीछे-पीछे ही जैकब के कमरे से बाहर निकल गया।

उसके दिमाग में उलझन अभी भी थी।

उसे लग रहा था, कोई धमाका होने वाला है।

कोई बड़ा धमाका।

जो तमाम विचारों की धज्जियां उड़ाकर रख देगा।

□□□

कमांडर ने नील के कमरे में झांका, वह उस वक्त अपने बिस्तर पर उल्टी पड़ी थी और जोर-जोर से हिचकियां लेकर रो रही थी।

कमांडर ने उस वक्त उसे छेड़ना मुनासिब न समझा।

आंसुओं के साथ उसके पाप धुल रहे थे, उसके अंदर की सदचरित्र औरत जाग रही थी।

वह अपने कमरे में पहुंचा।

वहाँ पहुंचते ही ठिठक गया, सामने टेबल पर ही उसका ब्रीफकेस पड़ा था और उसके अंदर से बनियान का जरा-सा कोना बाहर झांक रहा था। कमांडर फौरन भांप गया, उसके पीछे उसके ब्रीफकेस की तलाशी ली गयी है।

उसने जल्दी से अपना ब्रीफकेस खोलकर देखा।

हर चीज अपनी जगह मौजूद थी।

मामला उसकी कुछ समझ नहीं आ रहा था।

बादशाह के आदमी उसके साथ भी 'दुश्मन' जैसा ही व्यवहार कर रहे थे।

कमांडर करण सक्सेना बिस्तर पर बैठ गया और उसने 'डनहिल' सुलगा ली।

इस समय जैकब उसी पाइप से चिपका हुआ था और काफी तेजी से नीचे की तरफ उतर रहा था ।

रात के स्याह अंधेरे में ही कमांडर ने देखा कि उसके हाथ में एक रिवॉल्वर भी थी ।

जरूर वो भी तलाशी के दौरान किसी तरह अपनी रिवॉल्वर छुपाने में कामयाब हो गया था ।

"स...समझ नहीं आता ।" नील बड़बड़ाई, "यह अब क्यों भाग रहा है ?"

"जरूर इसे यह अंदेशा हो गया होगा कि कल जब प्रिंस के आदमियों को ब्ल्यू फिल्मों के सारे प्रिण्ट मिल जायेंगे, फिर वह इसे भी मार डालेंगे।"

नील ने चौंककर कमांडर की तरफ देखा ।

"क्या वो ऐसा कर सकते हैं ?"

"बिल्कुल कर सकते हैं, क्यों नहीं कर सकते।"

नील के चेहरे पर भी दहशत के निशान उभर आये ।

तब तक जैकब रिवॉल्वर हाथ में लिये-लिये नीचे उतर चुका था ।

अब वह महल से आगे निकले लम्बे-चौड़े चबूतरे पर खड़ा था ।

चबूतरे पर पहुंचते ही वो नीचे बैठ गया और फिर बैठे-बैठे ही काफी तेजी से चलता हुआ चबूतरे की सीढ़ियों की तरफ बढ़ा ।

वह यथासंभव इस बात की कोशिश कर रहा था कि कहीं प्रिंस के गार्डों की निगाह उस पर न पड़ जाये ।

जल्द ही वो चबूतरे से नीचे उतर गया ।

चबूतरे से नीचे उतरते ही वो देवदार के वृक्षों की तरफ झपटा ।

तभी घटना घटी ।

उसी पल किसी घोड़े की काफी तेजी से उस तरफ दौड़कर आने की आवाज सुनायी दी ।

कमांडर करण सक्सेना ने देखा, उस घोड़े पर एक हथियारबंद गार्ड सवार था और उसके हाथों में एक तीन सैलों वाली टॉर्च थी ।

गार्ड ने फौरन टॉर्च की रोशनी जैकब के ऊपर डाली ।

वह पलक झपकते ही सारा-का-सारा प्रकाश से नहा गया था ।

"ऐ !" गार्ड शीघ्रतापूर्वक अपने हॉलेस्टर से रिवॉल्वर निकालता हुआ चिल्लाया, "रुक जाओ ।"

मगर जैकब ने कहाँ रुकना था ।

वह देवदार के वृक्षों के बीच में दौड़ता हुआ काफी तेजी से पैलेस के घने जंगल की तरफ दौड़ा जा रहा था ।

"रुको !" गार्ड उसी दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ दोबारा चिल्लाया ।

साथ ही उसने धांय-धांय दो फायर भी किये ।

लेकिन दोनों में से एक भी गोली निशाने पर न लगी ।

उसी पल जैकब ने भी पीछे मुड़कर दो गोलियां गार्ड पर चलाईं ।

यह इत्तेफाक ही रहा कि वह गोलियां गार्ड के लगने की बजाय घोड़े के जा लगीं ।

घोड़े के गोली लगते ही वह जोर से हिनहिनाया ।

ऊपर उछला ।

गार्ड फौरन नीचे जा गिरा था, जबकि घोड़ा भी वहीं ढेर हो गया ।

तभी एक और हृदयविदारक दृश्य पैदा हुआ ।

उसने जल्दी-जल्दी ओवरकोट पहना ।

क्लेंसी हैट पहना ।

एक कोल्ट रिवॉल्वर उसने अपने हाथ में ले ली तथा फिर ब्रीफकेस भी उठाया ।

"कपड़े वगैरा को छोड़कर तुम्हारा कोई खास सामान तुम्हारे कमरे में तो नहीं है ?" कमांडर बोला ।

"क...क्यों पूछ रहे हो ?"

"सिर्फ मेरे सवाल का जवाब दो ।" कमांडर गुर्राया ।

"नहीं, कोई खास सामान नहीं है ।"

"ठीक है, तो फिर चलो ।"

"म...मगर कहाँ लेकर जा रहे हो ?" नील सकपकाई ।

"चुपचाप तमाशा देखती रहो ।"

कमांडर ने नील का हाथ पकड़ा और फिर पहली मंजिल पर ही आगे की तरफ दौड़ता चला गया ।

पहली मंजिल के सबसे आखिर में जो कमरा था, वह उसमें जाकर छुप गये ।

थोड़ी देर बाद ही उन दोनों के कानों में कुछ दौड़ते कदमों की आवाजें पड़ी ।

कमांडर ने दरवाजे की झिरी में से झांककर देखा, प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली कुछ हथियारबंद गार्डों के साथ दौड़ते हुए ऊपर आये थे ।

फिर उन्होंने उन कमरों के दरवाजों को धड़ाधड़ खोलकर देखा, जिनमें कमांडर और नील ठहरे हुए थे ।

"वह दोनों यहाँ नहीं हैं प्रिंस !" तुरन्त कुछ गार्डों की आवाजें गूंजी ।

"जैकब वाला कमरा भी देखो ।" प्रिंस गुर्राया ।

जैकब वाला कमरा भी देखा गया ।

वहाँ भी कोई न था ।

उसके बाद काफी तेजी से आसपास के कुछ और कमरे भी देखे गये ।

लेकिन उन दोनों का कहीं पता न था ।

फिर वह सब वापस लौट गये ।

□□□

थोड़ी देर बाद ही प्रिंस इरफान शेख की लाउडस्पीकर पर आवाज गूंजने लगी । वह महल के चबूतरे पर खड़ा चिल्ला रहा था ।

"करण सक्सेना, नील, तुम दोनों जहाँ भी हो, हमारे सामने आ जाओ । जैकब मारा गया है, परन्तु अगर तुम दोनों ने भी यहाँ से भाग निकलने की कोशिश की तो तुम भी मारे जाओगे। तुम नहीं जानते, पैलेस की बाउण्ड्री वॉल में बिजली का करंट दौड़ रहा है, यहाँ से कोई नहीं भाग सकता ।"

प्रिंस इरफान शेख की वह चेतावनी बार-बार लाउडस्पीकर पर गूंजने लगी । लाउडस्पीकर उसने हाथ में पकड़ रखा था ।

नील के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये ।

"म...मुझे डर लग रहा है मिस्टर करण ।"

"चिन्ता मत करो ।" कमांडर फुसफुसाया, "सिर्फ थोड़ी देर की बात है, बहुत जल्द सब-कुछ ठीक हो जायेगा ।"

"लेकिन हम आखिर कब तक यहाँ छिपे रह सकते हैं ।" नील बोली, "वह हमें फिर तलाशने का प्रयास करेंगे और हम पकड़े जायेंगे ।"

"बेफिक्र रहो, ऐसी नौबत नहीं आयेगी। उससे पहले ही मैं कुछ कर गुजरूंगा।"

लाउडस्पीकर पर कुछ देर प्रिंस की चेतावनी गूंजती रही।

फिर वो चेतावनी बंद हो गयी।

कमांडर कुछ देर उसी कमरे में शांतिपूर्वक बैठा रहा। फिर वो उठ खड़ा हुआ।

"तुम यहीं रहना।" कमांडर बोला, "मैं अभी दस मिनट में आता हूँ।"

"लेकिन कहाँ जा रहे हो ?" नील चौंकी।

"नीचे, ग्राउण्ड फ्लोर पर।"

"ग...ग्राउण्ड फ्लोर पर।" नील को जबरदस्त झटका लगा, "वहाँ किसलिये ?"

"दरअसल मुझे एक बड़ा अजीब अहसास हो रहा है।" कमांडर सनसनीखेज लहजे में बोला, "तुम भी मेरी बात सुनोगी, तो चौंकोगी।"

"कैसा अहसास ?"

"अब्दाली ने जब जैकब के ऊपर गोली चलायी थी, तो मुझे ऐसा लगा था कि वह गोली जैकब को लगने की बजाय वहीं मौजूद एक देवदार के वृक्ष पर लगी थी। परन्तु चौंकाने वाली बात ये है कि जैकब फिर भी चीखता हुआ नीचे गिर पड़ा था।"

"य...यह कैसे हो सकता है ?"

"यही तो मैं चेक करना चाहता हूँ कि कहीं यहाँ कोई जबरदस्त नाटक तो नहीं चल रहा है। तुम चिन्ता मत करो, मैं अभी लौट आऊंगा। यह चंद लोग मेरा कुछ नहीं बिगाड़

ख्वाब में भी नहीं सूझेगी कि बेचारा जॉनी बैंजो तो इस पूरे प्रकरण में एकदम निर्दोष है, शुरू से अंत तक ब्लैकमेलिंग का यह सारा असली खेल तो बादशाह करीम शेख नूरानी द्वारा खेला जा रहा है।"

वह बात कहकर जैकब फिर जोर से हंसा।

उसके बाद उसने शराब के दो-तीन तगड़े घूंट भरे थे।

"मैं तो कहता हूँ।" अब्दाली व्यग्रतापूर्वक बोला, "हम लोगों को अब कमांडर और नील को निपटाने में ज्यादा देर नहीं करनी चाहिये, अभी रात-ही-रात में इस काम को भी कर डालें, फिर तो सारा झंझट ही खत्म हो जायेगा।"

"थोड़ा सब्र रखो अब्दाली !" प्रिंस इरफान शेख बोला, "यह काम दिन निकलने पर ज्यादा बेहतर ढंग से हो सकेगा। उन्होंने अपने कमरे जरूर छोड़ दिये हैं, परन्तु अभी वो गारण्टी के साथ महल के अंदर ही हैं। रात-रात में वो महल के अंदर से भाग नहीं जायेंगे।"

"परन्तु यह तो पता लगाना है।" अब्दाली झुंझलाकर बोला, "कि वह अब महल की किस मंजिल पर हैं, कौन-से कमरे में हैं ?"

"मैं जानता हूँ कि यह पता लगाना है, और इसीलिये कह रहा हूँ कि यह काम सुबह ज्यादा बेहतर ढंग से हो सकेगा। क्योंकि महल की आठ मंजिल और चार सौ कमरों की तलाशी लेना आसान काम नहीं है। फिर हमारे पास गार्डों की संख्या भी सिर्फ तीस है और ऊपर से मुश्किल यह कि महल के ग्राउण्ड फ्लोर तथा फर्स्ट फ्लोर को छोड़कर कहीं भी लाइट की व्यवस्था नहीं है। अंधेरे में कमरों की तलाशी लेना और ज्यादा मुश्किल काम होगा, इसीलिये कह रहा हूँ

कि अगर हम उन लोगों को दिन के उजाले में तलाश करेंगे, तो ज्यादा बेहतर रहेगा ।"

अब्दाली फिर कुछ न बोला ।

"कुछ भी कहो ।" जैकब शराब के तीन-चार घूंट और लगाने के बाद बोला, "बादशाह की योजना शानदार थी, बेहद लाजवाब ! कोई शुरु से इस बात का शक भी नहीं कर सकता था कि बादशाह ही गोल्डी को मुकाबले में हरवाना चाहते थे और इसीलिये वह उसे ब्लैकमेल कर रहे थे, जबकि खुद उनके दस करोड़ डॉलर गोल्डी के ऊपर लगे हुए थे । लेकिन इस रहस्य को कौन जानता है कि बादशाह को यह सारा खेल सट्टा बाजार की वजह से खेलना पड़ा । बॉक्सिंग जगत के प्रशंसकों के बीच जॉनी बैंजो के मुकाबले गोल्डी की पोजिशन बहुत ज्यादा जबरदस्त थी । हर आदमी की जबान पर यही बात थी कि 31 अगस्त का मुकाबला हर हालत में गोल्डी जीतेगा, इसीलिये हर आदमी ने गोल्डी की जीत पर दिल खोलकर सट्टे का दांव लगाया । कुल चालीस करोड़ डॉलर की विपुल धनराशि गोल्डी की जीत पर सट्टे में लगायी गयी, जबकि जॉनी बैंजो पर मुश्किल से एक करोड़ डॉलर का ही दांव लगा । यानि एक तरफा गेम हो रहा था । फिर सट्टे में गोल्डी की जीत का जो भाव चल रहा था, वह एक के दस चल रहे थे । यानि अगर गोल्डी 31 अगस्त वाला मुकाबला जॉनी बैंजो से जीत जाता, तो बादशाह को चालीस करोड़ डॉलर के बदले पब्लिक को चार सौ करोड़ डॉलर देने पड़ते । यह इतनी बड़ी रकम थी कि अगर बादशाह अपना सब-कुछ भी बेच डालते, तब भी शायद वह उस रकम की भरपूर्ति न कर पाते । ऊपर से मुश्किल ये थी कि गोल्डी की जीत

के पूरे-पूरे चांस बने हुए थे । इसीलिये बादशाह ने किसी तरह गोल्डी को उस मुकाबले में हरवाने की योजना बनायी । क्योंकि अगर गोल्डी मुकाबला हारता, तो उस पोजिशन में उनके सिर्फ दस करोड़ डॉलर डूबने थे, जो चार सौ करोड़ डॉलर के मुकाबले काफी छोटी रकम थी । गोल्डी को हरवाने का बादशाह को सबसे बेहतर तरीका यही लगा कि अगर गोल्डी 27 अगस्त तक किसी तरह मुकाबले से अपना नाम वापस ले ले, तो वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन अपने आप उसे पराजित मानकर जॉनी बैंजो को विश्व चैम्पियन घोषित कर देगी । ब्लैकमेलिंग के इस काम के लिये बादशाह ने मुझे चुना तथा शुरू से ही इस तरह पत्ते बिछाये कि सारा शक जॉनी बैंजो पर जाये । दरअसल बादशाह को शुरू में इस बात की जरा-सी भी भनक नहीं थी कि यह मुकाबला पूरी तरह एक तरफा हो जायेगा और बॉक्सिंग जगत के ज्यादातर प्रशंसक गोल्डी के ऊपर ही दांव लगायेंगे, वरना वह उस मुकाबले के दौरान सट्टा मार्किट को ही अपने हाथ में न लेते । परन्तु जब तक उनके ऊपर असलियत उजागर हुई, तब तक तीर उनकी कमान से छूट चुका था । इसी कारण अपने आपको तबाह होने से बचाने के लिये उन्हें यह सारा जाल फैलाना पड़ा ।"

उस योजना को सुनकर खिड़की के पीछे मौजूद कमांडर सन्न-सी अवस्था में खड़ा रह गया ।

"इसमें कोई शक नहीं कि, योजना शानदार थी ।" प्रिंस इरफान शेख भी शराब के घूंट भरता हुआ बोला, "बेचारे जॉनी बैंजो का खामखाह बलि का बकरा बना गया । मिस्टर जैकब, बादशाह ने इस पूरे खेल में एक चाल तो ऐसी चली थी, जिसकी शायद तुम्हें भी खबर नहीं है ।"

"कौन-सी चाल ?" जैकब के स्वर में उत्सुकता पैदा हुई ।

कमांडर ने भी अपने कान थोड़े और खिड़की से चिपका दिये ।

"दरअसल बादशाह ने टेलीफोन द्वारा जॉनी बैंजो से सम्पर्क बना रखा था और वह उसे बार-बार इस बात का दिलासा दे रहे थे कि इस मुकाबले में जीत उसकी होगी । 27 अगस्त को गोल्डी हर हालत में मुकाबले से अपना नाम वापस ले लेगा ।"

"क्यों ?" जैकब चौंका, "जॉनी बैंजो को इस तरह का आश्वासन देने की क्या जरूरत थी ?"

"इसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण कारण था ।" प्रिंस बोला, "दरअसल जॉनी बैंजो ने जोश-जोश में गोल्डी को मुकाबले के लिये चैलेन्ज तो दे दिया था और मुकाबले की तारीख भी फाइनल हो गयी थी । लेकिन बाद में जॉनी बैंजो के ऊपर मुकाबले से नाम वापस लेने के लिये चारों तरफ से इतना प्रेशर पड़ रहा था कि बादशाह को लग रहा था कि जॉनी बैंजो किसी भी दिन मुकाबले से नाम वापस लेने की घोषणा कर सकता है । अगर वह मुकाबले से नाम वापस ले लेता, तब भी सट्टा बाजार की वजह से बादशाह का सर्वनाश हो जाना था । क्योंकि जॉनी बैंजो के मुकाबले से नाम वापस लेते ही वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन गोल्डी को 'विश्व चैम्पियन' घोषित कर देती और उस पोजिशन में भी बादशाह को पब्लिक की चार सौ करोड़ डॉलर की अदायगी करनी पड़ती । इसलिये बादशाह ने डबल गेम खेला, उन्होंने जहाँ नील की ब्ल्यू फिल्में बनवाकर उस पर यह दबाव डाला कि वो मुकाबले से अपना नाम वापस

उसने गटागट कई घूंट और भरे तथा अपने गिलास में ढेर सारी शराब और पलटी ।

"मेरे ड्रामे का सबसे लाजवाब सीन तो मेरा मरना था ।

"बिल्कुल ।" जैकब की बात सुनकर इस बार अब्दाली भी हंस पड़ा, "इसमें कोई शक नहीं । बेचारे कमांडर को तो शायद अभी ये भी मालूम नहीं होगा कि इस समय वह जिस पैलेस के अंदर है, वह भी बादशाह करीम शेख नूरानी का है और माल रोड के जिस फार्म हाउस में वो साईस की नौकरी कर रहा था, उस फार्म हाउस का मालिक भी बादशाह ही था । इतना ही नहीं, नील की जिन ब्ल्यू फिल्मों को लेकर इतनी अफरा-तफरी मची हुई है, वह ब्ल्यू फिल्में भी पहले से ही बादशाह के पास मौजूद हैं ।"

उस कमरे में फिर एक संयुक्त ठहाका गूंज गया ।

"बहरहाल !" जैकब एकाएक गंभीर होता हुआ बोला, "अभी तक जो हुआ-हुआ । अब आगे क्या करना है, यह बताओ ?"

"आगे हम लोगों ने कोई खास काम नहीं करना ।" प्रिंस इरफान शेख बोला, "कल सुबह दिन निकलते ही हम लोग कमांडर और नील को महल में से ढूंढ निकालेंगे तथा फिर अब्दाली ने उनकी हत्या कर देनी है । वैरी सिम्पल ! सब-कुछ आसानी के साथ निपट जायेगा । कमांडर और नील को मारकर हम लोग लास वेगास लौट जायेंगे, जहाँ जाकर हम गोल्डी से कहेंगे कि हमने ब्लैकमेलर को पकड़ने की भरपूर कोशिश की लेकिन वो हमारी पकड़ में नहीं आया और ऐन मौके पर भाग खड़ा हुआ । अपने साथ ही वो ब्ल्यू फिल्मों के सारे प्रिण्टों को भी ले जाने में सफल रहा । इस तरह गोल्डी के ऊपर ब्लैकमेलर के खौफ की तलवार फिर

भी लटकी रहेगी और उसे 27 अगस्त को मजबूरन मुकाबले से अपना नाम वापस लेना पड़ेगा ।"

"वैरी गुड !" जैकब की आंखों में तेज चमक कौंधी, "यानि पूरी योजना में कहीं कोई लीक प्वॉइण्ट नहीं ?"

"बिल्कुल भी नहीं ।"

"कल सुबह कमांडर और नील की हत्या किस तरह की जायेगी ?"

"वह भी काफी आसान काम है । वह जवाब अब्दाली ने दिया था, "नील की हत्या करने के लिये तो बादशाह ने पहले ही योजना फाइनल कर रखी है, वह अपने आप किसी ऊंची बिल्डिंग से नीचे गिर पड़ेगी, खामखाह किसी सड़क पर दौड़ते भारी-भरकम ट्रक के नीचे आ जायेगी या फिर किसी दिन मियामी पुलिस को उसकी लाश किसी तालाब में तैरती हुई मिलेगी ।"

जैकब के होठों पर फिर चित्ताकर्षक मुस्कान दौड़ गयी ।

"योजना वाकई बेहतरीन है, और कमांडर को किस तरह ठिकाने लगाया जायेगा ?"

"वह मर्द आदमी है, उसका फैसला हालात को देखकर होगा और तभी हाथ-के-हाथ होगा ।"

अब्दाली की बात पर कमरे में फिर एक संयुक्त ठहाका गूंज उठा ।

जबकि कमांडर की कनपटी पर अब जोर-जोर से खून ठोकरें मारने लगा था ।

उसका चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बन गया और आंखें लाल सुर्ख हो गयीं ।

वह झटके से पलटा ।

पलटते ही उसे दूसरा शॉक लगा ।

लेकिन तभी कमांडर ने उसे दोबारा अपने शिकंजे में जकड़ लिया था और फिर दोनों हाथों से उसकी गर्दन पकड़कर झटके से तोड़ डाली ।

पालसिंह के नेत्र दहशत से उबल पड़े ।

उसका मुँह खुला का खुला रह गया तथा फिर वो लहराकर पीछे जा गिरा ।

कमांडर अपने कपड़ों को व्यवस्थित करता सीधा खड़ा हो गया था ।

नील अभी भी फटे-फटे नेत्रों से उस हौलनाक मंजर को देख रही थी ।

"य...यह मर गया ?" नील के मुँह से चीख-सी खारिज हुई ।

"हाँ, यह मर गया ।" कमांडर बाथरूम का दरवाजा खोलकर बाहर निकला, "चलो, अब तुम भी बाहर आ जाओ । इसका मरना ही हमारे लिये बेहतर था ।"

नील भी उसके पीछे-पीछे भारी कदमों से चलती हुई बाहर निकली ।

❑❑❑

कमांडर करण सक्सेना इस वक्त इत्मीनान से कुर्सी पर बैठा 'डनहिल' का कश लगा रहा था ।

नील उसके सामने बैठी थी और इस बात को लेकर हैरान थी कि उस आदमी ने अभी-अभी एक 'हत्या' की है, मगर उसके चेहरे पर शिकन नाम की कोई चीज नहीं थी ।

"ज...जैकब के बारे में कुछ पता चला ?" नील ने पूछा ।

"य...यह क्या चक्कर है ।" नील आतंकित मुद्रा में बोली, "त...तुम इसे यहाँ क्यों ले आये ?"

"चक्कर भी समझ आ जायेगा, पहले कमरे का दरवाजा बंद कर दो ।"

नील ने फौरन दौड़कर कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया ।

इस बीच करण सक्सेना, पालसिंह को जबरदस्ती घसीटता हुआ बाथरूम में जा घुसा था ।

नील भी उसके पीछे-पीछे बाथरूम में घुसी ।

यहाँ का दरवाजा भी बंद कर दो ।" कमांडर बोला ।

"ल...लेकिन बात क्या है, क्या करने जा रहे हो तुम ?"

"अभी सब-कुछ मालूम हो जायेगा, जल्दी दरवाजा बंद करो ।"

नील ने तुरन्त बाथरूम का दरवाजा भी बंद कर दिया ।

पालसिंह अब और ज्यादा जोर-जोर से अपने हाथ-पैर पटकने लगा था ।

वह समझ चुका था, उसके साथ कोई गड़बड़ होने वाली है ।

बाथरूम का दरवाजा बंद होते ही कमांडर ने पालसिंह के मुँह से अपनी हथेली हटा दी ।

पालसिंह ने फौरन चिल्लाने के लिये अपना गला फाड़ना चाहा, लेकिन चीख उसके हलक से बाहर निकलती, उससे पहले ही कमांडर ने उसके हलक में उसी की रिवॉल्वर ठोंक दी ।

पालसिंह को खून की एक बड़ी उल्टी हुई ।

बंधनमुक्त होते ही वो बाथरूम के दरवाजे की तरफ दौड़ा ।

“हाँ, मेरा अनुमान सही था ।” कमांडर ने गहरी सांस ली, “जैकब जिंदा है ।”

“क...क्या कह रहे हो तुम ?” नील के नेत्र और ज्यादा विस्मय से फैल गये, “व...वो जिन्दा है ?”

“हाँ ।”

“म...मगर-मगर ।”

“दरअसल यह नाटक हम लोगों की उम्मीद से कहीं ज्यादा बड़े पैमाने पर खेला गया है । तुम्हें सुनकर हैरानी होगी कि गोल्डी को जॉनी बैंजो ब्लैकमेल नहीं कर रहा था बल्कि बादशाह करीम शेख नूरानी ही ब्लैकमेल कर रहा था, सारे फसाद की जड़ ही वो आदमी है ।”

“ल...लेकिन बादशाह, गोल्डी को मुकाबले में क्यों हरवाना चाहेगा ?” नील ने अचम्भित स्वर में पूछा, “वह तो गोल्डी का प्रमोटर था, उसके तो गोल्डी के ऊपर दस करोड़ डॉलर दांव पर लगे थे ?”

“ठीक कहा तुमने ।” कमांडर ने ‘डनहिल’ का एक कश और लगाया, “बादशाह करीम शेख नूरानी के दस करोड़ डॉलर दांव पर लगे थे । परन्तु सारा झगड़ा सट्टे को लेकर पैदा हुआ, चार सौ करोड़ डॉलर की अदायगी को लेकर पैदा हुआ ।”

करण सक्सेना, बादशाह की पूरी योजना नील को सुनाता चला गया ।

नील सन्न बैठी रह गयी ।

गोल्डी के खिलाफ कितना जबरदस्त जाल बुना गया था । कितनी खतरनाक योजना बनायी गयी थी ।

“अ...अब तुम क्या करोगे ?” नील ने पूछा ।

कमांडर ने नील की तरफ देखा, वह बेड पर बेसुध पड़ी गहरी नींद सो रही थी। कमांडर ने उसे आहिस्ता से झिंझोड़ा, तो वह भी फौरन हड़बड़ाकर उठ बैठी।

“क...क्या हुआ ?”

“कुछ नहीं हुआ।” कमांडर यन्त्रचलित लहजे में बोला, “फिलहाल हमारे लिये इतना ही आराम काफी है और अब हम लोगों ने कुछ करना है।”

“क्या करना है ?”

“देखती जाओ।”

कमांडर तुरन्त कमरे से निकलकर पहली मंजिल के टैरेस की तरफ बढ़ गया और उसने नीचे झांककर देखा वहाँ आसपास पूरी तरह सन्नाटा था और सिर्फ महल के प्रवेश द्वार के पास ही कुछ गार्ड टहलते हुए नजर आ रहे थे।

कमांडर शीघ्र ही वहाँ से वापस कमरे में लौट आया।

फिर वो कमरे की विशाल खिड़की के पास पहुंचा, खिड़की पर भारी पर्दा लटका हुआ था और उसी पर्दे के करीब एक प्लास्टिक की रस्सी लटक रही थी, जिसकी मदद से वो पर्दा खुलता और बंद होता था।

कमांडर ने वो रस्सी अपने हाथों में कसकर पकड़ी तथा फिर जोर से झटका मारा, फौरन ढेर सारी रस्सी टूटकर उसके हाथ में आ गयी। उसके बाद कमांडर ने बाकी दूसरी खिड़कियों और दरवाजों की रस्सी भी उतार ली।

“य...यह क्या कर रहे हो ?” नील ने चौंककर पूछा।

“बस देखती जाओ, मैंने तुमसे रात कहा था न कि दिन निकलने के बाद कमांडर का खेल शुरू होगा, मेरा खेल शुरू हो चुका है। अब मैं देखता हूँ कि यह लोग कितने धुरंधर मस्तिष्क के मालिक हैं।”

कमांडर ने नील की तरफ देखा, वह बेड पर बेसुध पड़ी गहरी नींद सो रही थी । कमांडर ने उसे आहिस्ता से झिंझोड़ा, तो वह भी फौरन हड़बड़ाकर उठ बैठी ।

"क...क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ ।" कमांडर यन्त्रचलित लहजे में बोला, "फिलहाल हमारे लिये इतना ही आराम काफी है और अब हम लोगों ने कुछ करना है ।"

"क्या करना है ?"

"देखती जाओ ।"

कमांडर तुरन्त कमरे से निकलकर पहली मंजिल के टैरेस की तरफ बढ़ गया और उसने नीचे झांककर देखा वहाँ आसपास पूरी तरह सन्नाटा था और सिर्फ महल के प्रवेश द्वार के पास ही कुछ गार्ड टहलते हुए नजर आ रहे थे ।

कमांडर शीघ्र ही वहाँ से वापस कमरे में लौट आया ।

फिर वो कमरे की विशाल खिड़की के पास पहुंचा, खिड़की पर भारी पर्दा लटका हुआ था और उसी पर्दे के करीब एक प्लास्टिक की रस्सी लटक रही थी, जिसकी मदद से वो पर्दा खुलता और बंद होता था ।

कमांडर ने वो रस्सी अपने हाथों में कसकर पकड़ी तथा फिर जोर से झटका मारा, फौरन ढेर सारी रस्सी टूटकर उसके हाथ में आ गयी । उसके बाद कमांडर ने बाकी दूसरी खिड़कियों और दरवाजों की रस्सी भी उतार ली ।

"य...यह क्या कर रहे हो ?" नील ने चौंककर पूछा ।

"बस देखती जाओ, मैंने तुमसे रात कहा था न कि दिन निकलने के बाद कमांडर का खेल शुरू होगा, मेरा खेल शुरू हो चुका है । अब मैं देखता हूँ कि यह लोग कितने धुरंधर मस्तिष्क के मालिक हैं ।"

वह सभी रस्सियां काफी मजबूत थीं ।

जब काफी रस्सी जमा हो गयीं, तो कमांडर ने उन रस्सियों को एक-दूसरे के साथ जोड़ना शुरु किया । जल्द ही एक काफी लम्बी रस्सी तैयार हो चुकी थी ।

फिर कमांडर प्लास्टिक की उस रस्सी को कमरे की पिछली बालकनी के पास लेकर पहुंचा । उसने रस्सी का एक सिरा बालकनी की रेलिंग के साथ कसकर बांध दिया तथा बाकी रस्सी बालकनी में नीचे की तरफ लटका दी ।

"इससे क्या होगा ?"

"इससे बादशाह के यह चालाक आदमी बेवकूफ बनेंगे । यह समझेंगे कि हम दोनों रात के अंधेरे का फायदा उठाकर प्लास्टिक की इस मजबूत रस्सी के सहारे नीचे उतर गये और जंगल की दिशा में कहीं भाग खड़े हुए ।"

"ओह !" कमांडर की योजना भांपकर नील की आंखें भी चमक उठीं ।

"चलो, अब हम महल की चौथी मंजिल पर चलते हैं ।" कमांडर बोला, "क्योंकि बालकनी से रस्सी लटके देखकर बादशाह के आदमी सबसे पहले यहीं आयेंगे ।"

कमांडर करण सक्सेना ने अपना ब्रीफकेस उठाया तथा फिर नील के साथ जल्दी से महल की ऊपर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया ।

नील भी उसके साथ-साथ दौड़ती चली गयी थी ।

□□□

सुबह के साढ़े छः बजे से महल में हलचल शुरु हुई ।

सबसे पहले घोड़े पर इधर-से-उधर विचरण करते एक हथियारबंद गार्ड की निगाह बालकनी से बाहर लटकी उस रस्सी पर पड़ी।

उस प्लास्टिक की रस्सी को देखते ही गार्ड के नेत्र फैल गये।

वह फौरन घोड़े से उतरकर भागा-भागा महल के अंदर पहुंचा और उसने प्रिंस को जगाया।

"क...क्या बात है ?" प्रिंस इरफान शेख ने पूछा।

"भारी गड़बड़ हो गयी है प्रिंस !" गार्ड आतंकित स्वर में बोला, "पहली मंजिल की एक बालकनी में रस्सी लटक रही है।"

"क...क्या कह रहे हो तुम ?"

"मैं सच कह रहा हूँ प्रिंस, आप उस रस्सी को खुद अपनी आंखों से देख सकते हैं।"

तभी अब्दाली और जैकब भी वहाँ आ गये।

उस समाचार को सुनकर वह भी हड़बड़ाये।

तुरन्त वह तीनों उस गार्ड के पीछे-पीछे महल से बाहर निकले और उस दिशा में लपके, जिधर रस्सी लटकी हुई थी।

शीघ्र ही वह तीनों भी बालकनी के सामने खड़े थे और उन्होंने भी रस्सी को लटके हुए देखा।

"माई गॉड !" जैकब की आंखें फट पड़ीं, "यह तो सचमुच रस्सी लटक रही है।"

"इसका मतलब रात अंधेरे का फायदा उठाकर कमांडर करण सक्सेना और नील महल में से भाग निकले।" प्रिंस उत्तेजित स्वर में बोला।

"जरूर यही बात है ।" अब्दाली भी उस दृश्य को देखकर हैरान रह गया था ।

"लेकिन वो किस तरफ भागे होंगे ?"

"पैलेस के मेन गेट की तरफ तो किसी भी हालत में नहीं भाग सकते ।" प्रिंस पूरे यकीन के साथ बोला, "क्योंकि वहाँ रात में भी पहरा रहता है इसलिये वह जरूर जंगल की तरफ भागे होंगे क्योंकि बचने का वही एक रास्ता है ।"

तभी वहाँ एक और गार्ड भागा-भागा आया ।

"प्रिंस, पालसिंह भी आज सुबह से कहीं दिखाई नहीं दे रहा है, वो भी गायब है ।"

"पालसिंह कहाँ गायब हो गया ?"

"मालूम नहीं प्रिंस, हमने उसे हर जगह देख लिया है, मगर वो कहीं नहीं मिल रहा ।"

"पावर हाउस की तरफ देखा ?"

"वहाँ भी देखा प्रिंस, लेकिन वो वहाँ भी नहीं है । मुझे तो कोई गड़बड़ लग रही है, लगता है कि उसके साथ कोई दुर्घटना घट गयी है ।"

"जल्दी से तुम सब लोग मेरे साथ महल की पहली मंजिल पर आओ ।"

प्रिंस इरफान शेख बौखलाया-सा बोला और फिर महल की तरफ झपटा ।

□□□

अगले ही पल वह सब अपने-अपने हथियार उठाकर महल की पहली मंजिल की तरफ दौड़े जा रहे थे।

पलक झपकते ही वह सब उस कमरे में पहुंच गये, जिसकी बालकनी में रस्सी लटकी हुई थी ।

वह सब पुनः महल से नीचे आ गये ।

फिर प्रिंस ने एक हथियारबंद गार्ड को कुछ आदेश दिया ।

गार्ड ने आदर से गर्दन झुकाई और वो वहाँ से चला गया ।

मुश्किल से दस मिनट बाद ही महल के सामने सभी तीस हथियारबंद गार्ड जमा हो गये थे, वह सब गार्ड घोड़ों पर सवार थे ।

प्रिंस ने उन सबको पूरी घटना से अवगत कराया तथा फिर उन्हें जल्द-से-जल्द कमांडर और नील को भयानक जंगल के अंदर से ढूंढ निकालने का आदेश दिया । तुरन्त वह सब घोड़े दौड़ाते हुए घने और विशाल जंगल की तरफ चले गये ।

वह पूरा जंगल सात हजार एकड़ भूमि में फैला हुआ था और वहाँ किसी भी आदमी को ढूंढ निकालने के लिये एक दिन का समय भी कम था ।

अब महल में प्रिंस, अब्दाली और जैकब रह गये, या फिर वहाँ की दो डोबरमैन कुत्ते बचे थे, जो अक्सर महल की पहरेदारी करते थे ।

"मैं समझता हूँ, हमसे एक गड़बड़ हो चुकी है ।" अब्दाली गार्डों के जंगल की तरफ जाते ही बोला ।

"कैसी गड़बड़ ?"

"हमें सब गार्डों को जंगल में नहीं भेजना चाहिये था, कुछ को यहाँ अपने पास रोककर रखते ।"

"किसलिये ?"

"मान लो, अगर कमांडर और नील यहाँ लौटकर आ गये, तो ?"

"तो क्या होगा।" प्रिंस दृढ़ शब्दों में बोला, "हम यहाँ तीन व्यक्ति हैं, तीनों हथियारबंद हैं, क्या हम तीन व्यक्ति उन दोनों को नहीं संभाल सकते ?"

अब्दाली ने कोई जवाब नहीं दिया ।

"फिर पावर हाउस में भी एक हथियारबंद गार्ड मौजूद है, अगर जरूरत महसूस हुई, तो हम उसे भी टेलीफोन करके यहाँ बुला सकते हैं ।"

अब्दाली फिर भी कुछ न बोला ।

यूं तो वह अभी तक सब-कुछ सही-सही कदम उठा रहे थे, परन्तु फिर भी अब्दाली को गड़बड़ी की आशंका हो रही थी ।

उसे लग रहा था, कुछ-न-कुछ गड़बड़ होगी ।

कमांडर करण सक्सेना की वजह से गड़बड़ होगी ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना और नील उस समय चौथी मंजिल पर एक खिड़की के पीछे खड़े थे और वहीं से उस सारे नजारे को देख रहे थे ।

कमांडर ने घोड़ों पर सवार सभी गार्डों की संख्या को गिना था और जब वह तमाम गार्ड जंगल की तरफ रवाना हो गये, तो कमांडर ने उसी से अंदाजा लगा लिया कि अब वहाँ सिर्फ तीन व्यक्ति बचे हैं ।

रात प्रिंस का वार्तालाप सुनने के बाद ही उसे मालूम हो गया था कि उनकी हिफाजत के लिये वहाँ तीस गार्ड मौजूद हैं ।

गार्डों के जाने के बाद अब्दाली बाहर चबूतरे वाली कुर्सी पर ही गोद में टेलीस्कोपिक गन रखकर बैठ गया था, वह

बहुत चौकस नजर आ रहा था और उसकी आंखें शिकारी कुत्ते की तरह इधर-उधर घूम रही थीं ।

जबकि प्रिंस इरफान शेख और जैकब वापस महल में चले गये ।

कमांडर सोचने लगा ।

उसके लिये अब काफी हद तक मैदान साफ हो चुका था ।

उसके पास दो रिवॉल्वर थीं, यानि बारह गोलियां ।

उन बारह गोलियों के बल पर क्या वो तीन आदमियों और दो खतरनाक कुत्तों पर काबू पा सकता था ?

फिर वह तीनों आदमी भी आधुनिकतम हथियारों से लैस थे ।

काम मुश्किल नहीं था ।

परन्तु ऐन मौके पर कुछ भी हो सकता था ।

कमांडर सोचता रहा, सोचता रहा ।

फिर उसने अंत में थोड़ी देर इंतजार करने का फैसला किया ।

□□□

दो घण्टे गुजर गये ।

सूरज अब काफी हद तक सिर पर चढ़ आया था और जो गार्ड कमांडर तथा नील को तलाशने जंगल की तरफ गये थे, उनमें से कोई भी गार्ड कैसी भी कोई खबर लेकर वापस नहीं लौटा था ।

प्रिंस और जैकब अभी भी महल के अंदर ही थे और समय गुजारने के लिये ताश खेल रहे थे, अलबत्ता उन्होंने ऑटोमैटिक गनें अपने पास ही रख छोड़ी थीं ।

अब्दाली की ताशों में कोई दिलचस्पी नहीं थी ।

अब्दाली जब बाहर बैठा-बैठा बोर हो गया, तो वह कुर्सी छोड़कर उठा और चबूतरे से उतरकर महल की उस दिशा में बढ़ा, जहाँ अभी भी रस्सी लटकी हुई थी । वह खामखाह रस्सी के पास जाकर खड़ा हो गया और उसे देखने लगा ।

फिर उसने रस्सी को पकड़कर भी देखा । वह रस्सी चूंकि नायलोन की थी, इसलिये काफी चिकनी थी ।

उससे उतरने के लिये काफी मेहनत की आवश्यकता थी और हर पल उससे हाथ फिसलने का खतरा था ।

रस्सी को देखते-देखते अब्दाली के दिमाग में एकाएक छनाका-सा हो गया।

"वैरी गुड !" अब्दाली मुस्कराया, "सचमुच कमांडर के दिमाग का जवाब नहीं ।"

अब्दाली तुरन्त महल की तरफ दौड़ पड़ा ।

वह जल्दी से सीढ़ियां चढ़कर चबूतरा पार करते हुए महल में उस जगह पहुंचा, जहाँ प्रिंस और जैकब ताश खेल रहे थे ।

"बस, अब ताश का यह खेल बंद करो ।" अब्दाली ने उन दोनों के हाथ से ताश छीनकर मेज पर पटक दिये, "तुम लोग ताश में अपना दिमाग खर्च कर रहे हो, जबकि कमांडर उसी दिमाग की बदौलत तुमसे कहीं ज्यादा बड़ा खेल, खेल चुका है ।"

"क्या मतलब ?"

"अगर मान लो, जंगल में से तुम्हें फौरन अपने आदमी वापस बुलाने की जरूरत पड़ जाये, तब तुम क्या करोगे ?"

"पीछे से अपना एक आदमी भेजना पड़ेगा ।" प्रिंस इरफान शेख बोला, "मगर इस काम में कम-से-कम तीन-

चार घण्टे जायेंगे, आखिर बात क्या है ? तुमे यह सवाल क्यों कर रहे हो ?”

“क्योंकि कमांडर और नील अभी भी महल ही हैं ।”

अब्दाली धैर्यपूर्वक बोला ।

“क्या कह रहे हो ?” इरफान शेख उछला, “और प्लास्टिक की वह रस्सी, जो बालकनी में लटकी हुई है ?”

“मैं उसी रस्सी को दोबारा देखकर आ रहा हूँ ।” अब्दाली बोला, “उस रस्सी को पकड़कर नीचे उतरना काफी मुश्किल का काम है क्योंकि वह रस्सी चिकनी है और उसे मुट्ठी में भींचकर नीचे आसानी के साथ नहीं उतरा जा सकता । एक बार के लिये कमांडर यह काम कर सकता है मगर नील जैसी औरत तो किसी भी हालत में उस प्लास्टिक की डोरी को पकड़कर ऊपर से नीचे नहीं उतर सकती ।”

प्रिंस और जैकब के चेहरे पर अब दुविधा के चिन्ह उभर आये ।

“यह भी तो हो सकता है ।” प्रिंस बोला, “कि कमांडर महल में से भाग गया हो और नील अभी भी महल के अंदर हो ?”

“तुम्हें क्या लगता है, कमांडर करण सक्सेना ऐसा आदमी है जो खुद को बचाने के लिये एक बेसहारा लड़की को मुसीबत में छोड़ जायेगा ?”

इरफान शेख कुछ न बोला ।

वह एकाएक परेशान नजर आने लगा था ।

“वह रस्सी कमांडर करण सक्सेना ने हम लोगों को सिर्फ धोखा देने के लिये लटकाई थी प्रिंस ।” अब्दाली एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला, “और यह हम लोगों की

"टेलीफोन खराब है ।" प्रिंस इरफान शेख के चेहरे का अब सारा खून निचुड़ गया था ।

"बहुत अच्छे ! यह और बढ़िया काम हुआ है ।"

"अब क्या होगा ? जैकब आतंकित स्वर में बोला, "अब जंगल से गार्ड कैसे वापस बुलाये जायेंगे ?"

"अब तो एक ही तरीका है ।" प्रिंस बोला ।

"क्या ?"

"हममें से कोई एक आदमी यहाँ से कार लेकर पावर हाउस जाये और वहाँ से गार्ड को जंगल भेजे, तभी कुछ बात बनेगी ।"

"ठीक है ।" जैकब शीघ्रतापूर्वक बोला, "मैं यह काम करता हूँ, मैं कार लेकर पावर हाउस जाता हूँ ।"

"ओ.के., तुम जाओ ।"

जैकब फौरन अपनी गन लेकर महल से बाहर की तरफ दौड़ पड़ा ।

जल्द ही शेवरलेट कार स्टार्ट होने की आवाज हुई तथा फिर वो आवाज क्षण-प्रतिक्षण दूर होती चली गयी ।

□□□

कमांडर ने महल की चौथी मंजिल से ही जैकब को भी जाते देखा ।

"य...यह कहाँ जा रहा है ?" नील चौंकी ।

"शायद उन्हें पता चल गया है कि हम यहीं महल में हैं, वह जरूर हमारे खिलाफ कोई कदम उठाने जा रहा होगा ।"

"माई गॉड !" नील के शरीर में आतंक की लहर दौड़ी, "अब क्या होगा ?"

"कुछ नहीं होगा ।" कमांडर दृढ़ स्वर में बोला, "अब फाइनल गेम होगा । एक बात बताओ ?"

"पूछो ।"

"अगर जरूरत पड़े, तो तुम रिवॉल्वर चला सकती हो ?"

"हाँ, एक बार मैंने गोल्डी के साथ फायर आर्म्स की प्रेक्टिस की थी । लेकिन तब मेरे सामने एक मुश्किल पेश आयी थी, मेरे निशाने ठीक नहीं लगते थे ।"

"कोई बात नहीं, यह एक रिवॉल्वर अपने पास रखो ।" कमांडर ने एक कोल्ट रिवॉल्वर नील की तरफ बढ़ाई, "अगर कोई भी तुम्हारे सामने आ जाये तो बस धुआंधार गोलियां चलानी शुरु कर देना, सही-गलत निशाने की बिल्कुल परवाह न करना ।"

"ठीक है, ऐसा ही होगा ।" नील ने बड़े मजबूत इरादों के साथ रिवॉल्वर संभाल ली ।

"आओ, अब मेरे साथ नीचे आओ ।"

नील हिचकिचाती हुई कमांडर के पीछे-पीछे चल पड़ी ।

□□□

वह दोनों दबे पांव सीढ़ियां पूरी तरह उतर भी नहीं पाये थे कि तभी उन्हें सीढ़ियों के बिल्कुल सामने एक डोबरमैन कुत्ता बैठा नजर आया, जो उन्हें देखते ही जोर-जोर से भौंकने लगा ।

कमांडर एक पल के लिये हिचकिचाया ।

लेकिन फिर उसने धांय से गोली चला दी ।

गोली सीधी कुत्ते की खोपड़ी में जाकर लगी, उसका भेजा बाहर निकल आया और वो क्याऊँ-क्याऊँ की धीमी आवाज करता हुआ छटपटाने लगा ।

गोली की आवाज सुनते ही दूसरा कुत्ता भी भागा-भागा वहाँ आया ।

इस बार कमांडर को कुछ करने की जरूरत न पड़ी ।

नील ने पीछे से एकदम उस पर धुआंधार गोलियां बरसा डालीं ।

नील ने तीन गोलियां चलायीं, जिनमें से दो कुत्ते को लगीं, वह दूसरा कुत्ता भी वहीं ढेर हो गया ।

फिर सन्नाटा छा गया ।

गहरा सन्नाटा !

वह सन्नाटा कमांडर के लिये विस्मय की बात थी । वह समझ रहा था कि गोलियां चलने और कुत्तों की चीखने की आवाज सुनकर प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली दौड़ते हुए उसके सामने आ जायेंगे तथा वह तत्काल उन्हें गोली से उड़ा देगा ।

परन्तु वैसा कुछ न हुआ ।

गोलियों की आवाज से अंदर हलचल जरूर मची थी, लेकिन फिर पहले की तरह ही सन्नाटा छा गया ।

जैसे वहाँ कुछ हुआ ही न हो ।

जैसे वहाँ कुत्तों के अलावा कोई न हो ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना और नील सीढ़ियों पर अपनी-अपनी जगह स्थिर खड़े रहे ।

प्रिंस और अब्दाली, कमांडर की चाल भांप चुके थे और अब वह किसी मुनासिब मौके की तलाश में थे।

उधर, कमांडर का दिमाग भी सक्रिय था।

वह जानता था कि उन दोनों को ज्यादा देर मौका देना ठीक नहीं है।

तभी कमांडर ने वहीं सीढ़ियों पर अपने पास रखा पीतल का फूलदान उठा लिया तथा फिर उसे जोर से सामने फेंककर मारा।

उसी पल धांय से गोली चली और पीतल के फूलदान को झनझनाती चली गयी।

लेकिन सामने फिर भी कोई न आया।

वह दोनों हद से ज्यादा चालाक थे।

कमांडर सोचने लगा, क्या चाल चली जाये ?

तभी उसके दिमाग में एक आइडिया कौंधा।

उसने अपने सिर से हैट उतार लिया तथा फिर हैट इस तरह आगे किया, जैसे वह दीवार से अपना सिर आगे निकालकर उनकी तरफ झांकने की कोशिश कर रहा हो।

धांय-धांय दो गोली चलीं।

दोनों गोली हैट में लगीं।

लेकिन इसके बावजूद कमांडर ने जोर से हलक फाड़कर चिल्लाने का अभिनय किया तथा उसने सीढ़ियों पर इस तरह जूते पटके, जैसे वह सीढ़ियों से फिसला हो।

कमांडर करण सक्सेना के चीखते ही फौरन प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली भी अपनी-अपनी गनें लेकर दौड़ते हुए सीढ़ियों के सामने आ गये, उन्होंने समझा कि कमांडर मर गया।

लेकिन जैसे ही वह दोनों सामने आये, तुरन्त धांय-धांय दो गोली और चलीं।

दोनों गोलियां प्रिंस इरफान शेख और अब्दाली के सीने में लगी थीं, वह बुरी तरह चिल्लाये, उनके सीने से खून के फव्वारे छूटे तथा फिर वह दोनों वहीं लुढ़क गये।

अलबत्ता अब्दाली ने फिर भी हिम्मत दिखाई।

गोली लगने के बावजूद उसने भागने की कोशिश की थी, कमांडर ने दो गोली और चलायीं।

वह कुछ ही कदम दौड़ा होगा, फिर लुढ़क गया।

अब फर्श पर उन दोनों की लाशें पड़ी थीं।

"इनका तो पत्ता साफ हो गया।" करण सक्सेना, नील के साथ सीढ़ियों से नीचे उतरा और उसने फर्श पर पड़ी उन दोनों की गनें उठा लीं।

□□□

फिर उन दोनों ने महल के अंदर ही बैठकर जैकब का इंतजार करना शुरु किया।

धीरे-धीरे वक्त गुजरता रहा।

आधा घण्टा गुजर गया।

यही वो क्षण था, जब महल के सामने शेवरलेट के रुकने की आवाज सुनायी दी।

"तीसरा शिकार भी आ गया।" कमांडर झटके से उठ खड़ा हुआ।

फिर वो रिवॉल्वर लेकर महल के बंद दरवाजे के सामने जा खड़ा हुआ, दरवाजे का अंदर से कुण्डा लगा हुआ नहीं था।

कमांडर के देखते ही उसके होश उड़ गये ।

उसने भड़ाक् से दरवाजा वापस बंद करके भागना चाहा । लेकिन कमांडर ने उसी क्षण अपनी एक टांग दोनों पल्लों के बीच में अड़ा दी और फिर चीते की तरह जम्प लगाकर दूसरी टांग का प्रचण्ड प्रहार उसके गुप्तांगों पर किया । जैकब हलकाये कुत्ते की तरह डकराता हुआ पीछे गिरा । उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने घन से उसके गुप्तांगों को कूट डाला हो ।

गन उसके हाथ से छूट गयी ।

फिर भी उसने झपटकर गन उठानी चाही ।

लेकिन तब तक कमांडर उसके सामने पहुंच चुका था ।

उसने तुरन्त जैकब के उसी हाथ को अपने जूते से कसकर दबा दिया जिससे वह रिवॉल्वर उठाना चाहता था । फिर उसने रिवॉल्वर से जैकब के माथे का निशाना लिया ।

"न...नहीं ।" जैकब एकदम पसीनों में लथपथ हो गया, "नहीं, मुझे छोड़ दो । म...मुझे छोड़ दो ।"

"तूने जो खेल खेला है जैकब !" कमांडर ने दांत किटकिटाये, "उसका अंत हमेशा यही होता है । एक मौत तुम मरे थे, जब अब्दाली ने तुम्हारे ऊपर गोली चलायी । एक मौत तुम अब मर रहे हो, अब देखना ये है कि तुम इस वक्त बच पाते हो या नहीं ।"

कोल्ट रिवॉल्वर फिर कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी तथा फिर गोली चली ।

फौरन जैकब के चेहरे के चीथड़े बिखर गये ।

गोली चलते ही नील तुरन्त महल से बाहर आ गयी थी ।

"म...मर गया ?"

"हाँ, मर गया ।"

नील ने जैकब के शव की तरफ देखा और फिर घृणा से अपनी गर्दन घुमा ली ।

"अब क्या करना है ?" नील बोली ।

"यहाँ का काम खत्म हुआ, अब यहाँ से चलो ।"

नील दौड़कर अंदर सीढ़ियों पर रखा कमांडर का ब्रीफकेस ले आयी ।

फिर वह दोनों शेवरलेट में सवार हो गये थे और अगले ही पल शेवरलेट आधा किलोमीटर लम्बे ड्राइव-वे पर दौड़ पड़ी थी ।

उन्हें 'शेख पैलेस' से बाहर निकलने में भी कोई खास दिक्कत पेश न आयी ।

'शेख पैलेस' के मुख्य प्रवेश द्वार पर सिर्फ एक हथियारबंद गार्ड मौजूद था, जिसे कमांडर ने टेलीस्कोपिक गन की मदद से काफी दूर से ही गोली मार दी । फिर वह दरवाजा खोलकर शेवरलेट कार सहित बाहर निकल गये थे ।

अगले ही पल वो कार मियामी से वापस लास वेगास की दिशा में दौड़ पड़ी ।

□□□

अभियान का आखिरी दिन (27 अगस्त)

वह दिन उस पूरे मिशन का सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण दिन था ।

वह ऐसा दिन था, जो बॉक्सिंग के इतिहास में सदा दर्ज रहा ।

इस दिन सुबह से ही लास वेगास में बेपनाह गर्मी पड़ रही थी और ऐसा लग रहा था, जैसे आसमान आग की

बारिश कर रहा हो और धरती जलता तवा बन गयी हो । उस दिन कमांडर भी दरिन्दा बन गया था, ऐसा दरिन्दा, जो सिर्फ मौत को पसंद करता है ।

वह मशीनगन लेकर बादशाह करीम शेख नूरानी के उस बॉक्सिंग क्लब में जा घुसा था, जहाँ नीचे क्लब में मुक्केबाज बॉक्सिंग की प्रेक्टिस करते थे और ऊपर बादशाह का वो साम्राज्य फैला हुआ था, जहाँ सट्टे से लेकर बॉक्सरों को प्रमोट करने तक का सारा कारोबार संचालित होता था ।

वहाँ घुसते ही कमांडर करण सक्सेना ने धुआंधार गोलियों की बारिश शुरू कर दी ।

बादशाह का जो भी आदमी उसके सामने आया, कमांडर ने उसी को बड़ी निर्ममता से भून डाला ।

जल्द ही वहाँ चारों तरफ लाशें-ही-लाशें नजर आने लगीं । फिर कमांडर झटके के साथ बादशाह करीम शेख नूरानी के साउण्डप्रूफ ऑफिस का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुआ ।

बादशाह उसे देखते ही उछला, "त...तुम, तुम...।"

"क्यों ?" कमांडर ने फौरन बादशाह के सीने पर मशीनगन रख दी, "क्यों मुझे जिंदा देखकर हैरानी हो रही है बादशाह ? आज 27 अगस्त है, मुकाबले से नाम वापस लेने की आखिरी तारीख । तुम्हारे हिसाब से तो मुझे आज मियामी में होना चाहिये था, तुम्हारे पैलेस के अंदर ।"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"तुम्हारे नाटक का अब पूरी तरह पटाक्षेप हो चुका है बादशाह ।" कमांडर ने गुस्से में दांत किटकिटाये, "तुम्हारे सारे षडयंत्रों के ऊपर से पर्दा उठ चुका है । अब यह रहस्य,

“न...नहीं, मुझे मत मारो ।” बादशाह करीम शेख नूरानी गिड़गिड़ा उठा, “तुम जितनी दौलत कहोगे, मैं तुम्हें दूंगा, यह लो, यह लो, यह लो ।”

बादशाह ने अपने नजदीक रखी अलमारी में से नोटों की गड्डियां निकाल-निकालकर कमांडर की तरफ फेंकनी शुरू कर दी ।

“मिस्टर करण, मैं तुम्हें तुम्हारे वजन से भी ज्यादा दौलत से तौल दूंगा, मैं तुम्हें इतनी दौलत दूंगा, जो तुम्हें भारत सरकार से भी हासिल न हुई होगी । बस तुम एक काम करो, मुझे छोड़ दो ।

चंद सेकंड में ही बादशाह करीम शेख नूरानी ने उसके इर्द-गिर्द नोटों के ढेर लगा दिये ।

“नील की ब्ल्यू फ़िल्में तथा ओरिजनल प्रिण्ट कहाँ हैं ?”

“देता हूँ, व...वो भी देता हूं ।”

बादशाह ने वहीं अलमारी में रखा एक बड़ा-सा गत्ते का डिब्बा निकालकर टेबल पर पटक दिया ।

“इसमें सब-कुछ है ।” बादशाह बोला, “सब-कुछ ।”

“सारे प्रिण्ट डिब्बे से बाहर निकालो ।” कमांडर ने आदेश दिया, “और अपने हाथों से आग लगा दो ।”

कमांडर ने आग लगाने के लिये अपना सिगरेट लाइटर भी बादशाह की तरफ बढ़ा दिया था ।

बादशाह ने बिना हिचक कमांडर के आदेश का पालन किया, वह डिब्बे के अंदर से फिल्मों के प्रिण्ट निकाल-निकालकर जलाने लगा । पलक झपकते ही पेन ड्राइव सहित सारे प्रिण्ट टेबल पर धूं-धूं करके जलने लगे।

“अ...अब ?”

"अब अपने बनाने वाले को याद कर लो ।"

बादशाह समझ गया, वह आदमी उसे नहीं बख्शेगा ।

उसके सामने गिड़गिड़ाना बेकार है ।

कमांडर करण सक्सेना गोली चलाता, उससे पहले ही एकाएक बादशाह करीम शेख नूरानी ने अद्वितीय फुर्ती से वहीं रखा टेलीफोन उठाया और उसे अपनी सम्पूर्ण ताकत से कमांडर के मशीनगन वाले हाथ पर देकर मारा ।

कमांडर ने भी उसके पीछे-पीछे जम्प लगायी ।

लेकिन बादशाह भागने के मामले में एक्सपर्ट था ।

वह कमांडर के हाथ आने की बजाय दनादन सीढ़ियां चढ़ता चला गया ।

□□□

जल्द ही बादशाह करीम शेख नूरानी अपने बॉक्सिंग क्लब की छत पर था ।

छत पर एक स्टोर बना हुआ था, जिसमें बॉक्सिंग के अंदर काम आने वाले सामान का कुछ काट-कबाड़ भरा था ।

छत पर पहुंचते ही बादशाह ने उस स्टोर का कुंदा खोला और जल्दी से उस स्टोर के अंदर बंद हो जाना चाहा ।

लेकिन उसी पल कमांडर करण सक्सेना ने पीछे से उसका कंधा पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया ।

बादशाह सिर के बल लेंटर पर गिरा ।

गिरते ही फिर उठकर भागा ।

परन्तु इस बार वो खुद ही ठिठक गया, अब वो छत की बिल्कुल मुंडेर पर खड़ा था और उसके काफी नीचे सड़क

नजर आ रही थी, जिस पर वाहन आ-जा रहे थे । करण सवसेना, बादशाह के सामने जा खड़ा हुआ ।

उसी पल कमांडर के दिमाग की माँस-पेशियों ने हरकत दिखाई, तो उसके क्लेंसी हैट की ग्लिप में लगी रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ गयी ।

तत्काल रिवॉल्वर की नाल बादशाह के चेहरे को घूरने लगी थी ।

"न...नहीं ।" बादशाह जूड़ी के मरीज की तरह कंपकंपाया, "नहीं ।"

कमांडर का चेहरा कठोरता की वजह से खुरदुरा हो गया ।

"याद है ।" कमांडर विषधर की तरह फुंफकारा, "याद है बादशाह, तुमने नील के बारे में अब्दाली को क्या ऑर्डर दिया था । तुमने कहा था कि तुम निकट भविष्य में नील के साथ एक हादसा होते देख रहे हो, वो खुद-ब-खुद किसी ऊंची इमारत से नीचे गिर पड़ेगी, किसी सुबह उसकी लाश तालाब में तैरती पायी जायेगी या फिर कोई राह चलता ट्रक उसे कुचल जायेगा ।"

बादशाह करीम शेख नूरानी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

उसके शरीर में खौफ की लहर दौड़ी ।

"लगता है कि तुम अच्छे भविष्यवक्ता नहीं थे । कमांडर मुस्कराया, "क्योंकि तुम्हारी कोई भी भविष्यवाणी सच नहीं हुई । जिस नील के बारे में तुमने यह भविष्यवाणी की थी, वो जिंदा है और अब्दाली मारा गया । फिलहाल सारे पत्ते पलट चुके हैं । अब अपने बारे में "कल्पना" करो

प्यार, जो विश्वास और समर्पण की बुनियाद पर खड़ा होता है ।

अलबत्ता मारथा ने नील को आसानी से माफ न किया ।

नील को देखते ही मारथा अपने कमरे में बंद हो गयी थी और फिर तब तक बाहर न निकली, जब तक नील का रोते-रोते बुरा हाल न हो गया ।

इस परे अभियान की सबसे बड़ी खासियत ये थी कि कमांडर करण सक्सेना ने अमरीका की धरती पर इतना बड़ा हंगामा मचा दिया था, परन्तु फिर भी सी.आई.ए. को इस बात की भनक तक नहीं थी कि वो सब कमांडर करण सक्सेना ने किया है ।

कमांडर करण सक्सेना ने गोल्डी और नील से विदा ली ।

उन दोनों ने भावुक मन से अपने उस बहादुर और जांबाज दोस्त को विदा किया था ।

अलविदा ऐ मेरे दोस्त !

अलविदा ।

:: समाप्त ::

□□□

आगामी कुछ घटनायें भी काफी तेजी से घटी।

जॉनी बैंजो को जैसे ही सारे मामले का पता चला, उसने इसी दिन 27 अगस्त को ही मुकाबले से अपना नाम वापस ले लिया।

इस तरह वो सनसनी खेज मुकाबला 31 अगस्त से पहले ही खत्म हो गया, जिस पर पूरे बॉक्सिंग जगत की आंखें लगी थीं।

"वर्ल्ड बॉक्सिंग फेडरेशन" ने भी फौरन ही उस मुकाबले में गोल्डी को विजयी घोषित कर दिया था, इस तरह गोल्डी के पास 'विश्व चैम्पियन' का खिताब बरकरार रहा।

बादशाह करीम शेख नूरानी की सारी जायदाद नीलाम कर दी गयी लेकिन जिन लोगों ने गोल्डी के ऊपर सट्टा लगाया था, उन लोगों के लिये अफसोस की बात ये थी कि बादशाह की सारी जायदाद नीलाम होने के बावजूद भी चार सौ करोड़ डॉलर की उगाही न हो सकी।

मगर फिर भी जितनी उगाही हुई , उस सबका प्रतिशत निकालकर वह सारी रकम गोल्डी के उन प्रशंसकों के बीच बांट दी गयी, जिन्होंने गोल्डी पर दांव लगाया था।

नील अपने घर वापस लौट गयी।

उसने रोते हुए गोल्डी से अपने किये की माफी माँगी। गोल्डी भी इतना विशाल हृदय था कि उसने नील से कुछ न कहा, उल्टे मुस्कराकर उसका अपने घर में स्वागत किया।

नील को इस बात का अहसास हो चुका था कि जिंदगी में सेक्स ही सब-कुछ नहीं होता, सेक्स से भी कहीं ज्यादा रिश्तों की अहमियत होती है, प्यार की अहमियत होती है।